Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रभाकर

C. K. Y.
L I B
HARIDWAR

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078050

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Recd 4 [illegible] 1218
17
1980

078050

STOCK VERIFICATION
Central
Library
2024-25 G.K.D.U.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व पुस्तक मेला नई दिल्ली

हिन्दी प्रकाशक

पुस्तक मेला विशेषांक

RT-0321

प्रचारक बुक क्लब के सदस्य बनें
आधे मूल्य में पुस्तकें प्राप्त करें

प्रथम सेट

मोहे के पक	हिमांशु श्रीवास्तव	9.00
द्रोपदी की आत्मकथा	मनु शर्मा	5.00
कछार के काँटे	अमरेश	3.00
नये मुसाफिर	रामप्रकाश कपूर	3.00

द्वितीय सेट

समसेना	राजेन्द्र अवस्थी	4.00
नागफनी	भिक्खु	5.00
नदी फिर बह चली	हिमांशु श्रीवास्तव	8.00
किन्नरी	गदाधर नारायण	3.00

तृतीय सेट

साँचा	प्रभाकर माचवे	3.00
पानी के प्राचीर	रामदरश मिश्र	6.00
द्रोण की आत्मकथा	मनु शर्मा	7.00
मुर्शिदाबाद की आखिरी शाम	वैदेही सिन्हा	4.00

चतुर्थ सेट

कुहासे में जलती धूपबत्ती	हिमांशु श्रीवास्तव	4.00
प्यासा पंछी	शिवकुमार श्रोझा	4.00
हौसला	अश्वत्थ	9.00
आईना	हरनामदास सहराई	3.00

पंचम सेट

सच की खोज (१)	डॉ. देवराज	10.00
चमत्कार	धारिणदूहि	4.00
३१, चन्द्रघोष स्ट्रीट	दुर्गाप्रसाद श्रेष्ठ	3.00
बहता जीवन मुड़ती धारा	ऊषा चौधरी	3.00

षष्ठ सेट

बालू की लहरें	सरस्वती सरन 'कैफ'	8.00
सिकन्दर	हिमांशु श्रीवास्तव	5.00
एक बूंद दो समुद्र	गदाधर नारायण	3.00
वन और पगडंडियां	उर्मिकृष्ण	4.00

सातवा सेट

के डोले मां तुमि अबले	मनु शर्मा	3.00
जरासंध के दो उपन्यास	जरासंध	3.00
सच की खोज दूसरा भाग	डॉ. देवराज	10.00
फिसलती हुई मछली	राजेन्द्र अवस्थी	4.00

आठवां सेट

कर्ण की आत्मकथा	मनु शर्मा	10.00
मिस मसूरी	रामप्रकाश कपूर	3.00
जरूरत	द्वारकाप्रसाद एम. ए	4.00
साहबे आलम	योगेश प्रवीन	3.00

नवां सेट

स्वर्ण मल्लिका	डा. शकुन्तला पाण्डेय	10.00
मुमताज महल	हरिप्रसाद चपलियान	5.00
सती सीता	पुष्पा बेरी एम. ए.	2.50
सती रुक्मिणी	किरण बेरी बी. ए.	2.50

दसवां सेट

रेवती	कृष्णचन्द्र शर्मा 'भिक्खु'	10.00
सब्जबाग	पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'	7.00
क्रांति से पहले	राजेन्द्रपाल सिंह	3.00

ग्यारहवां सेट

एकलिंग का दीवान	मनु शर्मा	8.00
वन्दिता	प्रतापनारायण श्रीवास्तव	7.00
संगीनें झुक गयीं	गदाधर नारायण	5.00

योजना बहुत अच्छी लगी ।
—आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

मैं सोचता ही रहा कि हिन्दी में ऐसी योजना आरम्भ करनी चाहिए । —सुमित्रानन्दन पंत

आपको क्या करना है ?

☐ दो रुपये धनादेश या पोस्टल आर्डर द्वारा भेज कर सदस्य बनिये और बुक क्लब के अन्तर्गत पूर्व प्रकाशित पुस्तकों में से बीस रुपये मूल्य की कोई भी पुस्तक चुनिये । आदेश प्राप्त होते ही उपरोक्त बीस रुपये की पुस्तकें दस रुपये की वी० पी० पी० द्वारा प्रेषित की जायेंगी ।

प्रचारक बुक क्लब
हिन्दी प्रचारक संस्थान
पो० बो० 106, पिशाचमोचन,
वाराणसी–221001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी स्कूलों, पुस्तकालयों, संस्थाओं और प्रत्येक गृहों के लिए आवश्यक और अनिवार्य

महत्त्वपूर्ण उपयोगी सचित्र | सर्वथा पठनीय कथा साहित्य !

द्वापर की एक दोपहर	श्रीनिधि सिद्धान्तालंकार	30·00	मुखसरोवर के हंस	शैलेश मटियानी	6·00
कटु सत्य	विष्णुदेव उपाध्याय	20·00	चिट्ठी रसेन	,, ,,	8·00
खजुराहो की नगर वधू	शालिग्राम मिश्र	15·00	हौलदार	,, ,,	8·00
किन्नरी	शालिग्राम मिश्र	15·00	कबूतरखाना	,, ,,	5·00
कांटा और कली	उमाचन्दन	15·00	चौथी मुट्ठी	,, ,,	5·00
युग पुरुष राम	अक्षयकुमार जैन	10·00	किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई	,, ,,	4·00
काली लड़की	रजनी पनिकर	8·00	एक मूठ सरसों	,, ,,	3·00
नेपालेश्वर	विराज	20·00	पर्णा	गोविन्द बल्लभ पन्त	6·50
जुआरी	सत्यपाल विद्यालंकार	12·50	मैत्रेय	,, ,,	8·00
कलकत्ता के नजदीक ही	गजेन्द्रकुमार मित्र	12·00	तारों के सपने	,, ,,	8·00
अपराजिता	चतुरसेन शास्त्री	4·00	समुद्र और लहरें	शिवनारायण श्रीवास्तव	10·00
गंगा माता	पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'	8·00	अधूरी तस्वीर	वसन्त प्रभा	6·00
शराबी	,, ,,	6·00	थानेदार	अमरनाथ मल्होत्रा	8·00
निशिकांत	विष्णु प्रभाकर	8·00	ये नये लोग	मोहन चोपड़ा	8·00
लोक-परलोक	उदयशंकर भट्ट	6·00	नीड़ से आगे	,, ,,	4·00
दो अध्याय	,, ,,	3·00	निजी सचिव	सत्यप्रसाद पांडे	8·00
सागर, लहरें और मनुष्य	,, ,,	8·00	सफर	,, ,,	8·00
तीन रास्ते	स्वदेश कुमार	8·00	धरती की पीर	यादवेन्द्र चन्द्र शर्मा	6·00
मेरा जंगल मेरी बस्ती	कृशनचन्दर	7·00	धर्म के नाम पर	कन्हैयालाल ओझा	20·00
मृगजल	अनन्तगोपाल शेवड़े	8·00	खेमकरन की लाल रेखा	सूरजभान	5·00
हीरक जयन्ती	नागार्जुन	5·00	तीस दिन	नोटियाल	5·00
महोषध पण्डित	कोसल्यायन	4·00	हरिजन	,,	5·00
भारतसिन्धु	अरुण	15·00	विन्ध्या बाबू	,,	5·00
भारतसंगम	अरुण	12·00	हृदयमंथन	सीताचरण दीक्षित	6·00
भोर की किरणें	अरुण	4·00	तेज रेखा	पीताम्बर पटेल	3·00
बुलबुला, तूफान विस्फोट	अरुण	6·00	खेतों की गोद में	,, ,,	8·00
मृत्यु में जीवन	अरुण	4·00	उजड़ा घोंसला भटके पंख	,, ,,	3·00
उपनिषद पथ के राही	अरुण	18·00	ग्राम लक्ष्मी	,, ,,	8·00
मोना	बलवन्तसिंह	प्रेस में	मेरी तेंतीस कहानियां	बलवन्तसिंह	प्रेस में

सम्पूर्ण सूची-पत्र के लिए लिखें :

आत्माराम एण्ड संस

प्रधान कार्यालय : कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006 ☐ शाखा · 17, अशोक मार्ग, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक उद्योग के ३ सन्दर्भ-ग्रन्थ

सम्पादक : चम्पालाल रांका

१. राजस्थान पुस्तक उद्योग निर्देशिका

राजस्थान के पुस्तक जगत की जानकारी देने वाली एकमात्र विवरण-पुस्तिका।
साथ में राज्य के सभी पुस्तक-व्यवसायियों के नाम-पतों की पूरी सूची
मूल्य : 20.00

२. पुस्तक-विकास : आज और कल

- पुस्तक-उद्योग के महारथियों का पहली बार एकत्र परिचय।
- पुस्तक संस्थानों का इतिहास
- भारत के प्रसिद्ध पुस्तकालय
- भारत सरकार की पुस्तक योजनाएँ

मूल्य 30.00

३. बुक वर्ल्ड [Book-World]

अंग्रेजी में प्रकाशित : 20.00

- विश्व की प्रकाशन-समस्याओं पर विचारोत्तेजक परिचर्चा
- पुस्तक-उद्योग के विश्वव्यापी संगठनों का इतिहास

किताब महल, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003

078050

हिन्दी सन्त-काव्य की समीक्षा में एक नया अध्याय !

सत्य के अमर साधक युग-प्रवर्तक
सन्त कबीर के तपः पूत व्यक्तित्व एवं
अनुभव-प्रसूत कृतित्व का अभिनव विवेचन

कबीर : व्यक्तित्व, कृतित्व एवं सिद्धान्त

ले० डॉ० सरनामसिंह शर्मा 'अरुण', डी० लिट्०

इस शोध-ग्रन्थ में विद्वान लेखक ने कबीर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व विषयक ज्ञात एवं अज्ञात स्रोतों का सन्धान करते हुए तथा भारतीय चिन्तन-धारा में उस फक्कड़ अवधूत की अनन्य ऐतिहासिक स्थिति और महत्ता को रेखांकित करते हुए उसकी अटपटी वाणी के मर्म को उद्घाटित किया है ? अद्वैत दर्शन, वैष्णव भक्ति मार्ग, योग साधना एवं सूफी विचार-सरणि के चिन्तन-प्रवाह के सन्दर्भ में कबीर-वाणी के स्वर और उसकी मौलिकता के स्वरूप को चिह्नित करते हुए लेखक गाँधी-युग तक कबीर के सिद्धान्तों के प्रभाव का आकलन किया है, जिससे डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी के शब्दों में यह एक 'न भूतो न भविष्यति' शोध-ग्रन्थ बन गया है।

भारतीय शोध संस्थान, गुलाबपुरा द्वारा प्रकाशित

पृष्ठ ८०६ मूल्य : १००-००

चम्पालाल रांका एण्ड कम्पनी, चौड़ा रास्ता, जयपुर ३०२००३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युग प्रवर्तक साहित्यकार श्री जयशंकर प्रसाद की कालजयी कृतियाँ

● अब नये परिवेश में ●

काव्य—

कामायनी	६.००
कानन कुसुम	६.००
आँसू	२.५०
लहरें	२.५०
झरना	२.५०
करुणालय	२.००
प्रेम पथिक	१.५०
महाराणा का महत्त्व	१.५०

नाटक—

चन्द्रगुप्त	५.००
स्कन्द गुप्त	४.५०
अजातशत्रु	४.५०
कामना	४.००
जनमेजय का नागयज्ञ	४.००
विशाख	४.००
राज्यश्री	३.००
एक घूँट	२.५०
ध्रुवस्वामिनी	१.२५

कहानी संग्रह—

छाया	४.००
प्रतिध्वनि	४.००
इन्द्रजाल	६.००
आँधी	६.००
आकाशदीप	

उपन्यास—

कंकाल	१०.००
तितली	७.००
इरावती	६.००

विविध विषय

चित्राधार	१०.००
काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध	८.००

विशेष आकर्षण :—

१—छोटे आदेशों पर भी कमीशन के अतिरिक्त एफ० ओ० आर० की सुविधा ।

२—डाक पार्सल की दशा में आधा डाक व्यय तथा पैकिंग फ्री ।

३—पन्द्रह सौ रुपये या अधिक की थोक खरीददारी पर तीस प्रतिशत कमीशन की सुविधा के साथ डाक व्यय, पैकिंग, रेल महसूल फ्री ।

प्रकाशक एवं वितरक :—

प्रसाद प्रकाशन

प्रसाद-मन्दिर, गोवर्द्धन सराय

वाराणसी—१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्कृष्ट साहित्य के प्रकाशन में अग्रगण्य

सरस्वती विहार

फरवरी, ८०

के नवीनतम प्रकाशन

उद्देश्यपूर्ण जीवन — डा० राधाकृष्णन् — 18·00

भारत के कुछ महान पुरुषों के बारे में महान दार्शनिक डा. राधाकृष्णन् ने अपने विचार और चिंतन प्रस्तुत किया है और साथ ही यह बताने की कोशिश की है कि ये लोग महान क्यों बने और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने का इनका आधार क्या था? अपने जीवन को उचित मार्ग-दर्शन देने में अत्यन्त सहायक पुस्तक।

डेरेवाले — शैलेश मटियानी — 15·00

डेरेवाले समाज की नजर में हीन माने जाते हैं। इनको छूना भी लोग पाप समझते हैं, पर इस वर्ग की औरतों के साथ शारीरिक संपर्क बनाना समाज गलत नहीं मानता। आखिर यह विषमता क्यों? उच्च और निम्न वर्ग के संबंधों की असलियत प्रस्तुत करने वाला उपन्यास।

पंखहीन तितली — हंसराज रहबर — 14·00

आधुनिकता के मोह में फंसी एक युवती सभी नियमों को तोड़कर अलग-अलग नामों से कई शादियाँ करती है और इसे वह एक खेल समझती है। पर इस खेल का परिणाम जब सामने आता है तो उसकी आँखों के सामने अंधेरा छा जाता है। आधुनिकता की विसंगतियों को दर्शाने वाला एक रोचक उपन्यास।

झुनिया — मिथिलेश्वर — 16·00

सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार तथा मध्य प्रदेश सरकार के पुरस्कारों से सम्मानित युवा पीढ़ी के चर्चित कथाकार मिथिलेश्वर का यह उपन्यास ग्रामीण जीवन की समस्या को लेकर लिखा गया है। धन-दौलत के बल पर हमारे समाज के प्रमुख तथा सत्ताधारी लोग किस तरह गरीबों का शोषण करते हैं, इसका यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में हुआ है।

प्रेम-संसार — डा० रतन कुमार जैन — 32·00

प्रेम कला की पृष्ठभूमि में प्रेम संबंधों, दाम्पत्य जीवन, संतान तथा माता-पिता के संबंधों, पारिवारिक जीवन, यौन संबंधों, सामाजिक व्यवहार और अपनत्व की भावना का वैज्ञानिक धरातल पर सरस, सुरुचिपूर्ण, सक्षम विवेचन करने वाली अद्वितीय और संग्रहणीय पुस्तक।

आगामी प्रकाशन

यह भी प्रेम	(उपन्यास)	: विमल मित्र	15·00
बीते हुए	(उपन्यास)	: शुभा वर्मा	15·00
कच्चे अक्षर	(संस्मरण)	: अमृता प्रीतम	16·00
मिस्टर चोखेलाल	(हास्य-व्यंग्य)	: डा. बरसानेलाल चतुर्वेदी	16·00

(हिन्द पाकेट बुक्स का सहयोगी संस्थान)

सरस्वती विहार

21, दयानन्द मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

First Time in India

●

Anthologies of Children's literature in Hindi

1.	Bachchon ke Sau Natak (100 plays for children)	pp. 608	Rs. 75.00
2.	Bachchon ki Sau Kavitayen (100 poems for children)	pp. 136	Rs. 35.00
3.	Bachchon ki Sau Kahaniyan (100 stories for children)	pp. 308	Rs. 50.00
4.	Bachchon ke Barah Upanyas (12 novels for children)	pp. 352	Rs. 50.00
5.	Bal Sahitya : Rachna aur Samiksha (Children's literature : Creative writing and criticism)	pp. 224	Rs. 40.00

Well bounded with multi-coloured and glazed titles.

● This set is a valuable and significant addition in the treasure of the libraries.

● ● Readers—Students and Scholars will find it very useful at all times.

● ● ● More than 200 reputed writers have contributed.

Pleese address your orders or enquiries to :

●

SHAKUN PRAKASHAN

3625, Subhash Marg, New Delhi - 110002

Telephones : 271818. 263985. 274378

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालयों में संगृहणीय महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

नाटक तथा एकांकी

संध्या का सूर्य : श्री व्यथित हृदय 8.50
अमृत मंथन : श्री व्यथित हृदय 9.50
रेत का कमल : श्री व्यथित हृदय 12.50
अहंकार : गोविन्दवल्लभ पन्त 6.50
स्वर्णविहान पद्यनाटिका हरिकृष्ण प्रेमी 4.00
शब्दों के हाशिए : डॉ० देवराज 'पथिक' 8.50
ललित एकांकी : डॉ० रामकुमार वर्मा 8.50
नए एकांकी : विष्णु प्रभाकर 8.50
हास्य एकांकी : दयाप्रकाश सिन्हा 6.00
अस्सी तोला सोना : ईश्वर शर्मा 6.00

उपन्यास

बहती रहे नदिया : श्रीराम शर्मा 'राम' 12.50
अदृश्य रेखाएँ : ,, ,, 8.00
मेंहदी रचे मेरे हाथ : रमेशचन्द्र जैन 8.00
कल्पना : विपिन झवेरी 8.00
बसन्त की कल्पना : कुमुद झिंगरन 7.00
फैसला : प्रतापनारायण टण्डन 7.00

कहानी

कुछ और कितना : डॉ० महीपसिंह 6.00
अपनी अपनी आस्था: मनहर चौहान 5.50
रीती स्मृतियाँ : अवधेश कुमार सिन्हा 6.00
श्रीनिवास की श्रेष्ठ कहानियां :
बी० आर० नारायण 8.50
शेष इतिहास : रमेश उपाध्यक्ष 6.00
इकाइयों के बीच : प्रभाकर द्विवेदी 7.00

जीवनी

मेरी मुलाकातें : डॉ० माजदा असद 15.00
सोरों का सन्त : रामकृष्ण 4.00
गोस्वामी तुलसीदास : श्री व्यथित हृदय 4.00
मीराबाई : श्री व्यथित हृदय 4.00
सीढ़ी का सन्त : सुशील कुमार 4.00
परमहंस रामकृष्ण : श्री व्यथित हृदय 3.50
महर्षि अरविन्द : श्री व्यथित हृदय 4.00
राजाराम मोहनराय : ,, ,, 3.50
महामन्त्र मदन मोहन मालवीय
: सुशील कुमार 4.00
पंजाब केसरी लाला लाजपतराय
: सुशील कुमार 4.00

साहित्यिक ग्रंथ

शोध प्रबन्ध

हिन्दी गद्य साहित्य में अलंकार योजना
—डॉ० ओमप्रकाश शर्मा 30.00
श्रृंगार काल का पुनःमूल्यांकन
—डॉ० रमेश कुमार शर्मा 40.00
निराला के काव्य का शैली वैज्ञानिक अध्ययन
—डॉ० वेदव्रत शर्मा 40.00
कामायनी की कथा गवेषणात्मक अनुशीलन
—डॉ० वीरसिंह 40.00
छाया वादोत्तर काव्य में बिम्ब विधान
डॉ० उमा अष्टवेश 40.00
हिन्दी कहानियों में द्वन्द्व
—डॉ० सुमन महरोत्रा 40.00
बावरी-पंथ के हिन्दी कवि
—डॉ० भगवतीप्रसाद शुक्ला 40.00
रीतिकालीन रीति कवियों का काव्य शिल्प
—डॉ० महेन्द्र कुमार 65.00
साहित्यिक शोध के आयाम
—डॉ० शशिभूषण सिंहल 17.50

साहित्यिक निबन्ध

समीक्षात्मक निबन्ध : डॉ० सुरेशचन्द्र गुप्त 15.00
जिज्ञासा : डॉ० नरेश 5.00
सवा सौ श्रेष्ठ निबन्ध प्रो० तिलकराज शर्मा 30.00
मध्य युगीन काव्य : डॉ० ओमप्रकाश 12.50

साहित्यिक इतिहास

हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास
—प्रो० तिलकराज शर्मा 11.50
हिन्दी साहित्य और स्वाधीनता-संघर्ष
—डॉ० धर्मपाल सरीन 12.50
हिन्दी साहित्य का आदिकाल भक्तिकाल तथा
रीतिकाल —डॉ० रामप्रकाश 4.55

काव्यशास्त्र तथा भाषा विज्ञान

पाश्चात्य काव्यशास्त्र दृष्टि एवं दर्शन
—डॉ० पुष्पा बंसल 22.50
भारत की सम्पर्क भाषा
—डॉ० देवीदत्त शर्मा, डॉ० कृष्ण मधोक 10.00
हिन्दी उच्चारण और वर्तनी
—डॉ० भगवती प्रसाद शुक्ल 10.00

सन्दर्भ ग्रन्थकोश

विश्व सूक्ति कोश : श्रीशरण (पांच खण्ड) 12.00
भारतीय व्यक्ति कोश :
—डॉ० भगवतशरण उपाध्याय 25.00
अभिनव पर्यायवाची कोश : धर्मपाल गुप्त 15.00

आर्य बुक डिपो

३०, नाई वाला, करौल बाग, नई दिल्ली

फोन : 561221

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी में सभी विषयों में प्रकाशित पुस्तकों का एकमात्र विक्रय केन्द्र

राजधानी में हिन्दी पुस्तकों का आधुनिक शो रूम

हिन्दी बुक सेन्टर

4/5-बी, आसफअली रोड,
नई दिल्ली-110002
फोन : 278474, 273335.

द्वारा प्रसारित कुछ विशिष्ट प्रकाशन

तू तू	(नाटक)	आसतानन्द सदासिंह	7·00
वसन्तराग	(उपन्यास)	गुरुदत्त	16·00
काहे होत उदास	,,	गुरुदत्त	16·00
मेंहदी	,,	गुलशन नन्दा	22·00
वचन	,,	मुसाफिर	12·00
सागर और सीपियाँ	,,	अमृता प्रीतम	10·00
1978 की श्रेष्ठ कहानियाँ	(कहानी)	स० डा० महीपसिंह	18·00
उन्मुक्त गगन में	(काव्य)	नरेन्द्र जैन	25·00
टूटते अन्धेरे	,,	अरुणा कपूर	20·00
जय गोमटेश्वर	(यात्रावृत्त)	अक्षयकुमार जैन	8·00
धरती मेरी माता	(उपन्यास)	जे० एस० कंवल	16·00
एक अन्धेरी शाम	,,	कर्तारसिंह दुग्गल	7·00
उर्वशी	(काव्य)	दिनकर	12·00
रूसी साहित्य का इतिहास	(परिचयात्मक)	वीर राजेन्द्र ऋषि	30·00
यौन व्यवहार अनुशीलन	(काम मनोविज्ञान)	दयानन्द वर्मा	20·00
पश्चिम के तीन रंग	(यात्रावृत्त)	दयानन्द	15·00

- शोध प्रबन्ध
- समीक्षा एवं आलोचना
- कोश तथा संदर्भ-ग्रन्थ
- कहानी, उपन्यास, नाटक एकांकी
- अन्य सभी विषयों का

सहयोगी संस्थाएँ :

- ☐ स्टार पब्लिकेशन्स
- ☐ स्टार बुक बैंक (प्रा०) लि०
- ☐ स्टार बुक सेन्टर (सेलस)

सूचीपत्र निःशुल्क मंगायें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1978-79 का उत्कृष्ट प्रकाशन

सूर-पंच शतक	डा० नगेन्द्र; डा० मनमोहन गौतम	50.00
सूर शतक	डा० मनमोहन गौतम	20.00
संत-गुरु रविदास वाणी	डा० बी० पी० शर्मा	30.00
हिन्दी के श्रेष्ठ उपन्यासकार (खण्ड 1)	डा० रवेलचन्द आनन्द	50.00
नैतिकता और सगुण भक्ति साहित्य	डा० विद्याधर घसमाना	30.00
सरल साहित्यिक निबन्ध	सुषमारानी गुप्ता	20.00
तुलसीदास की तद्भव शब्दावली (शोध प्रबन्ध)	डा० कमलेश्वर भट्ट	25.00
मध्यकालीन भक्त-कवियों की ब्रह्म-परिकलपना	प्रो० प्रेमसागर	30.00
कवि 'तरुण' दृष्टि और सृष्टि	डा० शांतिस्वरूप गुप्त	25.00
नागरी लिपि का उद्भव और विकास (शोध प्रबन्ध)	डा० ओमप्रकाश भाटिया	60.00
महिला कहानीकारों की कहानियों में प्रेम का स्वरूप	सरिता सूद	15.00
महादेवी का संस्मरणात्मक गद्य (द्वितीय संस्करण)	चरणसखि शर्मा	20·00
औचित्य सिद्धान्त और हिन्दी का रीतिकाव्य (शोध प्रबन्ध)	डा० सुरेशचन्द्र त्रिवेदी	35.00
इलाचन्द्र जोशी के औपन्यासिक नायक का अन्तर्द्वन्द्व	राजेन्द्र जैन	15.00
निबन्ध कौशल (अष्टम संस्करण)	तनसुखराम गुप्त	15.00
भाग्यचक्र (उपन्यास)	मामचन्द सैनी	7.00
स्वार्थी (उपन्यास)	विजयकुमार गुप्त	10.00
भारतीय शिक्षा	डा० शिवराज सिंह	20.00
अग्निजा (कविता-संग्रह)	वसन्तजीत सिंह हरचन्द	15.00
विश्वरूपा (कविता-संग्रह)	विजयमाला पंडित	20.00
दायरे : एक नया कवि सप्तक	डा० कृष्णा रैना	15.00
भारतीय कृष्णकाव्य और सूरसागर	डा० नगेन्द्र	60.00
हिन्दी उपन्यास वार्षिकी (1976)	सूर्यकान्त गुप्त	100.00
निबन्ध-निर्मल	तनसुखराम गुप्त	5.00
छोटी बहू (उपन्यास)	रोशनलाल सुरीरवाला	12.50
कर्म पूर्ति (उपन्यास)	सत्य शकुन	20.00

सूर्य प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली-6

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्जनात्मक साहित्य के प्रकाशन में अग्रणी

राजकमल प्रकाशन

और उसका एक ऐतिहासिक प्रकाशनायोजन

सुमित्रानंदन पंत ग्रन्थावली

प्रकाशित होने के सिर्फ एक माह बाद—बृहत्काय सात खण्डों में

करीब साढ़े तीन हजार प्रष्ठों पर सुमुद्रित समूचे पंत-साहित्य का ! पहला संस्करण समाप्त

दूसरा संस्करण इसी मास प्रकाश्य !

(डिमाई आकार, आकर्षक जिल्द में प्रत्येक खण्ड का मूल्य : रु० 60.00)

'राजकमल के कुछ और प्रतिष्ठित लेखक
और उनकी सचित्र पुस्तकें

उपन्यास

बाणभट्ट की आत्मकथा : हजारी प्रसाद द्विवेदी
भूले-बिसरे चित्र : भगवती शरण वर्मा 15·00
तमस : भीष्म साहनी 40·00
एक चिथड़ा सुख : निर्मल वर्मा 18·00
मैला आंचल : फणीश्वर नाथ 'रेणु' 25·00
रागदरबारी : श्रीलाल शुक्ल 28·00
जिन्दगी नामा : कृष्णा सोबती 25·00
आधा गाँव : राही मासूम रजा 40·00

कविता-संग्रह 25 00

परिमल : सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
इतने पास अपने : शमशेर बहादुर सिंह 16·00
आत्महत्या के विरुद्ध : रघुवीर सहाय 16·00
जंगल का दर्द : सर्वेश्वरदयाल सक्सेना 10·00
संसद से सड़क तक : धूमिल 10·00

कहानी-संग्रह 15·00

मेरी कहानियां : भगवती चरण वर्मा
पटरियां : भीष्म साहनी 20·00
ठुमरी : फणीश्वरनाथ 'रेणु' 13·00
जलती झाड़ी : निर्मल वर्मा 8 00

शोध-आलोचना 8·00

कबीर : हजारी प्रसाद द्विवेदी
निराला की साहित्य साधना-१ : रामविलास शर्मा 18·00
निराला की साहित्य साधना-२ : रामविलास शर्मा 55·00
निराला की साहित्य साधना-३ : रामविलास शर्मा 40·00

सम्पूर्ण सूचीपत्र तथा अन्य जानकारी के लिये लिखें 40·00

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

8, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली - 110002

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी पुस्तक का विशालतम भण्डार

सूची—1980

उपन्यास

● **यज्ञदत्त शर्मा**

कुमुद, मधु, ललिता, इन्साफ, बदलती राहें, देवयानी, पाँचाली, दूसरी बार। 15 रुपये प्रत्येक

झुनिया की शादी, स्मृति चिह्न, सब का साथी, रूप-विरूप, बसंती बुआजी। 20 रुपये प्रत्येक

विकृति का अंत, स्वप्न खिल उठा, शिलान्यास, मुक्तिपथ। 30 रुपये प्रत्येक

युगारम्भ, अर्द्ध विराम। 32 रुपये प्रत्येक

तूफान के बाद, हिमालय की बेदी पर, रजनीगंधा, अपराधिनी, नारंग। 16 रु० प्रत्येक

फूल और कांटे, परिवार। 35 रु० प्रत्येक

एक स्वप्न एक सत्य, गोमती के किनारे 12·00

बदलता युग 25·00

मिलन 13·00

पुरस्कार 10·00

खून की हर बूँद 9·00

● **इन्द्र विद्यावाचस्पति**

आत्म बलिदान 50·00

जमींदार 15·00

अग्नि परीक्षा 17·00

सरला की भाभी, बलिदान 25 रु० प्रत्येक

● **मुरारीलाल त्यागी**

एक कदम और, बड़भागिनी, बीमार कौन बैरिस्टर 15 रु० प्रत्येक

विश्वास 16·00

● **रजनीश**

पश्चात्ताप, शहंशाह, इमारतें 16 रु० प्रत्येक

● **दिवाकर**

तुम्हारी मंजिल, शरीफजादा, दण्ड विधान, संन्यासी 15 रु० प्रत्येक

● **शारदा**

कांदीद 15·00

● **रमेश अहसास**

युग बदल गया 16·00

● **इन्द्रा स्वप्न**

टूटे मनके 16·00

अनुसंधान व अलोचना

● **डॉ. नत्थूलाल गुप्त**

महाभारत : एक समाज-शास्त्री अनुशीलन 100·00

● **कृष्णलाल**

तार सप्तक के कवि: काव्य शिल्प के मान 45·00

● **डॉ. रामप्रसाद मिश्र**

प्रसाद : एक आलोचनात्मक सर्वेक्षण 60·00

नया साहित्य नये आयाम 30·00

प्रसाद : गद्यकार 30·00

प्रसाद : कवि 25·00

● **डॉ. सुमित्रा त्यागी**

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य में जीवनदर्शन 50·00

हिन्दी उपन्यास : आधुनिक विचार धाराएँ 40.00

● **यज्ञदत्त शर्मा**

हिन्दी साहित्य का आदिकाल पुनर्मूल्यांकन 15·00

हिन्दी साहित्य का भक्तिकाल पुनर्मूल्यांकन 20·00

हिन्दी साहित्य का रीतिकाल पुनर्मूल्यांकन 15·00

प्राचीन हिन्दी साहित्य 45·00

यात्रा साहित्य

● **हंसराज दर्शक**

यात्रा संगम 12·00

पार्वतों की गूँज 10·00

● **यशपाल**

त्रिपुरा की कहानी, अरुणाचल की कहानी, मिजोरम की कहानी, मेघालय की कहानी, मणिपुर की कहानी, नागालैण्ड की कहानी 6 रु० प्रत्येक

समुद्र की खोज, सितारों की खोज, अच्छा कौन, भूकम्प और ज्वालामुखी, आईन्स्टीन्हों, टेलिस्मेन, भारत के तीन प्रमुख वीर 5 रु० प्रत्येक

भारत-दर्शन 30·00

अंतरिक्ष और पाताल 20·00

साहित्य प्रकाशन

मालीवाड़ा, दिल्ली-110006

दूरभाष : 260324 262043

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रेष्ठ बाल-साहित्य

गणित का प्रश्न	नरेन्द्र कोहली	4.00
अशर्फियों का घड़ा	डॉ० इन्द्र 'वारिज'	4.00
बदी बदला	,, ,,	4.00
परिवार नियोजन	डॉ० बसंत बी० शर्मा	4.00
समाज के सुपुत्र	डॉ० श्यामसिंह शशि	4.00
ऋग्वेद की कथायें	रवेल चन्द आनन्द	4.00
थापड़ थैया	रामरतन बडोला	4.00
हरियाणा की लोक कथाएँ	जनक आनन्द	4.00
उत्तर प्रदेश कथाएँ (तृतीय संस्करण)	सुरेश सलिल	4.00
मध्य प्रदेश की लोक कथाएँ	दुर्गाप्रसाद प्रशांत	4.00
नागालैण्ड की लोक कथाएँ	मधुरूप वाचस्पति	4.00
आसाम की लोक कथाएँ	विश्राम वाचस्पति	4.00
सूर्य की शक्ति (द्वितीय संस्करण)	कैलाश साह	4.00
रक्त की कहानी (द्वितीय संस्करण)	उत्तरासेन	3.00
हमारा ब्रह्माण्ड	सुधीर कुमार	4.00
वायु	चन्द्र सेन	4.00
आंगन का फूल	महेशचन्द स्वदेशी	5.00
भोजन और हृदय	सुधीर सेन	4.00
आज के अस्त्र-शस्त्र (तीसरा संस्करण)	डॉ० श्यामसिंह शशि	4.00
कुरान की कहानियां (तीसरा सं.)	बदीउज्जमा	4.00
पंचतंत्र की कहानियां	बदीउज्जमां	4.00
मेरा विकास-मेरी शिक्षा	जगदीशचन्द्र वर्मा	4.00
वायु सेना की कहानी (तीसरा संस्करण)	फ्ला० लेफ्टी० जगदीशचन्द्र मलिक	4.00
उस पार	ऋतुराज	4.00
ज्ञानी तोता	विद्या कनौजिया	4.00
एक था सपेरा	रामेश्वर 'अशांत'	4.00
भारत दुर्दशा	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	3.00
रोबो और कम्प्यूटर	सुरेश सलिल	4.00
हौआ	शंकर बाम	5.00
राहुल	डॉ.शशि	4.00
चुंगल चिड़िया	उमाकान्त जोशी	3.50
दुलारा	श्रीमती ग्रेस फिलिप	4.00
मनोरंजक कथाएं	लखनलाल श्रीवास्तव	3.50
अनोखे मित्र	हिमांशु जोशी	5.00
अपनी करनी अपने आगे	गुणानन्द थपलियात	4.00
मौलाना अबुल कमाल आजाद	डॉ० सैयद असद अली	3.00
इन्दिरा गाँधी	सतीश अग्रवाल	4.00

विविध :

अफगानिस्तान की सौर क्रान्ति	जेता	9.00
भुट्टो की कानूनी हत्या	हरिप्रकाश त्यागी	12.00

1979 के नये प्रकाशन

आलोचना :

हिन्दी उपन्यास बदलते संदर्भ	डॉ० शशिभूषण सिंहल	40.00
सूफी कविता की पहचान	डॉ० यश गुलाटी	35.00
हिन्दी नाटक और लक्ष्मीनरायणलाल की रंग-यात्रा	डॉ० चन्द्रशेखर	30.00
समकालीन कहानी की पहचान (पुरस्कृत)	डॉ० नरेन्द्रमोहन	20.00

उपन्यास :

परीक्षा गुरु	श्रीनिवासदास	35.00
एक चूहे की मौत (पुरस्कृत)	बदीउज्जमां	15.00
इन्द्र धनुष के पार	सत्येन्द्र शरत्	9.00
अनुकम्पा	व्योम राजस्थानी	10.00
नगर पुत्र हँसता है	धर्मेन्द्र गुप्त	22.00
अच्छा हुआ यह भी	श्याम विमल	20.00
छोटा खुदा	कुलदीप बग्गा	12.00
प्रवाह	धनराज चौधरी	9.00
साधुसिंह परचारी	सुदीप	10.00
चार रास्ते	कमल शुक्ल	10.00

प्रवीण प्रकाशन

महरौली पोस्ट आफिस के पास, नई दिल्ली--110030

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Life and Political Philosophy of Lokmanya Tilak—Dr. V. P. Varma 60.00
Personnel Systems of Urban Bodies in India —Dr. A. P. Padhi 30.00
Provisional Parliament in India —Mrs. Nandini Upreti 17 00
Political Philosophy-Dr. V.P. Varma 40.00
Modern Indian Political Thought —Dr. V.P. Varma 30.00
Political Philosophy of Mahatma Gandhi of Sarvodaya —Dr. V. P. Varma 30.00
Study of Public Administration in India —Dr. S R. Maheshwari 25.00
Panchayatiraj Administration in Rajasthan —Dr. Iqbal Narain 25.00
The Great Political Thinkers East and West —Dr. R. C. Gupta 25 00
Public Administration-Dr.A.Avasthi & Dr. S R. Maheshwari 27.00
लोकप्रशासन—अवस्थी एवं माहेश्वरी 28.00
आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन —डा. वी. पी. वर्मा 25.00
दो विश्व-युद्धों के बीच अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध —ई. एच. कार 10.00
अकबर महान् —बी. एन. लूनिया 30.00
जहाँगीर —के. एल. खुराना 10.00
भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का विकास —बी. एन. लूनिया 13.50
प्राचीन भारतीय संस्कृति—बी.एन. लूनिया 30.00
प्राचीन भारत —एल. पी. शर्मा 14.00
मध्यकालीन भारत —एल. पी. शर्मा 18.00
आधुनिक भारत —एल. पी. शर्मा 14.00
इंगलैण्ड का इतिहास —एल. पी. शर्मा 14.00
दिल्ली सल्तनत —एल. पी. शर्मा 12.50
भारत में मुस्लिम शासन का इतिहास —एस आर. शर्मा 25.00
भारत का राजनीतिक इतिहास (700 से 1240) —के. एल. खुराना 15.00
मानव इतिहास की रूपरेखा —एस. आर. शर्मा 8.00
आधुनिक भारत का निर्माण—एस.आर. शर्मा 8.50
भारत में मुगल साम्राज्य—एस.आर. शर्मा 25.00
आधुनिक यूरोप—पूर्वार्द्ध (1789-1871) —डा. बी. एन. मेहता 11.00
आधुनिक यूरोप—उत्तरार्द्ध (1871-1956) —डा. बी. एन. मेहता 11.00

Evolution of Indian Culture —B. N. Luniya 21.00
Life & Culture in Ancient India —B. N. Luniya 22.00
India's Empire of Mind —S. B. Mookerji 15.00
Monetary Economics —Dr. M. L. Seth 35.00
Macroeconomics—Dr. M. L. Seth 35.00
Microeconomics ,, ,, 34.00
Principles of Economics ,, 21.95
Introduction to Economics and Mathematical Economics —Dr. H. S. Agarwal 24.00
A Mathematical Approach to Econamic Theory —Dr. H. S. Agarwal 16.00
An Introduction to Keynestan Economics—Dr. M. L. Seth 15.00
माइक्रो अर्थशास्त्र—डा. एम. एल. सेठ 28.00
मेक्रो अर्थशास्त्र—डा. टी. टी. सेठी 22.50
अर्थशास्त्र के सिद्धान्त भाग-1 —डा. एच. एस. अग्रवाल 20.90
अर्थशास्त्र के सिद्धान्त भाग-2 —डा. एच. एस. अग्रवाल 16.00
लोक अर्थशास्त्र —डा. जे. सी. पन्त 24.00
अर्थशास्त्र में प्रारम्भिक गणित —डा. मेहता एवं मदनानी 12.00
अल्पविकसित अर्थव्यवस्था की समस्याएँ —डा. डी. एस. नाग 18.00
अर्थशास्त्र के सिद्धान्त—डा. एम. एल. सेठ 19.25
केजियन अर्थशास्त्र का परिचय —डा. एम. एल. सेठ 10.00
मौद्रिक अर्थशास्त्र—डा. टी. टी. सेठी 24.00
भारत में आर्थिक नियोजन —जौहरी एवं भण्डारी 30.00
अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र—डा सी.एम. बरला एवं डा. एच. एस. अग्रवाल 26.00
भारतीय अर्थशास्त्र—नाथूराम एवं देराश्री 30.00
मुद्रा एवं बैंकिंग (राजस्व सहित) —डा. टी. टी. सेठी 25.00
A Test Book of Tensor & Rumannian Geometry —Dr. G. C. Sharma and S. K. Singh 10.00

लक्ष्मीनारायण अग्रवाल

पुस्तक प्रकाशक, आगरा-3

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीन विशिष्ट प्रकाशन

● **शाश्वती** — 'अज्ञेय'

'भवन्ती' और 'अन्तरा' के क्रम में मनीषी साहित्यकार की अन्तःप्रक्रियाओं का अन्तिम संकलन। चमत्कारी विचारों-भावनाओं का संग्रह। लेखन में एक सर्वथा नवीन शुरुआत। 20.00

● **स्रोत और सेतु** — 'अज्ञेय'

विविध साहित्यिक-सामाजिक विषयों पर प्रख्यात लेखक के महत्त्वपूर्ण निबंध। इसमें राजेन्द्र प्रसाद व्याख्यानमाला में दिया उनका विशेष चर्चित निबंध 'व्यक्ति और व्यवस्था' भी संकलित है। 12.00

● **ममतामयी माँ मदर टेरेसा** — विजयदेव

सन् 1979 के नोबेल शांति पुरस्कार तथा भारत-रत्न की उपाधि से सम्मानित मदर टेरेसा की यह जीवनी लेखक ने स्वयं मदर व उनके सहकर्मियों से इण्टरव्यू लेकर अत्यंत रचनात्मक और रोचक शैली में प्रस्तुत की है। प्रतिष्ठित कथाकार निर्मल वर्मा की भूमिका भी इसका एक आकर्षण है। अनेकानेक चित्रों से सुसज्जित। 18.00

● **फूलमणि (भारत का प्रथम उपन्यास)** — सम्पादक व अनु० डा० ओमप्रकाश

यह सन् 1852 में बंगला में प्रकाशित भारत के सर्वप्रथम उपन्यास का हिंदी अनुवाद है जिसे हन्ना कैथरीन मलेन्स नामक एक ईसाई महिला ने लिखा था। डा० ओमप्रकाश ने इसे हिंदी में सारगर्भित परिचयात्मक समीक्षा के साथ प्रस्तुत किया है। 16.00

● **आधे सफर की पूरी कहानी** — कृश्न चन्दर

विख्यात कथाकार की आत्मकथा जिसे उनकी संगिनी तथा स्वयं लेखिका सलमा सिद्दीकी ने पूरा किया है। इससे उनके साहित्यिक तथा फिल्मी जीवन पर व्यापक प्रकाश पड़ता है। दुर्लभ चित्रों सहित। 18.00

● **मुट्ठी-बन्द रहस्य** — नरेन्द्र शर्मा

अग्रणी कवि का एक महत्वपूर्ण काव्य-संकलन। सभी कविताएं प्रौढ़ चिंतन तथा अनुभूति से ओतप्रोत हैं। 12.00

● **शोक-सुराही** — अमृता प्रीतम

प्रसिद्ध कवयित्री द्वारा देश-विदेश के कला-व्यक्तित्वों तथा आन्दोलनों पर अन्तरंग साक्षात्कार। 18.00

● **मोहिनी** — विमल कर

साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित श्रेष्ठ बंगला उपन्यास का रूपान्तर। बदलते समाज की विसंगतियों का हृदयग्राही चित्रण। 35.00

● **योद्धा संन्यासी विवेकानन्द** — हंसराज रहबर

प्रसिद्ध साम्यवादी लेखक-विचारक की महत्वपूर्ण कृति जिसमें उन्होंने स्वामी विवेकानन्द की जबरदस्त समर्थनकारी जीवनी प्रस्तुत की है। सभी क्षेत्रों में प्रशंसित। 20.00

● **मुजरिम हाज़िर** — विमल मित्र

दो खंडों में सम्पूर्ण एक युगान्तरकारी उपन्यास जिसमें आज के समाज में फैले अनाचार का अत्यन्त प्रभावी तथा मार्मिक चित्रण प्रस्तुत हुआ है। 75.00

● **झूला** — शिवानी

प्रसिद्ध लेखिका के कुछ बहुत रोचक तथा मार्मिक संस्मरण, रेखाचित्र तथा निबंध। 10.00

● **दूसरा सूत्र** — डा० देवराज

'अजय की डायरी' के विख्यात लेखक का ताजा उपन्यास। दो पीढ़ियों के पारस्परिक संघर्ष तथा ढलती उम्र के प्रेम सम्बन्धों की प्रभावी कथा। 10.00

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीन श्रेष्ठ प्रकाशन

आलोचना तथा शोध :

हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि
—श्री व्यथित हृदय 30.00
उर्वशी एक नवीन दृष्टि
—डा० सतीशकुमार भार्गव 16.00
आलोचना की कुछ नई दिशाएं
—डा० रामप्रसाद मिश्र 20.00
भगवती चरण वर्मा के उपन्यासों में
युग चेतना —डा० बैजनाथ प्रसाद 66.00
छायावादी काव्य में लोकमंगल
की भावना —डा० अम्बादत्त पाण्डेय 35.05
हिन्दी कृष्ण काव्य परम्परा का
स्वरूप विकास डा०मुरारीलाल शर्मा 'सुरस' 45.00
नरोत्तमदास कृत सुदामा चरित
—प्रो० महेश कुमार 20.00
आधुनिक साहित्य : दिशा और दृष्टि
डा० ज्ञानसिंह 'मान' 25.00
मौर्ख्य शास्त्र —डा० रामप्रसाद मिश्र 25.00
डा० रामप्रसाद मिश्र व्यक्तित्व एवं कृतित्व
—प्रो० पवनकुमार 30.00
आधुनिक हिन्दी निबन्ध
—श्री व्यथित हृदय 40.00

उपन्यास साहित्य :

सिमटता सागर —प्रो० ज्ञानसिंह मान 12.00
तीसरा पति —मदन मोहन शर्मा 'शाही' 30.00
पराभव —मधुदीप 10.00
कौन हो तुम —प्रतापसिंह तरुण 15.00
मुगल शहजादी —कमल शुक्ल 5.00
गदाधारी भीम — 5.00
धुंधली भोर —कुलभूषण कालड़ा 12.00
राहें खो गयीं —गोपाली 25.00
तपती छाँव — रमेश अहसास 13.00

कहानी संग्रह :

श्रेष्ठ ऐतिहासिक कहानियाँ
—गोपी कुमार कौशल 8.00
नये गाँव में —रामधार सिंह दिवाकर 9.00
हमगतन —प्रेमसिंह बरनालवी 9.00
वह शिल्पी था —इन्द्रा स्वप्न 12.00
अपने-अपने सुख —रमेश अहसास 12.00
अकेले आदमी का युद्ध —जगदीश चावला 10.00
कुछ प्रेरक और रोचक कथाएँ
—डा० रामप्रसाद मिश्र 10.00

नाटक साहित्य :

हारा हुआ सिकन्दर —जगदीश चावला 5.00
काले लिख न लेख —प्रो० ज्ञानसिंह मान 8.00

जीवनोपयोगी एवं बालोपयोगी साहित्य :

सद्‌विचारों का मधुबन —अमीर परदेशी 10.00
जीवन को तमाशा नहीं तीर्थ बनाइए
—जगदीश चावला 12.50
प्रधान मन्त्री मोरारजी देसाई
—रमेश अहसास 8.00
जी हाँ यह दिल्ली है डा० रामप्रसाद मिश्र 12.60
दादी का खजाना —शंकर बाम 5.00
राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद
—जगदीश चावला 4.00
फूल जो वन गए धूल —कुलभूषण कालड़ा 4.00
एक जोड़ी मम्मी पापा —वीरकुमार अधीर 8.00
भूलना मत काका —आनन्द प्रकाश जैन 6.00
महाबली का भ्रम —आनन्द प्रकाश जैन 6.00

प्रेम प्रकाशन मन्दिर

3012 बल्लीमारान दिल्ली-110006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हमारे यहाँ सभी प्रकार की हिन्दी साहित्य की पुस्तकें उपलब्ध रहती हैं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रतन प्रकाशन मन्दिर

पुस्तक प्रकाशक एवं विक्रेता

अस्पताल मार्ग, आगरा-३

Economics & Commerce

- Principles of Economics —Sundharam & Vaish 22·00
- Advanced Micro Economics —Sundharam & Vaish 22·00
- A Text Book of Economic Theory —Sundharam 22·50
- Monetary Theory—Vaish 24·00
- Public Economic & Public Finance —Andley & Sundhram 25·00
- Public Finance—Andley & —Sundharam 20·00
- Fundamentals of Statistics —Sarin & Balchandani 30·00
- अर्थशास्त्र के सिद्धान्त—सुन्दरम, वैश्य 25·00
- मुद्रा की रूपरेखा—वैश्य 25·00
- आर्थिक विचारों का इतिहास—वैश्य 25·00
- लोक अर्थशास्त्र एवं लोकवित्त —सुन्दरम, एण्डले, अग्रवाल 25·00
- राजस्व—,, ,, ,, 22·50
- नियोजन-देश और विदेश में—भट्टाचार्य 20·00
- भारत में आर्थिक नियोजन —भट्टाचार्य एवं अवस्थी 15·00
- मुद्रा एवं बैंकिंग—वैश्य 18·00
- आर्थिक व्यवस्था और विकास —रूद्रदत्त, अग्रवाल 14·50
- भारत का आर्थिक विकास —बरला, अग्रवाल 22·50
- भारतीय अर्थशास्त्र—बरला, अग्रवाल 22·50
- आय तथा मूल्य सिद्धान्त —सुन्दरम, वैश्य, रुद्रदत्त, 14·00
- व्यापारिक सन्नियम—अग्रवाल 20·00
- व्यावसायिक संगठन एवं प्रबन्ध —महरोत्रा, गुप्त 20·00
- अंकेक्षण—महेश्वरी 10·00

English

- Galsworthy—Justice—Jain 10·00
- Galsworthy—Strife—Shukla 12·00
- Hamlet—Jain, Dubey 15·00
- Macbeth—Jain 15·00
- The Merchant of Venice—Jain 15·00
- Othello—Jain 15·00
- Twelfth Nigt—Jain 15·00
- Julius Caesar—Jain 15·00
- As You Like it-Kamthan, Taudon 1500
- Arms and the man—Sworup 12·00
- The Duchess of Malf —Dutt, Shukla 12·00
- A New Approach To The Art of English Composition —Tandon, Seth Agarwal 40·00
- A New Approach of English Grammer— Tondon, Seth, Agarwal 30·00

History

- आधुनिक यूरोप का इतिहास—हैजेन 25·00
- उन्नीसवीं तथा बीसवीं सदी के यूरोप का इतिहास —Grant, Herold Temperlay 20·00
- भारतीय संस्कृति का इतिहास —भटनागर, शुक्ला 16·00

Politics

- राजनीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त —डा० इकबाल नारायण (सम्पूर्ण) 22·00
- राजनीतिशास्त्र—डा० सिंह 20·00
- आधुनिक विश्व की प्रमुख शासन प्रणालियाँ —गैंड एवं शर्मा 16·00
- लोक प्रशासन—सिंह 25·00
- आधुनिक राजनीति दर्शन—कुलश्रेष्ठ 10·00
- Main Constitution of the world —Gaind Sharma 20·00

Teachers Trainning

- रतन बी० एड० गाइड—नाथूराम शर्मा 45·00
- शिक्षा सिद्धान्त—नाथूराम शर्मा 7·00
- शिक्षा मनोविज्ञान—नाथूराम शर्मा 12·00

Botany

- आनुवंशिकी तथा विकास—कोछर 18·00
- पादप परिस्थितिकी—कोछर 10·00
- A Text Book of Botany Vol. I II 25·00 —Saxena, Sarabhai Hindi & Eng. Edi.
- माध्यमिक वनस्पति विज्ञान —सक्सेना, सारभाई 18·00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यालयों व पुस्तकालयों के लिए हमारे प्रकाशन

शोध-आलोचना

डा० रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'

हिन्दी शिवकाव्य का उद्भव और विकास (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत)	45.00
सूरति मिश्र का काव्य शास्त्र	10.00
शशिनाथ विनोद	10.00

डा० कुमारी सरोज गुप्त

रामचरितमानस की सूक्तियों का विवेचनात्मक अध्ययन	40.00

डा० फजले इमाम

उर्दू साहित्य : एक झलक	10.00

डा० मोतीलाल गुप्त

सुन्दराष्क	10.00
भाषाशास्त्र-प्रवेशिका	10.00

राजस्थानी साहित्य

डा० रामगोपाल गोयल

राजस्थानी के प्रेमाख्यान परम्परा और प्रगति	40.00

डा० कृष्णकुमार शर्मा

राजस्थानी लोकगाथा का अध्ययन	25.00

डा० गोविन्द रजनीश

राजस्थान के पूर्वी अंचल का लोकसाहित्य	20.00

डा० पुरुषोत्तम लाल मेनारिया

पृथ्वीराज रासो और अन्य निबन्ध	10.00

उपन्यास

डा० सत्येन्द्र पारीक

नो वेकेन्सी	10.00
जलते अंगारे	8.00

ज्ञान भारिल्ल

समय की शिला पर	7.50

रंजना निगम

दो दिशा में	10.00

महेन्द्रनाथ

बेटी-तुम्हारे जैसी	12.50

नाटक

डा० सत्येन्द्र पारीक

पारशमणि (राजस्थान सरकार द्वारा पुरस्कृत)	6.00
शह और मात	6.00

ओंकारनाथ दिनकर

भगवान परशुराम	5.50
आन का मान	5.00

डा० रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'

पृथ्वीराज	5.00

शिवरतन थानवी व तिवारी

रेजगारी का रोजगार	8.00

राजानन्द

रंग रंग बहुरंग	7.25
रंग वितान	6.75

कहानी संग्रह

प्रस्थिति दो—सं० ज्ञान भारिल्ल	4.95
प्रतिस्थिति तीन—इकबालसिंह	4.75
खिलखिलाता गुलमोहर —थानवी एवं तिवारी	9.20
अपने आसपास—मणि मधुकर	5.00
बरगद की छाया —डा० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय	5.00
एक और अंतरिक्ष—डा० नवलकिशोर	4.75
चेहरों के बीच—सं० योगेन्द्र किसलय	5.30

कविता

देवपुरुष गांधी (महाकाव्य) रमेशचंद्र शास्त्री	20.00
धरानन्दनी सीता ,,	4.00
विम्ब विम्ब चांदनी—विश्वेश्वर शर्मा	4.00
सूखा गांव—जगकराज पारीक	3.75
धूप के पखेरू—थानवी व तिवारी	7.75
अपने से बाहर अपने में—मंगल सक्सेना	4.75
इस बार—नंद चतुर्वेदी	4.70
समय के सन्दर्भ—जुगमंदिर तायल	5.25
नई रोशनी	10.00

राजस्थान प्रकाशन, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर

दूरभाष : 72443 • निवास : 76597

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकों के रंगारंग संसार में पधारें

चतुर्थ विश्व पुस्तक मेला

प्रगति मैदान, नयी दिल्ली

29 फरवरी से 11 मार्च, 1980 तक

- लगभग 500 स्टालों पर लाखों की संख्या में भारतीय तथा विदेशो पुस्तकों का विशाल प्रदर्शन।
- पुस्तकें बच्चों, व्यस्कों, नवसाक्षरों, विद्वानों—सभी के लिए।
- मेले का एक आकर्षण है भारतीय भाषाओं का मंडप जहाँ भारतीय भाषाओं के प्रकाशन में हुई प्रगति की एक झलक मिलेगी।
- इसके अलावा राष्ट्रीय प्रदर्शनी में भी अवश्य पधारें। अंग्रेजी तथा भारतीय भाषाओं की समसामयिक चुनी हुई पुस्तकों की यह प्रदर्शनी इस मेले का एक विशेष आकर्षण है।
- मेले में पुस्तकों की खरीद पर 10% की विशेष छूट।

मेले का समय

शुक्रवार, 29 फरवरी : सायं 6–00 से रात 8–00 बजे तक

सप्ताह के अन्य दिन : दोपहर 1–30 से रात 8–00 बचे तक

रविवार, 2 मार्च दोपहर 3.00 से रात 8.00 बजे तक

शनिवार, मार्च 8 व रविवार, 9 मार्च : प्रातः 10–30 से रात 8–00 बजे तक

प्रवेश शुल्क

व्यस्क : 50 पैसे   बच्चे : 25 पैसे

●

नेशलन बुक ट्रस्ट इण्डिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A. Contours and Landmarks of Hindi Literature

B. This is the first sustained effort to project through English the contours and landmark of Hindi literature. The series consists of 12 volumes of about 250 pages each.

Size : Demy Octo :

B. *General Editor* : **Prof. NAGENDRA**

CONTOURS

1. Hindi Literature : A General Survey
2. Hindi Poetry : Ancient and Medieval
3. Modern Hindi Poetry
4. Hindi Finction
5. Hindi Drama and Stage

LANDMARKS

6. Kabir
7. Bihari
8. Premchand
9. Maithilisharan Gupta
10. Jayshanker Prasad
11. Suryakant Tripathi Nirala
12. Sumitra Nandan Pant

B. The General Editor, who is himself a renowned critic, is being assisted by a team of eminent writers with proficient knowledge of various aspects of Hindi literature and a good command on English language.

The first set to be published by October, 1980 comprises 4 works.

1. **Modern Hindi Poetry** : a monograph by the leading Hindi poet *Shri Girijakumar Mathur*
2. **Premchand** : an anthology of critical articles on the mind and art of Premchand
3. **Maithilisharan Gupta** : an anthology covering various facets of Maithilisharan's contribution to Indian culture and Hindi **literature**
4. **Hindi Drama & Stage** : A deep survey of Hindi Drama and Stage by *Birendra Narayan*, Director : Songs and Drama Division.

Bansal and Co.

PUBLISHERS AND BOOKSELLERS

K 16, Naveen Shahdara, Delhi 110032 (India)

Telephon : 204292

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक विक्रेताओं के यहां से बखूबी बिकने वाले कुछेक नये प्रकाशन

गीत-संग्रह

छाया मत छूना, मन	गिरिजाकुमार माथुर	10-00
बन्द न करना द्वार	रमानाथ अवस्थी	14-00

नाटक

राम की लड़ाई	डा० लक्ष्मीनारायण लाल	10-00
रात बीतने तक तथा अन्य ध्वनि नाटक (पु० मु०)	मोहन राकेश	25-00

उपन्यास

जो इतिहास में नहीं है	विमल मित्र	17-00
मयखाने उजाड़ दो	रिचर्ड काण्डन	17-00

चित्रपट-कथा

मीरा : कथा, मोंताज अनुसंधान और पटकथा	गुलजार	पक्की जिल्द 30-00
		पेपर बैंक 30-00

आलोचना

रामलीला परम्परा और शैलियां	डॉ० इन्दुजा अवस्थी	45-00

कुछेक अंग्रेजी के प्रकाशन

Fiction

The Flounder, by Gunter Grass 35-00
Jake's Thing, by Kingsley Amis 20-00
Undesirable Alien, by Regis Debray 20-00

Current Politics

Z. A. Bhutto : Notes from the Death Cell, B. L. Kak 20-00

Ecological Global Economics

The Twenty Ninth Day by Lester R. Brown 60-00

नयी कृतियाँ जो प्रेस में हैं, शीघ्र छपेंगी

जीवन माने दुःख ही दुःख (उपन्यास)	विमल मित्र
आगरा बाजार	हबीर तनवीर
दर्द आयेगा दबे पांव	शीला भाटिया
मुन्नीबाई 'हिजाब'	सय्यद योहम्मद मेंहरी

(नजीर अकबरावादी, फैज अहमद 'फैज' और हजरत दाग की शायरी, शख्सियत और जमाने पर आधारित तीन नाटक)

मेरी आवाज सुनो (गीत-संग्रह)	कैफी आजमी
महमूद गजनबी (इतिहास)	प्रो० मोहम्मद हबीब

और भी अनेक-मौलिक हिन्दी की व अँग्रेजी, मराठी, कन्नड़ और बंगला से अनूदित श्रेष्ठ, लोकप्रिय कृतियाँ—जो केवल पुस्तकालयों की शोभा बन कर नहीं रह जायेंगी, वरन् पाठकों द्वारा हाथों हाथ खरीदी और पढ़ी जायेंगी।

राधाकृष्ण प्रकाशन

2 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

UNION INTERNATIONALE DES EDITEURS
INTERNATIONALE VERLEGER-UNION
INTERNATIONAL PUBLISHERS ASSOCIATION

Secrétaire général
J A Koutchoumow
Avenue de Miremont 3
1206 Genève
Téléphone 46 10 18
Télégr Inpublass

To: Mr R.S.BHATT, Editor

February 11, 1980

The Fourth World Book Fair which will take place in New Delhi from February 29 to March 9 is an extremely important event which extends far beyond the Indian frontiers and indeed Asian frontiers.

Publishers from all continents, mainly from the United States and Europe, come to the New Delhi Book Fair in ever growing numbers not only to show their books but also to know more about the Indian Book Industry and to establish co-edition agreements and exchange of rights.

The World Book Fair of New Delhi can and must be the most important International Book Fair for the Asian continent. Indian publishers have the required know-how and expertise and all the required international contacts to make this possible.

We wish to all segments of the Indian publishing industry whether it be in national languages or in English the greatest success on the occasion of the IVth World Book Fair in New Delhi.

J.A.KOUTCHOUMOW
Secretary General of
the IPA

संदेश

११ फरवरी, १९८०

नयी दिल्ली में २९ फरवरी से ९ मार्च तक होने वाला चौथा विश्व पुस्तक मेला अत्यधिक महत्त्व का अवसर है और इसकी सीमाएं भारतीय सीमाओं से ही नहीं, वास्तव में तो सारे एशिया की सीमाओं से आगे निकल चुकी हैं।

अपनी पुस्तकें दिखाने के साथ-साथ, भारतीय पुस्तक उद्योग के विषय में और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए, सहयोगी प्रकाशन के समझौते करने और पुस्तकाधिकारों का आदान-प्रदान करने के लिए भी सभी महाद्वीपों के, विशेषत: अमेरिका और यूरोप के, प्रकाशक अधिकाधिक संख्या में नयी दिल्ली पुस्तक मेले में आते हैं।

नई दिल्ली का विश्व पुस्तक मेला एशिया महाद्वीप का सबसे बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला हो सकता है, और उसे ऐसा अवश्य होना चाहिये। इसे संभव बनाने के लिए भारतीय प्रकाशकों के पास वांछित, दक्षता विशेषज्ञता और अन्तर्राष्ट्रीय संपर्क पर्याप्त मात्रा में है।

नई दिल्ली में हो रहे चौथे विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर भारतीय पुस्तक व्यवसाय के हर अंग के प्रति, चाहे वह राष्ट्रीय भाषाओं से संबंधित हो चाहे अंग्रेजी से, हम अधिकतम सफलता की कामना करते हैं।

जे० ए० कोटचूमोव
महामंत्री
अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशक संघ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेषांक विज्ञापन

अनुपम प्रकाशन, जयपुर	१३६
अनुपम प्रकाशन, रायपुर	४६
अन्नपूर्णा प्रकाशन	९२
अल्पना ब्लाक्स	१४८
अलंकार प्रकाशन	१०६
अशोक प्रकाशन	११२
आत्माराम एण्ड सन्स (आवरण)	२
आर्य बुक डिपो	५
उमेश प्रकाशन	१५०-१५१
किताब घर	४८
ग्रन्थम्	१५४-१५५
गीता इण्टरप्राइजेज	८६
चम्पालाल रांका एण्ड कम्पनी	१
चम्पालाल रांका एण्ड कम्पनी	२९-३२
चिन्मय प्रकाशन	११०
जनरल बुक बाइण्डर्स	९२
जयपुर पब्लिशिंग हाउस	१३८
जवाहर पब्लिकेशन्स	६०
तुली स्क्रीन प्रिन्टर्स	१४६
दिल्ली पेपर कम्पनी	८६
दिव्य जीवन साहित्य प्रकाशन	१४८
दी स्टूडेण्ट बुक कम्पनी	८८
देव नागर प्रकाशन	१३२
देहाती पुस्तक भण्डार (आवरण)	४
देहाती पुस्तक भण्डार	१४४-१४१
नवयुग साहित्य सदन	८६
नेशनल बुक ट्रस्ट	१६
नेशनल बुक ट्रस्ट	१०८
नेशनल पब्लिशिंग हाउस	८१-८४
डायमण्ड पाकेट बुक्स	१०१-१०४
डी० के० पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स	६६
परमहंस प्रेस	११०
पराग प्रकाशन	९६
पंचशील प्रकाशन (आवरण)	३
प्रगति प्रकाशन	१८५
प्रतियोगिता दर्पण	५०
प्रभात प्रकाशन	९०
प्रवीण प्रकाशन	१०
प्रसाद प्रकाशन	२
प्रेम प्रकाशन	१३
पाण्डुलिपि प्रकाशन	९८
पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी	१२०
पुस्तक महल	७४
बग्गा ट्रांसपोर्ट कम्पनी	७०
बंसल एण्ड कम्पनी	१७
भारती प्रिण्टर्स	५६
भारतीय ज्ञानपीठ	२२
भारतीय साहित्य प्रकाशन	८८
मनोज पाकेट बुक्स	४०
मीनाक्षी प्रकाशन	७०
रतन प्रकाशन मन्दिर	१४
रमेश बुक डिपो	६१-६४
रंगभूमि प्रकाशन	१४०
रंजन प्रकाशन	८०
राजकमल प्रकाशन	८
राज पब्लिशिंग हाउस	७२
राजपाल एण्ड सन्स	१२
राजस्थान प्रकाशन	१५
राजस्थान साहित्य अकादमी	१३०
राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी	४१-४४
राधाकृष्ण प्रकाशन	१६
लक्ष्मी टेडर्स	१२६
लक्ष्मी नारायण अग्रवाल एण्ड सन्स	११
लाहौर पेपर स्टोर्स	७८
विष्णु कुमार एण्ड ब्रादर्स	७६
विश्वविद्यालय प्रकाशन	१८६-१८७
विशाल साहित्य सदन	१००
विनोद पुस्तक मन्दिर	१२१-१२४
शकुन प्रकाशन	४
शब्दकार	१९७-२००
शान प्रिण्टर्स	१४०
शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी	११४-११५
सन्मार्ग प्रकाशन	९४
सस्ता साहित्य मण्डल	६८
सरस्वती बिहार	३
स्वास्तिक ट्रेडिंग कम्पनी	४०
सामयिक प्रकाशन	५८
साहित्य केन्द्र प्रकाशन	१८८
साहित्य प्रकाशन	९
साहित्य रत्नालय	१३४
सुबोध पाकेट बुक्स	५४
सुरुचि साहित्य	१२८
सूर्य प्रकाशन	७
हिन्दी प्रचारक बुक क्लब (आवरण)	१
हिन्दी बुक सेण्टर	६
हिन्दी प्रकाशक	१४८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

पुस्तकालय 028050 गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशक संघ की ओर से सन्देश	१९
विशेषांक विज्ञापन	२०
भारतीय साहित्य की परम्परा—अग्रलेख	२३
व्यापकता और सफलता के लिए स्वायत्तता—अग्रलेख	२५
कई मेले एक साथ हों—वैचारिकी	२७
पुस्तकों को नगरों से निकालो—वैचारिकी	२८
विश्व पुस्तक मेला—श्री दीनानाथ मल्होत्रा	३३
पुस्तक मेलों की आवश्यकता और उपादेयता—श्री यशपाल जैन	३५
पुस्तक मेले—श्री एस० के० भाटिया	३६
भारत में पुस्तक मेलों का आरम्भ—श्री के० एस० दुग्गल	३८
भारतीय भाषा मण्डप : भारत दर्शन का सुयोग—श्री कृष्णचन्द्र बेरी	४५
भावी विश्व पुस्तक मेले—नई दिशा : नए दायित्व—श्री चम्पालाल रांका	५५
पाठकीय रुचि के विकास में पुस्तक प्रदर्शनियों का महत्व—श्री ताराचन्द वर्मा	६७
विश्व पुस्तक मेले और भारतीय भाषाओं के प्रकाशन	७१
विश्व पुस्तक मेलों का स्वरूप और महत्व	७७
विश्व पुस्तक मेलों में सुधार के सुझाव	८७
विश्व पुस्तक मेलों में पुस्तकों पर प्रतिबन्ध	९१
विभिन्न विश्व पुस्तक मेले	९३
भारत में विश्व पुस्तक मेले	११७
देशी एवं समुद्रपारीय देशों की पुस्तकों व प्रकाशकों का रंगारंग संगम	१३५
पुस्तक उन्नयन के लिए भारत में राष्ट्रीय पुस्तक मेले	१३९
क्षेत्रीय पुस्तक प्रदर्शनियाँ	१५८
हिन्दी प्रकाशक संघ की पहल से देश विदेश में हुए प्रयत्न	१६८
विचार गोष्ठी	१७७
पुस्तक मेले : नये पुराने सन्दर्भ—श्री मनोरंजन क्रांछल	१९३
पुस्तक मेले और शिक्षा प्रसार—श्री शिवरतन थानवी	१९५

परामर्शदात्री समिति

जवाहर चौधरी — कृष्णचन्द्र बेरी
चम्पालाल रांका — सुभाष जैन
मूलचन्द गुप्ता — राजेन्द्र शंकर भट्ट

सम्पादकीय प्रतिनिधि

दिल्ली — कमलेश जैन
दिल्ली प्रदेश — सुखपाल गुप्त
उत्तर प्रदेश — हरिकृष्ण गौतम
पश्चिम बंगाल — विमल मिश्र

सम्पादन : राजेन्द्र शंकर भट्ट — **व्यवस्था :** स्फटिक संस्थान
'स्फटिक', ३, म्यूजियम मार्ग, जयपुर-३०२००४
तार : प्रकाशक □ **टेलीफोन :** ७३१३१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित साहित्यकारों की प्रमुख कृतियाँ

हिन्दी साहित्य

ओटक्कुषल (पुरस्कृत कविता-संग्रह)	रचयिता : जी० शंकर कुरुप	10.00
एक और नचिकेता (कविता-संग्रह)	,, ,,	4.00
गणदेवता (पुरस्कृत उपन्यास)	लेखक : ता० शं० वन्द्योपाध्याय	35.00
हंसली बांक की उपकथा (उपन्यास)	,, ,,	25.00
दो पुरुष (नाटक)	,, ,,	3.00
जलसाघर (कहानियाँ)	,, ,,	9.00
निशीथ (पुरस्कृत काव्य)	रचयिता : उमाशंकर जोशी	10.00
प्राचीना (काव्य-रूपक)	,, ,,	6.00
श्री और सौरभ (निबन्ध-संग्रह)	,, ,,	8.00
श्री रामायण दर्शनम् (पुरस्कृत महाकाव्य)	रचयिता : कु० वें० पुटप्पा	5.00
चिदम्बरा संचयन (पुरस्कृत काव्य)	रचयिता : सुमित्रानन्दन पन्त	
(कन्नड़, तेलगू, गुजराती, मराठी, बांग्ला, मलयालम, अंग्रेजी में अनुदित) प्रत्येक		7.00
बज्मे जिन्दगी रंगे शायरी (संकलन)	फिराक गोरखपुरी	पुनर्मुद्रण में
स्मृति-सता-भविष्यत् (पुरस्कृत कविता-संग्रह)	विष्णु दे	12.00
संचयिता (काव्य-संकलन)	रामधारी सिंह 'दिनकर'	7.00
माटी मटाल भाग-1, 2 (पुरस्कृत उपन्यास)	लेखक : गोपीनाथ महान्ती	40.00
चार तार (पुरस्कृत काव्य रचना)	रचयिता : द० रा० बेन्द्रे	15.00
सहस्रपण (उपन्यास)	लेखक : वी० सत्यनारायण	16.00
सुवर्णलता (उपन्यास)	लेखक : आशापूर्णा देवी	30.00
मूकज्जी (पुरस्कृत उपन्यास)	लेखक : शिवराम कारत	20.00
कितनी नावों में कितनी बार (पुरस्कृत कविता-संग्रह)	अज्ञेय	15.00
बावरा अहेरी (कविता-संग्रह)	,,	12.00
अरी ओ करुणा प्रभामय (कविता-संग्रह)	,,	पुनर्मुद्रण में
आंगन के पार द्वार (कविताएँ)	,,	3.50
तार सप्तक (कविता-संग्रह)	संपादक : अज्ञेय	12.00
दूसरा सप्तक ,,	,, ,,	8.00
तीसरा सप्तक ,,	,, ,,	21.00
एक बूँद सहसा उछली (यात्रा-विवरण)	लेखक : अज्ञेय	20.00
आत्मनेपद (आत्मपरक निबन्ध)	,, ,,	7.00

- भारतीय साहित्य में श्रेष्ठ स्तरीय प्रकाशनों का गौरव प्राप्त करने वाली संस्था : जो विविध-विधाओं पर राष्ट्र की सभी भाषाओं की अब तक 600 उत्कृष्ट कृतियाँ हिन्दी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर चुकी है।

भारतीय ज्ञानपीठ

 बी/45-47, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यार्षिक—बीस रुपये
यह अंक— दस रुपये

वर्ष 17
अंक 12
सचित्र हिन्दी मासिक
माघ-शक 1901
फरवरी–1980

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र
हिन्दी प्रकाशक
लेखन · प्रकाशन · सज्जा · मुद्रण · वितरण · विक्रय
समीक्षक · पाठक · शिक्षक · पुस्तकालयाध्यक्ष

भारतीय साहित्य की परम्परा

साहित्य-रचना निरे सिद्धान्तों और स्वार्थों से नहीं हुआ करती। परम्परा, परिस्थिति, प्रेरणा और परिश्रम का यह परिणाम होती है। इनमें भी परम्परा से साहित्य को सर्वाधिक विशिष्टता, व्यक्तित्व और शास्वतता प्राप्त होती है। भारतीय साहित्य की जब बात आती है तब भारत की परम्पराओं की ओर ध्यान जाये बिना नहीं रहता।

वेद और उपनिषद् भारत का आदि साहित्य है, संसार का भी यह प्राचीनतम साहित्य है।

ऋग्वेद में आया है: "हे वेदाधिपते अन्तरात्मन् महेश ! आपकी कृपा से उत्पत्यनन्तर इतर वाणियों के उच्चारण से पूर्व ही पदार्थों के भिन्न-भिन्न नाम धारण करते हुए विद्वद गण जो-जो वचन प्रेरित करते हैं वह वाणियों में अग्र अर्थात् श्रेष्ठ हैं। तथा जो इनमें श्रेष्ठ होते हैं, जो पापरहित होते हैं, वह इनके हृदयगम गुप्त स्थान में गुप्त ज्ञान इनके प्रेम से आविभूति होता है।

विद्वदगण पूजनीय परमात्मा की कृपा से अथवा अध्ययन यज्ञ से वचन सम्बन्धी मार्ग को पाते हैं और अतीन्द्रियार्थदर्शी वेद प्राप्त करने वाले ऋषियों में प्रविष्ट उस वेदवाणी का लाभ करते हैं। अनन्तर इस वचन को लाकर बहुत देशों में फैलाते हैं। (१०—७१=३)।" अथर्ववेद में प्रार्थना है: "हमारे लिए पृथ्वीलोक शान्तिप्रद हो। अन्तरिक्ष लोक शान्तिमय हो। आलोक में शान्ति हो। जल शान्तिकारक हो। औषधियाँ वनस्पतियाँ सुख देने वाली हों। संपूर्ण देववसु आदि तथा दिव्य गुण शान्तिकारक हों। हमें पूर्ण विद्वान शान्ति दें। यह शान्ति भी उपद्रव रहित हो। इन सब शान्तियों में परमशान्ति का लाभ हो। उन शान्तियों तथा पूर्ण सुखों के द्वारा, हे प्रभु ! हमारे अज्ञान को शान्त कर। जो इस संसार में भयंकर है, वह सब नष्ट हो। इस जगत में जो कठोरता है, वह कल्याणमय हो जाये। इस संसार में जो भी पाप हैं वे सभी नष्ट हो जायें। प्रभो ! प्रत्येक वस्तु सुख शान्ति देने वाली हो। (१९-९-१४)।"

इस आशय के उदाहरण अनेक दिये जा सकते हैं। यहाँ निम्न स्थापनाओं की ओर विशेष ध्यान आकृष्ट किया जाता है: (१) प्रेरणाप्रद रचना के लिए श्रेष्ठ और पापरहित होना आवश्यक है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) ज्ञान प्रेम से आविर्भूत होता है, (३) अध्ययन से लेखन शक्ति का विकास होता है, (४) जो कुछ ज्ञात होता है वह विश्व भर के लिए है, उसे सारे संसार में फैलाना प्राथमिक दायित्व है। (५) समस्त प्रक्रिया का प्रयोजन शान्ति और सुख की प्राप्ति है, उससे भी ऊपर अज्ञान का अन्त। (६) इसमें पूर्ण विद्वान ही सहायक हो सकते हैं, (७) हम सारे संसार से भयंकरता, कठोरता, पाप को उठा देना चाहते हैं, और चाहते हैं कि 'प्रत्येक वस्तु सुख-शान्ति देने वाली हो।'

इन सात स्थापनाओं के आधार पर भारतीय साहित्य का निर्माण और विकास हुआ है, यही भारतीय साहित्य की विशिष्टता है। इसी के कारण संसार में इसका समादर है। जो कुछ इसके विपरीत है वह भारतीय परम्परा के विपरीत है।

भारतीय साहित्य का समस्त विश्व से सम्बन्ध उसका आदि गुण है। यह उसकी प्रमुख प्रेरणा रही है। इसका एक कारण यह भी है कि भारत के चिन्तक मानते रहे हैं कि संसार में सुख-शान्ति रहेगी तभी भारत में भी सुख-शान्ति रह सकेगी। यह जो वातावरण और पर्यायवरण की आज इतनी चर्चा है, उसकी जड़ें भारतीय रचनाक्रम की इस विश्व व्यापकता में अन्तर निहित है। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के जोड़ की बातें जब-जब प्राचीन भारतीय साहित्य में प्रतिबिम्बित बताई जाती हैं तब तब उनका उपहास सहना पड़ता है जो न भारतीय साहित्य से अवगत हैं, न उसकी परम्परा से, जो 'पूर्ण विद्वान नहीं हैं।' इनमें वे भी हैं जो अभारतीय नहीं हैं, लेकिन भारतीय परम्परा से शून्य होने के कारण उन्हें पूर्ण भारतीय भी नहीं माना जा सकता।

विकासवान ज्ञान के प्रतिरूप वेद-उपनिषद् को समस्त ज्ञान का अन्त कहना सबसे बड़ा अज्ञान होगा। ऐसी चेष्टा अवश्य निरादर का कारण बनेगी। परन्तु इसी कारण जो कुछ उपलब्ध है वह अविचारणीय नहीं बनता। आज के कोष का लाभ इसी में है कि उससे और अधिक लाभ अर्जित किया जाये। यह तभी सम्भव है जब कोष का ज्ञान हो। जो इस भारतीय कोष से अवगत हैं, चाहे वे जिस देश के हों, वे इसका आदर करते हैं, क्योंकि भारतीय साहित्य प्रारम्भ से सारे संसार के लिए, सारे संसार के कल्याण के लिए, लिखा गया है। इसीलिए वह विश्वस्तरीय है, विश्ववन्दय है।

भारतीय साहित्य की यह प्रतिष्ठा स्वतः उसके भावी स्वरूप की प्रेरणा होनी चाहिये, भावी रचनाओं के लिए पथप्रदर्शक जो सात स्थापनाएँ वेदोक्तियों के आधार पर ऊपर प्रतिपादित की गयी हैं वे शास्वत हैं, सदा उनके सामने रहने योग्य हैं जो लिखते हैं, और प्रकाशन कार्य करते हैं। इनमें यहाँ उल्लेखनीय है यह दायित्व कि जो भारत में रचा जाये उसे सारे संसार में फैलाना भी एक प्राथमिक दायित्व है। प्रारम्भ से भारत में इसके महत्व को माना गया है, और यह दायित्व निरन्तर रहने वाला है।

इसमें यह निहित है कि वही संसार में फैल सकेगा जो सारे संसार का ध्यान और आदर आकृष्ट करने में समर्थ होगा। अतएव साहित्य इस स्तर का रचा जाना चाहिए। प्रश्न यह उठता है कि क्या ऐसा साहित्य केवल अतीतकाल में लिखा गया? भारत विद्या का अर्थ ही भारत का अतीत कालीन साहित्य हो गया है। इस प्रश्न का उत्तर अपने में जहाँ चुनौती है, वहाँ साथ-साथ इस बात की व्यवस्था भी अपेक्षित करता है कि जो कुछ भारत के किसी भी भाग में, लिखा जाता है उसे निरन्तर सामने लाने की व्यवस्था होनी चाहिये। सबमें से श्रेष्ठ तभी निकलेगा जब सब कुछ सामने आयेगा। और श्रेष्ठ चयन की यह प्रक्रिया स्वयंमेव श्रेष्ठतर रचना को प्रेरणा प्रदान करेगी।

साहित्य का ह्रास इस कारण भी होता है कि उसके लक्ष्य ओछे हो जाते हैं। उपयोग और विस्तार सीमित होने पर कुण्ठा आ घेर लेती है, छोटे और ओछे स्वार्थ सिर उठाने लगते हैं। इनका निराकरण और भी नीचे जाकर किसी भी प्रकार काम चलाना नहीं हो सकता, क्योंकि नीचे जाने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सीमा होती है, जिसके बाद मिटने के सिवा कोई विकल्प नहीं रहता। उठने और आगे बढ़ने की कोई सीमा नहीं होती, इसी से जीवन और विस्तार प्राप्त होता है, जो कुछ किया जाता है उसका आनन्द अनुभव होता है, सारे संसार को प्रसन्नता मिलती है और प्रतिउत्तर में वह प्रतिष्ठा प्रदान करता है। इस क्रम का हमारे प्रारम्भिक साहित्य रचनाकारों को अवश्य आभास होगा, तभी उन्होंने प्राथमिक उद्देश्य रखा विश्व भर के लिए, प्राथमिक दायित्व निर्धारित किया—"अपनी रचना को विश्व भर में फैलाओ।"

नहीं कहा जा सकता कि कहाँ तक इन दूरगामी फलितार्थों को सामने रखकर भारत में विश्व पुस्तक मेलों के आयोजन का आरम्भ हुआ, न यह विश्वास पूर्वक कहा जा सकता है कि अब भी आयोजकों के मन में ये व्यापक उद्देश्य स्पष्ट हैं। पुस्तकें व्यापार का साधन बन गयी हैं, और आदान-प्रदान आर्थिक लाभ से बांध दिया गया है। इस पर आशंका प्रकट करने पर कहा यही जायेगा कि अर्थ लाभ ही इस प्रकार के आयोजनों का प्रमुख उद्देश्य हुआ करता है, सारे संसार में ऐसे कार्यक्रम इसी उद्देश्य से आयोजित होते हैं, और बातें सर्वथा गोण हैं।

इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। इस मान्यता के कारण ही भारत में होने वाले पुस्तक मेले मुख्यत: विदेशी पुस्तकों के बाजार बन गये हैं, यह प्रश्न उठने लगा है कि हम अपना इतना श्रम और व्यय अधिकांश में विदेशी हितों के लिए कर रहे हैं। इनसे देश-हित की साधना नहीं हुई तो इनके उद्देश्य और स्वरूप पर फिर से विचार करना होगा।

यहाँ देशहित में उस सीमा तक विश्वहित समाहित है जितना हमारी परम्परा में प्रतिपादित है। परन्तु हित चाहे देश का हो चाहे विश्व का, होना उसे होगा भारतीय साहित्य के माध्यम से। भारत विदेशी साहित्य का विरोधी नहीं है, साहित्य की कोई भौगोलिक सीमाएं हुआ भी नहीं करतीं। और जब हम अपने साहित्य के सारे ससार में पहुँचने की अपेक्षा करते हैं तो किसी देश के साहित्य के लिए अपने देश के द्वार बन्द नहीं कर सकते। लेकिन पनपने के तत्व हमें विशेषत: भारतीय साहित्य को उपलब्ध कराने होंगे और आधुनिक भारतीय साहित्य को उसकी परम्परा से जोड़े रखना होगा। आज का साहित्य वेदों के समय से चली आ रही परम्परा की परिणति है—इस नाते को जोड़कर ही हम अपना. अपने साहित्य का अपने देश का और सारे संसार का हित कर सकते हैं।

व्यापकता और सफलता के लिए स्वायत्तता

इस विशेषांक के लिए विदेशों में होने वाले पुस्तक मेलों, पुस्तक प्रदर्शनियों और पुस्तक समारोहों के जो आधुनिकतम विवरण प्राप्त हुए हैं उनसे यह बात स्पष्ट होती है कि ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन सारे संसार में पुस्तक उद्योग स्वयं करता है : तब कहीं सरकार तरह तरह की सहायता देती है, विकसित से विकसित देशों में, जैमे कनाडा सरकार लन्दन पुस्तक मेले में जाने वालों को यात्रा-व्यय देती है, परन्तु सरकार स्वयं या सरकारी प्रतिष्ठान ऐसे आयोजन नहीं करते।

यहां प्रश्न उठेगा कि भारत का नेशनल बुक ट्रस्ट इस परिभाषा में कहां आता है। जो जानते हैं वे मानते हैं कि अपने वर्तमान रूप में यह सरकारी प्रतिष्ठान के अतिरिक्त कुछ नहीं है। अतएव इससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्तोष नहीं किया जा सकता कि भारत में विश्व पुस्तक मेले और राष्ट्रीय पुस्तक मेले नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित हो रहे हैं।

अवश्य पूछा जा सकता है कि यदि ट्रस्ट यह काम नहीं करे तो कौन इनका आयोजन करेगा, यदि ट्रस्ट यह दायित्व नहीं लेता तो क्या इनका आयोजन भारत में सम्भव होता ? प्रारम्भिक परिस्थितियों को बहुत बखाने बिना, उस समय ट्रस्ट सम्बन्धी परिकल्पनाओं और मान्यताओं का विश्लेषण किये बिना, यह मानना होगा कि अब तक इस दिशा में, जैसा भी किया, ट्रस्ट ने आरम्भिक उपादेय और सराहनीय कार्य किया है।

आगे यदि यह कार्य ट्रस्ट के हाथ में रहना है तो ट्रस्ट का रूप बदलना होगा। ट्रस्ट का अर्थ ही यह है कि वह उनके हाथ में रहे जिनको उसे लाभ देना है। यह नहीं कि वह सरकार की कठपुतली बना रहे। ट्रस्ट अपने उद्देश्यों की पूर्ति में मुख्यत; अपने वर्तमान रूप के कारण सफल नहीं हो पा रहा। ट्रस्ट का भावी रूप उनके सोचने की बात है जिन्होंने उसे बनाया, और जो उसे चला रहे हैं। जो उनमें नहीं हैं वे भी आलिप्त हैं, क्योंकि ट्रस्ट भारतीय है, भारत के हित के लिए उसे कार्य करना चाहिये। परन्तु वर्तमान सन्दर्भ में यह बात गौण पड़ जाती है।

पुस्तकों सम्बन्धी समस्त आयोजन उनके द्वारा आयोजित होने चाहिये जो पुस्तकें प्रस्तुत करते हैं। संसार के दूसरे भागों में हो रहे ऐसे आयोजनों में दो अन्तर लाने की यहां प्रस्तावना है : (१) लेखकों को और सक्रिय रूप से इनमें योगदान करना चाहिये। आखिर तो ये पुस्तकों के समारोह हैं, उनके रचनाकारों का हित और दायित्व स्पष्ट है, उनके सहयोग से ही इनका सांस्कृतिक स्वरूप निभा सकता है। (२) पुस्तकों से सम्बद्ध और जो व्यापार तथा उद्योग हैं उनको भी ऐसे आयोजनों में समाविष्ट किया जाना चाहिये, जैसे कागज और छपाई की मशीनें बनाने वाले, स्याही और जिल्द आदि का सामान बनाने वाले, आदि। इस वर्ग के लोगों का आर्थिक लाभ मुख्यतः पुस्तकों पर निर्भर है, तब पुस्तकों के प्रोत्साहन पर होने वाले आर्थिक भार को उन्हें आगे होकर उठाना चाहिये। अपनी सामग्री सामने लाने से उन्हें जो लाभ होगा, यह तो है ही। उनका जो सम्बन्ध प्रकाशन व्यवसाय से है वह भी इस तरह प्रकट और स्पष्ट होगा। बैंक, बीमा कम्पनियाँ, भारवाहक संस्थान आदि और भी बहुत तत्व सहयोग कर सकते हैं।

अगला प्रश्न यह उठेगा कि कौन इन आयोजनों को हाथ में प्रकाशकों के दो फेडरेशन हैं, एक हिन्दी प्रकाशक संघ, अनेक विशिष्ट विषयों के एवं सीमित क्षेत्रों के संगठन तथा बहुसंख्यक राजकीय प्रतिष्ठान जो नितान्त रूप से प्रकाशन-कार्य करते हैं। कदाचित इनका एक अलग संगठन बनाना होगा जो मुख्यतः पुस्तकों के प्रोत्साहन में लगा रहे—इसमें आयेंगे विश्व स्तरीय मेलों से लेकर, जो चाहे भारत में हों चाहे भारत के बाहर, गावों तक में होने वाले पुस्तक मेले। इस श्रृंखला में ऐसे अनेक आयोजन हैं जो अभी नहीं होते, लेकिन इनमें अपार सम्भावनाएँ हैं। दूसरे भी अनेक उपाय उपादेय हो सकते हैं।

सरकार को, केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकारों को, मुक्त हस्त से इस प्रकार के संगठन की सहायता करनी होगी। उन्हें समझना होगा कि अतीत, वर्तमान और आगत का स्वरूप पुस्तकों में ही प्रतिबिम्बित होता है, पुस्तकों का प्रोत्साहन राष्ट्र के सर्वांगीण विकास का प्रमुख कार्यक्रम है। सरकार ने इस दिशा में जो कुछ किया है वह पर्याप्त नहीं है, लेकिन इससे उसकी सदाशयता अवश्य प्रकट होती है। इसे व्यापक बनाने की बात है, और इसे सरकारी तन्त्र के बन्धनों और कुंठाओं से मुक्त करने की बात है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह तभी होगा जब पुस्तक निर्माण और व्यापार में लगे लोग स्वयं आत्म-निर्भर संगठन बनायेंगे। एक बार ऐसा संगठन बन जाये तो सभी की सहायता स्वयं आने लगेगी। काम खुद इतना बढ़ जायेगा कि वह स्वतः सगठन को गति और गन्तव्य और आर्थिक आधार देने लगेगा। व्यापारी ऐसे व्यापार चलाने की भी सामर्थ्य रखते हैं। इसका प्रभाव उन्हें देना होगा।

पुस्तक उद्योग ऐसे आयोजन अपने हाथ में लेगा तभी इन्हें भरपूर सफलता और व्यापकता प्राप्त होगी।

वैचारिकी

कई मेले एक साथ हों

इस बार लन्दन और फ्रेंकफर्ट के पुस्तक मेलों की तिथियां बहुत ही पास-पास थीं। प्रश्न यह उठाया गया कि तिथियों का निकटस्थ निर्धारण उचित था या अनुचित—दोनों पक्ष सामने आये।

ब्रिटेन के कुछ प्रमुख प्रकाशक अपने देश का मेला छोड़कर फ्रेंकफर्ट चले गये, उनसे न मिल पाने की निराशा और नाराजी उनके मन में थी जो दूर-दूर से लन्दन पहुँचे थे। ऐसे अनेक प्रकाशक हैं जो लन्दन पहुँचते हैं, फ्रेंकफर्ट नहीं जाते।

जो दोनों पुस्तक मेलों में शामिल होते हैं उनका कहना था कि दोनों मेलों की तिथियां दूर दूर कर दी गयीं तो लन्दन पहुँचना मुश्किल हो जायेगा।

सब मिलाकर दोनों मेलों की तिथियाँ पास-पास ही बनाये रखने के पक्ष में वातावरण अधिक अनुकूल मालूम दिया। अगले वर्ष के लिए इसी तरह तिथियां रखने का निश्चय किया।

हमारा देश बहुत बड़ा है, भाषा जनित विविधता से परिपूर्ण है। यहां केवल मात्र दिल्ली में आयोजन होने से उसका लाभ समस्त देश को नही मिल सकता।

विश्व पुस्तक मेले बार-बार दिल्ली में हुए हैं, और होने भी चाहिये। दिल्ली केन्द्र में ही नहीं है, देश की राजधानी भी है। वहां पहुँचना अधिक स्वाभाविक लगता है, पहुँचने वाले के कई और काम भी निभा जाते हैं। और दिल्ली स्वयं में प्रमुख प्रकाशन केन्द्र हो गया है। विश्व पुस्तक मेला मुख्यतः दिल्ली में ही होना चाहिये।

लेकिन साथ साथ पांच-पांच दिन के पुस्तक मेले कलकत्ता, मद्रास और बम्बई में भी होने चाहिये, इस प्रकार के भाग लेने वाला एक के बाद एक करके सभी में पहुँच सके। दो-दो दिन का अन्तर इन मेलों में हो सकता है। लगभग महीन भर का कार्यक्रम यह बन जायगा।

दो वर्ष में एक बार एक महीने का समय निकालकर बहुत से विदेशी प्रकाशक आना चाहेंगे। भारत के पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी भागों में पुस्तकों के प्रति चाव उत्तरी भारत से अधिक है। उन्हें धीरे-धीरे यह परिश्रम लाभकारी लगने लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

यह बोझ नेशनल बुक ट्रस्ट के लिए बहुत हो जायेगा, कदाचित् अनेक भारतीय प्रकाशक भी एक महीने के लिए अपने यहां स बाहर रहना मुश्किल मानें। कोई प्रकाशक लगातार दस दिन दिल्ली में भी नहीं रहा करता........आवश्यकता होगी तो प्रबन्ध होगा ही और नेशनल बुक ट्रस्ट भी एक बार कार्यक्रम बनने पर उसे पूरा करने की क्षमता अवश्य विकसित करेगा।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख्य बात यह है कि विश्व स्तरीय आयोजन स्वतन्त्र तिथियों पर देश के चारों केन्द्रों में एक बार भी नहीं हो सकते। दो साल में एक बार चारों का एक साथ कार्यक्रम बने तो कदाचित् यह राष्ट्रीय पुस्तक समारोह का स्वरूप ले सकता है।

सरकार को पहल करनी होगी। एक मेले से दूसरे में पहुँचने में यातायात की रियायती दरें ही नहीं, पूरी की पूरी विशेष रेलगाड़ियां चलानी होंगी। सब जगह आयोजकों को आर्थिक सहायता देनी होगी। सबसे बड़ी बात यह है कि हर स्थान पर अच्छी बिक्री हो, इसमें सक्रिय सहायता करनी होगी। यह सहायता कई तरह से की जा सकती है।

प्रश्न हर पहलू से विचारणीय है।

पुस्तकों को नगरों से निकालो

पुस्तक मेले, सभी देशों में, प्रमुख नगरों में होते हैं,—मुख्यतः राजधानियों में अतएव दिल्ली में पुस्तक मेलों का बहुत होना अस्वाभाविक नहीं है।

परन्तु दिल्ली के पुस्तक मेलों का अब तक रूप यह रहा है कि उनमें प्रमुखता अंग्रेजी के प्रकाशनों को ही मिल पाती है, इनमें भी विदेशों में प्रकाशित पुस्तकों को। कई बार लगने लगता है कि इतना राष्ट्रीय परिश्रम, संगठन, साधन और व्यय किसके लिए हो रहा है। यह क्या राष्ट्रीय हित में हैं? अंग्रेजी के और विदेशों के प्रकाशनों को प्रोत्साहन प्राप्त होने से राष्ट्रीय चरित्र पर, अंतत, प्रतिकूल प्रभाव पड़े बिना नहीं रहेगा। और साहित्य के इस प्रकार नगरीय पाठकों के प्रति लक्ष्याभिमुख होने से उनका अपना रूप भी बंधा बंधा रहेगा।

परन्तु पुस्तक व्यवसाय के कार्यकलाप प्रधानतः लाभार्जन की धुरी पर घूमा करते हैं—ऐसा समस्त "स्वतन्त्र" विश्व में हो रहा है। लेकिन, विश्व के उन देशों में न विदेशी भाषा की पुस्तकों को, न विदेशों के प्रकाशनों को, इस तरह की प्रमुखता मिली हुई है। विदेशी भाषा के और विदेशी प्रकाशन हम में हीनता विकसित कर रहे हैं।

इस स्थिति का उत्तर यही है कि भारतीय भाषाओं के प्रकाशन अपने में समान रूप से लाभकारी हों। हो सकते हैं, क्योंकि भारतीय भाषाओं के पाठक अंग्रेजों के पाठकों से कहीं अधिक हैं। परन्तु यह संख्या सीधा प्रभाव नही डाल पाती, कई पेचीदगियां बीच में आ जाती हैं, और सब कुछ भारत में भारतीय भाषाओं के पक्ष में होते हुए भी विशेषता और प्रतिष्ठा अंग्रेजी को ही प्राप्त है।

जिन उपायों से इस स्थिति में अन्तर लाया जा सकता है उनमें प्रमुख है भारतीय भाषाओं की पुस्तकों का सीधे पाठकों के पास पहुँचाया जाना।

इसके साधन के रूप में बने हैं फुटकर विक्रेता, विज्ञापन और डाक से डिलीवरी। ये साधन स्वल्प हैं, मंहगे हैं। जब शहरों में पुस्तकों के प्रोत्साहन के लिए बड़े बड़े पुस्तक समारोहों की आवश्यकता पड़ती है तो कस्बों और गांवों के लिए यह और भी आवश्यक है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० मदन गोपाल शर्मा के नए प्रकाशन

लेखक ने तथ्यानुसन्धान एवं नव-व्याख्या के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योग-दान दिया है।

—डा. सत्येन्द्र

प्रवुद्ध चिन्तक
एवं
रस-सिद्ध
कवि
डॉ. मदनगोपाल शर्मा
की
अभिनव सशक्त
कृतियाँ

अभिव्यक्ति एवं विवेचना-शक्ति
का
ऐसा स्वर्ण-गंध संयोग
विरल है।

डॉ. सरनामसिंह 'अरुण'

एक शोध-ग्रंथ
एवं
तीन
काव्य-संकलन

1980 ई० 40·00

1979 ई० 25·00

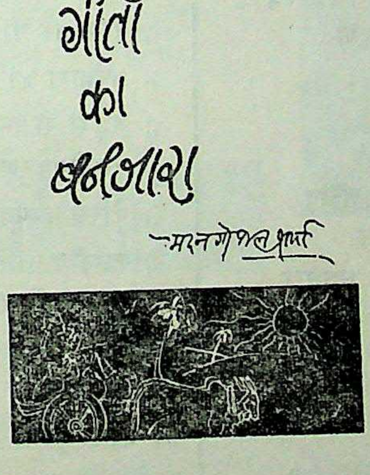

1979 ई० 30·00

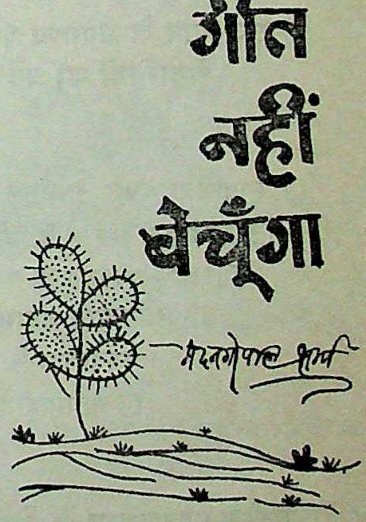

1980 ई० 35·00

चम्पालाल रांका एण्ड कम्पनी

किताब महल, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रन्थागार, जयपुर का

ऐतिहासिक संदर्भों का विशद् परिचय-ग्रंथ

राजस्थान में स्वतन्त्रता-संग्राम के सेनानी

लेखक व सम्पादक

सुमनेश जोशी

मूल्य : ७५·००

ग्रंथ पाँच खण्डों में विभक्त

राजस्थान के अग्रगण्य ६१७ स्वातंत्र्य सेनानियों का वर्गीकरण

- ☐ स्वतन्त्रता संग्राम के जनक
- ☐ स्वतन्त्रता संग्राम के अमर शहीद
- ☐ लोक जागरण के अग्रदूत
- ☐ स्वतन्त्रता संग्राम के सूत्रधार
- ☐ स्वतन्त्रता के सन्देशवाहक
- ☐ सत्याग्रही और स्वातंत्र्य सैनिक

प्रत्येक पुस्तकालय के लिये संग्रहणीय

चेतना प्रकाशन, जयपुर का

राजस्थानी में समाजवादी साहित्य

सुना ! छप रहा है ! राजस्थानी में !

मैक्सियम गोर्की का उपन्यास— माँ 25·00

राजस्थान में अन्य अनुदित रचनाएँ

जूलियस फूचिक/लक्ष्मीकुमारी चूड़ावत सूली रा सूया माथे	5·00
लक्ष्मीकुमारी चूड़ावत—लेनिन री जीवणी	6·00
स्तेपानोवा—कार्ल मार्क्स री जीवणी	10·00
—फ़ैडरिक एग्गेल्स री जीवणी	6·00
द्रोविझोव—लेनिन राज रा परधान	10·00
लेनिन—छांटवां रचनावां	25 00
मार्क्स : एग्गेल्स—कम्युनिस्ट पार्टी रो ऐलान नामो	3·00
लेनिन—गाँवां के गरीवां सूं	3·00
,, जनतांत्रिक क्रांति माँ सामाजिक जनवाद री दोय कार्यनीतियां	5·00
,, बामपंथी कम्युनिज्म : एक टाबरपणा रो मर्ज	5·00
,, राज अर क्रांति	5·00
,, सर्वहारा क्रांति अर दगाखोर काउत्सकी	5.00
,, मजूरां रो नियंत्रण अर उद्योगां रो राष्ट्रीयकरण	6.00
,, पैरिस कम्यून	6·00
,, राष्ट्रीय नीति अर सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद रा सवाल	12·00
फ़ैडरिक एग्गेल्स काल्पनिक अर वैज्ञानिक समाजवाद	6·00
ई० बेश्चेरेव्निख मिनख होवणा रो रहस्य	8·00
लेनिन—लेनिन अर रूसी क्रांति	12·00

इन पुस्तकों व सभी प्रकार की राजस्थानी पुस्तकों के लिए आदेश दीजिए :
सम्पर्क कीजिए : सेवा लीजिए :

चम्पालाल रांका एण्ड कम्पनी

किताब महल, चौड़ा रास्ता, जयपुर-३ फोन : ७५२४१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० स्वर्णलता की तीन नई पुस्तकें

"यह लेखिका हवा में उड़ने वाली अनुभवहीन महिला नहीं हैं, बल्कि सुपत्नी, सुमाता के साथ ही सुसंस्कृता और सुअध्यापिका भी रही हैं।"

हरिभाऊ उपाध्याय

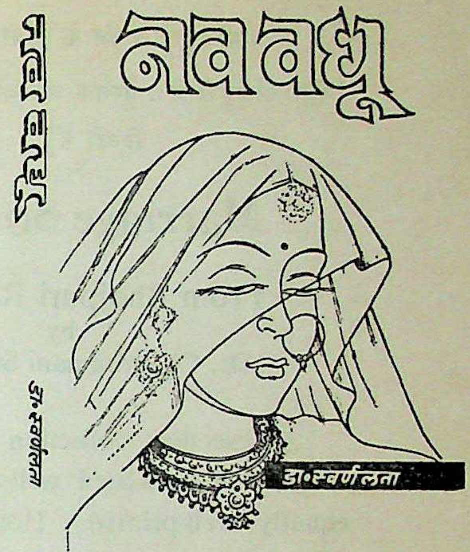

नव दम्पतियों के लिए भेंट योग्य अनूठी पुस्तक। 12·00

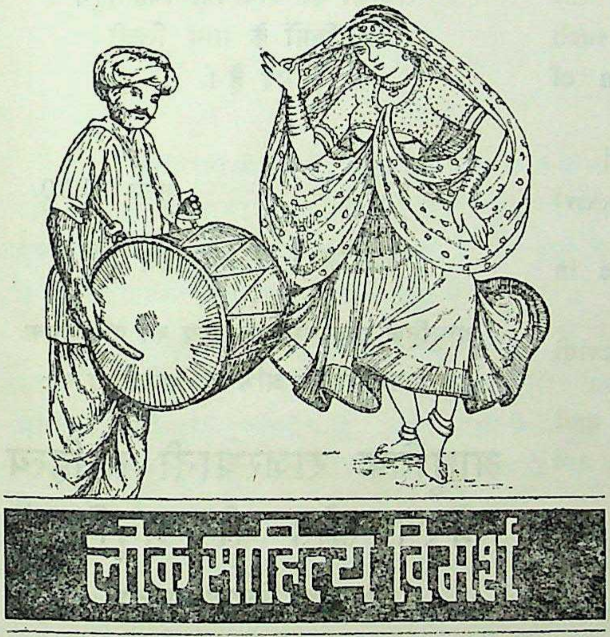

संगीत, नृशास्त्र, समाजशास्त्र आदि की दृष्टि ये महत्त्वपूर्ण लोक-साहित्य पर गवेषणापूर्ण निबन्धों का संकलन।

20·00 भूमिका —डॉ० सत्येन्द्र

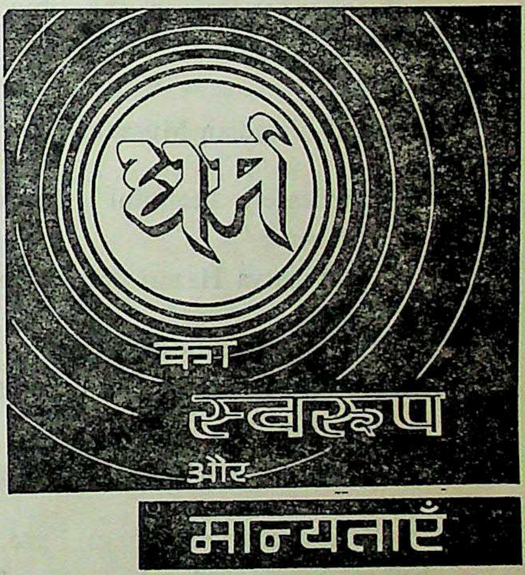

"हिन्दी में धर्म जैसे विषय पर ऐसी सरल और सुबोध पुस्तक लिखकर लेखिका ने समाज की महती सेवा की है।"

15·00 —शंकरसहाय सक्सेना

चम्पालाल रांका एण्ड कम्पनी

किताब महल, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003

फोन : 75241

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजपुरी अंचल के विवाह गीत

[गीत भोजपुरी में : पुस्तक अंग्रेजी में, भावानुवाद हिन्दी में]

Marriage Songs

From Bhojpuri Region

by

Dr. Chandramani Singh

An excellent collection of Bhojpuri songs, well translated well-analysed and equally well-printed. Hope, the book will serve as inspiration and more such anthologis from other parts of the country will be produced before such folk songs are lost in the oblivion of the fast changing Indian society.'

—V. P. Duwevidi

(Journal of Indian Museums Vol. xxxiv)

"Artlessely beautiful" they are in the real sense."

—Acharya Hazari Prasad Dewevidi

"....the traditions, customs and beliefs of Indian's hoary past are enshrined in these songs."

—Dr. D. H. Koppar

"These charming songs have never before been rendered in the English language."

—Dr. Krishnadeva Upadhyaya

18 × 23/4
- Text Profusely Illustrated
- Full Cloth Bound
- Rs. 150.00

Champa Lal Ranka & Co.

Dhamani Market, Chaura Rasta

Jaipur-302003 : Phone 75241

मनोहर प्रकाशन द्वारा प्रकाशित

डा० मनोहरसिंह राणावत द्वारा सम्पादित

मुंशी देवीप्रसाद रचित

ऐतिहासिक चरित्रमाला

अथवा

सोलहवीं सदी में राजस्थान

प्रसिद्ध इतिहास ग्रंथ जिसमें मेवाड़, आम्बेर, बीकानेर और मारवाड़ के कई धीरवीर राजाओं की जीवनियाँ विद्वतापूर्ण टिप्पणियों के साथ लिखी गई हैं।

पेच १६४ : मूल्य 25.00

पठनीय ! संग्रहणीय !!

आधुनिक राजस्थानी साहित्य का परिचायक और पर्यालोचक अभिनव समीक्षा-ग्रंथ :

आधुनिक राजस्थानी साहित्य प्रेरणा-स्रोत और प्रवृत्तियाँ

ले० डा० किरण नाहटा

- सम्यक् सर्वेक्षण
- सन्तुलित मूल्यांकन
- विशद् विवेचन
- विगत सात दशकों (1900-1972 ई०) में सृजित राजस्थानी साहित्य के विकास-क्रम का स्थायी आलेख
- राजस्थानी साहित्य की समस्त विधाओं एवं प्रवृत्तियों का स्तरीय अध्ययन

चम्पालाल रांका एण्ड कम्पनी

किताब महल, चौड़ा रास्ता, जयपुर-3

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व पुस्तक मेला

—दीनानाथ मल्होत्रा

साधारण व्यक्ति में शिक्षा की वृद्धि के साथ-साथ आज पुस्तकों के प्रचार-प्रसार में भी तीव्रता आई है। एक समय था जब किसी पुस्तक की कुछ सौ प्रतियाँ भी शीघ्र नहीं बिक पाती थीं जबकि आज हजारों की संख्या में पुस्तकें छपती-बिकती हैं और इसी से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि पुस्तकों के प्रति लोगों का मोह किस तेजी से बढ़ा है।

पुस्तकों के प्रचार-प्रसार के अनेक साधन हैं पर आज जो सर्वाधिक विकसित साधन माना जा सकता है, वह है पुस्तकों की प्रदर्शनी या पुस्तक मेला। आज विश्व में विभिन्न स्थलों पर पुस्तक मेलों का आयोजन सिर्फ इसी दृष्टिकोण से किया जाता है। कुछ वर्षों से भारत में भी इस तरह के मेलों का आयोजन होने लगा है और निश्चित रूप से पुस्तक व्यवसाय के साथ ही पाठक समूह भी इससे लाभान्वित हुआ है।

हमें इस बात को गंभीरना से सोचना होगा कि किसी भी पुस्तक-मेला की उपयोगिता अधिक से अधिक क्या हो सकती है? पाठकों के हित में इन मेलों को किस तरह आयोजित किया जा सकता है या दूर-दराज के देशों के बीच राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार किस तरह हो सकता है? हिन्दी पुस्तकों और हिन्दी के लेखकों की जानकारी गैर-हिन्दी भाषी किस तरह प्राप्त कर सकते हैं?

जहाँ तक हिन्दी भाषा के साहित्य के प्रचार-प्रसार का प्रश्न है, ये मेले ज्यादा उपयोगी तभी सिद्ध हो सकते हैं अगर हम दो-चार बातों पर विशेष रूप से ध्यान दें। जैसे—किसी भी मेले में, जो भारत में कहीं भी आयोजित होता है, 'हिन्दी मण्डप' विशेष रूप से स्थापित किया जाय और इनमें हिन्दी के उत्कृष्ट साहित्य को प्रदर्शित किया जाय। हिन्दी का क्षेत्र चूँकि काफी बड़ा है और इस कारण प्रकाशन क्षेत्र भी काफी फैला हुआ है। उस स्थिति में 'हिन्दी मण्डप' के माध्यम से पूरे देश में प्रकाशित श्रेष्ठ साहित्य को एक जगह एकत्र कर, पाठक को उनसे परिचित कराया जा सकता है। इसके अतिरिक्त दूसरे देशों या प्रदेशों से हिन्दी के जिज्ञासु व्यक्ति अगर मेले में आते हैं तो उनके लिए इस तरह का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयोजन विशेष रूप से लाभप्रद सिद्ध हो सकता है। इस बार मेले में भारतीय भाषा मण्डप तैयार हो रहा है जिसमें सभी भारतीय भाषाओं की पुस्तकें प्रदर्शित होंगी।

हिन्दी पुस्तकों के प्रचार-प्रसार के लिए जो दूसरा महत्वपूर्ण काम हम कर सकते हैं, वह है हिन्दी की श्रेष्ठ कृतियों तथा लेखकों की सूची हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में तैयार करके उन्हें वितरित किया जाय ताकि गैर हिन्दी भाषी व्यक्तियों को उचित ढंग से पुस्तकों की जानकारी प्राप्त हो सके। यह कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण है और साथ ही उपयोगी भी। विदेशी में जो पुस्तक मेले आयोजित किए जाते हैं, उनमें इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि मेले में आए व्यक्तियों को उनकी भाषा में ही पुस्तकों और लेखकों की जानकारी दी जाय। जैसे विश्व का सबसे प्रसिद्ध पुस्तक मेला 'फ्रैंकफर्ट बुक फेयर' है। वहाँ यूरोप तथा विश्व की अन्य भाषाओं की चुनी हुई पुस्तकें प्रदर्शित की जाती हैं। सभी प्रकाशक अपने देश की भाषाओं की विशिष्ट पुस्तकों के नमूने लाते हैं और साथ ही उन पुस्तकों का थोड़ा सा परिचय अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन आदि भाषाओं में उनके साथ लगा देते हैं। इससे यह लाभ होता है कि अन्य देशों के प्रकाशक इन परिचय-पत्रों को पढ़ कर उन पुस्तकों की उपयोगिता जान लेते हैं और उन पुस्तकों के अधिकार लेने के लिए सोच सकते हैं। इस प्रकार फ्रैंकफर्ट देश-विदेश की भाषाओं के प्रकाशनाधिकार लेने-देने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय मण्डी बन गई है। यहाँ पुस्तकें नहीं बेची जातीं, केवल पुस्तकों के प्रकाशनाधिकार बेचे जाते हैं।

फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेले के शुरू होने से कई महीने पहले सभी देशों के प्रकाशक वहाँ प्रदर्शित करने के लिए पुस्तकों के नमूने तैयार करते हैं ताकि अपनी भाषा की पुस्तकों के अधिकार दूसरे देशों में बेचने का प्रयास कर सकें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (नेशनल बुक ट्रस्ट) पर यह उत्तरदायित्व डाला गया है कि वह भारतीय भाषाओं में प्रकाशित पुस्तकों की प्रदर्शनियाँ व पुस्तक मेले लगाए। इस कार्य को ट्रस्ट प्रति वर्ष अधिकाधिक बढ़ावा दे रहा है। इसी प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेलों में भी भारतीय भाषाओं की पुस्तकों को प्रदर्शित करने की जिम्मेदारी ट्रस्ट की है जिसे वह आंशिक रूप से निभा रहा है। यदि हिन्दी के प्रकाशक इसमें अधिक रुचि दिखाएँ तो वे हिन्दी के उत्कृष्ट साहित्य को बाहर के देशों में पहुँचवा सकते हैं। हिन्दी की पुस्तकों की प्रामाणिक जानकारी विदेशों में न पहुँचने के कारण जो भी पुस्तकें प्रकाशकों को मिलती है, उन्हीं को वे अनुपम कृति समझ लेते हैं। मुझे याद है कई वर्ष पहले जर्मन के एक प्रकाशक ने कहा कि उन्हें हिन्दी के एक सर्वोच्च लेखक की पुस्तक मिली है जिसे उन्होंने अपनी भाषा में प्रकाशित किया है। जब मैंने उस लेखक का नाम पूछा तो मुझे बड़ा अचम्भा हुआ क्योंकि तब तक मैंने उस लेखक का नाम नहीं सुना था। ऐसी घटनाओं से यह सिद्ध होता है कि जब तक हिन्दी के प्रकाशक इस ओर कदम नहीं बढ़ाएँगे तब तक गलत चीजें और गलतफहमी वाली बातें होती रहेंगी। हिन्दी के प्रकाशकों को चाहिए कि अधिक से अधिक मात्रा में विश्व पुस्तक मेले में पूरी तैयारी के साथ भाग लें। केवल पुस्तक छाप लेने से हिन्दी भाषा या हिन्दी प्रकाशन का विकास नहीं हो सकता बल्कि उनका ठीक ढंग से प्रचार-प्रसार करना प्रकाशकों का उद्देश्य होना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक मेलों की आवश्यकता और उपादेयता

—यशपाल जैन

पुस्तक मेलों का उपक्रम अत्यन्त महत्वपूर्ण है। पुस्तकों में किसी भी देश की आशाएँ-आकांक्षाएं, वर्तमान स्थिति, प्रगति, भावी योजनायें आदि-आदि प्रतिबिम्बित होती हैं। पुस्तक मेलों में उनकी झांकी मिल जाती है। इतना ही नहीं, विचार-क्षेत्र में उस देश की गति-विधियाँ क्या हैं, उसका भी अनुमान हो जाता है। एक ही स्थान पर पुस्तकों के प्रदर्शन से पुस्तक-व्यवसाय की धारायें भी सामने आ जाती हैं। इमसे बड़ा लाभ यह होता है कि पुस्तकों को देखकर सामान्य पाठकों की पुस्तकें खरीदने और पढ़ने की रुचि में वृद्धि होती है।

अब तक के विश्व पुस्तक मेलों की भूमिका बहुत ही मूल्यवान रही है। विभिन्न देशों और भारतीय भाषाओं के साहित्य के एक ही स्थान पर सुलभ हो जाने से जहाँ प्रकाशकों को अपने व्यवसाय को समुन्नत करने की प्रेरणा मिली है, वहां पारस्परिक सहयोग की भावना भी बढ़ी है।

किसी भी देश को बड़ा अथवा छोटा बताने में विचारों का बहुत बड़ा हाथ होता है और विचारों की वाहक पुस्तकें होती हैं। विकसित, अर्द्ध विकसित तथा विकासोन्मुख देशों के साहित्य का मिलन एक प्रकार से विभिन्न देशों का मिलन होता है, इस बात को पुस्तक मेलों ने स्पष्ट कर दिया है।

भारत—जैसे देश के लिए, जहाँ पुस्तक खरीद कर पढ़ने की रुचि अभी व्यापक नहीं बन पाई है, पुस्तक मेलों के प्रयोजन और आवश्यकता के विषय में दो मत नहीं हो सकते। जितना सत्साहित्य का प्रणयन प्रसार होगा, उतना ही देश की आत्मा मुखरित होगी और देश को प्रगति करने के लिए नये-नये मार्ग प्रशस्त होंगे।

आवश्यकता इस बात की है कि इन मेलों के आकर्षण को बढ़ाया जाय और उनके माध्यम से जन-जीवन में पुस्तकों की उपादेयता को अधिकाधिक प्रभावशाली ढंग से हृदयंगम कराया जाय।

यह भी आवश्यक है कि पुस्तक-मेलों में विभिन्न क्षेत्रों के पाठकों को आमन्त्रित किया जाय और लेखकों, पाठकों, प्रकाशकों तथा पुस्तक-विक्रेताओं की संगठित संगोष्ठियाँ आयोजित की जायें।

लोकहित की दृष्टि से लोकप्रिय दैनिक तथा साप्ताहिक पत्रों के विशेषांक भी निकलने चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक मेले

—एस० के० भाटिया

चतुर्थ विश्व पुस्तक मेला नई दिल्ली के हाल में आयोजित मेलों की पंक्ति में पाँचवाँ मेला भी है। पहला इण्डिया गेट पर आयोजित किया गया था, दूसरा प्रगति मैदान में, तीसरा और चौथा फिरोजशाह कोटला मैदान में आयोजित किये गये थे। इन मेलों में भारी भीड़ रहती थी जिससे प्रतीत होता है कि पुस्तक प्रेमी जनता इस प्रकार के मेलों का प्रायः आयोजित किया जाना पसन्द करती है। इन्हें आयोजित करने का एक और कारण है वह यह कि आज कोई भी पुस्तक विक्रेता भारतीय तथा आयातित दोनों प्रकार की समस्त पुस्तकों का स्टाक रखने की क्षमता नहीं रखता। इस प्रकार पुस्तक खरीदने वाला एक स्थान से दूसरे स्थान पर एक दुकान से दूसरी दुकान पर जाकर अपनी मन पसन्द पुस्तक लेने के लिए घूम सकता है। पुस्तक विक्रेताओं की भी बहुत सी समस्यायें हैं जैसे सभी पुस्तकों का स्टाक न रख पाने की और ऐसी कोई दुकान न होने की जहाँ सभी प्रकार की पुस्तकें पाठकों के लिए सुलभ हों।

पुस्तक मेले पाठकों को प्रथम तो यह जानने में सहायक होते हैं कि आजकल किस प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित की जा रही हैं। दूसरे, कोई विशिष्ट प्रकाशक किस प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित करता है।

प्रकाशक भी मेलों में नये परिप्रेक्ष्य वाले नाना-प्रकार के खरीदारों के संपर्क में आता है। इन मेलों का प्रभाव अन्य नियमित खुदरा पुस्तक विक्रेताओं पर नहीं पड़ता यद्यपि कभी कभार इस प्रकार की शिकायतें की जाती हैं कि मेलों से बिक्री प्रभावित होती है। पिछले चार मेलों में दस लाख रुपये की पुस्तकें बिकीं जो इसके बिना नहीं बिक सकती थीं। निस्सन्देह, इसमें पुस्तकालयों के लिए बिक्री सम्मिलित नहीं है।

पुस्तक मेले पुस्तकालयाध्यक्षों को अपने पुस्तकालयों में सम्मिलित करने के लिए नवीनतम पुस्तकों की जानकारी का अवसर देते हैं। सहयोगी प्रकाशक जो एक दूसरे से मिलने का समय कदाचित्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ही निकाल पाते हैं, इसे मिलने और परस्पर विचार विनिमय के लिए अत्यधिक लाभदायक पाते हैं। पुस्तक मेले और अधिक संख्या में आयोजित होने चाहिये, किन्तु अलग नगरों में जिससे जनता में पुस्तकों के लिए रुचि उत्पन्न हो। गतवर्ष का मेला प्रकाशकों के लिए भारी भीड़ से भरा था, जिनके लिए एक साथ चार स्थानों पर व्यवस्था करना बहुत कठिन था। थोड़े समय का अन्तर देकर किये जाने पर ये मेले अधिकाधिक लोगों को आकर्षित करेंगे और पुस्तक विक्रेताओं तथा जनता को घनिष्ठ सम्पर्क में आने का अवसर देंगे।

फैडरेशन आफ इण्डियन पब्लिशर्स दिल्ली के प्रकाशक संघ के साथ मिलकर नवम्बर 1980 में अगला पुस्तक मेला आयोजित करेगा।

'तीसरे विश्व' में भारत अंग्रेजी पुस्तकों का सबसे बड़ा निर्यातकर्ता है—प्रतिवर्ष लगभग 70 लाख डालर की पुस्तकें भारत से बाहर भेजी जाती हैं।

साथ-साथ भारत विदेशी पुस्तकों का बहुत ही बड़ा आयातकर्त्ता भी है।

पुस्तकों के निर्यात में प्रोत्साहन के लिए भारत सरकार कई तरह की सहायताएँ देती है।

इस बात की संभावनाएँ निरन्तर बढ़ रही हैं कि इस लाभकारी व्यापार में विदेशी प्रकाशक और विक्रेता और अधिक संख्या में विदेशों से आकार भारत में नेतृत्व और निर्देशन अपने हाथ में करने का प्रयत्न करें।

पुस्तक व्यापार से सम्बन्धी विदेशी संस्थान भारत को अपनी उग्रतम प्रतिद्वन्द्विता की युद्ध भूमि बनाना चाहते हैं।

विश्व पुस्तक मेलों में विदेशी प्रकाशकों की बढ़ती हुई रुचि इसका प्रत्यक्ष प्रदर्शन है।

भारत में विदेशी पुस्तकों का बड़ी संख्या में मुद्रण इस ओर सहज ही इंगित करता है।

—०—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में पुस्तक मेलों का आरम्भ

—श्री के० एस० दुग्गल

पुस्तक मेला सम्भवतः भारत में प्रकाशक समुदाय के लिए सर्वाधिक महत्व की वार्षिक घटना है। इस विचार की कल्पना का श्रेय निश्चित रूप से डा० बी० वी० केसकर को जो वर्षों तक नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष रहे, दिया जाना चाहिये। डा० केसकर दृष्टि सम्पन्न, बुद्धिमान और सुदृढ़ आदर्शवादी व्यक्ति थे। आकाशवाणी प्रसारण में भारत में उनका योगदान अनुपम रहा है। (यद्यपि खेद के साथ कहना पड़ता है कि उसकी उचित सराहना नहीं की गयी) और उनके द्वारा बुक ट्रस्ट की जो सुव्यवस्थित रूप प्रदान किया गया वह उनके पुस्तक प्रेम तथा देश में पुस्तकाभि रुचि उत्पन्न करने की उनकी तीव्र आकांक्षा का जीता जागता प्रमाण है।

डा० बी० वी० केसकर का विश्वास था कि नेशनल बुक ट्रस्ट को अपने साधन स्रोतों का उपयोग अधिकांश में पुस्तक प्रकाशन में करने की अपेक्षा देश की जनता में अधिक से अधिक पुस्तकाभि-रुचि उत्पन्न करने में करना चाहिये। श्री जवाहरलाल नेहरू भी, जिन्होंने नेशनल बुक ट्रस्ट की स्थापना की थी, यही चाहते थे। वह जनता के मस्तिष्क को पुस्तकोन्मुख करना चाहते थे और इसके लिए लाखों-लाख लोगों में एक वैज्ञानिक जोश भरना चाहते थे।

नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष के रूप में डा० केसकर फ्रेंकफर्ट के पुस्तक मेले में गये। उन्हें ब्रिटिश कौन्सिल ने यू० के० की यात्रा पर आमंत्रित किया था। इंगलैण्ड में उन्हें इस पर विचार विमर्श का अवसर मिला कि बुक ट्रस्ट जैसा संगठन जनता की सेवा के लिए कितना उपयोगी हो सकता है। जो सन्देश वह वहां से लाये थे उसमें कहा गया था कि ट्रस्ट को अपनी क्रियात्मकता का अधिकाधिक उपयोग प्रोत्साहन कार्यों में करना चाहिये और प्रकाशन कार्यों में कम से कम ट्रस्ट को इस खाई को भरने का प्रयत्न करना चाहिये। इसे यथासम्भव भारत में निजी क्षेत्र में पूरक प्रकाशन होना चाहिये।

इसी उद्देश्य से जनता के सन्मुख पठन सामग्री के प्रदर्शन के लिए पुस्तक मेले के विचार ने जन्म लिया। इसी कारण क्षेत्रीय प्रदर्शनियों का विचार सामने आया और इसी से प्रेरित होकर ट्रस्ट ने 1972 में विश्व पुस्तक मेले की तैयारी की। दिल्ली में आयाजित विश्व पुस्तक मेले को देखते हुए फ्रेंक-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फर्ट पुस्तक मेले के उस समय के निदेशक डा० स्टौबर्ट ने कहा था "यह दर्शनीय और विश्वसनीय है" यह कहा गया कि यह नेशनल बुक ट्रस्ट के इतिहास में अत्यधिक शानदार है। प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी जिन्होंने पहले खेद पूर्वक समयाभाव के कारण मेले का उद्‌घाटन करना अस्वीकृत कर दिया था, स्वयं मेले में पधारीं और काफी समय तक घूम-घूम कर स्टाल देखती रहीं।

मेला ६०,००० वर्ग फुट क्षेत्र में लगाया गया। इसके लिए बम्बई में क्रॉस मैदान चर्च गेट पर जमीन के लिए लिखित रूप से आवेदन किया गया। प्रदर्शनी के मण्डप ने १०,००० वर्ग फुट स्थान घेरा, शेष स्टालों, श्रोता मण्डपों, कार्यालयों आदि के लिए छोड़ दिया गया। एक सौ पचास स्टाल बनाये गये और व्यवसायियों को किराये पर उठा दिये गये।

मेले का मुख्य आकर्षण था विभिन्न भारतीय भाषाओं की जिनमें अंग्रेजी भी सम्मिलित है ८,००० चुनी हुई पुस्तकों का प्रदर्शन जो भारत में जनवरी १९६४ से पूर्व प्रकाशित हुई थीं। इनमें २,४०० हिन्दी का, २,००० अंग्रेजी, ७३५ मराठी, ५७५ गुजराती, ४१० बंगाली और १७८० अन्य भारतीय भाषाओं जैसे—गेलगू, तमिल, मलयालम, असमिया, उर्दू और पंजाबी की थी।

मण्डप का एक भाग अत्यधिक लोकप्रिय चुने हुए बाल साहित्य के प्रदर्शन के लिए सुरक्षित था।

पुस्तक मेले में पुस्तक प्रकाशकों और विक्रेताओं के सम्मेलन के लिए उन्नित अवसर प्रदान किया गया था। जो फेडरेशन आफ पब्लिशर्स एण्ड बुक सेलर्स एसोसियेशन इन इण्डिया के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ।

मेले के स्रोत मण्डप में ग्यारह साहित्यिक व सांस्कृतिक कार्यक्रम मेले के दौरान आयोजित किये गये। प्रत्येक संध्या एक भारती भाषा के लिए अर्पित थी।

सभी दृष्टियों से मेला पूरी तरह सफल रहा था। इसने जनता में पठनाभिरुचि को प्रोत्साहित किया था। समाचार पत्रों, पुस्तक व्यवसायियों और पुस्तक प्रेमियों ने नेशनल बुक ट्रस्ट के पुस्तक मेला आयोजित करने के विचार की सराहना की और आशा प्रकट की कि यह ट्रस्ट की नियमित कार्यावली में एक वार्षिक कार्यक्रम के रूप में सम्मिलित किया जायगा। ट्रस्ट को बंगाल के प्रकाशक और विक्रेता संघ का कलकत्ता में अगला पुस्तक मेला आयोजित करने का निमंत्रण भी प्राप्त हुआ।

इस प्रकार राष्ट्रीय पुस्तक मेला नेशनल बुक ट्रस्ट नियमित कार्यावली का अंग बना। मेले दिल्ली, कलकत्ता और मद्रास में लगाये गये जिनकी परिणति १९७२ में जिसे यूनेस्को ने पुस्तक वर्ष घोषित किया था, विश्व पुस्तक मेले में हुई।

तभी से नेशनल बुक ट्रस्ट हर दूसरे वर्ष प्रगति मैदान के प्रदर्शनी कक्ष में विश्व पुस्तक मेले का आयोजन करता आ रहा है। राष्ट्रीय पुस्तक मेला विश्व पुस्तक मेले की भांति हर दूसरे वर्ष लगता किन्तु विश्व पुस्तक मेले के अगले वर्ष जो राज्यों की राजधानियों में आयोजित किया जाता है। वार्षिक मेले की मुख्य प्रदर्शनी में प्रदर्शित पुस्तकें छोटी प्रदर्शनियों में बांटकर देश के विभिन्न भागों में जहां क्षेत्रीय प्रदर्शनियां लगायी जा रही हैं, भेज दी जाती हैं।

पुस्तक प्रदर्शनी के देखने के लिए उमड़ती भीड़ को देखकर इसमें कोई सन्देह नहीं रहता कि नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया के प्रयास सफल रहे हैं। बुक ट्रस्ट देश में जनता में पठनाभिरुचि जगाने में पर्याप्त सहायता दे रहा है और विशेष रूप से उन कस्वों में जहां पुस्तकों की दुकान के अभाव में कभी पुस्तकों के दर्शन नहीं होते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Office : 265666, 263366, 276162
Resi. : 226633, 227733, 226686

SWASTIC TRADING AGENCY

WHOLESALE PAPER &
BOARD MERCHANTS

Distributors :

- THE ANDHRA PRADESH PAPER MILLS LTD.
- BENGAL PAPER MILL CO. LTD.
- IHDIA PAPER PULP CO LTD.

3984, CHAWRI BAZAR
DELHI-110006

मनोज पॉकेट बुक्स

में **जन्म दिन** और
राजा बाबू

की अपार सफलता के बाद

मनोज

का नया उपन्यास

खिलौना

मनोज के असली उपन्यास केवल मनोज पॉकेट बुक्स दरीबा कलां दिल्ली-६ द्वारा ही प्रकाशित होते हैं। मनोज के नाम से निकलने वाले नकली उपन्यासों से बचने के लिए पुस्तक खरीदने से पहले उस पर मनोज पॉकेट बुक्स अवश्य देखलें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर द्वारा प्रकाशित कतिपय उत्कृष्ट ग्रन्थ

पुस्तक का नाम	लेखक/अनुवादक	मूल्य पुस्तक सं./साधा. स.	
1	2	3	4
विज्ञान			
रसायन विज्ञान			
प्रायोगिक रसायन	रामचरन मेहरोत्रा एवं राजकुमार बंसल	16-00	12-00
समस्थानिक	सत्यनारायण माथुर	1500	
नाइट्रोजन चक्र एवं नाइट्रोजन यौगिकीकरण	ओ. पी. कुलश्रेष्ठ		4-00
विटामिन तथा हॉरमोन	एन. के. माथुर एवं (कु.) ए. के. सौंध	15-50	
उत्कृष्ट गैसें	डी. डी. भटनागर	10-00	8-00
कार्बनिक रसायन	ले. फर्ग्यूसन अनु. यू. एस महनोत एवं के. एस. सुरेश	20-50	
अम्ल एवं क्षारक	रामचरण मेहरोत्रा एवं ए. के. मिश्रा		4-00
हाइड्राइड रसायन	के. के. शर्मा		4-00
विलयनों में उत्क्रमणीय एवं अनुत्क्रमणीय इलेक्ट्रोड-प्रक्रम	आर. सी. कपूर एवं जे. के. जायलवाल		7-25
उच्चस्तरीय गतिक सिद्धान्त	अमरनाथ श्रीवास्तव		7-50
एल्केलॉइड्स	जे. पी. सक्सेना		14-50
गैस विश्लेषण	के. सी. ग्रोवर		3-25
प्रावस्था नियम एवं उसके प्रयोग	वाई. के. गुप्ता	13-50	
संकुलमितीय अनुमापन	सत्यानरायण माथुर		7-50
कैरोटिनाइड्स	के. एल. मेनारिया	14-50	
संश्लेषित रेशे	(कु.) ए. के. सौंध एवं एन. के. माथुर		5-00
समबहुल तथा विषम बहुल अम्ल	आदित्य गोपाल झिंगरन	12-00	8-00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1	2	3	4
अर्द्ध-सूक्ष्म गुणात्मक विश्लेषण	के. सी. ग्रोवर	10–00	
रेडियोऐक्टिवता	आर. के. मेहता	16–00	
कार्बनिक रसायन के कुछ आधारभूत सिद्धांत (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत)	सूरेशचन्द्र आमेटा		12–00
कतिपय अभिकर्मकों के कार्बनिक अभिक्रियाओं में उपयोग (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत)	यू. एस. मनोत		11–00
बृहत् अणु–निर्माण एवं बंटन	पूरणचन्द	18–50	
बलगतिविज्ञान एवं इलेक्ट्रॉन-अन्तरण अभि-क्रियाओं की क्रियाविधियाँ	युगुलकिशोर गुप्ता	17–00	
कार्बनिक अभिक्रियाओं की क्रियाविधियाँ (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत)	सुरेशचन्द्र आमेटा	28–50	
रमन स्पेक्ट्रॉमिकी (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत)	महावीरसिंह मुडिया		7–75
परमाणु संरचना	एस. एन. माथुर	13–00	
तापभारमितीय विश्लेषण (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत)	के. सी. ग्रोवर		4–50
अवेन्जनीय ऐरोमेटिक यौगिक (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत)	केशरीलाल मेनारिया	12–75	
परॉक्साइड तथा पराक्सी अम्ल	डॉ. के. सी. ग्रोवर		7–00
विलयनों में विद्युत् रसायन	सी. एम. गुप्ता एवं जे. के. गुप्ता	23–50	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1	2	3	4
भौतिक विज्ञान			
गृह भौतिकी	ले. एम. जो. भाटवडेकर	30–00	18–00
ऊष्मागतिकी	ले. सीयर्स अनु. एम. पी. सक्सेना	16–00	
अतिचालकता (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत)	श्यामलाल काकानी	11–00	
क्वान्टम यान्त्रिकी	ले. एल. आई. शिफ अनु. सीताराम शर्मा	22–00	
लेसर और उसके उपयोग	श्यामलाल काकानी		6–50
भौतिकी की नई दिशाएँ	श्यामलाल काकानी		7–00
तापना भिकीय संलयन उर्जा (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत)	श्यामलाल काकानी		7–50
आणविक स्पेक्ट्रम और आणविक संरचना, भाग-1 (द्वि परमाणुक अणुओं के स्पेक्ट्रम)	गेरहर्ड हर्जबर्ग अनु. पी. वी. वकोरे एवं धनराज चौधरी	27–75	
आणविक स्पेक्ट्रम और आणविक संरचना, भाग-3 (बहु-परमाणविक अणुओं के इलेक्ट्रॉनिक स्पेक्ट्रम एवं इलेक्ट्रॉनीय संरचना)	गेरहार्ड हर्जबर्ग अनु. एस. पी. टंडन	22–00	
परमाणु स्पेक्ट्रम प्रवेशिका	एच. ई. ह्वाइट अनु. रमाशंकर सिंह	17–50	
परमाणु-ऊर्जा	राजकुमार जैन		10–00
सांख्यिकीय यांत्रिकी	आर. पी. रस्तोगी एवं महेन्द्रलाल श्रीवास्तव		24–00
इलेक्ट्रॉनिकी के मूल सिद्धांत	एम. एल. शिशोदिया	28–00	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1	2	3	4
विशिष्ट सापेक्षता	गौरवप्रदीप श्रीवास्तव एवं शिवयोगी तिवारी	15-00	
बनस्पति विज्ञान			
वनस्पति क्रिया और परिस्थिति-विज्ञान	एच. डी. कुमार एवं ज्ञानप्रकाश बिसारिया	18-00	
भारतीय पादप परिस्थिति विज्ञान	ले. डा. रामदेव मिश्र एवं जी. एस. पुरी अनु. रामदेव मिश्र	1800	
प्रायोगिक वनस्पति विज्ञान, भाग-1	उषा भण्डारी		20-00
प्रायोगिक वनस्पति विज्ञान, भाग-3 (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत)	एम. एम. भण्डारी	16-00	
प्रायोगिक पादप शरीर क्रिया विज्ञान	ले. मेयर एण्डरसन अनु. ए. एन. पाराशर		6-75
सूक्ष्म जैविकी एवं लाइकन्स	हरिश्चन्द्र आर्य एवं अश्विनी कुमार	15-00	10-00
पादप परिस्थितिकी और पादप भूगोल के मूल तत्त्व (विज्ञान परिषद इलाहाबाद द्वारा पुरस्कृत)	ब्रजगोपाल	19-00	
संवहनी पादपों की आकारिकी	ले. आर्थर जे. ईम्स अनु. डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा	16-00	
प्रायोगिक वनस्पति विज्ञान	ले. मेक्लीन एण्ड कुक अनु. कृष्णचन्द्र शर्मा	26-00	
पादप कार्यिकी, परिस्थितिकी एवं आर्थिक वनस्पति की	डी. एन. सैन		7-50
शैवाल	श्यामसुन्दर पुरोहित	13-00	9-00
कोशिका विज्ञान, ऊतक विज्ञान, पादप शरीर, जैव विकास मेण्डलवाद आदि	आर. के. भारतीया		8-00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय भाषा मण्डप : भारत दर्शन का सुयोग

—कृष्ण चन्द्र बेरी

'पुस्तकों का ह्रास हो रहा है, शीघ्र ही पुस्तक-संस्कृति का अस्तित्व नहीं रह जायेगा'—आधुनिक प्रचार-साधनों का अध्ययन करने वाले अनेक पश्चिमी विशेषज्ञ भविष्यवाणी करते हैं। इस चुनौती का मुकाबला करने के लिए, सम्पूर्ण विश्व में पुस्तकों का संदेश पहुँचाने के लिए, विभिन्न प्रयास हो रहे हैं।

भारत में पुस्तक-आन्दोलन के इस अभिनव कार्यक्रम में देश के प्रकाशक संघों का अभूतपूर्व योग है। अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ, फेडरेशन आफ इंडियन पब्लिशर्स एण्ड बुक सेलर्स इन इंडिया तथा फेडरेशन आफ इंडियन पब्लिशर्स देश की तीन प्रमुख प्रकाशन संस्थाएँ हैं। प्रकाशकीय संगठन जहां व्यावसायिक हैं वहीं सामाजिक और साहित्यिक चेतना के प्रेरक भी हैं। इनके अन्तर्गत प्रान्तीय तथा जिला संगठन धीरे-धीरे उभर रहे हैं। पुस्तक प्रदर्शनियों का आन्दोलन इन्हीं संगठनों के माध्यम से विकसित होता जा रहा है। इन प्रदर्शनियों के माध्यम से पाठक प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली नित्य नूतन कृतियों से परिचित होते हैं। इन संस्थाओं के द्वारा स्वतन्त्रता के बाद देश में लगभग सौ सवा सौ वृहद् पुस्तक प्रदर्शनियाँ लग चुकी हैं।

प्रदर्शनियों के माध्यम से हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं की प्रगति पर दृष्टि रखना तथा उन्हें जीवन्त रखना अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुख्य उद्देश्य रहा है। पुस्तक मेलों का आयोजन इसी कार्यक्रम का अंग है। भारतीय पुस्तक उद्योग के क्षेत्र में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले एक महत्वपूर्ण घटना का रूप ले चुके हैं। इन मेलों में हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के साथ अंग्रेजी पुस्तकों के अद्यतन प्रकाशन प्रदर्शित होते रहते हैं। साथ ही मेले के दिनों में पुस्तक-जगत की विभिन्न समस्याओं पर विचार गोष्ठियाँ तथा कार्यशालाओं (वर्कशाप) का आयोजन भी होता है, जिसमें लेखकों, अनुवादकों, प्रकाशकों, पुस्तक विक्रेताओं, पुस्तकालयाध्यक्षों और पाठकों के प्रतिनिधि भाग लेते हैं। ये गोष्ठियां पुस्तकों के प्रसार के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण निर्णय लेती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राथमिक पूर्वमाध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शालाओं हेतु हमारे उपयोगी प्रकाशन

विज्ञान निकाय	लेखक
१. आधुनिक भौतिकी भाग १ व २	डा० बी० आर० प्रधान
२. आधुनिक रसायन शास्त्र भाग १ व २	श्री एम० एल० श्रीवास्तव
३. आधुनिक वनस्पति विज्ञान भाग १ व २	डा० एन० आर० दास
४. आधुनिक जीव विज्ञान भाग १ व २	श्री ईश्वरी प्रसाद तिवारी
गणित निकाय	
१. आधुनिक बीजगणित भाग १ व २	श्री ए० के० अग्रवाल एवं ए० एस० आहूजा
२. आधुनिक निर्देशांक ज्यामिति	,, ,, ,, ,,
३. आधुनिक मेन्स्योरस	,, ,, ,, ,,
४. आधुनिक त्रिकोणमिति	,, ,, ,, ,,
५. आधुनिक अनिवार्य गणित	,, ,, ,, ,,
६. आधुनिक सामान्य विज्ञान	श्री कैप्टन ए० पी० करपाठक एवं बी० डी० शर्मा
कला निकाय	
१. आधुनिक अर्थशास्त्र की रूपरेखा भाग १ व २	श्री हरनाथ शुक्ल एवं एम० एस० परिहार
२. आधुनिक नागरिकशास्त्र भाग १ व २	श्री बी० पी० पांडे एवं एन० पी० गुप्ता
३. आधुनिक भारत का इतिहास आधुनिक विश्व का इतिहास	श्री नाइडू, खिखडकर एवं चौहान
४. आधुनिक भूगोल भाग १ व २	
५. आधुनिक सामाजिक विज्ञान	श्री अश्वनी कुमार झा
वाणिज्य निकाय	
१. बहीखाता लेखा कर्म भाग १ व २	श्री एफ० एम० गोविन्दानी एवं एन० के० शर्मा
२. आधुनिक व्यावहारिक अर्थशास्त्र भाग १ व २	,, ,, ,, ,,
३. आधुनिक वाणिज्य के मूल तत्व भाग १ व २	,, ,, ,, ,,

पूर्व माध्यमिक

१. आधुनिक हिन्दी व्याकरण एवं रचना भाग १, २, व ३
२. माडर्न इंगलिश ग्रामर भाग १, २, व ३
३. न्यू लाइट इन इंगलिश ट्रान्सलेशन भाग १, २, व ३
४. माडर्न ए से एण्ड लैटरराइटिंग भाग १ व २
५. सरल संस्कृत व्याकरण भाग १, २, व ३

प्राथमिक

१. प्राथमिक रचना भाग १, २, ३, ४, व ५
२. आधुनिक बातचीत कहानी अभिनय एवं कविता भाग १, २, ३ ४, व ५
३. अनुपरेखा सुलेखमाला भाग १, २, ३, ४, व ५

प्रकाशक

अनुपम प्रकाशन

बंजारी चौक, रायपुर (मध्य प्रदेश)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश में इस तरह के पुस्तक आन्दोलन का सूत्रपात करने का श्रेय अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ को है। १७ अप्रैल १९६१ में पटना में हुए प्रकाशक संघ के छठे अधिवेशन के अवसर पर एक बृहद् पुस्तक प्रदर्शनी लगी जिसका उद्घाटन तत्कालीन केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री हुमायूं कबीर ने किया। बिहार के तत्कालीन राज्यपाल प्रसिद्ध शिक्षाविद् डा० जाकिर हुसैन ने प्रदर्शनी के अवलोकन के पश्चात् कहा कि अब यह कहा जा सकता है कि हिन्दी विश्व भाषा होकर रहेगी। इसी ऐतिहासिक अधिवेशन में एक प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें राष्ट्रीय पुस्तक समारोह मनाने का निश्चय हुआ। तदनुसार १९६१ में १४ नवम्बर से २१ नवम्बर तक समूचे देश में राष्ट्रीय पुस्तक समारोह मनाया गया। १४ से २१ नवम्बर, ६१ तक अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ द्वारा आयोजित देश के प्रथम राष्ट्रीय पुस्तक समारोह का वाराणसी में उद्घाटन हिन्दी की प्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा ने किया। ७ दिन चलने वाले इस कार्यक्रम में डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, साप्ताहिक 'हिन्दुस्तान' के सम्पादक श्री बांके बिहारी भटनागर, श्री रामचन्द्र वर्मा आदि ने भाग लिया। बम्बई में इस समारोह का समारम्भ श्री एम० सी० छागला ने किया। इस अवसर पर बम्बई में पुस्तकजगत् की समस्याओं पर एक विचार गोष्ठी हुई। विचार गोष्ठी में भाग लेने वालों में सर्वश्री होमी तेलियार खां, प्रिंसिपल टी० के० टोपे, डेविड अब्राहम, काका साहब कालेलकर, गुलाबदास ब्रोकर, ज्योतीन देव, एन० बी० गाडगिल आदि थे। केरल में इस आयोजन का समारम्भ श्री सी० के० मणि ने किया और आन्ध्र में श्री वी० के० वेंकट राव के सभापतित्व में आयोजन हुए।

मेले ही मेले

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा पुस्तक मेलों का कार्यक्रम डा० वी० वी० केसकर के ट्रस्ट के चेयरमैन बनने के बाद प्रारम्भ हुआ। प्रारम्भ में ट्रस्ट द्वारा जम्मू कश्मीर, पंजाब, उड़ीसा, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश (वाराणसी तथा लखनऊ), राजस्थान, मध्य प्रदेश, मैसूर, महाराष्ट्र आदि राज्यों में पुस्तक प्रदर्शनियाँ लगायी गयीं और बाद में पाठकों की पुस्तक-रुचि को दृष्टिगत रख पुस्तक मेले प्रारम्भ किये गये। इन प्रदर्शनियों का उद्घाटन भूतपूर्व राष्ट्रपति राधाकृष्णन्, श्री एम० सी० छागला, उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री विश्वनाथ दास, काशी नरेश आदि महानुभावों ने किया। पुस्तक प्रदर्शनियों की यह क्रांति रेलों और जहाजों द्वारा भी जनमानस तक पहुँची।

नेशनल बुक ट्रस्ट ने देश में प्रथम राष्ट्रीय पुस्तक मेला बम्बई के क्रास मैदान चर्च गेट में ५ से १४ नवम्बर, १९६६ को आयोजित किया। वहां पुस्तकों के सम्बन्ध में दो विचार गोष्ठियां हुई—एक ट्रस्ट द्वारा आयोजित तथा दूसरी अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ द्वारा। गोष्ठियों का विषय था 'पुस्तकें शिक्षा-जगत् की सदेश वाहक' तथा 'राष्ट्रीय हित में पुस्तक का योग'। हिन्दी गोष्ठी का उद्घाटन सुप्रसिद्ध कथाकार श्री अमृतलाल नागर ने किया था। बम्बई मेले के साथ-साथ ५ से १४ नवम्बर तक सारे देश में सप्ताह व्यापी राष्ट्रीय पुस्तक समारोह मनाया गया। वाराणसी, दिल्ली, लखनऊ, प्रयाग, पटना, जबलपुर, जयपुर, जोधपुर आदि प्रमुख स्थान थे, जहाँ इस सप्ताह में प्रदर्शनियां हुई और लाखों लोगों ने इन्हें देखा।

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा ९ राष्ट्रीय पुस्तक मेले लगाये जा चुके हैं। इनमें तीन बम्बई में, एक-एक कलकत्ता, दिल्ली, मद्रास, हैदराबाद, अहमदाबाद तथा बंगलौर में। इन मेलों के प्रभावकारी परिणामों की शृंखला में अब स्वतन्त्र रूप से कलकत्ता बुक फेयर, बम्बई बुक फेयर तथा दिल्ली बुक फेयर लगने लगे हैं।

ये राष्ट्रीय पुस्तक मेले पुस्तक प्रेमी लाखों पाठकों का मिलन स्थल बन गये हैं। इन्हें राष्ट्रीय एकता का प्रतीक कहा जाता है। जहां एक ओर देश की भावात्मक एकता इन मेलों में दृष्टिगोचर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे 1979-80 के विशिष्ट संग्रहणीय प्रकाशन

मानरक्षा (ऐतिहासिक उपन्यास)	शंकरबाम	30.00
गढ़ आया सिंह गया (वीररसपूर्ण किशोर उपन्यास)	" "	10.00
मर्द मराठा " "	" "	12.00
डा० लोहिया जीवन दर्शन	डा० राजेन्द्र मोहन भटनागर	30.00
डा० अम्बेडकर	" " " "	11.00
राजस्थान की वीर रानियां	शिवव्रत लाल	10.00
लोकनायक जीवन दर्शन	डॉ० भगतराम, राधेश्याम शर्मा	18.00
वैज्ञानिक योगासन और स्वास्थ्य	डॉ० सत्यपाल	18.00
ओलिम्पिक	अजय	15.00
साइंस की करामात	ज्ञानचन्द एम०एस०सी०	12.00
देशभक्त शहीदों की गाथाएं	श्री व्यथित हृदय	15.00
धर्मवीर शहीदों की गाथाएं	" " "	8.00
उत्तर भारत की लोक कथाएं	प्रो० श्रीचन्द्र जैन	22.00
मुस्कान-महफिल	जगन्नाथ प्रभाकर	12.00
फिर इस अन्दाज से बहार आई	क्षितीश कुमार वेदालंकार	15.00
अवसरवादी बनो	भरतराम भट्ट	7.00
कालिदास के नाटक	डा० भगवतशरण उपाध्याय	18.00
प्राचीन भारत की कथाएं	डा० मंगलदेव उपाध्याय	9.00
अभिशाप (उपन्यास)	सूरजदेव प्रसाद श्रीवास्तव	16.00
अनोखा सौदा	" " "	20.00
एक अन्तहीन युद्ध (उपन्यास)	डा० राजेन्द्र मोहन भटनागर	30.00
देवलीना (उपन्यास)	" " " "	16.00
अकेला मुसाफिर (उपन्यास)	परमहंस प्रमोद	12.00
अभागिनी ममता (उपन्यास)	सुरेन्द्रसिंह जौहर	15.00
मंगलोदय (उपन्यास)	ब्रजभूषण	16.00
वज्राघात (उपन्याम)	हरिनारायण आप्टे	16.00
अनदेखे चेहरे (शिक्षाप्रद रूपक)	ब्रजभूषण	10.00
दूरदर्शी " "	" "	8.00
एक वृक्ष दस डालियां (किशोर उपन्यास)	राजकुमार अनिल	7.00
छंल और छवों " "	जीवराम जोशी	6.00
भोर की किरण " "	डा० राजेन्द्र मोहन भटनागर	3.50
जहां चाह वहां राह " "	ब्रजभूषण	4.00
सारा जहां हमारा (देशभक्ति)	शंकरबाम	10.00
नन्हे सैनिक (बाल साहित्य)	डा० श्यामसिंह शशि	4.00
आपका बच्चा (अध्यापकों तथा अभिभावकों के लिये)	रामनिरंजन शर्मा ठिमाऊ	5.00
सच्ची कमाई (एकांकी नाटक)	" "	3.00
बालक बने महान (बाल साहित्य)	राजकुमार अनिल	6.00

 किताबघर, गांधी नगर, दिल्ली 110031

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती है, वहीं देश के विभिन्न भागों से आये प्रकाशकों, लेखकों, पाठकों का यह मेला संगम स्थल प्रतीत होता है।

विश्व पुस्तक मेले

क्षेत्रीय प्रतिनिधियों और राष्ट्रीय मेलों की सफलता से प्रेरित होकर जनता की मांग पर नेशनल बुक ट्रस्ट ने १९७२ में प्रथम विश्व पुस्तक मेले का समारंभ किया। यह मेला दिल्ली में १८ मई, ७२ को आरम्भ हुआ जिसका उद्घाटन तत्कालीन राष्ट्रपति श्री वी० वी० गिरि ने किया।

प्रथम विश्व पुस्तक मेले की सफलता से देश-विदेश के सभी प्रतिनिधियों ने यह निर्णय लिया कि ऐसे मेले को एशियाई प्रकाशन-जगत् की नियमित घटना बनाना चाहिये, क्योंकि इससे भारत दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशियाई क्षेत्रों को लेकर विश्व प्रकाशनों के प्रदर्शन का एक आदर्श प्रभावकारी मंच बन सकता है।

फलतः दूसरा विश्व पुस्तक मेला दिल्ली के प्रगति मैदान में १६ फरवरी, ७६ को आयोजित हुआ। तत्कालीन शिक्षामंत्री श्री नूरुल हसन ने इसका उद्घाटन किया। इस मेले में भारत सहित १९ देशों के १८६ प्रकाशकों ने भाग लिया। इसी क्रम में तृतीय विश्व पुस्तक मेला ११ फरवरी से २० फरवरी ७८ तक दिल्ली के प्रगति मैदान में तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री बी० बी० जत्ती द्वारा उद्घाटित हुआ। इसमें आथर्स गिल्ड आफ इंडिया तथा भारतीय लेखक सम्मेलन बम्बई ने लेखकों के दो सम्मेलन आयोजित किये। प्रथम का सभापतित्व सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री जैनेन्द्रकुमार ने तथा दूसरे का डा० धर्मवीर भारती ने किया। इसी अवसर पर अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ द्वारा आयोजित 'हिन्दी प्रकाशकों के नये आयाम' गोष्ठी का उद्घाटन श्री भगवती चरण वर्मा ने किया।

१९८० में चौथा विश्व पुस्तक मेला लग रहा है। विश्व पुस्तक मेले में प्रारम्भ में जहां १०-१२ देशों ने भाग लिया, वहीं अब बढ़ते-बढ़ते इनकी संख्या ४० तक हो गई है।

प्रसन्नता की बात है कि जहां प्रथम विश्व पुस्तक मेले में मात्र १५२ प्रकाशकों ने भाग लिया, वहीं चतुर्थ विश्व पुस्तक मेले में ४०० प्रकाशन संस्थाएं भाग लेने जा रही हैं। जहां प्रथम विश्व पुस्तक मेला ६७९० स्क्वायर मीटर में लगा था, वहीं चतुर्थ विश्व पुस्तक मेला चौगुनी जगह में लग रहा है। मेले में विदेशी प्रकाशकों, सरकारी प्रकाशन गृहों, विश्वविद्यालयों, धार्मिक संस्थाओं, भारतीय भाषाओं तथा भारत में अंग्रेजी प्रकाशन करने वाले प्रकाशकों के पृथक् मंडप होंगे।

भारतीय भाषा मंडप क्यों ?

अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ ने यह अनुभव किया कि हिन्दी तथा भारतीय भाषाएं इन मेलों से लाभान्वित नहीं हो रही हैं और अंग्रेजी देश में छा रही हैं। मेले का सामान्य दर्शक अंग्रेजी पुस्तकों से भरे इन मेलों में हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की पुस्तकें चाहते हुए भी नहीं पाता था। अतः १९७८ में संघ की ओर से तृतीय विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर हिन्दी मंडप लगाया गया, जिसका बहुत ही स्वागत हुआ। मांग हुई कि संघ हिन्दी के साथ-साथ भारतीय भाषा आन्दोलन को बल दे। भारतीय भाषाओं के संवर्द्धन से हिन्दी अपना उचित स्थान स्वयं ही पा लेगी। फलतः १९८० के चतुर्थ विश्व पुस्तक मेले में भारतीय भाषा मंडप हमारे सामने है। यहां भारतीय साहित्य की विविधता पाठक को देखने को मिलेगी और वह भारत दर्शन का भी अनुभव करेगा। मंडप १९७८ के हिन्दी मंडप से पांच गुना बड़ा होगा और प्रगति मैदान के हाल आफ नेशंस में लगाया जा रहा है। यह हाल मेले का हृदय-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेरोजगारों को रोजगार !!

JOB FOR JOBLESS

प्रतियोगी परीक्षाओं में

- आपकी सफलता का दिशादर्शक।
- आपके व्यक्तित्व को उभारने वाला।
- आपमें आत्मविश्वास जागृत करने वाला।

युवापीढ़ी का एकमात्र हिन्दी मासिक।

प्रतियोगिता दर्पण

हिन्दी मासिक

जिसमें सामान्य ज्ञान, नवीनतम घटनाचक्र, सामान्य लेख, व्यक्तित्व परीक्षण एवं स्वर्णिम भविष्य हेतु उचित परामर्श। जिसका प्रत्येक अंक आपके लिये अत्यधिक उपयोगी साबित होगा।

प्रतियोगिता दर्पण की सामग्री प्रतियोगी परीक्षाओं को पढ़ाने वाले अनुभवी प्राध्यापकों व विविध विषयों के प्रतिष्ठित लेखकों द्वारा तैयार व संकलित की जाती है।

आज ही अपने नगर के पुस्तक विक्रेता/समाचारपत्र विक्रेता से मांगिए अथवा निम्न पते पर हमें लिखिए।

एक प्रति	रु० ३-५०
अर्द्ध वार्षिक	,, १९-५०
वार्षिक	,, ३७-००

प्रतियोगिता दर्पण

२/११ ए, स्वदेशी बीमा नगर, आगरा-२८२००२

फोन : ६५११०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
स्थल कहा जाता है। इसी मंडप के अन्तर्गत मध्य में हिन्दी मंडप भी रहेगा। हिन्दी मंडप में पहली बार पाठकों को अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष के अवसर पर प्रकाशित बाल-साहित्य, धार्मिक संस्थाओं के प्रकाशन, सन्दर्भ ग्रन्थों का वृहद् संग्रह तथा पुरस्कार प्राप्त ग्रन्थ एक साथ एक जगह देखने को मिलेंगे।

भारतीय भाषा मंडप दक्षिण और उत्तर में साहित्यिक आदान-प्रदान की कड़ी सिद्ध होगा, इसमें दो मत नहीं हैं। आदान-प्रदान आन्दोलन का उद्देश्य देश की सारी भाषाओं में महत्वपूर्ण साहित्य उपलब्ध कराना है। लोगों को अन्य क्षेत्रों में हो रहे सामाजिक, सांस्कृतिक परिवर्तनों तथा सृजनात्मक गतिविधियों के प्रति जागरूक करना तथा इसके फलस्वरूप विभिन्न भाषा क्षेत्रों में भावनात्मक एकता स्थापित करना है। मंडप भारत दर्शन का अद्‌भुत सुयोग सिद्ध होगा। पुस्तक प्रेमी जनता इस मंडप में आकर बंगला, तेलगु, मराठी, गुजराती, हिन्दी, उड़िया, असमिया आदि के मंडपों में अपनी-अपनी भाषा के प्रतिनिधि साहित्य का एक ही जगह दर्शन करेगी तो उसे यह अनुभव होगा कि सारा देश मंडप में पुस्तक के रूप में सिमटकर आ गया है। विविध प्रकार के बाल साहित्य को देखकर बाल और किशोर पाठकों के हृदय में एक चाह उमड़ेगी कि वे अपने देश की प्राकृतिक सुषमा, अपने देश के साहित्य, अपने देश के भव्य भवन, अपने देश की नदियां और पर्वत, अपने देश की वैज्ञानिक प्रगति, अपने देश का शिल्प, अपने देश का रंगमंच आदि प्रत्यक्ष रूप में देखने के लिए देश के विभिन्न भागों का भ्रमण करें।

हमारे देश की संस्कृति भारतीय संस्कृति के नाम से अभिहित है। इस संस्कृति की मूल भाषा संस्कृत है जो कि सभी भारतीय भाषाओं का मूल है। भारतीय संस्कृति को स्थायी रखने के लिए जहां हिन्दी सहित सभी भारतीय भाषाओं का संवर्द्धन आवश्यक है वहीं संस्कृति के प्रति हमें अपने प्रेम को बनाये रखना होगा। उर्दू भी एक भारतीय भाषा बन चुकी है। भारतीय भाषा मंडप में पहली बार संस्कृत और उर्दू के पृथक्-पृथक् मंडप एक ही कतार में लग रहे हैं।

विश्व मेले के क्रम में विगत वर्ष १४ नवम्बर, ७९ को चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट की ओर से अन्तर्राष्ट्रीय बाल पुस्तक मेले का आयोजन किया गया था। लोगों ने यह अनुभव किया कि इसमें भारतीय भाषाओं की उपेक्षा की गयी। देश में ५० प्रतिशत आबादी बच्चों की है। मेले के आयोजकों ने जितनी राशि विदेशी साहित्य की प्रदर्शनी में नियोजित की यदि उसकी आधी राशि भी भारतीय भाषाओं के बाल-साहित्य की प्रदर्शनी के संयोजन में लगती तो बहुत ही उत्तम होता। प्रसन्नता की बात है कि इस कमी की पूर्ति बाल साहित्य के प्रकाशक भारतीय भाषा के मंडप में विशेष कक्ष लगाकर कर रहे हैं।

भारतीय भाषा आन्दोलन

भारतीय भाषाओं के आन्दोलन की भावना इतनी प्रस्फुटित हुई कि प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन नागपुर में १९७५ में तथा द्वितीय मारिशस में १९७७ में आयोजित हुआ। इन दोनों सम्मेलनों में अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ ने नेशनल बुक ट्रस्ट तथा केन्द्रीय मंत्रालय के सहयोग से वृहद् पुस्तक प्रदर्शनियां लगायीं। इसी क्रम में १२ से १६ अप्रैल १९७६ को हैदराबाद में विश्व तेलगु सम्मेलन, चंडीगढ़ में विश्व पंजाबी सम्मेलन तथा मद्रास में विश्व तमिल सम्मेलन आयोजित हुए।

अपने ही देश में अपनी ही भाषा हीन भावना से ग्रस्त हो, यह बहुत ही दुखद है। मातृभाषा का नित्य के कार्यों में प्रयोग करने में हिचकिचाहट हमारी मानसिक दुर्बलता है। जहां रूस, इसराइल, ईरान अपनी भाषा रसियन, हिब्रू तथा पर्शियन द्वारा सभी काम आसानी से चला लेते हैं, वहीं हम हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को माध्यम बनाकर शिक्षा का वांछित विकास नहीं कर सके।

भारतीय भाषाओं की संस्थाओं को देश की सभी भाषाओं के संवर्द्धन के लिए संयुक्त रूप से प्रयास करना चाहिये। नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, अ० भा० हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज के चुने हुए साहित्यकारों की नवीनतम और चर्चित रचनाएँ

आलोचना और मूल्यांकन

- हिन्दी उपन्यास : समकालीन परिदृश्य — संपा० डा० महीपसिंह 40.00
- सर्वेश्वर और उनकी कविता — डा० कृष्णदत्त पालीवाल 30.00
- कृतिकार लक्ष्मीनारायण लाल — संपा० डा० रघुवंश 30.00

भाषा और भाषा विज्ञान

- हिन्दी भाषा शिक्षण — डा० भोलानाथ तिवारी, डा० कैलाशचन्द्र भाटिया 35.00
- अच्छी हिन्दी—कैसे बोलें, कैसे लिखें — डा० भोलानाथ तिवारी 25.00
  (व्यावसायिक हिन्दी भाषा के अद्यतन सिद्धांत और प्रयोग)
- आधुनिक भाषा विज्ञान — डा० भोलानाथ तिवारी 30.00
- आधारभूत हिन्दी शब्दावली — डा० जयनारायण कौशिक 45.00

उपन्यास

- आधी रात के अतिथि — मन्मथनाथ गुप्त 30.00
- सुरखाब के पर — गुरुमुखसिंह जीत 15.00
- आवारा सूरज — मेजर बाला दुबे 12.00
- मृगान्तक — गंगाप्रसाद विमल 14.00
- भगोड़ा — मुद्राराक्षस 12.00
- सहदेव का इस्तीफा — मधुकर सिंह 7.00

कहानी

- कच्ची सड़क — सर्वेश्वरदयाल सक्सेना 12.00
- चीख के आर-पार — ज्योत्स्ना मिलन 12.00
- कितने सम्बन्ध — महीप सिंह 12.00
- कील — महीप सिंह 10.00

कविता

- कविता और कविता — संपा० डा० इन्द्रनाथ मदान 60.00
  (भारतेन्दु से आज तक के प्रमुख कवियों की प्रतिनिधि कविताएँ)

हास्य-व्यंग्य

- टालू मिक्सचर — डा० बरसानेलाल चतुर्वेदी 10.00
- बहानेबाजी — डा० इन्द्रनाथ मदान 12.00

रंगमंचीय नाटक

- आदि विद्रोही स्पार्टास — बादल सरकार 12.00
- लड़ाई — सर्वेश्वरदयाल सक्सेना 9.00
- बकरी (तृतीय संस्करण) — सर्वेश्वरदयाल सक्सेना 9.00
- पंचपुरुष — डा० लक्ष्मीनारायण लाल 8.00
- दुलारी बाई — मणि मधुकर 8.00
- गुफाएँ — मुद्राराक्षस 12.00
- दंभद्वीप — विजय तेंडुलकर 12.00
- सापउतारा — शिवकुमार जोशी 12.00
- हिमालय की छाया — वसंत कानेटकर 10.00

राजनीति

- निर्मूल वृक्ष का फल — डा० लक्ष्मीनारायण लाल 40.00
  (भारतीय राजनीति के विकास का एक स्वतंत्र मूल्यांकन)

लिपि प्रकाशन, 1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्था संघ, दिल्ली, बंगीय साहित्य परिषद्, अ० भा० कन्नड़ साहित्य सम्मेलन, आल इंडिया तमिल संगम, मराठी लेखक परिषद् प्रभृति ऐसी संस्थाएं हैं, जिनके संयुक्त प्रयास से आसानी से भारतीय भाषाएं अपना उचित स्थान ग्रहण कर सकती हैं।

१९७६ में नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया ने भारतीय भाषाओं के आन्दोलन को बढ़ावा देने के लिए हिन्दी, गुजराती, बंगला के आगामी दर्शक के प्रकाशनों पर विचारार्थ गोष्ठियां आयोजित कीं। इनमें प्रकाशकों और लेखकों ने इस संबन्ध में प्रकाश डाला। भारतीय भाषाओं के प्रकाशनों के समुन्नत होने से ही देश में शिक्षा का समुचित प्रसार होगा। इन गोष्ठियों में सभी एक मत थे कि कोई भी विदेशी भाषा हमारे देश में चिरकाल तक बनी नहीं रह सकती।

भारतीय भाषाओं में आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ तीन गोष्ठियां कर चुका है। पहली गोष्ठी दिल्ली में १२ फरवरी, ७८ को, दूसरी ४ मार्च, ७९ को कलकत्ता बुक फेयर के अवसर पर कलकत्ता में, और तीसरी ९ अक्टूबर, ७९ को बम्बई बुक फेयर के अवसर पर हुई। इन गोष्ठियों में बंगला, मराठी, गुजराती, सिन्धी आदि के विद्वानों तथा प्रकाशकों ने भाग लिया। गोष्ठी में अनुभव किया गया कि आदान-प्रदान गोष्ठियां एक्सचेंज हाउस का काम कर सकती हैं। इस मंच से यह भी जाना जा सकेगा कि अनुवाद की दिशा में क्या हो रहा है और क्या अपेक्षित है।

आजादी के बाद सरकारी तंत्र में कुछ ऐसे लोग आ गये थे जो हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं से अधिक अंग्रेजी को महत्व देने लगे थे, परन्तु जनमानस की मांग के सामने और हमारे शीर्षस्थ शिक्षाविदों और राजनेताओं ने यह अनुभव किया कि हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं के बिना हम अपने देश में शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। फलतः लोक सेवा आयोग द्वारा सिविल परीक्षाओं में भारतीय भाषाओं के माध्यम से परीक्षा देने की सुविधा दी गयी और भारतीय भाषाओं की ओर उन्मुख होने का मार्ग प्रशस्त हुआ। भारतीय भाषाओं में लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं की व्यवस्था से हिन्दी तथा अन्य भाषाओं के प्रकाशनों को भी प्रोत्साहन मिला है।

हिन्दी का और भारतीय भाषाओं का भावी दायित्वों के सन्दर्भ में जो योगदान आवश्यक हो गया है उसकी ओर सभी का ध्यान आकर्षित करने का अवसर अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय पुस्तक मेलों में विशेषतः मिलता है। इन आयोजनों का इस दृष्टि से विशेष महत्त्व है।

जैसी पुस्तक वैसा भेष

१९७० के फ्रेंकफर्ट पुस्तक मेले में टारजन की साहसिक कहानियों के एक प्रकाशक ने चीते की खाल से बनी पोषाक से विभूषित होकर अपने प्रकाशनों से पंक्तियों का पाठ किया।

विश्व पुस्तक मेलों में आकर्षण के संवर्धन के लिए ऐसे उपाय बहुधा काम में लिये जाते हैं।

१९७९ के लन्दन पुस्तक मेले में एक कहानियों की पुस्तक के लिए प्रचार और व्यापार प्राप्त करने का प्रयत्न एक ऐसा व्यक्ति कर रहा था जिसने ऊपर से सफेद खरगोश का रूप बना रखा था।

इसी मेले में एक पुस्तक प्रचारक मध्ययुगीन सामन्तों-सा स्वरूप बनाकर आया था, उस युग के अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर।

—०—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौथे विश्व मेले के अवसर पर

एक विशिष्ट प्रकाशन

नोबेल पुरस्कार विजेता

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

कृत

गीताञ्जलि

बायें पृष्ठ पर बंगला मूल नागरी लिपि में, दायें पृष्ठ पर हिन्दी रूपान्तर, आकर्षक आवरण में।

मूल्य : 6-00

'सुबोध' के अन्य सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन

जीवनोपयोगी

स्वेट मार्डन

- आप क्या नहीं कर सकते ३-००
- चिन्तामुक्त कैसे हों ३-००
- हँसते हँसते कैसे जिएँ ३-००
- जो चाहें सो कैसे पायें ३-००
- अपना खर्च कैसे घटायें ३-००
- अवसर को पहचानो ३-००
- अपने आपको पहचानो ३-००
- आप सफल कैसे हों ३-००
- उन्नति कैसे करें ३-००
- धनकुबेर कैसे बनें ३-००

स्वास्थ्य-सम्बन्धी

डॉ० लक्ष्मीनरायण शर्मा

- सुख के साधन ३-००
- योग और सेक्स ४-००
- प्रेम सेक्स विवाह ३-००
- हृदयरोग कारण निवारण ५-००
- गर्भस्थिति प्रसव शिशुपालन ५-००

डॉ० समरसेन

- स्त्री-पुरुष ३-००
- वात्स्यायन कामसूत्र ३-००
- सेक्स की समस्यायें ४-००
- घरेलू इलाज ४-००
- मोटापा कैसे घटायें ४-००
- प्राकृतिक चिकित्सा ५-००
- योगासनों से इलाज ४-००

ज्योतिष

डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली

- सुबोध हस्तरेखा ५-००
- सुबोध प्रारम्भिक ज्योतिष ३-००
- सुबोध स्वप्न ज्योतिष ३-००

महिला उपयोगी

सुशीला कपूर

- आधुनिक सिलाई-कटाई ५-००
- सुबोध मेकअप ४-००

मीनाक्षी धींगड़ा

- आधुनिक पाक-कला ५-००
- आधुनिक मिष्ठान कला ५-००

खेल व्यायाम

राजेन्द्र राजीव

जूडो, कुंगफू, कराटे ५-००

शतरंज ३-००

क्रिकेट एनसाईक्लोपीडिया ६-००

योगाचार्य भगवान् देव

स्वास्थ्य और योगासन ४-००

विविध

अनिलकुमार

अँग्रेजी बोलना कैसे सीखें ४-००

मनहर चौहान

रामायण ४-००

महाभारत ४-००

हयात

रेडियो ट्रांजिस्टर मैकेनिक ५-००

ट्रांजिस्टर सर्विसिंग ५-००

सुबोध ट्रांजिस्टर गाइड ५-००

सुबोध टेलीविजन गाइड ५-००

सुबोध पाकेट बुक्स

२ दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावी विश्व पुस्तक मेले
नई दिशा : नए दायित्व

—चम्पा लाल रांका

मेला शब्द भारतीय जन-मानस में सदा ही प्रसन्नता बिखेरने वाला रहा है। उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम सभी दिशाओं में, शहर हो या गांव, सभी क्षेत्रों में, नर-नारियों ने मेलों का आनन्द लिया है। फिर पुस्तक प्रेमियों के लिए पुस्तक मेला आनन्ददायी क्यों न हो ! इसमें भी विश्व पुस्तक मेला अगर हमारे देश में हो तो इससे और अधिक प्रसन्नता की बात पुस्तक प्रेमियों के लिए क्या हो सकती है ?

भारत में तीन बार विश्व पुस्तक मेलों का आयोजन हो चुका है और चौथी बार २९ फरवरी से ९ मार्च, १९८० तक इसका आयोजन होने जा रहा है। इसकी चर्चा करते हुए ५वें और ६ठे विश्व पुस्तक मेले की अपनी कल्पना प्रस्तुत कर रहा हूँ।

जब हम भारत में विश्व पुस्तक मेले की कल्पना करते हैं तो इसका अर्थ सहज ही यह हुआ कि भारतीय वातावरण में आयोजित किये जाने वाले पुस्तक मेले का ऐसा विश्व व्यापी रूप जो एक ओर हमारे भारतीय जनमानस को लुभा ले, और दूसरी ओर विश्व भर से आये हुए लोग भी भारत के समस्त पुस्तकीय रूप को एक स्थान पर देखकर आकर्षित हों और भिन्न-भिन्न प्रकार की यादों से भरा हुआ वह समय उनके मन-मस्तिष्क पर छाया रहे।

मेले में भाग लेने वाले कौन, मण्डप किसके ?

१—भारत के बाहर से आने वाले विदेशी प्रकाशकों एवं पुस्तक विक्रेताओं का एक बडा मण्डप हो। इसमें जहां एक ओर विकसित देशों के प्रकाशकों को बुलाया जाये, वहां दूसरी ओर सबसे अधिक जोर उन देशों के प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं को आमंत्रित करने पर लगाया जाये, जहां भारतीय पुस्तकों का निर्यात अधिक-से-अधिक होने की गुंजाइश है। आवश्यकता पड़ने पर नेशनल बुक ट्रस्ट, शिक्षा मंत्रालय और भारतीय प्रकाशकों और विक्रेताओं के महासंघों के प्रतिनिधि मिलकर शिष्ट मण्डल के रूप में उन देशों में पहले से जा सकते हैं और उन लोगों को अधिक-से-अधिक संख्या में आने के लिए आमंत्रित कर सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित

चतुर्थ विश्व पुस्तक मेले

के अवसर पर अखिल

भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ

द्वारा संयोजित

भारतीय भाषा मण्डप

तथा उसके अंतर्गत

हिन्दी मण्डप

में पधारे सभी प्रकाशक

बन्धुओं के प्रति

शुभ-लाभ की

हार्दिक कामनाओं सहित

भारती प्रिंटर्स

के-१६, नवीन शाहदरा

दिल्ली-११००३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२—हमारे देश में जो प्रकाशक अंग्रेजी पुस्तकों का प्रकाशन करते हैं और अंग्रेजी पुस्तकों की बिक्री करते हैं दूसरा मण्डप उनका होना चाहिए। विश्व में भारत अंग्रेजी पुस्तकों का उत्पादन करने वाला तीसरा बड़ा देश है, इसलिए ऐसे प्रकाशकों व पुस्तक-विक्रेताओं को विशेष रूप से आमंत्रित किया जाये, जिनकी अंग्रेजी पुस्तकों का निर्यात काफी हो रहा है और जो विदेशी पाठकों की रुचि को इस अर्थ में समझते हैं कि वे किस प्रकार के भारतीय ग्रन्थ अंग्रेजी भाषा में पसन्द करते हैं।

३—अंग्रेजी भाषा के अलावा जितनी भारतीय भाषाएँ हैं, उन भारतीय भाषाओं के प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं का एक महामण्डप होना चाहिए, जिसमे किसी भी भाषा का प्रतिनिधित्व बाकी न रहे। जिन भाषाओं के प्रकाशकों और विक्रेताओं की स्थिति कमजोर है उनको विशेष रूप से सुविधाएँ देकर बुलाया जाना चाहिए। इस महामण्डप में देश की सभी भारतीय भाषाओं के मण्डप होने चाहिए, यथा हिन्दी मण्डप, उर्दू मण्डप, संस्कृत मण्डप, गुजराती मण्डप, बंगला मण्डप, तमिल मण्डप आदि। इसमें ऐसी भाषाओं की पुस्तकों के भी मण्डप लगने चाहिए जो मात्र साहित्यिक आधार पर साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली, द्वारा मान्यता प्राप्त हैं।

नेशनल बुक ट्रस्ट के नये दायित्व

भारतीय भाषाओं के महामण्डप में भाग लेने वाले भारतीय भाषाओं के प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं की स्थिति कुल मिलाकर अंग्रेजी के प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं की तुलना में कहीं कमजोर है। हमें इस स्थिति को स्वीकार करना चाहिए। और यहीं सवाल उठता है कि नेशनल बुक ट्रस्ट क्या करे, उसका दायित्व क्या हो? नेशनल बुक ट्रस्ट की स्थापना भारतीय भाषाओं के विकास के साथ जुड़ी हुई है। अंग्रेजी पर उसका अधिक जोर कभी समझ में नहीं आयेगा। भारत में अंग्रेजी का जितना प्रतिशत स्थान है, उतना प्रतिशत ध्यान ही ट्रस्ट का उस पर रहना चाहिए; जबकि इतिहास यह नही बताता। जो हो गया, वह हो गया। लेकिन अब **नेशनल बुक ट्रस्ट के नये दायित्व की परिभाषा तय होनी चाहिए।** भारतीय भाषाओं के प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं को प्रयत्न करके अधिक-से-अधिक संख्या में इस प्रकार के विश्व पुस्तक मेले में बुलाना होगा। इसके लिए खर्चे भी करने पड़ेंगे, व्यक्ति भी भेजने पड़ेंगे। यथा समय भांति-भांति से सम्पर्क भी करने पड़ेंगे, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार पहले पुस्तक मेले में भाग लेने के लिये समर्थ प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं से ट्रस्ट द्वारा सम्पर्क किया गया था। इस प्रकार पुस्तक व्यवसायियों की क्या कठिनाइयां हैं, वे दिल्ली के विश्व पुस्तक मेले में आते समय क्यों डरते हैं, इस सबका जायजा नेशनल बुक ट्रस्ट को लेना होगा ताकि ५वें या ६ठे विश्व पुस्तक मेले में उनकी संख्या उसी अनुपात में हो जिस अनुपात में वे हमारे भारत के पुस्तक उद्योग में विद्यमान हैं।

भाषायी प्रकाशकों को जोड़कर तीर्थ स्थल बनाइए

नेशनल बुक ट्रस्ट को चाहिए कि विभिन्न राज्यों के पुस्तक व्यवसायी संगठनों के प्रतिनिधियों को अपने यहाँ बुलाये, उनकी मीटिंग आमंत्रित करे। मौका पड़ने पर उन विभिन्न राज्यों में ट्रस्ट अपना प्रतिनिधि भेजे और उनके मन को जीतकर राष्ट्रीय पुस्तक मेले के साथ-साथ विश्व पुस्तक मेले के इस रूप को बदला जाये, जिससे हमारे देश की सभी भाषाओं की पुस्तकें पर्याप्त संख्या में मेले में आ सकें और इसी प्रकार उन पुस्तकों के पाठक भी खरीद करने की दृष्टि से वहां पर आ सकें। क्यों न पांचवां अथवा छठा विश्व पुस्तक मेला एक ऐसा विशाल तीर्थ बन जाये जहां देश के विभिन्न हिस्सों से विशेष रेल गाड़ियां, विशेष बसें पाठकों को ले-लेकर आयें और वे पाठक इस विश्व पुस्तक मेले का पूरा आनन्द ले सकें! ऐसा विश्व पुस्तक मेला १० दिनों की बजाय ३० दिन चले। हर राज्य सरकार की रुचि इसमें पैदा की जाये। नेशनल बुक ट्रस्ट ने मेले के वातावरण को बनाया है जो अपने आप में प्रशंसनीय है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामयिक प्रकाशन के नवीनतम प्रकाशन

उपन्यास

● छोटे-छोटे महायुद्ध	: रमाकान्त	....	16·00
● मंचनायक	: राजेन्द्र मोहन भटनागर	....	16·00
● एक और सैलाब	: प्रतापनारायण टंडन	....	20·00
● अन्तराल के बाद	: प्रदीप पंत	....	9·00
● एक असम्भव मृत्यु	: प्रदीप पंत	....	11·00
● तीसरी आँख का दर्द	: मस्तराम कपूर	....	20·00
● एक खंडित इंद्रधनुष	: सुरेन्द्र नाथ	....	15·00
● अस्वीकार	: गोपाल उपाध्याय	....	20·00
● नीले आकाश के लिए	: नित्यानन्द	....	11·00

कहानी संग्रह

● दर असल	: सुरेश उनियाल	....	10·00
● एक धुन्द से	: रंजना शर्मा	....	10·00
● पुल पार का आदमी	: हरिहर द्विवेदी	....	10·00
● शहर में आखिरी दिन	: देवेन्द्र उपाध्याय	....	8·00
● परशुराम की श्रेष्ठ कहानियाँ	: परशुराम	....	10·00
● उपेक्षिता	: प्रेम पाठक	....	12·00

नाटक

● ज़हर (मद्य निषेध नीति पर है)	: श्यामलाल मधुप	....	7·00
● आईने का कोरस	: अमीक हनफी	....	11·00

विविध

● व्यंग्य के मूलभूत प्रश्न	: डा० शेरजंग गर्ग	....	25·00
● छोटी-छोटी बातें	: रत्नलाल शर्मा	....	12·00
● मेंहदी लगे हैं मेरे हाथ	: कमला सिंघवी	....	10·00

बाल एवं किशोरोपयोगी

● आजादी की पहली लड़ाई	: राजेन्द्र मोहन भटनागर	....	6·00
● राजा भोज की लोक कथाएँ	: बलबीर त्यागी	....	6·00
● राजा विक्रम और रानी चतुरा	: बंशीलाल यादव	....	4·50
● आजादी का नन्हा सिपाही	: बलवीर त्यागी	....	4·00
● दमयन्ती	: शान्ति भट्टाचार्य	....	4·00
● सांस्कृतिक एकता की प्रेरक कहानियाँ	: श्री व्यथित हृदय	....	4·50
● अनुशासन की बोध कथाएँ	: डा० विनोद बाला शर्मा	....	6·00

प्रौढ़ोपयोगी

● पढ़िये पढ़ाइये	: श्री व्यथित हृदय	....	6·00
● ज़हर (पेपर बैंक)	: श्यामलाल मधुप	....	6·00

सामयिक प्रकाशन

3543, जटवाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 फोन : 279386

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन विभिन्न राज्य सरकारों को वह अधिक रुचि के साथ शामिल नहीं कर सका, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि भारतीय भाषाओं के प्रकाशक और पुस्तक विक्रेता कम संख्या में भाग लेते रहे हैं। यह जो कमी रह गयी है, इसको पूरी तरह ध्यान देकर नेशनल बुक ट्रस्ट पूरा करे। तभी उसका दायित्व पूर्ण होगा।

पुस्तकीय कार्यक्रम : नयी दिशा दें

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि पुस्तकीय गतिविधियों से सम्बन्धित जो विभिन्न कार्यक्रम होते हैं, उनको भी नयी दिशा देने की जरूरत है। अब तक का अनुभव यह है कि छोटे प्रकाशक अथवा छोटे पुस्तक विक्रेता इन कार्यक्रमों में अधिक रुचि नहीं ले पाते, इसलिए इस प्रकार के सभी कार्यक्रमों पर नये सिरे से विचार किया जाना जरूरी है। चाहे वह प्रशिक्षण कार्यक्रम हो, चाहे वह गोष्ठी हो, चाहे वह वर्कशॉप हो, हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि छोटे कस्बे और गांव में रहने वाले पुस्तक व्यवसायी भी प्रशिक्षित हों और शिक्षा तथा पुस्तक जगत के सन्देशवाहक बन जायें। मात्र बड़े-बड़े शहरों के पुस्तक व्यवसायी पूरे पुस्तक उद्योग का प्रतिनिधित्व नहीं करते। माना कि उनका अपना स्थान है, पर छोटे पुस्तक-व्यवसायियों का भी अपना स्थान है। हमारा हर एक कार्यक्रम सबको साथ लेकर चलने वाला होना चाहिए।

रुचि आधारित : बिक्री आधारित

इसी प्रकार तीसरा बड़ा प्रश्न यह है कि हम मेले को रुचि आधारित और बिक्री आधारित बनायें, इसका मतलब यह है कि अच्छी-अच्छी पुस्तकें अधिक से अधिक संख्या में वहां प्रदर्शित हों, उनकी बिक्री हो। खरीद-बिक्री का सिलसिला इतना तेज हो कि आने वाला प्रकाशक और पुस्तक विक्रेता आगे के लिए उत्साहित हो, तथा दूसरी ओर पाठक की प्यास अशान्त न रहे।

विशेष पाठकीय अनुदान की घोषणा हो

भारत सरकार के लिए एक सुझाव यह है कि ऐसे अवसर पर पुस्तकों के अनुकूल वातावरण विकसित करने के वास्ते व्यापक आधार पर पाठकों के लिए विशेष अनुदान की घोषणा करे, जिस प्रकार कि खादी की खरीद. के लिए सरकार अनुदान दिया करती है। अगर तीस प्रतिशत का अनुदान भारत सरकार दे तो मैं समझता हूँ इस प्रकार के पुस्तक मेले में पुस्तकीय वातावरण बनाने में क्रांति हो जायेगी। इसी प्रकार की घोषणाएँ राष्ट्रीय पुस्तक मेले के अवसर पर भी की जानी चाहिए।

लेखकीय व प्रकाशकीय प्रतिभा को बढ़ावा मिले

विश्व पुस्तक मेले का एक रूप यह होना चाहिए कि भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ पुस्तकें पहले से पूरी तैयारी के साथ एक जगह प्रदर्शित हों। विभिन्न भाषाओं में उनका संक्षिप्त विवरण तैयार हो और दूसरी भाषाओं में प्रकाशन के लिए शर्तें पहले से छपी हुई हों, ताकि देश की विभिन्न भाषाओं में श्रेष्ठ पुस्तकें जल्दी से जल्दी अनूदित होकर प्रकाशित हो सकें और विदेशों में विभिन्न विदेशी भाषाओं में भारतीय पुस्तकें अनूदित होकर प्रकाशित हो सकें। विश्व पुस्तक मेले का प्रमुख उद्देश्य यह होना चाहिए कि भारत की लेखकीय प्रतिभा को, प्रकाशीय प्रतिभा को, देश के बाहर भी स्थान मिले।

सर्वेक्षण दल बनाये जाएँ

५वें और ६ठे विश्व पुस्तक मेले में और क्या-क्या किया जा सकता है, इसका सर्वेक्षण-अध्ययन अभी से शिक्षा मंत्रालय और नेशनल बुक ट्रस्ट के विभिन्न दल कर सकते हैं। ४था विश्व पुस्तक मेला इसके लिए उपयुक्त अवसर है। वे दल भाग लेने वाले प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं और दूसरी ओर पाठकों, लेखकों और पुस्तकालयाध्यक्षों की प्रतिक्रियाओं को जान सकते हैं, उनके सुझाव प्राप्त कर सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे उपयोगी अर्थ-वाणिज्यिक प्रकाशन

एम० ए०; एम० कॉम तथा बी० ए०; बी० कॉम हेतु

आर० पी० वार्ष्णेय		
	सांख्यिकी के मूल तत्व	35.00
	उच्चतर सांख्यिकी	20.00
	Practical Problems in Statistics	25.00
डा० डी० पी० गौतम		
	अर्थशास्त्र के सिद्धान्त	21.75
	राजस्व	15.00
	वितरण एवं राजस्व	18.00
डा० गुप्ता एवं डा० शर्मा		
	भारत में परिवहन	18.00
प्रो० अस्थाना एवं चौपड़ा		
	भारत में आर्थिक नियोजन	15.00
	सचिवीय पद्धति	12.00
डा० आर० एम० कपूर		
	संक्षेपिका लेखन, बाजार	
	समाचार एवं व्यावसायिक पत्राचार	
	Commercial Drafting Official Drafting	
	Business English	
डा० एम० के० सेठी		
	वाणिज्य सन्नियम	
	Business Communication	
	Company Secretarial Practice	
डा० एच० एल० शर्मा		
	आर्थिक एवं वाणिज्यिक निबन्ध	
प्रो० गुप्ता एवं मीत्तल		
	व्यावसायिक संचार	
प्रो० नारंग एवं गुप्ता		
	कम्पनी सचिवीय पद्धति	
डा० अविनाश एवं वेद दीक्षित		
	औद्योगिक सन्नियम	
डा० कपूर एवं पोरवाल		
	व्यावसायिक हिन्दी	
डा० आर० एन० कपूर		
	मुद्रा एवं बैंकिंग	

जवाहर पब्लिकेशन्स १/६५, पीपलमंडी, आगरा

दूरभाष/Telephone : 72829, 76559 Jawahar Gupta

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Financial Management of Indian Railways By Dr. B. N. Asthana	30.00
प्रबन्धकीय लेखांकन (भारतीय विश्वविद्यालयों की एम. कॉम. कक्षाओं के लिए) लेखक प्रो. जे. के. अग्रवाल व आर. के. अग्रवाल	42.00
उच्चतर लेखांकन एम. कॉम. के विद्यार्थियों के लिए) लेखक डा. एम. सी. खण्डेलवाल	42.50
लागत लेखांकन एवं लागत नियन्त्रण (भारतीय विश्वविद्यालयों की एम. कॉम. कक्षाओं के लिए) लेखक प्रो. एम. एल. ओसवाल	42.50
प्रबन्ध के सिद्धान्त एवं व्यवहार (विभिन्न विश्वविद्यालयों की एम. कॉम. कक्षाओं के लिए) लेखक डा. जी. डी. शर्मा व जी. सी. सुराना	22.00
सेविवर्गीय प्रबन्ध एवं औद्योगिक सम्बन्ध (विभिन्न विश्वविद्यालयों के एम. काम. के विद्यार्थियों के लिए) लेखक डा. जी. डी. शर्मा व डा. जी. सी. सुराना	32.00
भारत में लोक उद्योग (एम. कॉम. के विद्यार्थियों के लिए) लेखक डा. जी. डी. शर्मा, के. के. शर्मा व जी. सी. सुराना	21.00
सरकार, समाज और व्यवसाय (भारतीय विश्वविद्यालयों की एम.कॉम. कक्षाओं के लिए) लेखक डा. ज्ञानेन्द्र उपाध्याय एवं आर. एल. शर्मा	25.00
सामग्री प्रबन्ध (भारतीय विश्वविद्यालयों की एम. कॉम. कक्षाओं के लिए) लेखक प्रो. बी. एल. पोरवाल एवं एस. एल. सुथार	16.00
सहकारिता के सिद्धान्त एवं व्यवहार लेखक डा. आर. बी. उपाध्याय एवं ओ पी. शर्मा	20.00
निगम प्रबन्ध (For M. Com. Classes) By Porf. M· D. Agrawal	15.00
वित्तीय प्रबन्ध के सिद्धान्त लेखक पो. एम. डी. अग्रवाल एवं एन. पी. अग्रवाल	35.00
आर्थिक प्रशासन के सिद्धान्त एवं व्यवहार (ए. कॉम. तथा एम. ए. के विद्यार्थियों के लिए) लेखक डा. हरिश्चन्द्र शर्मा व एम. एल. गुप्ता	18.00
प्रबन्ध अंकेक्षण (एम. कॉम. के विद्यार्थियों के लिए) लेखक डा. एम. सी. खण्डेलवाल	22.00
धनकर, उपहारकर एवं सम्पदा शुल्क (भारतीय विश्वविद्यालयों के एम. कॉम. एवं बी. कॉम. के विद्यार्थियों के लिए) लेखक डा. ओ. पी. चावला व बी. एल. गुप्त	
अंकेक्षण लेखक डा. डी. सी. जैन. तथा एम. सी. खण्डेलवाल	18.00
भारतीय विदेशी व्यापार एवं प्रशुल्क (आन्तरिक व्यापार सहित) लेखक डा. एम. पी. सेन	10.00
विपणन प्रबन्ध लेखक प्रो. बी. एम. भदादा एवं बी. एल. पोरवाल	35.00
Practical Problems in Statistics (For M. A., M. Com., B. Com., C. A., C.W.A., I.A.S. etc.) By Proft. N. L. Garg	27.00
लागत लेखा (Cost Accounts) बी. कॉम. के विद्यार्थियों के लिए लेखक प्रो. एम. एल. ओसवाल तथा डा. एन. के. माहेश्वरी राजस्थान) संस्करण	15.00
द्वितीय वर्ष आनर्स एवं अन्य विश्वविद्यालयों का संस्करण)	18.00
सांख्यिकी (Statistics) लेखक डा. डी. एस. यादव, एल. एस. पोरवाल, एच. सी. शर्मा तथा बाई के शर्मा	22.00
बैंकिंग विधि एवं व्यवहार (Banking Law and Practice)	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक डा. मालीराम एवं जी. एन. शर्मा	16.25
अर्थशास्त्र के सिद्धान्त (Principles of Economics)	
लेखक डा. जे. एम. जोशी, आर. एन. सिंह तथा जे. पी. श्रीवास्तव	28.75
कम्पनी अधिनियम एवं सचिवीय पद्धति (Company Law and Secretarial Practice) लेखक डा. आर. बी. उपाध्याय,	
प्रो. पी. एल. चतुर्वेदी एवं जी. एल. गुप्ता	21.00
प्रबन्ध के प्रारम्भिक सिद्धान्त (Elements of Management)	
लेखक डा. आर. जी. सरीन एवं आर. बी. उपाध्याय	16.00
व्यापारिक सन्नियम (Commercial Law)	
लेखक डा. बी. एस. माथुर एवं के. बी. सक्सेना	22.00
व्यावसायिक एवं औद्योगिक सन्नियम (Commercial & Industrial Law)	
लेखक प्रो. जी. एन. शर्मा, के बी. सक्सेना एवं बी. एल. पोरवाल	18.00
वित्तीय एवं लागत रेखा (Financial and Cost Accounting)	
लेखक डॉ० डी. सी. जैन, एम. सी. खण्डेलवाल एवं एच. एस. पारीक	24.75
व्यावसायिक संरचना एवं संगठन (Business Structure & Organisation)	
लेखक डॉ. वाई. के. शर्मा, ए. के. गुप्ता एवं के. एन. शर्मा	25.00
भारतीय आर्थिक प्रशासन (Indian Economic Administration)	
लेखक डॉ. हरिश्चन्द्र शर्मा	15.00
वाणिज्यिक अंकगणित (Commercial Arithmetic)	
लेखक प्रो. जे. के. अग्रवाल	7.50
निगम वित्त प्रबन्धन (Corporation Finance)	
(एम. कॉम. कक्षाओं के लिए) लेखक डॉ. डी. एस. यादव	6.00
Modern Inorganic Chemistry)	
By Dr. G. C. Shivahare, Principal V. P. Lavania and Dr. P. P. Sharma	20.00
आधुनिक अकार्बनिक रसायन	
लेखक डा. जी. सी. शिवहरे एवं प्रिंसिपल लवानिया	17.50
Fundamental Organic Chemistry	
By Drs. U. S. Mahnot and Santosh Kumar	15.00
नवीन कार्बनिक रसायन	
लेखक डॉ० यू. एस. मनहोत व सन्तोष कुमार	14.70
कार्बनिक रसायन लेखक डा. मित्तल शिवहरे, भार्गव	13.00
Modern Physics	
By Drs. R. C. Bhandari, Sisodia, Profs. Jain & Khameshara	15 00
आधुनिकी भौतिकी	
लेखक डा० आर. सी. भण्डारी, शिशोदिया, प्रो० जेन एवं खमेशरा	20.00
Modern Physics & Electronics	
By Drs. R. C. Bhandari, M. L. Sisodia, & N. C. Jain	16.00
Electricity & Electronics	
By Drs. R. C. Bhandari, Sisodia, Profs. Jain & Khameshara	8·75
विद्युत् की एवं इलेक्ट्रॉनिकी लेखक डा० आर. सी. भण्डारी एम. एल. शिशोदिया, प्रो. जैन, व खमेशरा	17.00
University Practical Physics	
By Dr. M. G. Bhatawdekar, Profs. S. S. Chaudhri & T. L. Dashora	15.00
Determinants & Matrices By Profs. K. N. Mehra K. N. Bhargave & K. L. Bhargava & K. N. Bhatt	8.00
Integral Calculus	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

By Dr. K.C. Sharma, Profs. R. B. Gaur & O. P. Tandon	12.00
Differntial Calculus	
By Dr. M.C. Gupta, Profs. D.S. Juneja & O. P. Tandon	20.00
A Text Book of Hydrostatics	
By Dr M.C. Gupta, Profs. R.C. Gaur & O. P. Tandon	8.00
Co-ordinate Geometry	
By Dr G.C. Patni & Prof. R. C. Singhvi	8.00
समुच्चय सिद्धान्त एवं संख्या पद्धति [Set Theory & Number System)	
लेखक डा. एम. सी. गुप्ता व के. सी. शर्मा	3·50
Logarithmic & Other Tables By Principal Oak	2.50
भवन निर्माण (A Text Book of Building Construction)	
लेखक प्रिन्सिपल बी. के. जैन व कुलश्रेष्ठ	8·95
कार्यशाला औद्योगिकी (A Text Book of Workshop Technology)	
लेखक टहिल मंचनाणी	12.95
इन्जीनियरी द्रव्य (A Text Book of Engineering Materials)	
लेखक अग्रवाल एवं गुप्ता	6·75
Reinforced Concrete Designs	
By Patwardhan & P. R. Agarwal	12.27
प्रतिनिधि राजनीतिक विचारक (Representative Political Thinkers)	
लेखक डा. एम. पी. राय, के. एल. कमल एवं प्रो. पी. के. चढ्ढा	15·00
प्रमुख देशों के संविधान लेखक डा. प्रकाशलाल माथुर	12·00
Generalists Vs. Specialists	
Edited By Prof. Ziauddin Khan, Sinha and Arora	2·00
Development Administration at the State Level	
By S. S. Tanwar, Edited By Ziauddin Khan	4.00
Planning Administration ot the State Level	
By Tej Kumar Jain, Edited By Ziauddin Khan	5.00
Labour Administration at the State Level	
By Sudhakar Sharma, Edited By Ziauddin Khan	4.00
Municipal Administration in Rajasthan	
By D. S. Chaudhary	12.00
प्रादेशिक भूगोल (संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत रूस, ग्रेट ब्रिटेन, न्यूजीलैंड एवं संयुक्त अरब गणराज्य) लेखक प्रिन्सिपल गणेश नारायन माथुर, प्रो. जमनालाल दशोरा एवं विनीत कुमार चौधरी	13·00
Viva Voce on Elementary Surveying By R. P. Joshi	0·75
जापान का आर्थिक विकास लेखक प्रो. बी. एल. दोषी	5.00
व्यष्टि अर्थशास्त्र (Micro Economics)	
लेखक डा. आर. एन. सिंह व जे. पी. श्रीवास्तव	15.00
A Hundred Steps to Translation (English-Hindi)	
By Prof. M. K. Prem	1.25
Dictionary of General English By R. L. Sharma	0.60
Essentials of General English (Containing Translation, Precis writing, Idioms, Phrases, Letters, Corrections ond Pairs of words etc.) By Sharma, Singh & Jain	1.75
गणित शिक्षण लेखक श्रीमती चन्द्रा भटनागर एवं	11.00
Mechanics (Kinetic Theory of Ggses & Bulk Properties of Matter) By Drs. R. C. Bhandari, M. L. Sisodia, Profs. S. S. Chaudhri & S. M. Khameshra,	18.75
यांत्रिकी (Mechanics) (अणुगति सिद्धान्त, पदार्थ के स्थूलता गुण एवं सांख्यिकीय यांत्रिकी) लेखक डा. आर. सी. भण्डारी, एम. एल. शिशोदिया व प्रो. परांजपे	15.00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Thermodynamics & Electromagnetics
(A few Thermal and Optical Pheuomena)
By Drs. M. G. Bhatawdekar, Jagnnadham & Jain — 18.00
Cell Biology and Animal Physiology
By Drs. D. K. Kaul and K. S. Kohli — 10.00
Genetics, Evolution and Animal Ecology
By Drs. D. K. Kaul aud K. S. Kohli — 15.00
Cell Biology, Genetics & Evolution
By Drs. D. K. Kaul, K. S. and K.C. Sharma — 11.75
Animal Physiology By Drs. Kaul & Kohli — 7·00
An Introducation to the Taxonomy of Angiosperms
By Drs. Y.D. Tyagi & Shashikala Kshetrapal — 24.00
आवृत्तबीजी वर्गी का एक परिचय
(An Introducation to the Taxonomy of Angiosperms)
By Drs. Y.D. Tyagi and Shashikala Kshetrapal — 29.00
Plant Physiology By Drs. S.K.Pillai & Mrs. A. Pillai — 15.00
A Text Book of Gymnosperms By Drs. L.N. Vyas, S.S. Purohit & R. K. Garg — 11.75
अनावृत्तबीजी (Gymnosperms)
By Drs. L.N. Vyas, S.S. Purohit & R.K. Garg — 9·00
A Text Book of Algae (For Degree Classes)
By. Drs. M.S. Ghemawat, J.N. Kapoor & H.S. Narayana — 12·75
Introducation to Bryophyta (For Degree Classes)
By Dr. P.D. Sharma — 15.00
ब्रायोफाइटा परिचय लेखक डा. पी. डी. शर्मा — 14.80
A Text Book of Botany By Drs. G.S. Nathawat, P.D. Sharma & Prof. R.K. Sahani — 11.40
वनस्पति शास्त्र लेखक डा. जी. एस. नाथावात. पी. डी. शर्मा व प्रो. आर. के. साहनी — 22·00
Out Lines of Cytology By Prof. Sarna & Sriram — 6.00
Dynamics (For Degree Classes)
By Dr. M.C. Gupta & Prof. D.S. Juneja — 12.00
Elements of Real Analysis (For Degree Classes)
By Drs. K.C. Sharma & G. N. Purohit — 11.00
Infinite Series (Convergence. Divergence and Fourier Series)
By Profs. KN. Mehra & K.L. Bhargava — 3·75

RAMESH BOOK DEPOT

Jaipur (Rajasthan)

Phones Office : 72492
Resi : 63314

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विषय यही होगा कि पूर्वा या छठा विश्व पुस्तक-मेला उनकी दृष्टि में कैसा हो ? क्या-क्या नयी बातें जोड़ी जायें ? तभी हम जान पायेंगे कि विश्व पुस्तक मेले का सही स्वरूप कैसे विकसित होगा, जिससे देश का हर प्रबुद्ध पुस्तक प्रेमी जुड़ जाये। सही अर्थ में विश्व पुस्तक मेला अगर ऐसा तीर्थस्थल बन जाये तभी नेशनल बुक ट्रस्ट और भारतीय भाषाओं के प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं के संघों व महासंघों के उद्देश्य सफल हो सकेंगे।

पुस्तक-व्यवसायी संगठनों का दायित्व

देश के अखिल भारतीय संगठन यथा फेडरेशन ऑफ पब्लिशर्स एण्ड बुक सेलर्स एसोसिएशन्स इन इण्डिया, अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ, फेडरेशन ऑफ इण्डियन पब्लिशर्स तथा जहां-जहां भी प्रान्तीय संगठन हैं—वे सभी संगठन सक्रिय रूप से राष्ट्रीय पुस्तक मेलों व विश्व पुस्तक मेलों के प्रति अपने दायित्व को नये सिरे से समझें व स्थायी समितियों का गठन करें। इन समितियों का दायित्व हो कि वे अपने सदस्यों व अपने क्षेत्र की राज्य सरकारों, विश्व विद्यालयों आदि को प्रेरित कर इन विश्व पुस्तक मेलों के साथ उन्हें जोड़ें। इन मिले-जुले प्रयासों का दूसरा परिणाम यह भी होगा कि प्रत्येक विश्व विद्यालय नगर में और प्रत्येक जिले में पुस्तक मेलों का वातावरण बन जायेगा। शिक्षा तथा पुस्तक-जगत के लिए यह नई देन होगी। विश्व पुस्तक मेलों के लिए हमारा यही कर्म है, यही धर्म है।

मां–पुत्र वार्तालाप

बात गत कलकत्ता पुस्तक मेले की है।

एक महिला ने अपनी उठती उम्र के पुत्र के साथ मेले में प्रवेश किया। दोनों थोड़ी देर इधर उधर घूमे, फिर माँ ने पुत्र से कहा : "अपने लिए मनचाही पुस्तकें चुन लो।"

पुस्तकों का विशाल प्रदर्शन देखकर वह नवयुवक चकरा गया था। उसने माँ से कहा : मां, मेरे लिए पुस्तकें तुम ही चुनो। मैं यह काम नहीं कर पाऊँगा।" मां का उत्तर था : "अगर तुम किसी राजनीतिक दल या ट्रेड यूनियन में होते तो तुम इतना सोच-विचार नहीं करते।" और वह अपने पुत्र के लिए पुस्तकें चुनने में जुट गयी।

मां ने जो कहा था उसका कारण साफ दीख रहा था। वहां कुछ युवक केवल मार्क्सवादी साहित्य खरीद रहे थे, कुछ उसकी तरफ देख भी नहीं रहे थे।

पुस्तकों के सम्बन्ध में इस प्रकार के दुराग्रह से समुचित एवं संतुलित मानसिक विकास नहीं हो पाता। सभी तरह का साहित्य पढ़ने का अभ्यास बच्चों और नवयुवकों में आरम्भ से विकसित किया जाना चाहिये। एक मां की उपरोक्त शिक्षा नयी पीढ़ी के सभी लोगों के लिए उपयोगी हो सकती है।

इस मेले में बच्चों की पुस्तकें बहुत बिकीं, वह भी भारतीय भाषाओं की। यह देखकर एक दर्शक ने दूसरे के सामने प्रश्न उठाया : "मां-बाप बच्चों को अंग्रेजी के माध्यम से पढ़ाने का इतना आग्रह करते हैं, परन्तु बच्चे तो अपनी मातृभाषा की ओर खिंचे चले जा रहे हैं।"

—o—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के अंग्रजी पुस्तक-उद्योग में

पिछले पांच वर्षों में स्थापित

एक बड़ा नाम

डी. के. पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स

[देश के लगभग पांच सौ प्रकाशकों के अधिकृत वितरण]

★

पुस्तक विक्रेताओं को उचित सुविधाओं से भरी
सेवाएँ देने वाला प्रतिष्ठान

●

किसी भी अंग्रेजी पुस्तक के समुचित वितरण के लिए

●

तत्काली सम्पर्क कीजिए :

डी. के. पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स

1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2

फोन : 274819

तार : डी. के. बुक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकीय रुचि के विकास में पुस्तक प्रदर्शनियों का महत्त्व

—ताराचन्द वर्मा

आज के अत्यन्त व्यस्त युग में पाठकीय रुचि के विकास में पुस्तक-प्रदर्शनियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आर्थिक दबाव से पीड़ित आज के मानव को अपनी आवश्यकता की वस्तुएं तलाशने के लिए प्रदर्शनियां उपयोगी सिद्ध होती हैं। जरूरत इस बात की है कि इन प्रदर्शनियों का आयोजन सुनियोजित सुविचारित ढंग से किया जाय।

हिन्दी पुस्तकों के प्रति पाठकीय रुचि गिरती जा रही है। स्थिति इतनी दयनीय हो गयी है कि लेखक, कम्पोजीटर, प्रूफ रीडर के बाद चौथे पाठक की तलाश जारी है।

ईमानदारी से अपने भीतर झांकें तो हिन्दी पुस्तकों के प्रति पाठकीय रुचि की इस दयनीयता को स्वीकारना ही पड़ेगा। इसके कारण चाहे कुछ भी हों, वे आज की परिस्थितियों की देन हैं जिनमें हमें—पुस्तकों और पाठकों को—जीना है और इन परिस्थितियों को नकार करके नहीं, स्वीकार करके ही अस्तित्व को बनाये रखा जा सकता है।

प्रसंगतः विचारणीय यह है कि वर्तमान परिस्थितियों में पुस्तक प्रदर्शनियां कहां तक पाठकीय रुचि के विकास में सहयोगी सिद्ध हो रही हैं और उन्हें किस सीमा तक या किस दिशा में और अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है।

इन प्रदर्शनियों की उपयोगिता-मात्रा दर्शकों की संख्यात्मकता तथा गुणात्मकता दोनों पर निर्भर करती है। एक स्थान पर लगभग सभी विषयों पर अनेक आकार-प्रकार और साज-सज्जा की पुस्तकें नवीनता के आकर्षण से दर्शकों के मन में खरीदने और उसके अभाव में कम से कम उस पुस्तक को कहीं से लेकर पढ़ने की लालसा उत्पन्न अवश्य करती हैं। अनेक ऐसे विषयों की पुस्तकें, जिनके बारे में सामान्यतः कम जानकारी हो पायी है, पाठकों में नयी रुचि भी उत्पन्न करती हैं।

जो लोग किसी विशेष उद्देश्य से या अपनी रुचि के विषय पर पुस्तकें देखने जाते हैं, उन्हें भी विविधता के साथ विषयों की नवीनता अपनी ओर आकृष्ट करती हैं, और इससे पाठकीय रुचि के विकास में सहयोग मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सस्ता साहित्य मंडल' का उद्देश्य

स्वस्थ, चरित्र-निर्माणकारी साहित्य सस्ते-से-सस्ते मूल्य में प्रकाशित करता रहा है। विभिन्न विषयों की उसने लगभग दो हजार पुस्तकें निकाली हैं।

यदि आप

इतिहास और राजनीति, साहित्य और संस्कृति, धर्म, आध्यात्म और दर्शन, नीति, आचार और शिक्षा, आत्मकथा, जीवनी और संस्मरण, कथा, कहानियाँ और उपन्यास, यात्रा-वृतान्त, नाटक और एकांकी, स्वास्थ्य और प्राकृतिक चिकित्सा, कृषि, सहकारिता और सामुदायिक विकास, बालोपयोगी तथा किशोरोपयोगी साहित्य, भारतीय संतों और विदेशी चिंतकों की कृतियाँ, ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें पढ़ना चाहते हैं तो उसके लिए

'मंडल' की पुस्तकों की

मांग कीजिये। इन पुस्तकों की विशेषताएँ ये हैं :

- सभी पुस्तकें सात्विक और प्रामाणिक हैं,
- परिवार का प्रत्येक सदस्य इन्हें निस्संकोच पढ़ सकता है,
- मूल्य सस्ता है,
- छपाई शुद्ध, सुन्दर और सुरुचिपूर्ण है,
- भाषा-शैली सरल-सुबोध है,
- पुस्तकें चरित्र को ऊँचा उठाकर अच्छा और सच्चा मनुष्य बनने की प्रेरणा देती हैं।

एक कार्ड

लिखकर 'मंडल' का नया सूची-पत्र मंगा लीजिये और अपनी पसंद की पुस्तकें चुनकर हमसे मंगा लीजिये।

सस्ता साहित्य मंडल

एन-७७, कनाट सर्कस, नई दिल्ली

चतुर्थ विश्व पुस्तक मेले में आप 'मंडल' के स्टाल संख्या १६६ पर अवश्य पधारें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकीय रुचि के विकास में पुस्तक प्रदर्शनियां एक और रूप में भी सहयोग प्रदान करती हैं : विभिन्न भाषा-भाषी प्रकाशक इन प्रदर्शनियों से नवीन विषयों व प्रकाशन तकनीकों की जानकारी प्राप्त कर अपने-अपने क्षेत्रो में प्राप्त जानकारी के आधार पर पुस्तकें प्रकाशित कर पाठकीय रुचि की जागृति एवं उसकी अभितृप्ति कर सकते हैं।

किन्तु यह तस्वीर का एक अत्यन्त गौण पहलू है—मूल मुद्दा यह है कि प्रदर्शनी के आयोजक पाठकीय रुचि के विकास में अपने उद्देश्य की सिद्धि देखते हैं या नहीं ?

इनके आयोजकों का दृष्टिकोण मूलतः व्यवसायी ही रहता है और इनके सहभागी इस प्रयास में रहते हैं कि प्रदर्शन को किस तरह व्यवसाय के साधन के रूप में प्रयुक्त किया जा सके। शायद ही कोई प्रकाशक होगा, जो अपनी पुस्तकें इस उद्देश्य से प्रदर्शनी में भेजे कि इससे उसकी पुस्तकों को देखने से पाठकीय रुचि का विकास हो। आयोजक का उद्देश्य प्रदर्शित पुस्तकों के लिए बाजार खोजना प्रमुख होता है, फिर नाम और सम्मान; किन्तु पाठकीय रुचि का विकास तो उद्देश्यों की सूची में शायद होता ही नहीं, यद्यपि इस पाठकीय रुचि का विकास ही वह मूल आधार है जिस पर समस्त पुस्तक-जगत् टिका है। और सच पूछिये तो इसी पाठकीय रुचि के विकास पर समस्त मानव समाज टिका है। हिंसा प्रधान उस वर्बर आदिम युग से पुस्तकों—जिज्ञासा और भौतिक तथा आन्तरिक रहस्यों की जानकारी के सहारे ही मानव आज के समुन्नत युग में जी रहा है। मानवता की रक्षा कोई अणुबम नहीं कर सकता, उसकी रक्षा पुस्तक ही करेगी—आखिर, अणुबम भी तो पुस्तक की ही देन है।

आज के अस्त-व्यस्त और संत्रस्त जीवन में दर्शक को अचानक एक नये परिवेश में, कुछ देर के लिए अपने वर्तमान को विस्तृत कर विचारों और भावनाओं के संसार में, विचरने का अवसर इन प्रदर्शनियों से पहले से सहज ही मिल जाता है जो पाठक की पिपासा को तीव्र कर देता है।

हिन्दी पुस्तकों के प्रति गिरती हुई पाठकीय साख के पुनःस्थापन के लिए आवश्यक है कि प्रदर्शनियां अपने आप में अधिकाधिक पूर्ण हों—गुणात्मक रूप में भी और संख्यात्मक रूप में भी, साथ ही विश्व नगरों में ही आयोजित होने वाली ये पुस्तक-प्रदर्शनियां क्षेत्रीय आधार पर भी क्रमिक स्तर पर इस तरह आयोजित की जायें कि उर्वर-भूमि ग्रामीण जनता से लेकर लेखन-प्रकाशन के सिद्धहस्त भी कुछ लाभ उठा सकें। इससे पाठकीय रुचि की निरन्तरता टूटने नहीं पायेगी।

शांति की सुरक्षा में सहयोग

मनुष्य सन् २००० के बाद भी बचेगा, इसकी सम्भावना ५०-५० प्रतिशत मात्र है—यह संदेश और चेतावनी स्वीडन के विद्वान श्री गुन्नार मिरडल ने जर्मन पुस्तक उद्योग की ओर से प्रदत्त शांति पुरस्कार १९७० में फ्रेंकफर्ट में स्वीकार करते समय दी थी।

पुस्तक उद्योग से, अतएव, यह सबसे बड़ी अपेक्षा की जाती है कि वह शांति की सुरक्षा के लिए किये जा रहे संसार व्यापी प्रयत्न और आन्दोलन में सक्रिय सहयोग करे।

—०—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-अंग्रेजी कोश

(Hindi-English Dictionary)

डा० ब्रजमोहन

एवं

डा० बदरीनाथ कपूर

के

दस वर्षों के अथक परिश्रम का फल

ऐसा अनुपम हिन्दी-अंग्रेजी कोश आज तक नहीं छपा है

डिमाई पृष्ठ : 750 मूल्य : 40·00

प्रकाशन : मई 1980

मीनाक्षी प्रकाशन

बेगम पुल, मेरठ

(पूरे सूची-पत्र के लिए लिखें)

—: चौबीस घण्टों की, भरोसेवाली सेवाएँ देने वाली :—

बग्गा ट्रान्सपोर्ट कम्पनी

मोती डूँगरी रोड, जयपुर

फोन : 76800, 78815 (P. P.)

229, कमला मार्केट, आसफअली रोड, दिल्ली

फोन : 271403, 266400 [उदयपुर : 4494]

प्रतिदिन विशेष पार्सल सेवाएँ चालू

Daily Special Parcel Service

• दिल्ली • जयपुर • उदयपुर • बगरू • सांगानेर

परीक्षा लीजिए : सेवाओं का अवसर दीजिए

पुस्तक-जगत का सेवाभिलाषी

ओम प्रकाश बग्गा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकों का अन्तर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान

विश्व पुस्तक मेले और भारतीय भाषाओं के प्रकाशन

सारे संसार में पुस्तकों का अपना साम्राज्य विकसित होता जा रहा है, और जो राज्य, साम्राज्य, राष्ट्र, संयुक्त राष्ट्र आदि वास्तव में इस समय हैं उनकी सीमाएँ पुस्तकों के कारण सिमटती और समाप्त होती जा रही हैं। यह तथ्य उससे ऊपर है जो पुस्तकें लिखने और प्रकाशित करने वाले अपनी-अपनी कृतियों के सम्बन्ध में अपनी महत्वाकांक्षा के रूप में संजोते हैं। और ये महत्वाकांक्षाएँ भी, पुस्तकों के अपने संसारव्यापी, निरन्तर विकासशील, साम्राज्य के कारण, अपनी पूर्व निर्धारित सीमाओं में से बराबर आगे निकलती जा रही हैं। एक पुस्तक कहाँ पहुँचेगी, कितनी प्रतियाँ उसकी निकलेंगी, कितने रूपों में उससे कितना लाभ होगा, इस पर जैसे कोई प्रतिबन्ध ही नहीं रह गया है! पुस्तक एक विश्व-वस्तु और विश्व-शक्ति बन गयी है।

पुस्तकों की इस विकास-यात्रा ने उनकी अपनी आन्तरिक सीमा को भी समाप्त कर दिया है—भाषा की सीमा। पुस्तक अपने में स्वीकार्य, आकर्षक, पाठक प्राप्त करने में समर्थ है तो उसकी भाषा कोई हो वह संसारव्यापी प्रसार प्राप्त कर सकती है। यह अवश्य है कि जो भाषाएँ पहले से संसार में अधिक प्रचलित हैं उनकी पुस्तकों की प्रतियाँ सीधी सरलता से बिक जाती हैं, परन्तु जिस प्रकार कई देशों में निरे पुस्तकाधिकार और अनुवाद-अधिकार के आदान-प्रदान के लिए विशिष्ट आयोजन होने लगे हैं उनसे किसी भाषा में पुस्तकें प्रकाशित करने वालों के लिए यह बहाना नहीं रहा है कि उसकी कृति उसकी मूलभाषा के कारण सीमित संख्या में ही पाठकों के पास पहुँच सकती है। कृति अच्छी है तो वह उन आयोजनों के कारण सहज ही सारे संसार में पहुँच सकती है जिनकी यहाँ चर्चा है।

भारत की अपनी अनेक विकसित भाषाएँ हैं। उन सबके लिए नयी संभावनाओं का उदय हुआ है। ये संभावनाएँ वास्तविक स्वरूप तभी लेंगी जब पुस्तकों के इस निरन्तर बढ़ते साम्राज्य से इन भाषाओं के लेखक और प्रकाशक अवगत होंगे। जैसे सामान्य सांसारिक साम्राज्य स्थापित करने के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ता है, तन-मन-धन बड़ी मात्रा में लगाना पड़ता है, उसी प्रकार का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रेष्ठ स्तरीय शिक्षाप्रद मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक पुस्तकें

किशोरोपयोगी

१.	(कहानी) जलियाना वाले बाग की	श्री कृष्णा मायूस	५.००
२.	(कहानी) आजादी की आग की	"	५.००
३.	(कहानी) बच्चों के अनुराग की	"	५.००
४.	(कहानी) धरती के सुहाग की	"	५.००
५.	(कहानी) राजपूती आन की	"	५.००
६.	(कहानी) शब्द भेदी वाण की	"	५.००
७.	(कहानी) मराठा मान की	"	५.००
८.	(कहानी) मुगलों की शान की	"	५.००
९.	(कहानी) बेटी काबुलीखान की	"	५.००
१०.	(कहानी) खुदा जाट की	"	५.००
११.	(कहानी) अनुशासन पर्व की	"	५ ००
१२.	(कहानी) ठाठ-बाट की	राजरानी	५.००

युवकोपयोगी

१.	पर्वत और पगडण्डी (उपन्यास)	श्रीकृष्ण मायूस	१६.००
२,	प्रीत किये दुःख होय (उपन्यासिकायें)	"	७.००
३.	रास्ते अलग-अलग (उ०प्र०)	प्रहलाद कमल	१०.००
४.	जिओ और जीने दो (एकांकी नाटक)	भरत राम भट्ट	७.५०
५.	अन्तिम दान (ऐतिहासिक नाटक)	रामेश्वर नाथ भार्गव	७.५०
६.	हर मोड़ साक्षी (काव्य)	डा. धर्मवीर शर्मा	१५.००

एवं

सम्राट पृथ्वीराज चौहान के जीवन से संम्बन्धित श्री कृष्ण 'मायूस' का प्रसिद्ध ऐतिहासिक (उपन्यास) कर्णाटकी मूल्य १८.००

साहित्यक पुस्तकें

१.	विचार धारा और साहित्य (सम्पादक)	डा. राजकुमार शर्मा	३०.००
२.	भक्तिकाव्य की दार्शनिक चेतना	डा. नारायण प्रसाद बाजपेयी	२०.००
३.	हिन्दी पत्रकारिता राष्ट्रीय नवउद्बोधन	डा. श्रीपाल शर्मा	२५.००

नवीन प्रकाशन

१.	लोक विश्वास शब्द कोष	डा. धर्मवीर शर्मा	२५.००
२.	पुण्य की जड़ सदा हरी	महावीर शरण	६.००
३.	शनि की ढईया	भरत राम भट्ट	१०.००
४.	एक रास्ता सीधा सा	कमल एवं दत्ता	१५.००

एवं सभी प्रकार की पुस्तकें मिलने का एक और स्थान

राज पब्लिशिंग हाऊस, पुराना सीलमपुर पूर्व

दिल्ली ११००३१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयत्न पुस्तकों को दूर-दूर पहुँचाने के लिए करना पड़ता है, और विजय उसी की होती है जो सब तरह सर्वोत्कृष्ट होता है। अतएव भारतीय भाषाओं के प्रकाशनों को यह सर्वोत्कृष्टता प्राप्त करने की चेष्टा करनी होगी।

एक बात अवश्य है—कुछ भारतीय भाषाएँ अपने मूलरूप में भी अनेक देशों में अपने प्रकाशन पहुँचा सकती हैं, बड़ी संख्या में उनके बोलने वाले संसार के विभिन्न देशों में रह रहे हैं। विश्व पुस्तक मेलों का यह विवरण आत्मसात करते-करते यह विचार मन में आये बिना नहीं रहता कि क्यों नहीं कुछ देशों में नियमित रूप से भारतीय भाषाओं के अपने विश्व पुस्तक मेले आयोजित होते रहते ?

यहाँ भारत के राष्ट्रीय पुस्तक न्यास 'नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया' के अब तक के कार्य पर अपने आप एक बड़ा अनुउत्तरित प्रश्न चिह्न लग जाता है। उसके विश्व पुस्तक मेलों में अब तक के प्रयत्न मूलतः भारत में प्रकाशित अंग्रेजी पुस्तकों को लेकर हुए हैं। क्या भारत की दृष्टि से अधिक उपयुक्त नहीं होता कि यह भारतीय संस्थान मुख्यतः भारतीय भाषाओं की पुस्तकों को लेकर प्रचलित विश्व पुस्तक-मेलों के माध्यम से, और भारतीय भाषाओं के अपने विश्व पुस्तक मेले आयोजित करके, सारे संसार में पहुँचने का प्रयत्न करता है ?

ऐसा होता तो भारत में एक अपनी पुस्तक क्रान्ति हो जाती। हर भारतीय भाषा के लेखक और प्रकाशक के लिए नयी संभावनाएँ उदित हो जातीं, उनके मन नयी कल्पनाओं और महत्वाकांक्षाओं से ओत-प्रोत हो जाते, भारत का आदर अपने आप संसार के विज्ञजगत में बहुत बढ़ जाता।

दो पुस्तक मालाओं के उल्लेख से स्थिति स्पष्ट हो जायेगी, और एक सर्वथा अछूती विधा प्रश्न को अपने आप पैना बना देगी। केन्द्रीय साहित्य अकादमी हर वर्ष भारत की भाषाओं की श्रेष्ठतम कृतियों को पुरस्कार देती है, और ज्ञानपीठ पुरस्कार भी प्रतिवर्ष दिये जाते हैं; ये तो अपने आप समस्त भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठतम कृतियां सामने लाते हैं। इनको, अथवा इनमें से चुनकर, प्रयोग के रूप में कुछ को, संसार के सामने प्रस्तुत करने का प्रयत्न क्यों नहीं किया गया ? जिन्हें इस लायक समझा जाता उनका विवरण और महत्व उन भाषाओं में प्रस्तुत करने की बात थी जो विभिन्न विश्व पुस्तक मेलों में अधिक ध्यान आकृष्ट करती हैं।

दूसरे, संस्कृत सारे संसार में मान्य भारत की प्रतिष्ठित भाषा है। इसकी कुछ कृतियाँ आज भी कई देशों में व्यापक रूप से पढ़ी जाती हैं; अनुवाद के रूप में, इनमें गीता भी हो सकती है और कामशास्त्र की पुस्तकें भी। परन्तु संस्कृत का तो, बहुत से विषयों में, अपार भण्डार है। साथ-साथ, संस्कृत में अभी भी स्तरीय पुस्तकें लिखी और प्रकाशित की जा रही हैं। वास्तव में तो होना यह चाहिये कि सभी भारतीय भाषाओं के प्रकाशक भी भारत की इस सम्मलित निधि की ओर अधिक ध्यान दें, परन्तु भारत के बाहर ले जाने के लिए संस्कृत को उसकी प्राचीनता एवं प्रतिष्ठा के कारण प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

संस्कृत हो चाहे अन्य भारतीय भाषाएँ, इस प्रकार पिछले दस-बीस वर्षों में उनकी ओर विश्व-व्यापकता की दृष्टि से ध्यान दिया जाता तो अपने-अपने क्षेत्र में उनके विकास को बड़ा प्रेरणाप्रद प्रोत्साहन प्राप्त होता।

यह इस आस्था के कारण कहा जा रहा है कि भारतीय लेखक और प्रकाशक में अवश्य विश्व-स्तरीय कृतियाँ प्रस्तुत करने की क्षमता है, और इस क्षमता को विकसित किया जा सकता है।

इस आस्था का आधार यह है कि ज्ञान-विज्ञान की कई शाखाओं में भारतवासियों ने विभिन्न देशों में जाकर उच्चतम उपलब्धियाँ हस्तगत की हैं; उन्हें नोबेल पुरस्कार तक प्राप्त हुआ है। भारत की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक महल के उपयोगी प्रकाशन

शिक्षात्मक

- रैपीडैक्स इंगलिश स्पीकिंग कोर्स 21.00
  (हिन्दी, मराठी, गुजराती, बंगाली, तमिल, पंजाबी, तेलगू, कन्नड, मलयालम में प्रकाशित)
- रैपीडैक्स सेल्फ लेटर ड्राफ्टिंग कोर्स 18.00
- अंग्रेजी हिन्दी बोलती डिक्शनरी 10.50
- अंग्रेजी-मराठी बोलजारी डिक्शनरी 10.50

स्त्रियोपयोगी

- रैपीडैक्स होम टेलरिंग कोर्स 28.00
- लेडीज हैल्थ गाईड 24.00
- बेबी हैल्थ गाईड 24.00
- मार्डन कुकरी बुक 15.00
- मार्डन हेयर स्टाइल्स 15.00
- न्यू लेडीज स्लीमिंग कोर्स 15.00

धार्मिक

- हमारे पूज्य तीर्थ 18.00
- दुर्गा महिमा 12.00
- शिव महिमा 12.00
- गणेश महिमा 12.00

ज्योतिष

- वृहद हस्तरेखा शास्त्र 18.00

संगीत

- १५ दिन में गिटार सीखिए 10.00
- १५ दिन में सितार सीखिए 10.00
- १५ दिन में हारमोनियम सीखिए 10.00
- १५ दिन में वायलिन सीखिए 10.00
- १५ दिन में तबला व कोंगो-बोंगो सीखिए 10.00
- १५ दिन में मेंडोलिन और बैंजो सीखिए 10.00

हॉबी

- इंगलिश-हिन्दी मार्डन लेटरिंग 18.00
- प्रैक्टिकल फोटोग्राफी कोर्स 15.00
- ड्राइंग तथा पैन्टिग सीखिए 15.00
- जूडो-कराटे 15.00
- बाटिक कला 15.00

विविध

- अपना कद बढ़ाइए 15.00
- मोटापा घटाइए 15.00
- अल्हड़ उमर-किशोरी गाइड-I 15.00
- अल्हड़ उमर-किशोरी गाइड-II 15.00
- बच्चों के 2001 नाम 3.00

'चतुर्थ विश्व पुस्तक मेले' में हमारे स्टाल नं० ५६७ पर आपका स्वागत है।

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006

फोन 529314

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस पुस्तक को अब तक नोबेल पुरस्कार मिला है वह एक भारतीय भाषा की ही है। यहाँ, भारत में लिखी और प्रकाशित की जा रही अंग्रेजी पुस्तकों के निर्यात का प्रतिपादन नहीं किया जा रहा, लेकिन संसारव्यापी प्रतियोगिता में कोई भी देश विदेशी भाषा के माध्यम से उल्लेखनीय उपलब्धि नहीं प्राप्त किया करता। अतएव पुस्तकों का जो संसारव्यापी साम्राज्य विकसित हो रहा है उसमें अपना स्थान बनाने के लिए हमें भारतीय भाषाओं की पुस्तकों के माध्यम से ही विशेष चेष्टा करनी होगी।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से अपेक्षा की जाती है कि वह इस दृष्टि से अपनी नीति और कार्य-कलापों पर पुनर्विचार और परिवर्तन करेगा। यदि इसकी संभावना कम लगे तो केवल मात्र भारतीय भाषाओं की पुस्तक के निर्यात को नियंत्रित और विकसित करने लिए अन्य स्वतन्त्र संगठन बनाना होगा : वास्तव में तो पुस्तकों के देश और विदेशों में विकास के लिए, पृथक-पृथक संगठन होने चाहिये। भारत से जिन वस्तुओं का बहुत निर्यात हो सकता है उनमें पुस्तकों और उनके अनुवाद-अधिकार को भी शामिल किया जाना चाहिये। भारतीय भाषाओं के उपलब्ध प्रकाशनों को देखकर इस ओर संभावना चाहे जितनी क्षीण लगती हो, लेकिन संसार के विभिन्न भागों में होने वाले पुस्तक समारोहों और पुस्तक मेलों के माध्यम से बढ़ते हुए पुस्तकों के अन्तर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान पर जब दृष्टि जाती है तब इस ओर अपार संभावना सामने आने लगती है।

पुस्तक प्रदर्शनियां : सबके लिए

"सं० रा० शि० वि० सं० सं०" की ओर से पुस्तक पठन को प्रोत्साहित करने के उपायों पर अपना अध्ययन प्रस्तुत करते हुए बच्चों के पठन-पाठन के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान डा० रिचार्ड बम्बरगर ने कहा है : ऐसी पुस्तक प्रदर्शनियां सबसे अधिक सफल होती हैं जिनमें साथ-साथ लेखकों—कवियों द्वारा अपनी रचनाओं के स्वयं पाठ जैसे आयोजन किये जाते हैं।

विस्तृत वार्षिक प्रदर्शनियों के अतिरिक्त, यह भी लाभकारी रहेगा कि छोटी-छोटी प्रदर्शनियां स्कूलों, पुस्तकालयों, युवक समूहों और अलग-अलग कक्षाओं में लगायी जायें। प्रदर्शनी जितने छोटे समूह के लिए लगायी जायेंगी उतना ही ज्यादा दर्शकों की रुचि का ध्यान रखकर पुस्तकें प्रस्तुत की जा सकेंगी।

कुछ स्कूलों में देखा गया है कि पुस्तक प्रदर्शनियाँ लगने पर उनमें प्रस्तुत पुस्तकों का महत्व बड़ी कक्षा के विद्यार्थी अपने निचली कक्षाओं के साथियों को सफलतापूर्वक समझा लेते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि समझाने वाले पहले से सम्बन्धित पुस्तकों को पढ़कर आयें।

जिन विद्यार्थियों में सामान्य पुस्तकों के प्रति रुचि विकसित नहीं होती उनको आर्काषित करने के लिए ऐसी पुस्तक प्रदर्शनियों का बहुत महत्व होता है जिनमें विशेष अवसरों अथवा विषयों से सम्बन्धित पुस्तकें ही हों, जैसे छुट्टियों में पढ़ने लायक पुस्तकें अथवा बालकों की विशेष रुचि विकसित करने वाली पुस्तकें—फोटोग्राफी, खेलकूद आदि।

ऐसी प्रदर्शनियों का उद्देश्य पुस्तक-भक्त तैयार करना नहीं, बल्कि यह होता है कि जो बच्चे और विषयों में रुचि लेते हों उनकी रुचि विकसित करने का अवसर मिले।

पुस्तक प्रदर्शनियों में पुस्तक सुन्दर रूप से रखी जानी चाहिये, साथ-साथ सूचनात्मक एवं आश्चर्यकारी चिह्न और पोस्टर, सूचियाँ आदि विज्ञापन सामग्री भी रहनी चाहिये।

प्रदर्शनी के पास ही इतनी जगह होनी चाहिये कि दर्शक पुस्तकों के पन्ने बिना बाधा के उलट-पलट सकें।

—०—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

We stock all kinds of

Writing and Printing papers

Popular Varieties :

- SS Maplitho
- SS Pulp Board
- Airmail
- Bond Paper
- Super Coate Art Paper
- Chromo Paper
- Art Card
- Enamel Board.

VISHNU KUMAR & BROS.

Wholesalers : **J. K. PAPER MILLS**

2369, Chatta Shahji, Chawri Bazar,

DELHI-110006

Phone : 264456, 268421

Residence : Vijaya Narain Bhargava 682119

Vishnu Kumar Bhargava 631273

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व पुस्तक मेलों का स्वरूप और महत्त्व

पुस्तकों का अन्तर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान विशेषत: विकसित हुआ है विश्व पुस्तक मेलों के माध्यम से : इन मेलों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। संसार के बड़े से बड़े प्रकाशक के लिए सभी पुस्तक मेलों में, स्वयं, सीधा पहुँचना कठिन होता जा रहा है, परिश्रम, समय और धन भी इसमें बहुत व्यय होने लगा है। फिर भी, हर मेले में प्रकाशकों और पुस्तकों की संख्या बढ़ती जा रही है : इसका एक ही मतलब होता है—प्रकाशकों और पुस्तकों की संख्या ही नहीं बढ़ रही, पुस्तकों के अन्तर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान की सम्भावना भी बहुत बढ़ रही है।

विश्व पुस्तक मेलों का आयोजन दो उद्देश्यों से होता है : (१) पुस्तक उद्योग में लगे विभिन्न लोगों को (जिनमें प्रकाशक, विक्रेता, पुस्तकालयाध्यक्ष, विशेषज्ञ आदि बहुत से वर्गों के लोग आते हैं) अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लेखक भी, यद्यपि वे स्वयं पहुँचते कम हैं। आपस में मिलने का अवसर मिले जिससे उनके बीच व्यापारिक आदान-प्रदान आसानी से हो जाये।

(२) हर विषय और प्रकार के पाठक के लिए आकर्षक पुस्तकों का एक स्थान पर प्रस्तुतीकरण हो जिससे पाठक स्वयं अपनी रुचि की पुस्तकों की विविधता का अनुभव कर सकें, उन पुस्तकों को स्वयं देख सकें, उलट-पलट सकें और उनको खरीदने के लिए प्रेरित हो सकें, और इस प्रकार पुस्तकों की सीधी खरीद को बढ़ावा मिल सके।

इन दोनों उद्देश्यों में आधारभूत विरोधाभास है : पहले उद्देश्य के लिए केवल मात्र सम्बन्धित लोगों को विचार-विनिमय के लिए, आपसी ऊँच-नीच समझने के लिए, एक सीमा तक गोपनीयता मिलनी चाहिये—केवल मात्र सम्बन्धित लोग मेले में आने दिये जाने चाहिये। दूसरे उद्देश्य के लिए दर्शकों की संख्या अधिक से अधिक होनी चाहिये। जिन मेलों में इन दोनों उद्देश्यों को साथ-साथ निभाने का यत्न किया जाता है उनमें भाग लेने वाले प्रकाशकों और विक्रेताओं को बहुधा निराशा होती है। कुछ मेलों में, इस कारण बीच का रास्ता निकाला गया है कि कुछ समय एक प्रकार के लोगों के लिए, कुछ समय दूसरे प्रकार के लोगों के लिए निर्धारित किया जाता है। फिर भी विरोधाभास का निराकरण नहीं होता,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ

के मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

को हर प्रकार के सहयोग का

आश्वासन देते हुए

लाहौर पेपर स्टोर्स

3796, चावड़ी बाजार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
क्योंकि एक उद्देश्य से कम दिन मेला रहना चाहिये, दूसरे से अधिक दिन; एक उद्देश्य से प्रस्तुतीकरण और सजावट विशेष प्रकार की होनी चाहिये, दूसरे उद्देश्य से एक दम भिन्न प्रकार की। जो मेले में प्रकाशक या विक्रेता का प्रतिनिधित्व करते हैं वे भी दोनों उद्देश्यों के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के आवश्यक हो जाते हैं।

इन बातों को ध्यान में रखकर ही प्रकाशक अपने लिए मेला चुनता है, और निर्णय करता है कि उसका प्रतिनिधित्व किस प्रकार का होगा। सिवा एक-दो पुस्तक मेलों के, सभी मेलों में सभी प्रकार की पुस्तकें प्रस्तुत होती हैं, अतएव स्वयं अपना प्रकाशन विषय प्रकाशक के लिए निर्णय में सहायक नहीं होता।

फिर भी, विश्व पुस्तक मेलों को तीन श्रेणियों में बाँटा गया है : कुछ मेलों में विशेषतः पुस्तकाधिकार और अनुवाद-अधिकार का आदान-प्रदान होता है। इनका सर्वाधिक महत्व है, इनकी ओर राष्ट्रीय तथा विदेशी प्रकाशक, उनके समूह और संगठन, तथा एक सीमा तक सम्वन्धित सरकारें भी, सर्वाधिक ध्यान देती हैं। कुछ मेलों में मुख्यतः पुस्तकों की सीधी और खुली बिक्री होती है—चाहे विक्रेताओं को, चाहे पाठकों को अथवा पुस्तकालयों को। इन मेलों की ओर विशेषतः उसी देश के प्रकाशक आकर्षित होते हैं, और ऐसे विदेशी प्रकाशक जो उस देश की भाषा में प्रकाशन करते हैं, लेकिन उनका प्राथमिक ध्यान ऐसे मेलों के प्रति नहीं हो पाता, वे ऐसे मेलों में अपने प्रतिनिधियों ओर विक्रेताओं को भेजना ही पर्याप्त मानते हैं। तीसरे प्रकार के मेलों का आयोजन मुख्यतः उन देशों की सरकारों द्वारा होता है जिनमें स्वयं उनकी ओर से अपने देश में पुस्तकों पर लगे विभिन्न प्रतिबन्धों से क्षणिक मुक्ति मिलकर सारे संसार के साहित्य से उनके देशवासियों को अवगत होने का अवसर मिलता है और वे अपने देश के प्रकाशनों को भी सामने लाने का अवसर प्राप्त करते हैं। जब-जब, जहाँ-जहाँ इन तीनों दृष्टियों को मिलाकर मेला आयोजित होता है, वहाँ-वहाँ कोई न कोई समस्या सामने आती है, किसी न किसी को निराशा और नाराजी अवश्य होती है। इस प्रकार विश्व पुस्तक मेले अपने में असाधारण धैर्य, चातुर्य और सावधानी की भी अपेक्षा करने लगे हैं।

एक बात और स्पष्ट होती ज रही है कि जिस देश में अपना प्रकाशन व्यवसाय अच्छी तरह विकसित होता है उसी की ओर अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक प्रकाशक अधिक आकृष्ट होते हैं, क्योंकि उनकी पुस्तकों के अधिकारों का आदान-प्रदान उन्हीं देशों में अधिक होने की सम्भावना होती है। कम विकसित पुस्तक उद्योग वाले देशों में जो पुस्तक मेले होते हैं उनमें तड़क-भड़क, भीड़-भाड़ ज्यादा होती है क्योंकि पुस्तकों की सीधी बिक्री बढ़ाने के लिए बड़ी संख्या में दर्शक आकर्षित करना ऐसे मेलों में आवश्यक हो जाता है।

कुछ प्रसिद्ध पुस्तक मेले सम्बन्धित नगर की अपनी स्वायत्तशासी संस्था द्वारा बिना आर्थिक लाभ की अपेक्षा के आयोजित किये जाते हैं, लेकिन उन्होंने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा स्थापित करली है। उनमें पहुँचना प्रकाशकों के लिए अपने सम्मान बढ़ाने की बात होने लगी है।

प्रकाशकों के अन्तर्राष्ट्रीय संगठन अपने सदस्यों को परामर्श देने लगे हैं कि उन्हें विकासशील देशों के पुस्तक मेलों की ओर अधिकाधिक ध्यान देना चाहिये क्योंकि पुस्तकों के स्थानीय बाजार से लाभ प्राप्त करने की, पुस्तकें सीधी बेचने की, सम्भावना इनमें अधिक रहती है।

अपने प्रकाशनों के लिए सभी तरह की आन्तरिक सम्भावनाओं के लिए अवसर चाहे जितने अच्छे हों, पुस्तक मेले वे ही अधिक सफल होते हैं जिनकी व्यवस्था निर्दोष और समस्या रहित हो, जिनमें सभी को समान व्यवहार मिलने का विश्वास हो, जिनमें सेवाओं एवं सुविधाओं का संगठन समु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों के लिए

हिन्दी साहित्य की उपयोगी पुस्तकें

शोध-प्रबन्ध

- **हिन्दी काव्य में समाज** 40.00
  डा० गायत्री वैश्य
- **विशिष्टाद्वैतवाद और उसका हिन्दी भक्ति-काव्य पर प्रभाव** 30.00
  डा० किरणकुमारी गुप्त
- **अवधी कृष्ण काव्य** 25.00
  डा० मुरारीलाल शर्मा
- **हिन्दी बरवै काव्य** 50.00
  डा० वेदप्रकाश आर्य
- **बुन्देली लोक साहित्य** 40.00
  डा० आर० एस० श्रीवास्तव
- **बदायूँ जनपद की बोली** 25.00
  डा० रामप्रकाश सक्सैना
- **आधुनिक हिन्दी और बंगला काव्य शास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन** 30.00
  डा० इन्द्रनाथ चौधरी
- **डॉ० नगेन्द्र : विश्लेषण और मूल्यांकन** 30.00
  डा० एस० लक्ष्मी
- **महादेवी और उनकी गद्य रचनाएँ** 16.50
  माधवी राजगोपालन
- **भक्ति आन्दोलन के प्रेरणा स्रोत** 8.00
  डा० एम० मलिक मोहम्मद

निबन्ध और आलोचना

- **गुलाब-बल्लरी** 20.00
  बालकृष्ण राव
- **गांधी दर्शन और अध्यात्म** 15.00
  उर्वसी जे. सूरती
- **विज्ञान और विश्वविद्यालय** 10.00
  डा० डी० एस० कोठारी
- **हिन्दी निबन्ध और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** 8.00
  डा० नवलकिशोर
- **संस्कृत-संगम उत्तरांचल** 30.00
  यमुनादास वैष्णव
- **नयी कविता : परिवेश, प्रवृत्ति एवं अभिव्यक्ति** 22.00
  बालकृष्ण राव, डा० गोन्विद रजनीश
- **कबीर-वाणी** 10.00
  डा० सरनाम सिंह शर्मा
- **विनय-पत्रिका-समीक्षा** 10.00
  डा० गोपीनाथ तिवारी
- **वीर सतसई** 10.00
  डा० नरेन्द्र भानावत

विविध

- **पगडंडियाँ** 10.00
  अमृतलाल नागर
- **अवधी लोक कथाएँ** 20.00
  डा० शंकरलाल यादव
- **रंगिणी** 6.00
  नेमीचन्द जैन
- **श्रीकृष्ण-गांधी-चरित्र** 10.00
  डा० सरयुकृष्ण मूर्ति
- **आधुनिक हिन्दी-व्याकरण** 10.00
  डा० नानकचन्द्र अग्रवाल

थोक खरीद पर अधिक कमीशन की सुविधा हेतु सम्पर्क करें :

रंजन प्रकाशन

दी एजुकेशनल प्रेस भवन, सिटी स्टेशन मार्ग, आगरा-२८२००३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक, सुरुचिपूर्ण साहित्य

"अक्षर" के सन् 79-80 के नये गौरवशाली प्रकाशन

मुद्रण और पुनर्मुद्रण

- **अनदेखे, अनजान पुल** (उपन्यास)—प्रसिद्ध कथाकार **राजेन्द्र यादव** का अद्वितीय उपन्यास, जो अब लगभग 17 वर्ष बाद स्वतन्त्र रूप से उपलब्ध हैं। मनोवैज्ञानिक अन्तंदृष्टि की अविस्मरणीय रचना। 15.00
- **दूसरी बार** (उपन्यास)—कवि-चिन्तक **श्रीकान्त वर्मा** का अकेला उपन्यास, जिसकी बेबाकी, ताजगी और नाजुक विषय को संभालने के कौशल ने पाठकों को स्तब्ध कर दिया था। दूसरा संस्करण 15.00
- **देस-निकाले** (दो उपन्यास) —**मीनाक्षी पुरी** की चुस्त और चित्रात्मक कलम से जर्मनी में बसे भारतियों के संस्कारों और स्थितियों के द्वन्द्व का अद्भुत उपन्यास। 20.00
- **अर्थहीन** (दो उपन्यास)—मराठी के दिग्गज कथाकार **अरविन्द गोखले** के दो उपन्यास जो नारी मनोविज्ञान के अछूते पक्षों को उद्‌घाटित करते हैं। डा० विजय बापट का अनुवाद, मौलिक रचना की तरह ताजा और सशक्त है। 15.00
- **आला अफसर** (नाटक)—**मुद्राराक्षस** का नौटंकी शैली में लिखा गया, यह बेहद ही दिलचस्प नाटक आज की भ्रष्ट व्यवस्था का फर्दाफाश करता है और इसलिए प्रकाशन से पहले ही बंसीकौल के निर्देशन में इसे पत्र-पत्रिकाओं, नाट्य-प्रेमियों द्वारा जो प्रशंसा मिली है, वह किसी भी नाटक के लिए ईर्ष्या की बात है। 12.00
- **एक दुनिया : समानान्तर** (संकलन)—बेहिचक और निर्विवाद रूप से "एक दुनिया : समानान्तर" स्वतन्त्रता के बाद की कहानियों का बेजोड़, सर्वश्रेष्ठ संकलन है। इन कहानियों के चुनाव के पीछे है प्रसिद्ध कथाकार एक **राजेन्द्र यादव** की निष्पक्ष और जागरूक दृष्टि, कलात्मक उत्कृष्टता का आग्रह। संकलन की विस्तृत भूमिका ने तो कहानी की समझ को नयी दृष्टि ही नहीं दी, कथा समीक्षा को नया रचनात्मक धरातल दिया है। नया संस्करण 40.00, छात्र 20.00
- **त्रिशंकु** (कहानियाँ)—"आपका बंटी" और "महाभोज" जैसे विख्यात उपन्यासों की लेखिका **मन्नू भण्डारी** की नवीनतम कहानियों का यह संग्रह हिन्दी कहानी की सार्थक कला-उपलब्धि है। इसकी "एलाने आकाश नॉई", "जीना यहाँ" और त्रिशंकु पर बासु चटर्जी की फिल्में तैयारी में........ 12.00
- **कथा : एक कंश की** (नाटक)—प्रसिद्ध नाटककार और निर्देशक **श्री दयाप्रकाश सिन्हा** का यह नाटक कंस की पौराणिक कथा को नये अर्थ और संदर्भ देता है। एक संवेदनशील राजकुमार के कंस बनते जाने की कथा निरंकुश सत्ता का गहरा अध्ययन है—और कृष्ण ? गोपियों को रिझाने वाला "छैला" नहीं, विद्रोह का प्रतीक। अनेक बार कलकत्ता, लखनऊ इत्यादि के मंचों पर सफल नाटक। दू० सं० 10.00
- **टूटना** (कहानियाँ)—स्वतन्त्रता के बाद के दिग्गज कथाकार **राजेन्द्र यादव** की अत्यन्त ही सशक्त और उत्कृष्ट कहानियों का संग्रह। पाँचवां संस्करण 10.00
- **श्रेष्ठ कहानियाँ** (कहानियां)—**मन्नू भण्डारी** की पिछले बीस वर्षों की कलात्मक और चुनी हुई कहानियों का संकलन। छठा संस्करण 10.00

अक्षर प्रकाशन प्रा० लि० — 2/36 अन्सारी रोड, दरिया गंज, नई दिल्ली-110 002

नेशनल पब्लिशिंग हाउस — 23 दरिया गंज, नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'नेशनल' द्वारा प्रकाशित

हमारे अभिनव, अपरिहार्य एवं उत्कृष्ट प्रकाशन

1979-80 में प्रकाशित

●

अनुसंधान-अनुशीलन

● शोध और सिद्धान्त	डा० नगेन्द्र	35.00
● हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियां	"	22.00
● मिथक और साहित्य	"	15.00
● विमर्श के क्षण	डा० विजयेन्द्र स्नातक	36.00
● भारतीय सौंदर्यशास्त्र का तात्विक विवेचन एवं ललित कला	डा० रामलखन शुक्ल	48.00
● नाटक और रंगमंच	सं० डा० श्रीमाली, डा० गोकाककर	75.00
● आधुनिक हिन्दी साहित्य : मूल्य और मान्यतायें	सुधाकर पाण्डेय	32.00
● हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों में जीवन-सत्य	डा० इन्दुप्रकाश पाण्डेय	42.00
● पुराख्यान और कविता	डा० लक्ष्मीनारायण शर्मा	35.00

उपन्यास

● रक्त-गुलाल	पन्नालाल पटेल	38.00
● बिदनूर का नायक	मास्ति वेंकटेश अय्यंगार	36.00
● परछाइयों के पीछे	शशिप्रभा शास्त्री	25.00
● जल टूटता हुआ	रामदरश मिश्र	45.00
● चित्तकोबरा	मृदुला गर्ग	15.00
● दावेदार	गिरिराज किशोर	10.00
● मानचित्र	शंकर	22.00
● मंगलसूत्र	दत्त भारती	18.00
● आंधी के तिनके	बलदेव	18.00

कहानी

● कच्चे मकान	निरुपमा सेवती	15.50
● अबरक के फूल	योगेश गुप्त	15.00
● बेला फूले आधी रात	कृष्णचन्द्र शर्मा 'भिक्खु'	
● कितना छोटा सफ़र	मंजुल भगत	15.00
● चेहरे मत उतारो	यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र	14.00

के० एल० मलिक एण्ड संस प्रा० लि०

23, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे अभिनव, अपरिहार्य एवं उत्कृष्ट प्रकाशन

हास्य-व्यंग

• रेडियो की महफिल	सुशीलकुमार चौबे	15.00
• ऋतु-वर्णन	रवीन्द्रनाथ त्यागी	15.00
• मेरी श्रेष्ठ व्यंग रचनाएं	लतीफ घोंघी	12.00

नाटक-एकाँकी

• उसकी जात	विजय तेन्दुलकर	15.00
• ललित निबन्ध महाकवि की तर्जनी	कुबेरनाथ राय	32.00

काव्य

• साक्षी रहे वर्तमान	गिरिजाकुमार माथुर	20.00
• चंडी-चरित्र-उक्ति विलास	सं० ओमप्रकाश	20.00
• ऊष्मा	कांति त्रिपाठी	20.00
• बच गया आकाश	सीतेश आलोक	15.00

इतिहास-राजनीति

• संविधान में राष्ट्रपति की भूमिका	बालमीकि चौधरी	55.00
• पराक्रमी पेशवा	श्रीनिवास बालाजी हर्डीकर	25.00

विविध

• दिल्ली बोलती है	विष्णु खन्ना	25.00
• काश्मीर कीर्तिशेष	रघुनाथ सिंह	40.00
• महाभारत	सन्तराम वत्स्य	14.00
• विश्व भूषण बाबा साहब अम्बेडकर	धनंजय कौर	11.00

• सभी शिक्षण संस्थाएँ एव सार्वजनिक पुस्तकालयों के लिए अनिवार्य ग्रन्थ

• सम्पूर्ण सूची-पत्र निःशुल्क मंगवायें

के० एल० मलिक एण्ड संस प्रा० लि०

23, दरिया गंज, नई दिल्ली-110 002

शाखाएँ :

चौड़ा रास्ता, जयपुर

34, नेताजी सुभाष मार्ग, इलाहाबाद-3

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त

की समस्त कृतियाँ शुद्ध पाठ सहित

अब

अच्छे कागज पर आकर्षक साज-सज्जा के साथ

साकेत प्रकाशन

(स्वत्वाधिकारी ऊर्मिलाचरण गुप्त आत्मज स्व० मैथिलीशरण गुप्त)

द्वारा प्रकाशित की जा रही हैं

- यशोधरा
- पंचवटी
- द्वापर
- साकेत
- जयद्रथ-वध
- नहुष

के नये पुस्तकालय एवं विद्यार्थी संस्करण

अब नयी साज-सज्जा के साथ उपलब्ध

राष्ट्रकवि के दो अप्रकाशित महत्वपूर्ण ग्रंथ प्रकाशित

श्रद्धांजलि-संस्मरण **16.00**

अधिकांश पाठक इस तथ्य से परिचित नहीं हैं कि एक सिद्धहस्त कवि होने के साथ ही स्व० गुप्त जी एक समर्थ गद्यकार भी थे। स्पष्ट व सहज संप्रेषणीयता के अतिरिक्त गुप्त जी के इन संस्मरणों में उत्कृष्ट गद्य की एक अन्य विशेषता भी मिलती है।

इस पुस्तक में गुप्त जी के भारतेंदु हरिश्चन्द्र, राजेन्द्र बाबू, पं० नेहरू, नरेन्द्र देव, जयशंकर प्रसाद, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', अजमेरी और जायसवाल पर लिखे संस्मरणों को संकलित किया गया है।

स्वस्ति और संकेत **22.00**

गुप्तजी के नये काव्य-संकलन 'स्वस्ति और संकेत' की बहुत-सी कविताएँ ऐसी हैं, जो या तो पहली बार प्रकाशित हो रही हैं या अभी तक इने-गिने पाठकों ने ही पढ़ी हैं। इस दृष्टि से इस संकलन का प्रकाशन ऐतिहासिक महत्त्व भी रखता है और एक नयापन भी।

राष्ट्रकवि की समस्त पुस्तकों के लिए सम्पर्क करें :

• एकमात्र वितरक •

के० एल० मलिक एण्ड संस प्रा० लि०

23, दरियागज, नई दिल्ली-110 002

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित हो और जिनके साथ निवास एवं आवागमन के साधनों की पर्याप्तता हो। सभी विश्व पुस्तक मेलों का अनुभव है कि इस दृष्टि से निरन्तर संगठन और सुविधाएं अधिक सुधरती जा रही हैं।

बड़े पुस्तक मेले जिस नगर, राज्य और देश में होते हैं उनको सीधा लाभ मिलता है। उनके यहाँ से निकलने वाले प्रकाशनों की ओर अधिक-अधिक लोगों का, ध्यान जाता है, और बड़ी संख्या में लोगों के बाहर से आने से सभी स्थानीय सुविधाओं को अधिक अर्थोपार्जन होता है। अच्छे पुस्तक मेले जहाँ होते हैं उस नगर का नाम सारे संसार के विश्व समाज में प्रसिद्ध हो जाता है, और मेले के दिनों में दूर-दूर के देशों के लोग वहाँ की चर्चा में जुट जाते हैं। जहाँ पुस्तक मेले होते हैं, वहाँ अन्य प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रोत्साहन प्राप्त करते हैं। पुस्तक मेले अपने में विकास के मापदंड और विकास के प्रेरक साथ-साथ होते हैं।

पुस्तक समारोह : महत्त्व का साधन

एशिया के पुस्तक प्रकाशन एवं वितरण में विशेषज्ञों की जो संगोष्ठी १९६६ में टोकियो (जापान) में हुई थी उसका अभिमत था कि पुस्तकों के वितरण को बल देने के लिए विशेष एवं विभिन्न प्रोत्साहन कार्यक्रम आयोजित किये जाने चाहिये।

इस सिलसिले में कई वक्ताओं ने बड़े ही उत्साह से पुस्तक समारोहों का उल्लेख किया। ऐसे समारोह प्रकाशकों, विक्रेताओं, शिक्षकों तथा पुस्तकालयाध्यक्षों के सक्रिय सहयोग से ही सम्भव होते हैं।

यह बात जोर देकर कही गयी है कि ऐसे समारोहों में पुस्तकों की जहाँ की तहाँ फुटकर बिक्री का भी प्रबन्ध होना चाहिये। यह भी आवश्यक है कि ऐसे समारोहों का सभी साधनों से, जैसे समाचारपत्रों में विज्ञापन, रेडियो-टेलीविजन में विज्ञापन और पोस्टर, का काफी पहले से प्रचार किया जाये। पाकिस्तान और श्रीलंका का अनुभव था कि ऐसे समारोहों में बिक्री पर विशेष कमीशन देना भी लाभकारी रहता है। थाईलैण्ड और इण्डोनेशिया में भी इस तरीके से लाभ हुआ है।

पुस्तक समारोहों से पुस्तकों की खपत कुछ न कुछ मात्रा में तत्काल बढ़ती है।

श्रीलंका में १९५९ में "पुस्तक दिवस" आरम्भ किया गया था जिसकी सफलता से "पुस्तक मास" के पक्ष में वातावरण बना। "पुस्तक सप्ताह" की सिफारिश कई ने की। यह भी कहा गया कि ऐसे समारोहों में अधिकतम विविधता होनी चाहिये; और पुस्तक लेखन एवं प्रकाशन से सम्बद्ध सभी का इनमें प्रतिनिधित्व और सहयोग होना चाहिये।

—o—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी पुस्तकों की प्राप्ति के लिए

नवयुग साहित्य सदन

१६८, महात्मा गांधी मार्ग, इन्दौर-२

(म० प्र०)

GITA ENTERPRISES

(Laminators of Book Jackets, Wedding Cards etc.)

3026/7H, Shiv Chowk
Ranjit Nagar
NEW DELHI-110008.

For Lamination

Phones : Office : 264503
Resi. : 2 9038

DELHI PAPER CO.

Selling Agent :

ROHTAS INDUSTRIES LTD.
(DALMIANAGAR)

ASHOK PAPER MILL LTD.
Jogichopa Assam & Darbhanga Bihar

685, Chitla Gate
Chawari Bazar,
DELHI-110006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व पुस्तक मेले :

सुधार के सुझाव

जहाँ विश्व पुस्तक मेले हों वहाँ के सभी सरकारी, अर्धसरकारी और गैर-सरकारी संगठनों को उनकी सफलता के लिए अपना-अपना सहयोग देना चाहिये। पुस्तक मेला सामूहिक सांस्कृतिक समारोह बना दिया जाना चाहिये। मेले के आरम्भ के पहले समस्त पठित समाज को आगामी पुस्तक समारोह का ऐसा आभास हो जाना चाहिये कि वह उत्सुकता और उत्कण्ठा से उसकी प्रतिक्षा करने लगे और जितने दिन मेला रहे उसमें बिना तात्कालिक प्रचार के लोग पर्याप्त संख्या में प्रतिदिन पहुँचते रहें।

मेलों के दिनों में तात्कालिक प्रचार का महत्व फिर भी कम नहीं होता ; तब साधनों का इसमें उपयोग किया जाना चाहिये।

हर मेले में बच्चों का साहित्य विशेष स्थान प्राप्त करने लगा है। इसी प्रकार, विद्यार्थी वर्ग के लिए उपयोगी साहित्य भी विशेष स्थान प्राप्त करता है। इन दोनों वर्गों की उपस्थिति आर्कषित करने का विशेष प्रबन्ध होना चाहिये; उनके अधिक संख्या में आने से मेले की प्रसिद्धि भी अपने आप बढ़ने लगती है।

पुस्तकालयाध्यक्ष, पुस्तक विक्रेता, शिक्षक और शिक्षाशास्त्री, विश्वविद्यालय अध्यापक आदि वर्गों में व्यक्तिगत स्तर पर पुस्तक मेले का सन्देश और आमन्त्रण पहुँचना चाहिये। जहाँ मेले होते हैं वहाँ के बाहर के नगरों से इन वर्गों के लोगों को आकृष्ट करने के लिए रियायती दर पर यात्रा की तथा आने पर निवास की सुविधा मिलनी चाहिये। तथा मेले में इतनी सुविधाएँ होनी चाहिये कि ऐसे लोग सारे दिन मेले में रह सकें।

मेला यदि शहर से दूर हो तो शहर के हर भाग से मेले में पहुँचने की सुविधा मेले के दिनों में उपलब्ध होनी चाहिये। मेले से रेलवे स्टेशन, बस स्टेशन, हवाई जहाज का अड्डा आदि से जाने का प्रबन्ध भी समुचित रूप से होना चाहिये।

विश्व पुस्तक मेलों में संसार के भिन्न-भिन्न भागों से लोग पहुँचते हैं। उन्हें अपनी भाषा के कारण असुविधा कम से कम हो, इसका पहले से प्रबन्ध होना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो अभिनव प्रकाशन

- **सर्जना के क्षण : 'अज्ञेय'** 20.00

  मूर्द्धन्य कवि 'अज्ञेय' की चुनी हुई कविताओं का अनूठा संकलन। कवि की विस्तृत भूमिका के साथ प्रस्तुत इस संकलन में पहली बार काव्य-प्रेमियों को 'अज्ञेय' के काव्य-व्यक्तित्व की निर्माण-यात्रा का परिदृश्य उपलब्ध हो सका है।

- **हिन्दी सन्दर्भ कोश : डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय** 50.00

  इस अद्‌भुत कोश में ऐसे शब्दों का संकलन किया गया है जिनके सन्दर्भों की आवश्यकता हिन्दी साहित्य के अध्येताओं को प्रायः पड़ती रहती है। स्कूल, कालेजों तथा विश्वविद्यालयों के लिए विशेषरूप से संग्रहणीय।

अन्य गौरव ग्रन्थ—

नाटक

जय वर्धमान	डा० रामकुमार वर्मा	10.00
टूटते परिवेश	विष्णु प्रभाकर	10.00
कुहासा और किरण	,,	10.00
तुलसीदास	गोविन्दवल्लभ पंत	10.00

काव्य

कालजयी	भवानीप्रसाद मिश्र	20.00
सर्गान्त	केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'	10.00

ललित निबन्ध

अनुशासन की राह में	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	10.00

भारतीय साहित्य प्रकाशन, 286 चाणक्य पुरी, सदर, मेरठ-1

एम० काम० के विद्यार्थियों के लिये 1980 के नवीन प्रकाशन

प्रबन्ध के सिद्धान्त एवं व्यवहार
(Theory and Practice Manngement)
प्रो० बी० एल० पोरवाल
राजकीय कालेज, भीलवाड़ा
मूल्य : 27.50

प्रो० बी० बी० सक्सेना
राजकीय कालेज सीकर

प्रबन्ध शास्त्र
(लेखा कर्म व्यावसायिक सांख्यिकी विभाग के लिए)
प्रो० के० सी० जैन
राजकीय कालेज, अजमेर
मूल्य : 27.50

बी० कॉम० के विद्यार्थियों के लिए 1980 के नवीन प्रकाशन
पूर्णतया संशोधित एवं परिवर्द्धित

व्यावसायिक संगठन
(Business Organisation)
विनोद बहादुर सक्सेना
राजकीय कालेज, सीकर
मूल्य : 22.75

व्यावसायिक संचार, कार्यालय प्रबन्ध एवं विक्रम कला
(Business Communication. Office, Management & Salesmanship)
प्रो० के० बी० सक्सेना
जैन पी० जी० कालेज, बीकानेर
प्रो० बी० एल० पोरवाल
राजकीय कालेज, भीलवाड़ा
प्रो० बी० बी० सक्सेना
राजकीय कालेज, सीकर मूल्य : 18.50

प्रकाशक

दी स्टूडेन्ट्स बुक कम्पनी
चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो प्रकाशक विदेशों से आते हैं उन्हें और उनके सामान को पहुँचने पर, और लौटते समय, कम से कम दिक्कत हो, इसका पूरा प्रयत्न होना चाहिये। आगामी मेलों की सफलता के लिए यह बहुत आवश्यक है। पूरे प्रयत्न पर भी कुछ व्यक्ति और कुछ पुस्तकें देर से पहुँचती हैं; इस बात का ध्यान रखकर तदनुकूल समुचित व्यवस्था की जानी चाहिये।

मेले के सभी कार्यक्रम पहले से स्पष्ट और निर्धारित होने चाहिये, और उनमें व मेलों की तिथियों में, बाद में परिवर्तन किया जाना चाहिये।

पुस्तक प्रदर्शक पुस्तक मेलों में अपने स्थान को विशिष्ट आकर्षण देने की चेष्टा करते हैं, पुस्तक मेलों के व्यवस्थापक मेलों की एकरूपता बनाये रखने का यत्न करते हैं। इस आपस में विरोधी चेष्टाओं के कारण कई बार कटुता हो जाती है। बिना व्यवस्था में बाधा डाले—प्रदर्शकों को अधिक से अधिक स्वाधीनता दी जानी चाहिये।

विदेशी प्रकाशक यह अपेक्षा करते हैं कि जो रियायतें निर्यातित सामग्री को प्राप्त होती है वही रियायतें उन्हें और उनके काम में आने वाली समस्त सुविधाओं में मिलनी चाहिये।

मेले में पुस्तकें प्रदर्शित करने के उद्देश्य भिन्न-भिन्न होने के कारण सामान्य दर्शकों और पुस्तकाधिकार एवं अनुवाद-अधिकार खरीदने में रुचि लेने वालों के लिए मेले का समय अलग-अलग होना चाहिये।

प्रदर्शकों को सलाह दी जानी चाहिये कि अपनी प्रदर्शित सामग्री का समुचित बीमा करालें, क्योंकि दुर्घटना, आगजनी, चोरी, नुकसान आदि की जिम्मेदारी मेला प्रबन्धक स्वयं नहीं ले पाते।

पुस्तकों के प्रदर्शक मेले में सामान्य सुरक्षा की अपेक्षा अवश्य करते हैं, परन्तु वे वर्दीधारी पुलिस का बड़ी संख्या में मेले के भीतर दीखना उचित नहीं मानते।

मेले के दिनों में, और मेले के तत्काल बाद, सम्बन्धित मेले के सम्बन्ध में मेले में भाग लेने वालों की समस्याओं, सुविधाओं और सम्भावनाओं के सम्बन्ध में सम्मति ली जानी चाहिये, और एक प्रथक संगठन इस बात का प्रयत्न करने के लिए होना चाहिये कि इन सम्मतियों को आगामी मेले में व्यावहारिक रूप मिले। इस ओर प्रकाशकों के स्थानीय और राष्ट्रीय संगठनों को भी विशेष ध्यान देना चाहिये।

मूल्य निर्णायक होता है

१९७९ में लन्दन में हुए पुस्तक मेले में अनेक विदेशी विक्रेताओं तथा प्रकाशकों ने ब्रिटेन की पुस्तकों की चढ़ती कीमतों की शिकायत की।

दक्षिण अफ्रीका के एक प्रमुख विक्रेता ने कहा—ब्रिटिश पुस्तकों के मूल्य इतने अखरने लगे हैं कि अमेरिकी पुस्तकों के मूल्य स्वत: आकर्षित करने लगते हैं।

—०—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये प्रकाशन

हास्य व्यंग्य

● श्री नारायण चतुर्वेदी

मनोरंजक संस्करण	30.00
साहित्यक चुटकुले	25.00

● काका हाथरसी

हास्य व्यंग्य कहानियाँ	25.00
हास्य व्यंग्य कविताएँ	25.00
हास्य व्यंग्य एकांकी	25.00
हास्य व्यंग्य निबन्ध	25.00

● आचार्य चतुरसेन

सुगन्धित संस्मरण	30.00

● रामनारायण उपाध्याय

बख्शीशनामा	20.00

● रोशनलाल सुरीरवाला

मूर्ख शिरोमणि	20.00
गित्तलें	20.00

● इब्ने इन्शा

उर्दू की अखिरी किताब	20.00

● सुरेश सिंह

यादों के झरोखे	30.00

उपन्यास कहानियाँ

● आचार्य चतुरसेन

बड़ी बेगम	25.00
वह कहे तो	25.00
तख्ते ताऊस	20.00
लाला किला	20.00
सोने का थाल	16.00

● शिवसागर मिश्र

अजन्मा वह	30.00
जनमेजय बचो	20.00

● मणि मधुकर

गन्ध के गलियारे	30.00
एकबचन बहुबचन	18.00
सलवटों में संवाद	15.00

● शानी

फूल तोड़ना मना है	20.00
सड़क पार करते हुए	20.00

● कृष्ण बलदेव वैद

वह और मैं	20.00

● मृदुला गर्ग

ग्लेशियर से	20.00

● गोविन्द बल्लभ पंत

परिचारिका	18.00
तीन दिन	20.00

● बाला दुबे

बोझ	20.00
बहुरूपिये	20.00

महत्त्वपूर्ण संदर्भ ग्रन्थ

भगीरथ मिश्र

अच्छी हिन्दी कैसे लिखें	15.00

हरिबाबू बंसल

प्रशा० हिन्दी निपुणता	18.00

शरण

सूक्ति कोष 12 खंड प्रति खंड	10.00

राजेश्वर प्रसाद ना० सिंह

पक्षी प्रसंग	15.00
रोचक प्रसंग	25.00

रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'

पाण्डुलिपि संपादन कला	25.00

राममूर्ति सिंह

मानव हिन्दी अंग्रेजी कोष	20.00

कृष्णकान्ता

नैतिक शिक्षा	15.00

के०ए० दुबे पदमेश

हस्तरेखा विज्ञान	20.00

श्याम चन्द्र

आदर्श निबन्ध	20.00

प्रभात प्रकाशन

205, चावड़ी बाजार, दिल्ली - 110006

दूरभाष : 264676

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व पुस्तक मेलों में

पुस्तकों पर प्रतिबन्ध

जिन देशों में पुस्तकों के आयात-निर्यात पर तरह-तरह के प्रतिबन्ध हैं उनमें भी पुस्तक मेलों के समय बहुत ढील दे दी जाती है। जो पुस्तकें सामान्यत: ऐसे देशों में पहुँच ही नहीं पातीं, वे भी मेलों के दिनों में खुले-खुले बिकने लगती हैं। फिर भी कई पुस्तक मेलों के सम्बन्ध में कुछ औपचारिक प्रतिबन्ध प्रचलित हैं।

नई दिल्ली के विश्व पुस्तक मेले के सम्बन्ध में इतना ही नियम है कि जो पुस्तक अथवा सामग्री भारतीय कानून के अनुसार न बेची जा सकती है, न प्रदर्शित की जा सकती है, वह मेले में भी नहीं लायी जा सकती।

सोफिया में होने वाले मेले के आयोजकों का कहना है कि मेले का उद्देश्य निर्धारित है—"शान्ति और विकास की सेवा में पुस्तकें"; इसके विपरीत पड़ने वाले प्रकाशन मेलों में नहीं लाये जाने चाहिये।

काहिरा में भी नई दिल्ली जैसी स्थिति है—देश के कानून का ध्यान रखा जाना चाहिये, साथ-साथ 'सार्वजनिक नैतिकता' के अनुरूप ही प्रकाशन प्रस्तुत होने चाहिये।

मास्को में भी बात इसी प्रकार कही जाती है—प्रदर्शक न ऐसी पुस्तक अथवा सामग्री बेच सकते है न दूसरी भाँति दे सकते हैं जो सोवियत कानून के खिलाफ हो।

फ्रैंकफर्ट वाले बात को एकदम उलट कर कहते हैं; चूँकि उनके देश में विचार अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता है थोड़ा बहुत विरोध और उपद्रव सम्भव और अवश्यम्भावी है। इस प्रकार के आयोजन के कारण होने वाली क्षति के प्रति मेले के आयोजक अपने को उत्तरदायी नहीं मानते।

ब्रूसेल्स वालों ने बेलजियम के कानून की एक धारा ही प्रमुख रूप से नियमों में समाविष्ट कर ली है : जो कुछ "उचित नैतिकता" के विरुद्ध है उसके प्रदर्शन एवं वितरण पर आठ दिन से छः महीने तक की सजा और २६ से १०० फ्रैंक तक जुर्माना हो सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे महत्वपूर्ण उपयोगी प्रकाशन

● हिन्दी एकांकियों का रंगमंचीय अनुशीलन	डा० भुवनेश्वर महतो	79.00
● रिचर्स गाथा (हास्य व्यंग्य)	डा० बालेन्दुशेष तिवारी	13.00
● हाथी के दाँत (एकांकी संग्रह)	डा० चन्द्रगुप्त मयंक	20.00
● रेत की दीवारें	प्रो० वी० सी० धूत	9.00
● मैथिलीशरण गुप्त का काव्य सांस्कृतिक का अध्ययन	डा० आशा गुप्ता	30.00
● वली ग्रन्थावली भाग—पहला	डा० मुहम्मद आजम	30.00
● ,, ,, दूसरा	,, ,,	60.00
● हिन्दी उपन्यासों में आंचलिकता की प्रवृत्ति	डा० ह० कडवे	50.00
● मैथिलीशरण गुप्त का साहित्य	डा० द्वारिकाप्रसाद मीतल	40.00
● द्विवेदीयुगीन साहित्य समीक्षा	डा० संकठप्रसाद मिश्र	45.00
● स्वांतयोत्तर हास्य और व्यंग्य	डा० बलिन्दुशेषर तिवारी	42.00
● महादेवी के काव्य में लालित्य विधान	डा० मनोरमा शर्मा	50.00
● रीतिकालीन काव्य पर संस्कृत काव्य का प्रभाव	डा० दयानन्द शर्मा	45.00
● तुलसी की भाषा	डा० जर्नादन सिंह	35.00
● निराला साहित्य का अनुशीलन	डा० हीरालाल बाछोनिया	38.00
● ओद्दष्टामन	परशुराम शुक्ल विरही	11.00
● अजेय की औपन्यासिक कृतियों	कुसुम त्रिवेदी	15.00

अन्नपूर्णा प्रकाशन पुस्तक प्रकाशक, विक्रेता

106/154, गांधी नगर
कानपुर–208012

पुस्तकों के नये रूप-रंग के लिए

राजस्थान के प्रसिद्ध जिल्दसाज

- बढ़िया काम की गारण्टी
- काम समय पर लीजिए
- सन्तोषजनक सेवाएँ तथा
- सर्वोचित दरों की सुविधाएँ

सभी प्रकार की जिल्दसाजी के लिए, विशेषकर कानूनी, मेडिकल किताबों व मनपसन्द जिल्दसाजी के लिए एक बार परीक्षण करें

गोपाल लाल शर्मा

जनरल बुक बाइण्डर्स

हनुमान का रास्ता, जयपुर-3020003

फोन : 64808

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्न विश्व पुस्तक मेले

काहिरा का अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला

जेबो (जनरल इजिप्शियन बुक आर्गनाइजेशन) द्वारा प्रतिवर्ष ११ दिनों तक यह सांस्कृतिक, बौद्धिक और व्यापारिक पर्व आयोजित किया जाता है। इसके उद्देश्यों में प्रकाशनाधिकारों का क्रय-विक्रय विश्व व्यापी सह प्रकाशन के अवसर, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय विक्रय उन्नयन, ग्राहकों की सीधी बिक्री बाद हैं।

जनवरी-फरवरी १९७९ के ११वें कैरो इन्टरनेशनल बुक फेयर में २९ देशों के ४०० प्रकाशकों ने भाग लिया और २ लाख लोगों ने इस मेले को देखा।

केनेस अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला

साहित्य संसार में फ्रांस का अपना स्थान है, और फ्रांस के केनेस नगर में होने वाले विश्व पुस्तक मेले का इसी कारण अत्यन्त महत्व है। इस मेले में संसार के अनेक देशों के प्रकाशक भाग लेते हैं।

वीडिओ कम्यूनिकेशन, केनेस

पुस्तकों की प्रतिद्वन्द्विता में कई तरह के उपकरण उतर आये हैं, और उनके सम्बन्ध में जानकारी पुस्तक उद्योग के लिए महत्वपूर्ण हो गयी है। वीडिओ के सम्मिलित नाम से जाने माने वाले ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्मार्ग प्रकाशन की नवीनतम पुस्तकें

रवीन्द्रनाथ टैगोर-साहित्य (उपन्यास)

आँख की किरकिरी	20-00	नाव दुर्घटना	25-00
गोरा	25-00	घर और बाहर	10-00
कुमुदिनी (त्याग का मूल्य)	15-00	गीतांजलि (काव्य)	15-00
शिक्षा (निबन्ध)	10-00	मेरे नाटक (नाटक)	12-00
नीरजा	10-00	कौन किसी का ?	10-00

शरत्-साहित्य (उपन्यास)

श्रीकान्त	35-00	शेष प्रश्न	15-00
समाज का अत्याचार	10-00	देवदास	10-00
चरित्रहीन	30-00	बड़ी दीदी	8-00
विप्रदास	15-00	ब्राह्मण की बेटी	10-00
कमला	12-00	बिराज बहू	10-00
देनापावना (लेनदेन)	15-00	देहाती समाज	10-00
विजया	10-00	पथ के दावेदार	25-00
सविता (शेष का परिचय)	25-00	शुभदा	12-00
गृहदाह	20-00	मझली दीदी	10-00

बंकिम-साहित्य (उपन्यास)

आनन्दमठ	10-00	दुर्गेशनन्दिनी	10-00
कपालकुण्डला	8-00	सीताराम	10-00
देवी चौधरानी	10-00	मृणालिनी	12-00
राजसिंह	10-00	इन्दिरा राधारानी	8-00
विषवृक्ष	10-00	रोजमोहन की स्त्री	10-00

कहानी-संग्रह

काली रोशनी	सुरेन्द्र अरोड़ा	16-00
औरंगजेब के आँसू	राजरानी	12-00
बदलते चेहरे	,,	10-00
घटना, चक्र	सुमति अय्यर	12-00
राजमार्ग के यात्री	अयूब प्रेमी	9-00
विमल मित्र की श्रेष्ठ कहानियाँ	विमल मित्र	16-00
नारखानी का दोस्त	प्रियदर्शी प्रकाश	10-00
अश्वमेध	कृष्ण भावुक	13-00
चौपाये	श्रवण कुमार	10-00
जिन्दगी और दीवार	शक्तिपाल केवल	9-00
इन्सान और मशीन	अभिमन्यु अनत	7-00
टोकरी भर धूप (पुरस्कृत)	हरिकृष्ण कौल	7-00
आदमखोर	आशीष सिन्हा	10-00
बीच के सम्बन्ध	यादबेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	8-00
अन्तिम प्रजापति (पुरस्कृत)	राकेश वत्स	10-00
टैगोर की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ	टैगोर	20-00

सन्मार्ग प्रकाशन

16; यू० बी० बँग्लो रोड, दिल्ली—110007

हिन्दी साहित्य की नवीनतम पुस्तकों को प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपकरण अपने में इतने महत्वपूर्ण हो गये हैं कि फ्रांस में इनकी अलग से अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी प्रति वर्ष होने लगी है। इसमें पुस्तक प्रकाशक भी बड़ी सख्या में पहुँचते हैं।

वीडिओ कम्यूनिकेशन की विश्व प्रदर्शनी का प्रारम्भ १९७१ में हुआ। इस क्रम की छठी प्रदर्शनी २९ सितम्बर से २ अक्टूबर १९८० के बीच हो रही है।

वीडिओ उपकरणों में इस समय सारे ससार में एक प्रकार की विकासमान क्रान्ति हो रही है। १९८० से आरम्भ होने वाले दशक की इस दृष्टि से बहुत महत्ता है। अब तक के विकास और भावी सम्भावनाओं को इस प्रदर्शनी में प्रस्तुत किया जायेगा। लगभग ५० देशों के ५००० विशेषज्ञ इस अवसर पर अपने नये से नये उपकरणों के साथ पहुँचेंगे। इन उपकरणों की खरीद और बिक्री का यह सबसे विशाल अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन हो गया है। इसमें भी अधिकारों का आदान-प्रदान, वितरण प्रबन्ध, विक्रय प्रबन्ध, संयुक्त उत्पादन, आदि व्यवस्थाएँ होती हैं।

जेरूसेलम अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला

जेरूसेलम का यह पुस्तक मेला द्विवार्षिक है (७५, ७७, ७९ में आयोजित)। इस मेले का उद्देश्य अच्छे व्यावसायिक सम्पर्क के लिए और कापीराइट के क्रय-विक्रय के लिये अवसर सुलभ करना है। यहाँ आम जनता को रियायती दरों पर पुस्तकें भी मिल जाती हैं। अप्रैल १९७९ में हुए अन्तिम मेले का प्रदर्शनी क्षेत्र १९७७ के मुकाबिले ड्यौढ़ा था, और यहाँ एक विशेष रूप से निर्मित मण्डप जोड़ा गया था।

इस मेले में लगभग १ लाख व्यक्ति भाग लेते हैं। मेले में किताबों के लिए आर्डर बुक किये जा सकते हैं और उनका मूल्य लिया जा सकता है, किन्तु किताब की डिलीवरी मेले की समाप्ति के बाद ही दी जा सकती है।

आइफे बुक फेयर, नाईजीरिया

प्रतिवर्ष मार्च में आइफे विश्वविद्यालय बुकशाप द्वारा आयोजित इस पुस्तक मेले में प्रकाशक, पुस्तक विक्रेता, लेखक, सरकारी अधिकारी, पुस्तकालयाध्यक्ष और आम जनता के लोग भाग लेते हैं।

इस मेले का उद्देश्य विश्व के लोगों को अफ्रीकी पुस्तक मार्केट और उसकी संभावनाओं के बारे में सारे विश्व को जानकारी देना है। मेले में ऐसी ही प्रकाशित सामग्री के प्रदर्शन पर जोर दिया जाता है जो अफ्रीका, विशेषत: नाइजीरिया के लिए उपयोगी हो। शिक्षा क्षेत्र को, पुस्तकालयों को, और पुस्तक विक्रेताओं, छात्रों और आम लोगों को पुस्तकें उपलब्ध कराना इस मेले का प्रमुख उद्देश्य है। यह मेला अफ्रीका और शेष विश्व के बीच पुस्तकालयाध्यक्षों, पुस्तक विक्रेताओं और प्रकाशकों को आपसी समस्याओं पर विचार विमर्श के लिए मंच भी प्रदान करता है। इसमें सभी यूनिवर्सिटी बुक सेलरों और अन्य पुस्तक विक्रेताओं को भाग लेकर अपनी पुस्तकें बेचने के लिए बुलाया जाता है।

पाँचवाँ आइफे बुक फेयर २ से ५ मार्च, १९८०, के बीच आयोजित किया जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पौराणिक मूल्यों की आधुनिक व्याख्या

राम-कथा पर आधृत

नरेन्द्र कोहली के चार उपन्यास

□ दीक्षा 16)   □ अवसर 16)   □ संघर्ष की ओर 40)   □ युद्ध (दो भाग) 80)

"·····अपने चरित्-नायक के चित्रण में आप सश्रद्ध भी रहे हैं और सचेत भी।····· आदिवासिनी—अहल्या—सीता, यह आपका बड़ा हाई पॉवर का अनुवीक्षण 'यंत्र' है। शाबाश। विलासी सम्राट् के विलासी अमलों की नैतिकता की तसवीरें उम्दा हैं ··"

—अमृतलाल नागर

"मैंने आप में वह प्रतिभा देखी है, जो आपको हिन्दी के अग्रणी साहित्यकारों की पंक्ति में ला देती है।"

—भगवतीचरण वर्मा

"·····आपकी व्याख्या में बड़ी ताजगी है। तारीफ तो यह है कि आपने राम-कथा की पारम्परिक गरिमा को कहीं विकृत नहीं होने दिया।"

—डॉ० शिवमंगलसिंह 'सुमन'

"राम-कथा को आपने एकदम नई दृष्टि से देखा है।····मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि यथासंभव रामायण की मूल घटनाओं को परिवर्तित किए बिना आपने उसकी एक मनोग्राही व्याख्या की है।"

—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

"आपकी रचना उपन्यास के धर्म से ऊँचे उठकर कुछ शास्त्र की कक्षा तक बढ़ जाती है। मैं इसके लिए आपका कृतज्ञ होता और हार्दिक बधाई देता हूँ।"

—जैनेन्द्र कुमार

"इसमें प्रौढ़ चिंतन के आधार पर राम-कथा को आधुनिक संदर्भ प्रदान करने का साहसिक प्रयत्न किया गया है।"

—डॉ० नगेन्द्र

"राम-कथा की ऐसी साफ-सुधरी बुद्धिवादी युगानुरूप व्याख्या पहले कभी नहीं लिखी गयी। वस्तुतः यह केवल उपन्यास ही नहीं, राम-कथा की युगानुरूप अभिनय व्याख्या भी है। पौराणिक कथा-काव्यों को आधुनिक संदर्भ में व्याख्यायित करना क्लिष्ट कल्पना है, जिसे दीक्षाकार ने सहज संभाव्य बनाया है, यही इसकी सबसे बड़ी सफलता है।"

डॉ० विजयेन्द्र स्नातक

पराग प्रकाशन

३/११४, कर्ण गली, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली-३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाइस इंटरनेशनल बुक फेस्टिवल

यह नाइस नगर द्वारा आयोजित एक वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक समारोह है, जिसका उद्देश्य लेखकों, प्रकाशकों और समस्त पुस्तक व्यवसायियों तथा सभी देशों में संस्कृति और पठनपाठन के लिए उत्तरदायी सभी लोगों के बीच आदान-प्रदान की सुविधायें बढ़ाना और उनका उन्नयन है। इस समारोह का ध्येय यह भी है कि एक मैत्रीपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता उन लोगों के बीच आयोजित हो जो पुस्तकों के निर्माण और प्रकाशन में भाग लेते हैं जैसे लेखक, प्रकाशक, कागज निर्माता, मुद्रक, एनग्रेबर, चित्र सज्जाकार, सिलाई करने वाले, जिल्द बाँधने वाले, पुस्तक विक्रेता, पुस्तकालयाध्यक्ष, ग्रन्थ सूचीकार।

फ्रेन्कफर्ट बुक फेयर

मेलों और प्रदर्शनियों की जर्मन समिति द्वारा आयोजित फ्रैन्कफर्ट बुक फेयर प्रतिवर्ष सितम्बर या अक्टूबर माह में छः दिनों के लिए आयोजित किया जाता है। इसका प्रयोजन विश्वभर की पुस्तकों को प्रदर्शित करना और उनके लिए अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार वार्ताओं के लिए अवसर सुलभ करना है।

यह मेला केवल प्रकाशकों, पुस्तक-विक्रेताओं, पुस्तकालयाध्यक्षों और उनके व्यापारिक सहयोगियों के लिए (परिचय प्रमाणित होने पर) ही खुला रहता है। स्कूली समूहों और अन्य लोगों को भी इसमें पाँच दिन दोपहर बाद आने की अनुमति मिलती है।

इस मेले में भाग लेने वालों में आम जनता का कुल प्रतिशत लगभग ६० है, जबकि व्यावसायिक विशेषज्ञ शेष ४० प्रतिशत की पूर्ति करते हैं। लगभग दो लाख लोग मेले में आते हैं। इस मेले में ७० से अधिक देशों के ४५०० से अधिक प्रकाशक भाग लेते हैं, जिनमें ७६% विदेशी होते हैं। प्रकाशकों को अपने सभी नये प्रकाशन प्रदर्शित करने की सुविधा देने के अतिरिक्त यह मेला विभिन्न देशों में प्रकाशन क्षेत्र की नयी उपलब्धियों का पर्यवेक्षण करने, कापीराइट का आदान प्रदान करने, अनुवादों के लिए वार्ता करने, री-प्रिन्ट की व्यवस्था करने और पाण्डुलिपियों को प्राप्त करने के अवसर सुलभ करता है। बिक्री के सौदे जर्मनी और निकटवर्ती देशों के खुदरा पुस्तक विक्रेताओं और उनके प्रकाशन एजेण्टों के साथ किये जाते हैं।

प्रदर्शन प्रस्तुत करने वाले संस्थानों में जर्मनी के और विदेशों के प्रकाशक, बुक-क्लब, संगीत पुस्तकों, आर्ट प्रिन्ट, पोस्टर, मानचित्र, ग्लोब, स्लाइड्स, भाषा सिखाने वाले रेकार्ड, दृश्य श्रव्य कैसेट्स, और ऐसे ही शैक्षिक उपकरणों के निर्माता और प्रकाशक (जिनके ये उपकरण पुस्तक-व्यवसायी बेचते हैं) शामिल हैं।

यह मेला चार बड़े कक्षों में लगता है और उसके सात अनुभाग होते हैं।

१. बेलेज-लेटर्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे विशिष्ट एवं सुरुचिपूर्ण प्रकाशन

आलोचना

रस-संख्या : काव्य शास्त्रीय विश्लेषण	: डा० सुन्दरलाल कथूरिया	50·00
जनवादी समीक्षा : नया चिन्तन नये प्रयोग	: चंचल चौहान	30·00
नागरीलिपि . समस्यायें और समाधान	: डा० ओमप्रकाश भाटिया 'अराज'	15·00
पद्मावत : नवमूल्यांकन	: डा० राजदेव सिंह एव ऊषा जैन	20·00
आधुनिक साहित्य : वेदना के नये आयाम	: सुषमा भटनागर	15·00
हिन्दी साहित्य : सामाजिक चेतना	: डा० रत्नाकर पाण्डेय	30·00
गांधी जी का गाँव पर प्रभाव	: श्री कृष्ण कुमार त्रिवेदी	15·00
मुक्ति बोध : प्रतिबद्ध कला के प्रतीक	: चचल चौहान	20·00

उपन्यास

बेगम का तकिया	: पं० आनन्द कुमार	30·00
एक दिन और सारा जीवन	: पं० आनन्द कुमार	15·00
स्वयंवर	: सत्येन्द्र शरत	16·00
शोहरत	: वीरेन्द्र कश्यप	12·00
आधीरात का सूरज	: बृजेन्द्रनाथ गौड़	15·00
एक और अग्नि परीक्षा	: डा० शाम 'सरहदी'	10·00
उत्तराधिकारिणी	: मनोहर श्याम जोशी	10·00

कहानी संग्रह

धंधा	: सुरेश सेठ	12·00
रथचक्र	: हिमांशु जोशी	10·00
फीते से बँधी जिन्दगी	: केशव पाण्डेय	10·00

नाटक एवं एकाँकी

आवश्यकता : एक कुर्सी की	: राजेश शर्मा	12·00
स्वर्ग ऊँचा क्यों	: इन्द्रजीत भाटिया	10·00
जीवन दण्ड	: इन्द्रजीत भाटिया	10·00
एक दायरा टूटा सा	: ओम प्रकाश	15·00
पिटते पिटते	: हरि मेहता	18·00
जरा सी धूप	: हरि मेहता	20·00
सपनों के ताजमहल	: हरि मेहता	15·00
लेडी डाक्टर	: हरि मेहता	12·00

कविता

मृत शिशुओं के लिए प्रार्थना	: प्राणाय कुमार बंधोपाध्याय	8·00
एक अन्तराल	: बाबूलाल गोस्वामी	10·00
रोशनी के शहतीर	: डा० सुधा गुप्ता	10·00

पांडुलिपि प्रकाशन

प्रकाशक, पुस्तक-विक्रेता एवं लाइब्रेरी सप्लायर्स

ई 11/5, कृष्ण नगर, दिल्ली 110051

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

२. धम Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
३. बाल पुस्तकें
४. विज्ञान, टेक्नोलाजी, मैप्स
५. कला
६. तकनीकी पुस्तकें, व्यावसायिक पुस्तक और पाठ्य पुस्तकें
७. विदेशी प्रकाशन गृह और संयुक्त प्रकाशन

१९७८ के मेले के अवसर पर यहाँ एक बड़ा कक्ष और जोड़ा गया है। प्रकाशकों द्वारा स्वतन्त्र रूप से अपनी पुस्तकें प्रदर्शित करने की वृत्ति निरन्तर बढ़ रही है। व्यवस्था ऐसी रखी जाती है कि एक विदेशी प्रकाशक और जर्मनी के आन्तरिक उपयोग की पुस्तकों के प्रकाशक एवं सामान्य पाठकों की रुचि की पुस्तकों के प्रकाशक एक दूसरे से सर्वथा अलग अपनी पुस्तकें प्रस्तुत कर सकें। १९७८ में अमेरिका, जर्मनी, जापान के साथ-साथ सभी प्रमुख प्रकाशक देशों ने सामूहिक रूप से अपने प्रकाशन प्रस्तुत किये थे—इनकी व्यवस्था सम्बन्धित देशों की सरकारों अथवा उन देशों के प्रकाशकों के राष्ट्रीय संगठनों ने की थी।

१९७८ में किये गये सर्वेक्षण से मालूम हुआ कि मेले में ५९ प्रतिशत प्रकाशकों ने सन्तोषदायी सौदे किये। मेले का महत्व चौथाई प्रकाशक सहयोगी प्रकाशन की सुविधा की दृष्टि से मानते हैं, और दूसरे चौथाई सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए। बाकी मेले में अनुवाद अधिकारों का और अन्य प्रकार की अनुमतियों का आदान-प्रदान करते हैं। अधिकतर संभागी इस पक्ष में पाये गये कि सर्व साधारण को मेले में आने की सीमित सुविधा दी जाती रहनी चाहिये। परन्तु लगभग आधे विदेशी प्रकाशक इसके पक्ष में नहीं थे। मेले में भाग लेने के लिए छः महीने पहले आवेदन भेजना होता है, तीन महीने पहले सारे भुगतान करने होते हैं।

मेला स्थल पर प्रति घण्टे की दर से सम्मेलनों, बैठकों आदि के लिये कमरे उपलब्ध रहते हैं, जहाँ आवश्यकतानुसार मेज कुर्सियाँ लगाई जा सकती हैं।

ब्राजील बुक फेयर बेनीअल

साओ पाउलो (ब्राजील) में दो वर्ष में एक बार आयोजित विश्व पुस्तक मेला क्रमशः सारे संसार के प्रमुख प्रकाशक आकर्षित करने लगा है। १५ से २४ अगस्त १९८० के बीच यह मेला लग रहा है।

ब्रुसेल्स इंटरनेशनल बुक फेयर

बेल्जियम पब्लिशर्स फेडरेशन द्वारा आयोजित नौ दिनों का यह एक वार्षिक पुस्तक मेला है। यह मेला विशेषतः किताबों के फुटकर खरीददारों को आकर्षित करता है। १९७८ में इस अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले का दशाब्दी समारोह मनाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे वर्ष 1979, 1980 के नवीनतम प्रकाशन

उपन्यास

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

□ कथा एक नरक की

सामन्ती युग की क्रूरताओं और भोग विलास का यथार्थवादी चित्रण लेखक के मतानुसार प्रगतिशील समाज के निर्माण के लिए पुरानी मान्यताओं पर प्रहार करना अति आवश्यक हैं। 16·00

ख्वाजा अहमद अब्बास

□ खून का रिश्ता

पूँजीपतियों और जमींदारों के नृशंस अत्याचारों से पीड़ित गरीब किसानों और मजदूरों के विद्रोह की कहानी। 15·00

राजेन्द्र शर्मा

□ कोयला भई न राख

दो नारियों के प्रेम और विश्वास की मनोवैज्ञानिक धरातल पर प्रस्तुत रोचक गाथा। 12·00

रमाकांत

□ दोषी

मानव मन की गहराइयों को स्पर्श करता लेखक का मनोवैज्ञानिक रोचक उपन्यास। 18·00

हिमांशु श्रीवास्तव

□ पीछा करती नजरें

हिन्दी साहित्य में बदलते जीवन मूल्य और मान्यताओं, वाद-विवादों को अपनी व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत करके हिन्दी कथा साहित्य में नया कीर्तिमान प्रस्तुत किया है। सम्पूर्ण व्यंग्यात्मक उपन्यास। 15·00

कहानी

□ झूठ की मुस्कान — **हंसराज रहबर**

समाजवादी समाज के निर्माण के लिए संघर्षरत लेखक की सामाजिक अन्याय और शोषण से पीड़ित मानव की मार्मिक कहानियों का अनूठा संग्रह। 15·00

□ और बात सुलगती रहेगी — **संपा० अमृता प्रीतम**

प्रेम कहानियों का संग्रह। प्रेम की आग जो आदिकाल से आज तक सुलग रही है, और सुलगती रहेगी। 15·00

□ बाल साहित्य

विज्ञान और वैज्ञानिक (विज्ञान)	ओउम् पीयूष	6·00
भारत के प्रमुख खेल	,, ,,	9·00
बलिदान का रंग (बाल कथाएँ)	यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	5·00
बुद्धि के लाल (बाल कथाएँ)	दौलतसिंह लोढ़ा 'अरविन्द'	5·00

लालचन्द भाटिया

विशाल साहित्य सदन

20-ई नवीन शाहदरा

दिल्ली-110032

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डायमण्ड पॉकेट बुक्स

2715, दरिया गंज, नई दिल्ली - 110006

डायमण्ड पाकेट बुक्स के अन्तर्गत पाकेट बुक्स में उपन्यास, कहानी, कविता, शायरी, खेलकूद, जोक्स, सैक्स, धार्मिक, ज्योतिष, महापुरुषों की जीवनी व अन्य कई विविध विषयों की लगभग 250 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। ये पुस्तकें न केवल रोचक होती हैं बल्कि जनसाधारण के लिए उपयोगी भी होती हैं। यही कारण है कि कम मूल्य सुरुचिपूर्ण डायमण्ड पॉकेट बुक्स आज भारत की सर्वाधिक लोकप्रिय सीरीज मानी जाती है।

डायमंड पाकेट बुक्स की चर्चित पुस्तकें

योगाचार्य भगवानदेव की योग विषयक अनपम पुस्तकें

योग पुरुषों के लिये	4.00
योग स्त्रियों के लिये	4.00
योग और सैक्स	4.00
चित चकमक लागे नहीं भगवान श्री रजनीश	4.00
अपने माहिं टटोल	4.00
श्रीमद् भगवद गीता (हिन्दी अनुबाद सहित)	4.00
संक्षिप्त रामायण	4.00
महाभारत	2.00
धार्मिक भजनावली	2.00
क्रिकेट सम्राट सुनील गावस्कर (सचित्र जीवनी) जैनेन्द्र जैन	4.00
जूडो कराटे बाक्सिंग व कूंगफू कैसे सीखें	4.00
स्वमूत्र चिकित्सा (आयुर्वेदाचार्य विपुलराव)	4.00
चिंता छोड़ो सुख से जियो स्वेट मार्डन	4.00
हिप्नोटिज्म (सम्मोहन विज्ञान) प्रो० एम० कुमारिया	4.00
ज्योतिष और रत्न राधाकृष्ण श्रीमाली	4.00
अंक ज्योतिष ,, ,, ,,	4.00
हस्तरेखा सीखिये ,, ,, ,,	4.00
सचित्र वृहद वात्सायायन कलमसूत्र डा० सतीश गोयल	4.00
सैक्स और पति पत्नी ,, ,, ,,	4.00
सैक्स और स्त्री पुरुष ,, ,, ,,	4.00
सैक्स शक्ति कैसे बढ़ायें ,, ,, ,,	4.00

उपन्यास

श्रावणी आशापूर्णादेवी	4.00
कुंडली आसिद सुरती	4.00
तुलसी विजयकुमार गुप्त	4.00
करवट जोगेन्द्रसिंह कंबल	3.00
एक टूटी पगडण्डी रजना शर्मा	4.00
रिश्ते नाते राहुल	4.00
घराना राहुल	4.00
मां राहुल	4.00
दो भाई राहुल	4.00
पतिव्रता राहुल	4·00
फूलों के आंसू चेतना	4.00
दीवानगी चेतना	4.00
कुर्बानी चेतना	4.00
परछाई चेतना	4.00
सरगम चेतना	4.00
गुलमेंहदी रानी वाजपेयी	4.00
दान दहेज रानी वाजपेयी	4.00
जले पंख प्रेम वाजपेयी	4.00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डायमंड पाकेट बुक्स में

खेल कूद सीरीज़ की ये अनुपम पुस्तकें

खेलकूद सीरीज

जूडो कराटे कैसे सीखें 2.00
क्रिकेट कैसे खेलें (संशोधित) 2.00
हाकी कैसे खेलें 2.00
फुटबाल, बालीवाल कैसे खेलें 2.00
टेनिस, टेबल टेनिस कैसे सीखें 2.00
शतरंज कैसे खेलें 2.00

कुकरी सीरीज

शाकाहारी भोजन पकाइये खाइये (नया संस्क०) 2.00
मांसाहारी भोजन ,, 2.00
काँटीनेंटल डिशिज पकाइये खाइये ,, 2 00

हास्य कविता सीरीज

काका की फिलमी पैरोडिया (काका हाथरसी) 2.00

जोक्स सीरीज

टाप जोक्स 3.00
मिडनाइट जोक्स 3.00
माडर्न जोक्स 3.00
फिल्मी जोक्स 3.00
प्रेमी प्रेमिकाओं के जोक्स (नया संस्करण) 2.00

सैक्स एजूकेशनल सीरीज

सैक्स : विवाहितों के लिए (नया संस्करण) 2.00
सैक्स किशोर किशोरियों के लिए (नया संस्करण) 2.00
वात्स्यायन : कामसूत्र 2.00

डायरी सीरीज

गालिब की शायरी 2.00
शकील की शायरी 2.00
दाग की शायरी 2.00
जफर की शायरी 2.00
चुनी हुई रुबाइयां 2.00

(फिल्मी गीतमाला सीरीज)

लता के नगमे (सचित्र) 2.00
लता के युगल गीत 2.00
रफी के नगमे (सचित्र) 2.00
रफी के युगल गीत ,, 2.00
किशोर के नगमे ,, 2.00
किशोर के युगल गीत (सचित्र) 2.00
मुकेश के नगमे ,, 2.00
मुकेश के युगल गीत ,, 2.00
तलत व रूना लैला के नगमे ,, 2.00
हेमन्त, मन्नाडे के नगमे ,, 2.00
महेन्द्रकपूर के नगमे ,, 2.00
आशा भोसले के नगमे ,, 2.00
नये फिल्मी नगमे ,, 2.00
दर्द भरे फिल्मी नगमे ,, 2.00
फिल्मी हास्य गीत ,, 2.00
फिल्मी गजलें ,, 2.00
फिल्मी कव्वालियां ,, 2.00
भूले बिसरे फिल्मी नगमे ,, 2.00
फिल्मी राष्ट्रीय व भक्ति गीत 2.00
बिनाका गीतमाला-1 2.00
,, ,, भाग 2 2.00
,, ,, भाग 3 2.00

उपन्यास

नीलकण्ठ (गुलशन नन्दा) 5.00
जलती चट्टान ,, 3.00
दानव देश (कुशवाहा कांत) 2.00
उसके साजन ,, 3.00
खून का प्यासा ,, 4.00
आन (समीर) 4.00
कसक ,, 4.00
आराधना ,, 4.00
दाग ,, 4.00
बदनाम ,, 4.00
वह लड़की ,, 3.00
सुहाग ,, 4.00
सपना ,, 3.00
गहरा सागर ,, 3.00
सीमा ,, 3.00
कल्पना ,, 3.00
जल तरंग ,, 3.00
बहाना ,, 3.00
सोनिया ,, 3.00
तलाश ,, 3.00
आँख मिचौली ,, 3.00
लाडली ,, 3.00
खराखोटा ,, 3.00
कोमल (लोकदर्शी) 3.00
कैदी ,, 4.00
दासी ,, 4.00
पतंगा ,, 4.00
प्यार की प्यास ,, 4.00

जासूसी उपन्यास

ड्रैगन इंस्पेक्टर गिरीश 4.00
खूनी चेहरे ,, 3.00
मौत की घाटी ,, 3.00
भटकती आत्मा ,, 3.00
कमरे में हत्या ,, 3.00
न्याय के हत्यारे ,, 3.00
स्वीमिंग पूल में लाश ,, 3.00
मैं अपराधी नहीं ,, 3.00
नाग की प्रेमिका ,, 3.00

पता—डायमण्ड पाकेट बुक्स, 2715, दरिया गंज, नई दिल्ली 110 002

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके लिये आपके बच्चों के लिये

रंगीन चित्र कथा माला

डायमण्ड कॉमिक्स

डायमण्ड कामिक्स के अन्तर्गत मामा भांजा सीरीज में शिक्षाप्रद कथाएं, चाचा भतीजा सीरीज में तिलस्मी व जादुई, फौलादीसिंह सीरीज, राजन इकबाल सीरीज व लम्बू मोटू सीरीज में रोमांचकारी साहसिक व वैज्ञानिक कहानियाँ होती हैं। डायमण्ड कामिक्स का मुख्य उद्देश्य बच्चों के लिये रंगीन चित्र कथा माला के माध्यम से ज्ञानवर्धक, साहसिक व मनोरंजक साहित्य प्रदान करना है।

डायमण्ड कामिक्स इसलिये बच्चों की एक अत्यन्त लोकप्रिय सीरीज है।

डायमंड कामिक्स

नये डायमण्ड कामिक्स

ENGLISH

Fauladi Singh & Thieves of Space Craft	2.50
Lambu Motu and Dangerous Letter	2.50

HINDI

लम्बू मोटू और खतरनाक चिट्ठी	2.50
फौलादीसिंह और अन्तरिक्षयानों के चोर	2.50

पूर्व प्रकाशित डायमण्ड कामिक्स

राजन इकबाल सीरीज

राजन इकबाल और लाल हवेली का प्रेत	2.50

फौलादीसिंह सीरीज

फौलादीसिंह और उड़न तश्तरी का रहस्य	2.50

लम्बू मोटू सीरीज

लम्बू मोटू और मौत का कुआं	2.50

चाचा भतीजा सीरीज

चाचा भतीजा और तिलस्मी तलवार	2.50
चाचा भतीजा और तिलस्मी समुद्र	2.50

मामा भांजा सीरीज

मामा भांजा और सिक्खों के गुरु	2.50
मामा भांजा और ईमानदार चोर	2.50

डायमण्ड पाकेट बुक्स में नन्हे मुन्नों के लिये सुरुचिपूर्ण, उत्साह वर्धक एवम् रोमांचक बाल उपन्यास

फैण्टम और चार शिकारी	राजीव	2.00
लम्बू मोटू और यमराज का खेल	,,	2.00
काला पत्थर	,,	2.00
खतरनाक भिखारी	,,	2.00
भयानक चेहरा	(एस. सी. बेदी)	2.00
काला भूत	,,	2.00
चाचा चौधरी की चिन्ता		2.00
रबड़ का देवता (फैण्टम सीरीज)		1.50

डायमण्ड कामिक्स हिन्दी के साथ साथ इंगलिश में भी प्रकाशित होते हैं।

सम्पर्क करें—डायमण्ड कामिक्स 2715, दरियागंज, नई दिल्ली—110 002

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की राजधानी दिल्ली में

संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, पंजाबी पुस्तकों का विपुल भण्डार

पंजाबी पुस्तक भण्डार

दरीबा कलां, नई दिल्ली-110006

पंजाबी पुस्तक पिछले तीस वर्षों से भारत की लगभग 5000 लाइब्रेरियों, 10,000 पुस्तक विक्रेताओं और असंख्य दिल्ली वासियों की संस्कृत, हिन्दी, उर्दू व पंजाबी पुस्तकों की आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहा है। हमारे यहाँ साहित्यिक पुस्तकें, उपन्यास, कहानी, कविता, भाषाशास्त्र, धर्मग्रन्थ, ज्योतिष ग्रन्थ, आयुर्वेदिक होम्योपैथिक, ऐलोपैथिक, कर्मकाण्ड, तकनीकी, जीवनोपयोगी व अन्य सभी विषयों की पुस्तकों का विपुल भण्डार है। भारत भर के सभी प्रकाशकों की पाकेट बुक्स भी हमारे पास उपलब्ध है।

पधारिये या लिखिये

अपनी पसन्द की पुस्तकों का सूची पत्र निशुल्क मँगावें

पंजाबी पुस्तक भण्डार

दरीबा कला दिल्ली - 110006

Exporters in Indian Publications

Diamond Books International

Diamond Books International is a well reputed name is the foreign libraries. We are regulary supplying books to the prominent libraries of u. k. U. S. A. canada Fiji, Mauritus & many liabaries of Europe. We supply books in all Indian language including in Hindi, Punjabi, Gujrati, Urdu, Bengali, Sanskrit & English etc.

Write for a free Catalogue.

Contect

Diamond Books International

2715, Dariya Ganj, New Delhi - 110002 (India)

Our Associates

Punjabi Pustak Bhandar

(Leading book-sellers of Hindi, Sanskrit, Urdu & Punjabi Books)
Dareeba Kalan, Delhi 110006

Diamond Pocket Books

(Publishers of Paper Books in Hindi)
2715, Dariya Ganj, New Delhi - 110002

Diamond Comics

2715, Dariya Ganj, New Delhi - 110002
(Publishers of Comics in English & Hindi)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मेले का प्रयोजन विश्वभर की पुस्तकों को अधिकाधिक लोगों के समक्ष प्रदर्शित करना है। इसलिए यह मेला विश्व भर के पुस्तकों के प्रकाशकों, चित्र सज्जाकारों और पत्रिकाओं और दृव्य श्रव्य साधनों के निर्माताओं के लिए खुला रहता है। मेले का प्रयोजन यह भी है कि प्रकाशकों, पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयाध्यक्षों के मध्य सम्पर्कों को प्रोत्साहन मिले, पुस्तकोन्नयन हो और सर्वसाधारण को उनकी जानकारी मिले।

सभी देशों के प्रकाशकों तथा थोक विक्रेताओं को और बेल्जियम स्थित सभी विदेशी प्रकाशन संस्थानों के प्रतिनिधियों को, राष्ट्रीय प्रकाशक समूहों और उद्योग संगठनों और ग्राफिक आर्ट्स के उद्योग प्रतिनिधियों को इस मेले में आमन्त्रित किया जाता है। मेला प्रतिदिन जनता के लिए दोपहर १२ बजे से सायं ७ बजे तक, शनिवार एवं रविवार को प्रातः १० बजे से सायं ७ बजे तक और गुरुवार को रात्रि ६ बजे तक खुला रहता है।

यह मेला चूँकि पुस्तक-खरीदारों का मेला है, इसलिए यहाँ ऑटोग्राफ चाहने वालों, चित्र सज्जाकारों के मुद्रण कार्यों के प्रदर्शनी और पुरस्कार प्रतियोगिताओं की धूम रहती है। बेल्जियम के संस्कृति मन्त्री द्वारा ये पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं। बेल्जियम की २० सर्वश्रेष्ठ आकल्पित पुस्तकों को पुरस्कार दिये जाते हैं, जिनका चयन मुद्रण के विशेषज्ञों की जूरी द्वारा किया जाता है। मेले में ३२ देश भाग लेते हैं, जिनमें पूर्वी यूरोप और 'तीसरे विश्व' के संभागी भी सम्मिलित हैं।

१६७६ के ब्रुसेल्स मेले का विषय था "पुस्तक और बालक"।

बेलग्रेड इंटरनेशनल बुक फेयर

बेलग्रेड का अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला प्रतिवर्ष अक्टूबर-नवम्बर में सात दिन के लिए आयोजित होता है। इस मेले का उद्देश्य विश्व भर के प्रकाशकों, पुस्तक विक्रेताओं, वितरकों एवं उनके व्यावसायिक सहयोगियों को व्यापारिक सम्पर्क स्थापित करने, व्यापारिक विनिमय, कापीराइट के आदान-प्रदान एवं अन्य व्यावसायिक कार्यों के सम्पादन के लिए उपयुक्त अवसर सुलभ कराना है। यह मेला यूगोस्लाविया के पुस्तक उत्पादन की एक सम्पूर्ण झाँकी प्रस्तुत करने और विदेशी प्रकाशकों को देश के पुस्तक मार्केट की संभावनाओं से परिचित कराने में विशेष सफल रहता है।

बोलोना बाल पुस्तक मेला

बोलोना फेयर अथारिटी द्वारा आयोजित बोलोना (इटली) का बाल पुस्तक मेला प्रतिवर्ष मार्च-अप्रेल में चार दिन चलता है। यह मेला समस्त इतालवी और विदेशी प्रकाशकों और बाल एवं युवा पुस्तकों के चित्रकारों (इलस्ट्रेटर्स) और स्कूली एवं स्ट्रिप कार्टून चित्रकारों, पुस्तक व्यवसायियों, पुस्तकालयाध्यक्षों, शिक्षकों और आमन्त्रित दर्शकों के लिए खुला रहता है। यह मेला मूलतः कापीराइट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारें महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

शोध-प्रबन्ध, आलोचना एवं संस्कृत

● भारतीय शैलीविज्ञान	: डा. सत्यदेव चौधरी	६०·००
● भारतीय काव्यशास्त्र (पुरस्कृत)	: डा. सत्यदेव चौधरी	६०·००
● भारतीय काव्य-सिद्धान्तों का सर्वेक्षण	: डा. सत्यदेव चौधरी	१०·००
● काव्यशास्त्र के परिदृश्य (पुरस्कृत)	: डा. सत्यदेव चौधरी	४०·००
● शैलीविज्ञान और भारतीय काव्यशास्त्र	: डा. सत्यदेव चौधरी	३०·००
● अलंकार, रीति और वक्रोक्ति	: डा. सत्यदेव चौधरी	२०·००
● शब्दशक्ति और ध्वनि-सिद्धान्त	: डा. सत्यदेव चौधरी	१०·००
● रस-सिद्धान्त की प्रमुख समस्याएँ	: डा. सत्यदेव चौधरी	२०·००
● काव्य का स्वरूप	: डा. सत्यदेव चौधरी	१२·५०
● Essays on Indian Poletics	: Dr. Satyadev Chaudhary	10·00
● काव्य और काव्य-रूप	: डा. देवदत्त शर्मा	३०·००
● अध्यात्मक रामायण : एक विवेचनात्मक अध्ययन	: डा. विजयश्री	६०·००
● भारतीय नीति-काव्य परम्परा और रहीम (पुरस्कृत)	: डा. बालकृष्ण 'अकिंचन'	५०·००
● रहीम का नीति-काव्य	: डा. बालकृष्ण 'अकिंचन'	३०·००
● रहीम शतकत्रय	: डा. बालकृष्ण 'अकिंचन'	२०·००
● भारतीय चलचित्र (पुरस्कृत)	: डा. महेन्द्र मित्तल	७५·००
● हिन्दी उपन्यास : परम्परा और प्रयोग	: डा. सुभद्रा	५०·००
● प्रेमचन्द साहित्य में ग्राम्य-जीवन	: डा. सुभद्रा	१२·५०
● तुलसी की भाषा का शैलीवैज्ञानिक अध्ययन	: डा. किरण बाला	२०·००
● दक्खिनी हिन्दी : विकास और इतिहास	: डा. परमानन्दन पांचाल	२०·००
● मेरठ जनपद की साहित्य चेतना	: क्षेमचन्द्र 'सुमन'	१५·००
● रामचन्द्रिका की अन्तः कथाएँ	: सरला गुप्त, सरोज गुप्त	८·००
● हिन्दी नाटकों का रूप-विधान और वस्तुविकास	: डा. चन्दूलाल दुबे	३०·००
● गुरु तेगबहादुर : चिन्तन और कला	: डा. जयभगवान गोयल	१५·००

उपन्यास

● शाहआलम की आंखें	: इन्द्र विद्यावाचसपति	१२·००
● साँझ के पलाश	: डा. सुभद्रा	२५·००
● अजन्मी आत्मा की बाहें	: डा सुभद्रा	१४·००
● त्र्यम्बक	: निरंजनसिंह 'योगमणि'	२५·००
● दूसरा आदमी लाओ	: हरि प्रकाश त्यागी	१०·००
● कल्पना	: रतन सैनी	१२·००
● साखरपट्टी (मराठी के प्रसिद्ध उपन्यास 'आई आहे शेतांत' का रूपान्तर)	: रघुनाथ वामन दिघे	२५·००
● स्वयंसिद्धा	: माणिक वन्द्योपाध्याय	१२·००
● पत्नी-प्रेयसी	: पर्लबक	१५·००

व्यंग्य

● देवता : कुर्सी के	: क्षितिज विद्यालंकार	१२·००
● ठलुआ क्लब	: गुलाबराय	१०·००
● रिश्ता शिकायतों का	: सरला भटनागर	१०·००

●

 अलंकार प्रकाशन, ६६६ झील, दिल्ली-५१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का बाजार है, किन्तु यहाँ शैक्षिक सामग्री, इलेक्ट्रोनिक दृश्य श्रव्य साधनों को भी प्रदर्शित किया जाता है।

मेला सोलह सालों से हो रहा है। इस मेले में भाग लेने वालों की संख्या प्रति वर्ष बढ़ती जा रही है। सोलहवाँ मेला कार्य १६८० में होगा।

सत्रहवां मेला मार्च १६८० में होगा। साथ में चौदहवीं चित्रकारों की प्रदर्शनी भी होगी। दक्षिण अमेरिका के चित्रकारों की प्रदर्शनी वैनेजुला की सरकार लगा रही है। इस अवसर पर इन्टर नेशनल बोर्ड आॅन बुक्स कर यंग भी पीपुल पुरस्कार देता है उसे बाल साहित्य का नोबेल पुरस्कार माना जाता है।

म्यूनिख इंटर नेशनल बुक ऐक्जिबिशन

१६७६ के नवम्बर में म्यूनिख में जो अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित की गयी, वह इस शृंखला की ३०वीं प्रदर्शनी थी, और उसका विषय था बाल एवं युवाओं के लिये पुस्तकों का प्रदर्शन। यह प्रदर्शनी म्यूनिख की बवेरियन स्टेट लाइब्रेरी के फर्स्टेन्साल हॉल में आयोजित की गयी।

इस प्रदर्शनी में बड़ी संख्या में प्रकाशकों, सम्पादकों, लेखकों, चित्र सज्जाकारों, पुस्तकालयाध्यक्षों, अनुवादकों, पुस्तक विक्रेताओं ने भाग लिया और इसे बाल साहित्य ने विशेषज्ञों के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का रूप प्रदान किया।

मेक्सिको इन्टरनेशनल बुक फेयर

मेक्सिको में पहला अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला इसी ११ मई १६८० के बीच हो रहा है।

मेले का क्षेत्र बड़ा व्यापक है। पुस्तक उद्योग से सम्बन्धित सभी वर्ग इसमें भाग लेने के लिए आमन्त्रित किये गये हैं—प्रकाशक, विक्रेता, वितरक, मुद्रक, कागज विक्रेता, अलंकरण एवं टाइप सेटिंग के विशेषज्ञ, आदि। शिक्षात्मक कार्य से संबद्ध सामग्री, साहित्यिक रेकार्ड, स्लाइडें, पत्रिकाएँ, समाचार पत्र, आदि भी मेले में रखे जायेंगे।

मेले के प्रबन्धकों ने निर्णय किया है कि प्रकाशक विक्रेताओं से ऊँची दर पर खरीददार को कमीशन नहीं दे सकेंगे। पुस्तकें बेच भी प्रकाशक और पुस्तकविक्रेता सकेंगे। प्रकाशकों पर यह भी प्रतिबन्ध है कि वे केवल अपने प्रकाशन बेच सकेंगे।

इस्लामिक काउन्सिल की प्रदर्शनी

यूरोप की इस्लामिक काउन्सिल लन्दन में २८-३० सितम्बर १६८० के बीच इस्लाम और मुस्लिम जगत से सम्बन्धित अंग्रेजी में प्रकाशित पुस्तकों की प्रदर्शनी आयोजित कर रही है। इसमें सारे संसार के प्रकाशक भाग ले सकेंगे। इस विषय का यह अपने में संसार का विशालतम संकलन सार्वजनिक रूप से प्रस्तुत होगा, ऐसी आयोजकों की आशा है। लगभग १०,००० पुस्तकें प्रदर्शनियों में रखे जाने का प्रबन्ध किया जा रहा है। जो प्रकाशन पुराने होने के कारण अब आसानी से नहीं मिलते उन्हें भी मेले में रखा जायेगा। विषय, लेखक, पुस्तक नाम तथा देश के क्रम से लगभग एक हजार पृष्ठों की पुस्तक सूची भी इस अवसर पर निकाली जा रही है। इसमें पुस्तकालयों, विश्वविद्यालयों, उच्च संस्थानों, शोधकर्त्ताओं आदि की सूचियाँ भी रहेंगी।

लंदन एकेडेमिक बुक फेयर

THE LONDON ACADEMIC BOOK FAIR

परीक्षण के रूप में इस मेले का आरम्भ १६७६ में किया गया। इसमें ११५ प्रकाशकों ने भाग लिया। उद्देश्य यह था कि शैक्षणिक क्षेत्र से सम्बन्धित सभी श्रेणियों की पुस्तकें एक जगह प्रस्तुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया

पुस्तकों के प्रति सार्वजनिक रुचि जाग्रत करने के लिए 1957 से सेवारत है। ट्रस्ट का उद्देश्य कम दाम में सुरुचिपूर्ण, सुन्दर, सचित्र, रोचक और उपयोगी सत्साहित्य का प्रकाशन या ऐसे प्रकाशनों को प्रोत्साहन देना और उसे सर्वसाधारण तक पहुंचाना है।

। कुछ लोकप्रिय प्रकाशन ।

अनादि अनंत : श्री रंग

यह उपन्यास केवल स्मृति के द्वारा ही ग्यारह-बारह वर्ष के जीवन को व्यक्त करने वाली एक विशिष्ट शैली में लिखा गया है। उपन्यास की कथा-वस्तु स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध है।

अनुवादक : बी. आर. नारायण

पृष्ठ 206 — रुपये 12.25

हरियाणा : डी. सी. वर्मा

इस पुस्तक में हरियाणा के लोगों के जीवन के विभिन्न पक्षों के साथ ही यहाँ की भौगोलिक विशेषताओं और इतिहास का भी उल्लेख किया है जिसका प्रारम्भ महाभारत काल से होता है।

अनुवाद : डॉ० वी. डी. भारद्वाज

पृष्ठ 142 — रुपये 10.75

प्रेमचंद : अमृतराय

कमल के सिपाही महान लेखक प्रेमचन्द का जीवन चरित उनकी कृतियों से उद्धृत रोचक अंशों सहित

पृष्ठ 48 — रुपये 1.50

सीढ़ी के डंडे : तकषी शिवशंकर पिल्लै

एक ग्रामीण युवक केशव पिल्लै की कहानी जो श्रमानुसार उन्नति करके सचिवालय का चीफ सैक्रेटरी तक बन जाता है और बाद में अपने को ऊँचाई पर पहुंचाने वाले को ही धक्का देकर नीचे गिराता है।

अनुवाद : डॉ० सुधांशु चतुर्वेदी

पृष्ठ 550 — रुपये 26.00

दुर्गादास राठौड़ : रघुवीर सिंह

अपने समय के इतिहास के अविभाज्य अंग एवं मारवाड़ के वैधतावादी राठौड़ों के नेता का जीवन चरित।

अनुवाद : बालकराम नागर

पृष्ठ 172 — रुपये 8.00

जोड़ासाँकी वाला घर : लीला मजूमदार

रोचक ढंग से कही गयी रवीन्द्रनाथ टैगोर के बचपन की कहानी।

अनुवादक : प्रफुल्लचन्द ओझा

पृष्ठ 64 — रुपये 2.50

वर्ष 1980 का प्रमुख आकर्षण

चतुर्थ विश्व पुस्तक मेला

प्रगति मैदान, नई दिल्ली

29 फरवरी — 9 मार्च 1980

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हों और उनके विषय में व्यावसायिक विचार-विनिमय होता रहे। मेले में प्रकाशकों के अतिरिक्त विश्व विद्यालयों के प्राध्यापक, पोलीटेकनीक तथा अन्य शिक्षण संस्थाओं में कार्यरत अध्यापक और अधिकारी पुस्तकालयाध्यक्ष और सम्बन्धित पुस्तक-विक्रेता सभी बड़ी संख्या में आने लगे हैं। दूसरा मेला २३ अप्रैल १९८० को हो रहा है। मेले में प्रस्तुत होने वाली पुस्तकों का कार्डइंडेक्स तैयार किया जायेगा।

लंदन में एशियाई भाषा-प्रकाशनों की प्रदर्शनी

१२ भारतीय भाषाओं के नवीनतम प्रकाशनों की एक प्रदर्शनी लंदन स्थित भारतीय उच्चायोग के परिसर में १० से १३ अक्टूबर १९७९ तक आयोजित की गयी। इस प्रदर्शनी का आयोजन भारत के प्रमुख पुस्तक विक्रेता और पुस्तक निर्यातकर्त्ता, स्टार पब्लिकेशन्स, नयी दिल्ली की ओर से किया गया, जिसमें गत दो वर्षों में निकले २ हजार विभिन्न टाइटिल प्रदर्शित किये गये। इनमें कई भारतीय प्रकाशकों के प्रकाशन शामिल किये गये थे।

इस प्रदर्शनी का महत्व इसलिये है कि यह भारत से बाहर लगने वाली अपने ढंग की पहली प्रदर्शनी है, जहाँ प्रादेशिक भाषाओं की पुस्तकें ब्रिटेन के आव्रजकों पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयाध्यक्षों के लिये प्रदर्शित हुई। भारतीय बाल साहित्य पाकिस्तान की उर्दू किताबें और भारत में पुरस्कृत पुस्तकें यहाँ प्रथक अनुभागों में प्रदर्शित की गई।

लंदन बुक फेयर

ब्रिटेन के पुस्तक उद्योग द्वारा प्रतिवर्ष लंदन बुक फेयर प्रायः अक्टूबर में फ्रैन्कफर्ट मेले से पूर्व आयोजित किया जाता है, इसे १९७१ में प्रारम्भ किया गया था। प्रारम्भ में इसका प्रयोजन केवल कुछ छोटे विशिष्ट विशेषज्ञ प्रकाशकों के पुस्तक-उत्पादन को पुस्तकालयाध्यक्षों को दिखाना मात्र था किन्तु पिछले दस वर्षों में इसके स्वरूप का विस्तार होता गया और इसमें समुद्रपारीय देश भी भाग लेने लगे। १९७७ में इस मेले में ३४ देशों के पुस्तक व्यवसायी आये, और अब इसका दर्जा कापीराइट फेयर से भी कुछ बढ़ गया है। १९७८ में ५२ देशों के ८५०० पुस्तक व्यवसायी लंदन बुक फेयर में आये, जिनमें भारी संख्या में समुद्रपारीय देशों का प्रतिनिधित्व था। यह मेला केवल पुस्तक उद्योग का ही मेला है, जहाँ आम जनता का प्रवेश नहीं होता और पुस्तक भी केवल अंग्रेजी भाषा को दिखायी जा सकती है। मेले में प्रमुखता छोटे प्रकाशकों को प्राप्त होती है। १९८० में मेला अपना पहला दशक समाप्त करेगा।

लीपजिग बुक ट्रेड फेयर

लीपजिग के बसंत मेले के एक अंग के रूप में यह पुस्तक मेला प्रतिवर्ष मार्च मास में आयोजित किया जाता है। २० से अधिक देशों के प्रकाशन-गृहों, निर्यात संगठनों, राष्ट्रीय प्रकाशन संस्थाओं और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक कविता : प्रकृति और परिवेश

लेखक—डा० हरिचरण शर्मा

राजस्थान विश्वविद्यालय मूल्य : ६०·८०

आधुनिक कविता की विकास—यात्रा एक सी नहीं रही है। परिवेश और जीवन-दृष्टि के बदलाव के कारण उसका न केवल स्वरूप बदला है; वरन् शिल्प भी बदला है। इसी परिवर्तित परिवेश, प्रकृति और जीवन-दृष्टि से प्रभावित आधुनिक कविता के कारण, स्वरूप और शिल्प का समग्र अध्ययन इस नवीन कृति में किया गया है।

प्रसाद-समीक्षा की महत्वपूर्ण उपलब्धि

प्रसाद की नाटकीय पात्रसृष्टि का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

लेखक—डा० राधेश्याम शर्मा 'शिरीष'

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

प्रसाद की चरित्रांकन कला के अनेक अछूते आयामों को उद्घाटित करने के कारण यह पुस्तक प्रसाद-समीक्षा की एक अन्यतम उपलब्धि है। विषय का व्यवस्थित प्रस्तुतीकरण, सन्तुलित निष्कर्ष एवं सधी हुई प्रांजल भाषा के कारण यह ग्रन्थ सभी के लिए संग्रहणीय बन गया है।

चिन्मय प्रकाशन

चौड़ा रास्ता, जयपुर-३०२००३

फोन : ७२४५५/७४०८७

परमहंस प्रेस

|||

टाइटलों की बढ़िया छपाई

|||

2841, कूचा चेलान दरियागंज,

नई दिल्ली - 110002

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक विक्रेता फर्में भी इस मेले में भाग लेते हैं। प्रायः इस मेले में वे ही पुस्तकें प्रदर्शित होती है जो पिछले दो वर्षों में प्रकाशित हुई हैं। महत्वपूर्ण पुराने ग्रंथ भी प्रदर्शित किये जाते हैं।

ए० बी० ए० कन्वेन्शन एण्ड ट्रेड एक्जिबिट

मूलतः अमरीकी बाजारों के लिए आरम्भ किया गया ए० बी० ए० (अमेरिकन बुकसेलर्स एसोसियेशन) का यह वार्षिक आयोजन धीरे धीरे अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप धारण करता जा रहा है यह मेला प्रदर्शनकर्ताओं (प्रकाशक, थोक विक्रेता एवं अन्य सम्बन्धित उपकरणों के निर्माता), खुदरा पुस्तक विक्रेताओं, लेखकों, लेखकों के लिटरेरी एजेन्टों, फिल्म उद्योग के लोगों और ऐसे ही समुदपारीय लोग के लिए खुला रहता है।

१९७९ का मेला कन्वेन्शन एण्ड ट्रेड एक्जिबिट, लॉस एन्जेल्स में आयोजित किया गया था। ७ से १० जून तक यह कन्वेन्शन इस वर्ष शिकागो में आयोजित हो रहा है। शिकागो के मैंक कार्मिक प्लेस नामक मेलास्थल में गत दो वर्षों में सुधार किया गया है। उसकी छतें नीची करके उसके खम्भों की संख्या बढ़ा दी गई है। ऐस्केलेटर्स की सुविधा भी बढ़ायी गयी है। अगले कन्वेशन क्रमशः अटलांटा (मई, १९८१ अनाहीम (मई, १९८२) और डैलास (जून १९८२) में आयोजित किये जायेंगे।

वारसा इन्टरनेशनल बुक फेयर

१९५६ में आरम्भ हुए वारसा इन्टरनेशनल बुक फेयर ने अपने लोकप्रिय जीवन पच्चीस वर्षों में सारे संसार के पुस्तक व्यवसायियों में बहुत लोकप्रियता प्राप्त कर ली है। इस मेले में वैज्ञानिक तकनीकी और चिकित्सा शास्त्र की पुस्तकों का बाहुल्य रहता है। इन विषयों में यह विश्व का सबसे बड़ा और सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक मेला हो गया है।

वारसा बुक फेयर पश्चिमी और पूर्वी यूरोप के प्रकाशकों का प्रमुख मिलनस्थल भी बन गया है। दोनों ओर के सम्बधित विषयों के प्रकाशक मेले में बड़ी संख्या में आते हैं, और पुस्तकों तथा उनके विभिन्न अधिकारों के आदान-प्रदान का, उनकी बिक्री का और मुद्रण उपकरणों की प्राप्ति का यह विशिष्ट अवसर बन गया है। मेला छः दिन रहता है, इस बीच ६०,००० से अधिक दर्शक आते हैं—जिन में ज्यादा संख्या सम्बन्धित व्यवसायों के लोगों की होती है।

पोलैंड में मई का महीना पुस्तकों का महीना बन गया है। सारे देश में इस महीने में पुस्तक प्रदर्शनियां लगायी जाती हैं पुस्तकों की बिक्री का विशेष प्रबन्ध और प्रयत्न किया जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे कतिपय प्रकाशन

शोध-प्रबन्ध

अज्ञेय काव्य कोश डा० देशराजसिंह भाटी	60.00
(अज्ञेय की समस्त काव्य की व्याख्या	
हिन्दी में शब्दालंकार-विवेचन डॉ० देशराजसिंह	20.00
अज्ञेय की काव्य-चेतना डॉ० कृष्ण भावुक	25.00
प्रेमचन्द और हरिनारायण आप्टे डॉ० प्रमिला	25.00
कामायनी की भाषा डॉ० रमेशचन्द्र गुप्त	7.50

काव्य शास्त्र

पाश्चात्य काव्य शास्त्र के सिद्धान्त डॉ० जगदीश शर्मा	20.00
पाश्चात्य समीक्षा सिद्धान्त डॉ० रमेशचन्द्र मिश्र	30.00
पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त डॉ० शान्तिस्वरूप गुप्त	20.00
भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धान्त डा० सुरेश अग्रवाल	20.00
भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का संक्षिप्त विवेचन डॉ० चौधरी एवं गुप्त	25.00
भारतीय एव पाश्चात्य काव्यशास्त्र डॉ० भाटी	15.00
समीक्षा शास्त्र के भारतीय मानदण्ड डॉ० रामसागर त्रिपाठी	25.00
पाश्चात्य काव्य समीक्षा प्रो० ब्रजभूषण शर्मा	8.00
भारतीय काव्य समीक्षा प्रो०श्रीनिवास शर्मा	8.00
साहित्यालोचन प्रो० विजयकुमार	6.00
रस छन्द अलंकार प्रो० कृष्णदेव शर्मा	3.00

भाषा विज्ञान

भाषा विज्ञान प्रो० देवदत्त कौशिक	15.00
भाषा विज्ञान समीक्षा	6.00
हिन्दी भाषा का इतिहास प्रो० रमेशचन्द	8.00
भाषिकी और भाषा प्रो० श्याम मिश्र	8.00

साहित्यिक

वृहत साहित्यिक निबन्ध डा० रामसागर त्रिपाठी	40.00
साहित्यिक निबन्ध डॉ० शान्तिस्वरूप गुप्त	20.00
हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियां डॉ० शिवकुमार शर्मा	25.00
हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि सुरेश अग्रवाल	15.00
हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि सुरेश अग्रवाल	15.00
नयी कविता के प्रतिनिधि कवि डॉ० राजपाल शर्मा	15.00
हिन्दी के प्रतिनिधि निबन्धकार प्रो. सुरेश अग्रवाल	15.00
हिन्दी के श्रेष्ठ काव्य डॉ० शान्तिस्वरूप गुप्त	40.00
अज्ञेय काव्य साधना डॉ०देशराजसिंह भाटी	15.00
लोक साहित्य डॉ० कृष्णदेव शर्मा	8.00
आधुनिक कथा साहित्य प्रो० राजेश शर्मा	12.00
कल्पना तत्व डॉ० शान्तिस्वरूप गुप्त	10.00
हिन्दी उपन्यास : महाकाव्य के स्वर ,,	15.00
हिन्दी के प्रतिनिधि काव्य ,,	20.00
सूर का कूट-काव्य डॉ० देशराजसिंह भाटी	15.00
युग कवि निराला डॉ० कृष्णदेव झारी	10.00
उपन्यासकार प्रेमचन्द डॉ० सुरेशचन्द्र गुप्त	25.00
गोदान पुनर्मूल्यांकन डॉ० राजपाल शर्मा	10.00

सटीक काव्य

कबीर ग्रन्थावली प्रो० पुष्पपालसिंह	20.00
जायसी ग्रन्थावली डॉ० श्रीनिवास शर्मा	25.00
मीराबाई पदावली प्रो० देशराजसिंह भाटी	12.00
विद्यापति पदावली प्रो० कृष्णदेव शर्मा	12.00
सूरदास और उनका भ्रमरगीत श्रीनिवास शर्मा	15.00
बिहारी सतसई भाष्य डॉ० देशराजसिंह भाटी	25.00
बिहारी सतसई प्रो० विराज	6.00
रसखान ग्रन्थावली प्रो० देशराजसिंह भाटी	10.00
घनानन्द कवित्त प्रो० लक्ष्मणदत्त गौतम	8.00
शशिवृत्ता समय प्रो० राजेश शर्मा	5.00
पद्मावती समय प्रो० देशराजसिंह भाटी	4.00
रेवातट प्रो० देशराजसिंह भाटी	5.00
शिवराज भूषण प्रो० सतीशकुमार	8.00
विचित्र नाटक प्रो० राजेश शर्मा	8.00

टीकाएँ

कामायनी की टीका प्रो० देशराजसिंह भाटी	10.00
साकेत की टीका प्रो० ब्रजभूषण शर्मा	10.00
साकेत का नवम सर्ग प्रो० देवराजसिंह	8.00
यशोधरा की टीका प्रो० श्याम मिश्र	10.00
दिनकर और उनकी उर्वशी प्रो० भाटी	10.00
दिनकर और उनका कुरुक्षेत्र प्रो० भाटी	8.00
प्रसाद और उनकी लहर प्रो० सतीश	5.00
प्रसाद और उनका आँसू प्रो० सतीश	5.00
निराला और उनका राग विराग प्रो० राजेश	8.00

अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली - 110006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक मेला भी मई में लगता है—इसे पुस्तकमास का समापन कहा जा सकता है। इसका सम्मिलित सांस्कृतिक एवं व्यावसायिक स्वरूप संसार में विशेष आकर्षण का विषय बन गया है।

मेले की समाप्ति के बाद पोलैंड के पुस्तक विक्रेता संगठन मेले में प्रदर्शित पुस्तकों को अपने व्यय पर देश के विभिन्न नगरों में ले जाते हैं। इन नगरों में अलग-अलग विषयों की विदेशी पुस्तकों का का अलग-अलग प्रदर्शन किया जाता है, जैसे तकनीकी पुस्तकें औद्योगिक नगरों में और समुद्र सम्बन्धी पुस्तकें बन्दरगाहों में। इस प्रकार विशिष्ट पुस्तकों का प्रचार सारे देश में हो जाता है।

यह वारसा का वार्षिक पुस्तक मेला संस्कृति और विज्ञान भवन में आयोजित किया जाता है। यहाँ लगभग १,४०,००० पुस्तकें और पत्रिकाएँ (जर्नल) प्रदर्शित की जाती हैं, जिनमें विज्ञान, तकनीकी और शैक्षणिक विषयों की पुस्तकें ६० प्रतिशत रहती हैं। १९७९ में इस मेले में २८ देशों के २,४०० प्रकाशकों ने भाग लिया। कापीराइट का आदान-प्रदान, पुस्तकों का विक्रय, मुद्रण सेवाएं प्राप्त करना आदि इस मेले की प्रमुख गतिविधियाँ हैं। मेले में पिछले दो वर्षों में प्रकाशित अथवा सम्पादित पुस्तकें, म्यूजिक स्कोर्स, साहित्य और भाषा शिक्षण के रेकार्ड आदि प्रदर्शित किये जा सकते हैं।

सिंगापुर बुक फेयर

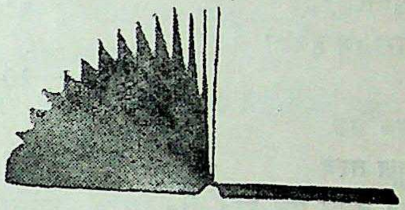

सिंगापुर फेस्टिवल आफ बुक्स एण्ड बुक फेयर का पहली बार आयोजन १९६९ में सिंगापुर की नेशनल बुक डेवलपमेंट काउन्सिल ने किया था। १९७२ में सिंगापुर बुक पब्लिशर्स के सक्रिय सहयोग से इसको विशाल रूप दिया गया, और यह तब से इस क्षेत्र का प्रमुख वार्षिक पुस्तक प्रदर्शन हो गया है। इसकी विशेषता यह है कि इस अवसर पर पुस्तक समारोह के अन्तर्गत कहानी सुनाने के जलसे निबन्ध प्रतियोगिताएँ, पुस्तकों के स्वरूप एवं मुद्रण प्रतियोगिताऐं राष्ट्रीय पुस्तक पारितोषिक वितरण, फिल्म प्रदर्शन, वार्ताएँ, पुस्तक विमोचन, आदि होते हैं, और पुस्तक मेले के अन्तर्गत बहुत विशाल संख्या में पुस्तकें प्रस्तुत होती हैं। स्थानीय कृतियों को विशेष स्थान दिया जाता है। अन्य अनेक पुस्तक मेलों से भिन्न, सिंगापुर पुस्तक मेले में पुस्तकें बिकती भी हैं। राष्ट्रीय एवं भौतिक प्रकाशनों के अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन भी इस अवसर पर बड़ी संख्या में सिंगापुर पहुँचते हैं। १९७८ में १००० प्रकाशकों की ८०,००० पुस्तकें मेले में लगायी गयी थीं। एक लाख से ऊपर लोग मेला देखने आये।

मास्को इंटरनेशनल बुक फेयर

मास्को का प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला १९७७ में आयोजित किया गया था। अब यह रूस का एक नियमित द्विवार्षिक आयोजन बन गया है। इस मेले का आयोजन इसलिए होता है कि इसमें भाग लेने वालों को व्यापार-सम्बन्धों के विस्तार और सौदे निपटाने की सहूलियत मिल सके। मेले में प्रदर्शित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

अर्थशास्त्र

आर्थिक विचारों का इतिहास 18.00
डॉ० तिलक नारायण हजेला

मौद्रिक अर्थशास्त्र 20.00
डॉ० एम० एल० सेठ

राजस्व के सिद्धान्त 21.00
डा० तिलक नारायण हजेला

मुद्रा बैंकिंग 20.00
डा० एम० एल० सेठ

सांख्यिकी के मूल तत्त्व 27.50
डॉ० एस० एन० बंसल एवं डॉ० डी० आर० अग्रवाल

भारतीय उद्योग 25.00
डॉ० टी० आर० शर्मा एवं डॉ० एस० डी० सिंह चौहान

भूगोल

भू-विज्ञान 27·25
डॉ० सी० बा० मामोरिया एवं जानकीलाल न्याती

भौतिक भूगोल के तत्त्व 16·00
डॉ० सी० बी० मामोरिया एवं जानकीलाल न्याती

उत्तरी अमेरिका 25.00
प्रो० बनवारीलाल शर्मा एवं प्रो० निवेन्द्र कुमार शर्मा

मानसून एशिया 30.00
डॉ० एम० एन० निगम एवं भंवरलाल गर्ग

भारत का भौगोलिक स्वरूप 22.50
विश्वनाथ तिवारी

एशिया का भौगोलिक स्वरूप 25.00
विश्वनाथ तिवारी

आर्थिक मानव भूगोल का स्वरूप 13.50
विश्वनाथ तिवारी

प्रयोगात्मक भूगोल एवं मौखिक परीक्षण 8.00
प्रो० बनवारीलाल शर्मा एवं डॉ० ए० आर० तिवारी

प्रायोगिक भूगोल एवं मौखिक परीक्षण .00
प्रो० बनवारीलाल शर्मा एवं प्रो० निवेन्द्र शर्मा

विविध

अमर शहीद अशफाक उल्लाखाँ 5.00
पं० बनारसीदास चतुर्वेदी

लोक साहित्य विज्ञान 20.00
डॉ० सत्येन्द्र, डी० लिट्

सूर की साहित्य साधना 10.00
डॉ० भगवतस्वरूप मिश्र एवं विशम्भर 'अरुण'

बाबू गुलाबराय स्मृति ग्रन्थ 40.00
(उच्चकोटि के विद्वानों के लेखों का संकलन)
स० पं० हरिशंकर शर्मा, पं० वियोगी हरि
श्री महेन्द्र, डॉ० नगेन्द्र एवं विशम्भर 'अरुण'

श्री रमण महर्षि से बातचीत 25.00
(Hindi Translation of 'Talks with Raman Maharshi')

निराला 10.00
डॉ० रामविलास शर्मा, डी० फिल्

तुलसी सुधा सार 20.00
श्री वियोगी हरि

वे स्मरणीय प्रसंग 12.50
श्री वियोगी हरि

भरत भक्ति 7.50
(रामचरितमानस के मार्मिक एवं प्रेरक स्थलों का संकलन)
संकलनकर्त्ता श्री राधेमोहन अग्रवाल

मानस मणि 7.50
(रामचरितमानस के बोधप्रद स्थलों का विवेचन सहित संग्रह) संकलनकर्त्ता श्री राधेमोहन अग्रवाल

रमण महर्षि 7.00
आर्थर ओसवर्न भूमिका लेखक डॉ० राधाकृष्णन

रवीन्द्रनाथ : एक जीवनी 20.00
कृष्ण कृपलानी

दीर्घायु के रहस्य 4.00
डॉ० विनय मोहन शर्मा

शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा-३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे विशिष्ट प्रकाशन

इतिहास

अद्भुत भारत (The Wonder that was India) का हिन्दी रूपान्तर — 30.00
ए० एल० बाशम

दिल्ली सल्तनत (711-1526) — 15.00
डॉ० ए० एल० श्रीवास्तव

मुगलकालीन भारत (1526-1803) — 17.50
डॉ० ए० एल० श्रीवास्तव

भारत का इतिहास (1000-1707) — 20.00
डॉ० ए० एल० श्रीवास्तव

मध्यकालीन भारतीय संस्कृति (1200-1707) — 12.50
डॉ० ए० एल० श्रीवास्तव

मराठों का नवीन इतिहास (Hindi edition New History of Marathas)
गोविन्द सखाराम सरदेसाई

भाग-१ (1600-1707)	चतुर्थ संस्करण	15.00
भाग-२ (1707-1772)	चतुर्थ संस्करण	25.00
भाग-३ (1772-1848)	द्वितीय संस्करण	15.00

मुगल साम्राज्य का पतन (Hindi Edition of Fall of the Mughal Empire)
सर जदुनाथ सरकार

भाग-१ (1739-1754)	द्वितीय संस्करण	12.50
भाग-२ (1754-1771)	,,	12.50
भाग-३ (1771-1788)	,,	12.50
भाग-४ (1789-1803)	,,	12.50

भारत का संवैधानिक इतिहास — 18.00
डॉ० भद्रदत्त शर्मा

राजस्थान का इतिहास — 25.00
डॉ० गोपीनाथ शर्मा

यूरोप का इतिहास — 15.00
डॉ० गोपीनाथ शर्मा

आधुनिक इंगलैण्ड का इतिहास — 15.00
डॉ० रमेशचन्द्र वर्मा

प्राचीन भारत — 15.00
डॉ० सत्यनारायण दुबे

भारत का इतिहास (Hindi Edition of History by Elliot and Dowson)

भाग-१	15.00	भाग-५	17.00
भाग-२	16.35	भाग-६	15 00
भाग-३	18 25	भाग-७	15.00
भाग-४	25.00	भाग-८	12 95

राजनीति-शास्त्र

अन्तरराष्ट्रीय राजनीति के सैद्धान्तिक पक्ष — 27.50
डॉ० महेन्द्र कुमार

राजनीति शास्त्र प्रवेशिका — 15.00
डॉ० सत्यनारायण दुबे

आधुनिक राजनैतिक विचारधाराएँ — 12.50
डॉ० सत्यनारायण दुबे

विश्व के प्रमुख संविधान — 15.00
डॉ० इकबाल नारायण

प्रतिनिधि राजनैतिक विचारक — 15.00
डॉ० इकबाल नारायण

शासन के सिद्धान्त एवं प्रमुख संविधान — 25.00
डॉ० इकबाल नारायण

समाजशास्त्र

समाजशास्त्र भाग-१ — 10.00
प्रो० आर० एन० मुकर्जी

समाजशास्त्र भाग-२ — 10.00
प्रो० आर० एन० मुकर्जी

सामाजिक अनुसंधान क्यों, कैसे ? — 10.00
प्रो० आर० एन० मुकर्जी

भारतीय समाज-संगठन से समस्याओं तक — 12.50
प्रो० आर० एन० मुकर्जी

गृह विज्ञान

पोषण एवं आहार विज्ञान के मूल तत्त्व — 14.00
डॉ० (श्रीमती) एस० पी० सुखिया

शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा-३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सामग्री को सोवियत संस्थान भी खरीदते हैं और दूसरे सौदे करते हैं, सोवियत कानून के अनुसार "मेजदूनारोद्नाया निगा" के माध्यम से रूसी संस्थान विदेशी प्रकाशकों से पुस्तकों का आदान-प्रदान करते हैं।

सोवियत साहित्यिक कृतियों के प्रकाशनाधिकारों और अनुवाद के अधिकारों की खरीद अथवा सोवियत संघ में विदेशी साहित्यिक कृतियों के अनुवादों के प्रकाशन के अधिकार सोवियत कापीराइट एजेन्सी के माध्यम से क्रय विक्रय किये जा सकते हैं।

मेले में खुदरा बिक्री अथवा जनता को प्रदर्शित सामग्री के वितरण की अनुमति नहीं दी जाती।

सोफिया इंटरनेशनल बुक फेयर

सितम्बर १९७९ में सोफिया का १२ वाँ अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला सम्पन्न हुआ। इस पुस्तक मेले का उद्देश्य प्रकाशकों, पुस्तक विक्रेता को और भाग लेने वाले देशों के विभिन्न संगठनों के बीच व्यापार सम्बन्धों के विस्तार की प्रेरणा देना है। यहाँ कापीराइट के आदान-प्रदान की व्यवस्था में सुधार की चेष्टा की जाती है, वैज्ञानिक और कलात्मक उपलब्धि के सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया जाता है, मानव समाज को शांति और समृद्धि के लिए निकट लाने का लक्ष्य सिद्ध किया जाता है और बलगेरिया की जनता को प्रदर्शनकर्ताओं के नवीनतम प्रकाशनों की जानकारी प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया जाता है। प्रतिवर्ष यहाँ २३ हजार नई पुस्तकें प्रदर्शित की जाती हैं।

कीमत कम, महत्त्व कम

जो प्रकाशक अपनी बिना बिकी पुस्तकें जल्दी निकालने के लिए इनकी कीमत कम करके बेचने की कोशिश करते हैं वे कहीं स्वयं अपना अहित तो नहीं कर रहे?—यह प्रश्न १९७९ के लंदन पुस्तक मेले में उभर कर सामने आया।

डेनमार्क और आस्ट्रेलिया के पुस्तक विक्रेताओं ने ऐसी पुस्तकें बहुत खरीदीं, ये मानते हैं इनसे इनको लाभ भी बहुत होता है, लेकिन वे स्वयं इस पर खेद और चिन्ता प्रकट करने लगे हैं। "इससे पुस्तकों का महत्व कम होता है। हम खुद खरीददार को यह सोचना सिखाते हैं कि "नयी पुस्तकों की कीमतें बहुत ही ज्यादा होती हैं।"

—o—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में
विश्व पुस्तक मेले

साक्षरता अथवा औपचारिक शिक्षा से हटकर जनमानस को पुस्तकोन्मुख बनाना समाज के लिए एक पृथक् ध्येय स्वीकार किया गया है। जब तक लोगों में पुस्तकों के पठन की सहज रुचि नहीं होगी, तब तक राष्ट्र का सामान्य स्तर ऊँचा नहीं उठ सकेगा और अन्य क्षेत्रों में हमारे श्रेष्ठ प्रयास भी देश का पिछड़ापन दूर नहीं कर सकेंगे।

पुस्तकों की ओर जनता की रुचि जागृत करने और पुस्तकों को लोकप्रियता उपलब्ध कराने की दिशा में पुस्तक समारोहों, पुस्तक मेलों और क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और विश्व स्तर की पुस्तक प्रदर्शनियों का आयोजन हमारे लिये सबसे बड़े साधन हैं।

पुस्तकों की पहली वृहद् अखिल भारतीय प्रदर्शनी नयी दिल्ली में २६ नवम्बर से ५ दिसम्बर, १९६४ तक नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया द्वारा आयोजित की गयी, जिसने दो वर्ष बाद राष्ट्रीय पुस्तक मेले का रूप धारण कर लिया और १९६६ में इन्हीं तिथियों में बम्बई में प्रथम राष्ट्रीय पुस्तक मेला सम्पन्न हुआ इसके बाद से यह एक नियमित राष्ट्रीय आयोजन का रूप धारण कर चुका है।

प्रथम विश्व पुस्तक मेला १९७२

१९७२ में राष्ट्रीय पुस्तक मेले का प्रथम विश्व पुस्तक मेले में विलय हो गया और अब विश्व पुस्तक मेलों का आयोजन पुस्तक जगत का एक नियमित द्विवार्षिक अंग बन चुका है। अब तक तीन विश्व पुस्तक मेले आयोजित हो चुके हैं और १९८० में चौथा विश्व पुस्तक मेला धूमधाम से सम्पन्न होने जा रहा है।

अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष—यूनेस्को द्वारा १९७२ का वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष के रूप में मनाने की सिफारिश की गयी जिसके अनुसरण में केन्द्रीय शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय ने नई दिल्ली में १८ मार्च से ४ अप्रैल, १९७२ तक विश्व पुस्तक मेला आयोजित करने का निश्चय किया। भारत सरकार ने इसमें नेशनल बुक ट्रस्ट और फेडरेशन ऑफ पब्लिशर्स एण्ड बुक सेलर्स एसोसियेशन्स इन इण्डिया का सहयोग भी आमन्त्रित किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके पुस्तकालय की शोभा

गुरुदत्त साहित्य

सोद्देश्य—रोचक—प्रेरणाप्रद

श्री गुरुदत्त

अद्वैत मीमांसा	६·००
अनदेखे बंधन	१६·००
अन्तिम यात्रा	२·००
अन्धकार	१२·००
अन्धे की लाठी	१५·००
अम.वत	२०.००
अमृत मन्थन	८·००
असमंजस	१५·००
आशा-निराशा	१४·००
आह्वान	१८·००
इतिहास में भारतीय परम्परा	१२·००
इबलीस	१२·००
कला	१४·००
कामना	६·००
कौमुदी	१२·००
काल चक्र	१२·००
कुंकुम	१५·००
खण्डहर बोल रहे हैं भाग ३	७८·००
गंगा की धारा	१८·००
घर की बात	१५·००
चंचरीक	६·००
चितेरे	८·००
चौराहा	१२·००
छोटी सी बात	१६·००
जमाना बदल गया (४ भाग)	१२५·००

श्री गुरुदत्त

डाल डाल के पक्षी	१२·००
दस साल बाद	१२·००
दिग्विजय	१५·००
दो लहरों की टक्कर (दो खण्डों में)	९६·००
देश की हत्या	१२·००
दो भद्र पुरुष	६·००
द्रष्टा	८·००
धरती और धन	१४·००
धर्म तथा समाजवाद	१४·००
नये विचार नई बातें	८·००
निष्णात	१२·००
न्यायाधिकरण	२०·००
पंकज	६·००
पत्रलता	१८·००
पतन का मार्ग	१८·००
परदे के पीछे	१०·००
परम्परा	१२·००
परिभव	५·००
पाप और पुण्य	१६·००
पाणिगृहण	१४·००
पूर्वग्रह	१४·००
प्रभात वेला	८·००
प्रवृत्ति	१४·००
प्रेयसी	१२·००
फैलती छाया	१५·००
बहती रेता	१६·००
बाहर और भीतर	८·००
बिखरे चित्र (कहानी संग्रह)	५·००
बीती बात	४·००
ब्रह्मसूत्र (भाष्य) दो भाग	५४·००
भाग चक्र	१२·००
भारत—गांधी नेहरू की छाया में	१८·००
भारत में राष्ट्र	४·००
भाव और भावना	१२ ००
भावुकता और मूल्य	१४·००
महानगर	१२·००
मानव	१४·००
मेघवाहन	१४·००
मेरी पसन्द (नाटक)	५·००
मात्रा का अन्त	१५ ००
युद्ध और शान्ति भाग—१	१२·००
युद्ध और शान्ति भाग—२	१२·००
रानी साहिबा	१४·००
रीति रिवाज़	१८·००
लकीर के फकीर	१४·००
लोक परलोक	१४·००
वन्दे मातरम्	५·००
वाममार्ग	२६·००
विकार	५·००
विडम्बना	२०·००
विलोम गति	१५·००
विश्वास	४·००
वेद और वैदिक काल	१२·००
श्री मद्भागवद्गीता एक अध्याय	२४·००
संम्बन्ध	१५·००
संस्खलन	१४·००
सांख्य दर्शन (सरल सुबोध भाषा भाष्य)	४०·००
सर्वमंगला	१०·००
साहित्यकार	८·००
सुमिति	५·००
सृष्टि रचना	१०·००
स्नेह का मूल्य	१२·००
हम और तुम	१५·००

भारतीय साहित्य सदन सेल्स
३०/९० कनाट सरकस नई दिल्ली ११०००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८ अप्रैल, १९७२ को राष्ट्रपति वी० वी० गिरि ने तीन हजार विद्वानों, संसद सदस्यों, राजनयिकों, विदेशी प्रतिनिधियों, लेखकों, प्रकाशकों और पुस्तक प्रेमियों की सुसम्पन्न उपस्थिति में प्रथम विश्व पुस्तक मेले का उद्घाटन विन्डसर प्लेस में किया। इस अवसर पर केन्द्रीय शिक्षामन्त्री प्रो० नूरुल हसन भी उपस्थित थे।

जितने दर्शक उतनी पुस्तकें—इस पुस्तक मेले के लिए एक विशाल २,८०९ वर्ग मीटर का मण्डप और उसके सहायक कक्षों का निर्माण बौद्धिकता के वातावरण के सृजन की दृष्टि से किया गया। कई सुविख्यात प्रकाशन गृहों ने अपने पृथक् मण्डप बनाये, जिनकी निर्माण-सज्जा मुख्य पंडाल के अनुरूप रही। इन कलात्मक कक्षों में २ लाख से अधिक पुस्तकें आकर्षक ढंग से प्रदर्शित की गयीं, जिनमें भारतीय भाषाओं व अंग्रेजी के १० हजार भारतीय प्रकाशन भी अपना विशिष्ट स्थान रखते थे।

मेले को प्रबुद्ध जनता का उत्साहवर्धक समर्थन मिला जिसे देखते हुए मेले की अवधि २ दिन और बढ़ा दी गयी। इसे २ लाख से अधिक व्यक्तियों ने देखा, जिसमें भारत के राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति एवं केन्द्रीय मंत्रियों सहित सिक्किम की महारानी और अन्य विदेशी मेहमान भी थे।

भारतीय व विदेशी प्रकाशन—मेले में कई अन्य देशों ने भी अपने महत्वपूर्ण प्रकाशन भिजवाये। इन बाहरी देशों में प्रमुख हैं: इंगलैण्ड, अमरीका, रूस, फ्रांस, प०जर्मनी, पू० जर्मनी, स्विट्जरलैंड, न्यूजीलैण्ड, हंगरी, इटली, ग्रीस, ईरान, चैकोस्लावाकिया, स्पेन, श्रीलंका, कम्पूचिया, मलयेशिया, कोरियन जनवादी गणराज्य, तुर्की, अफगानिस्तान, केनिया, तंजानिया, जापान, यूगोस्लाविया और बांगला देश आदि हैं जहाँ के प्रकाशक, इस मेले में भाग लेने आये। सौ से अधिक भारतीय प्रकाशकों ने यहाँ अपने स्टाल लगाये। पंजाब, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, केरल, महाराष्ट्र, उड़ीसा, प० बंगाल और असम राज्यों ने भी मेले में अपने-अपने कक्ष लगाये। भारत सरकार के पब्लिकेशन्स डिवीजन, पब्लिकेशन्स ब्रांच, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद, भारतीय मानव संस्थान, भारतीय विज्ञान अकादमी एवं अन्य सार्वजनिक क्षेत्र के पुस्तक कक्ष भी मेले में लगे। अन्तिम दो दिनों में भारतीय प्रकाशकों ने एक 'किताब बाजार' लगाया, जिसमें घटी हुई दरों पर पुस्तकों की बिक्री की खासी धूम रही।

उत्तम पुस्तक, उत्तम कक्ष—भारत के उपराष्ट्रपति श्री जी० एस० पाठक ने सबसे सुन्दर पुस्तक कक्ष लगाने वालों को और सर्वोत्तम आवरण पृष्ठ वाले प्रकाशनों के लिये पुरस्कार बाँटे। सर्वोत्तम कक्ष का पुरस्कार यू० बी० एस० पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली को मिला, द्वितीय पुरस्कार बम्बई के डी० बी० तारापुरवाला को और अच्छे प्रकाशनों के लिए प्रकाशकों को पुरस्कृत किया गया।

पुस्तकें लाखों के लिए—विश्व पुस्तक मेले के साथ "बुक्स फार दी मिलयन्स" विषय पर एक अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार आयोजित किया गया, जिसका निदेशन हिन्द पॉकेट बुक्स के श्री दीनानाथ मलहोत्रा ने किया और इसमें १११ प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सेमीनार में पेपर बैक्स और सहकारी प्रकाशन के विविध पक्षों पर खुला विचार-विमर्श हुआ। सेमीनार की सिफारिशों और निर्णयों को लागू करने के लिए एक समिति का गठन किया गया जिसमें निम्न प्रतिनिधि शामिल किये गये :

(i) केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय का एक प्रतिनिधि
(ii) फेडरेशन ऑफ पब्लिशर्स एण्ड बुक सेलर्स इन इण्डिया के अध्यक्ष
(iii) नेशनल बुक ट्रस्ट के निदेशक
(iv) नेशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता के भूतपूर्व निदेशक श्री बी० एस० केसवन
(v) श्री एम० एन० राव भारतीय भाषाओं के पेपर बैक प्रकाशकों के प्रतिनिधि के रूप में।
(vi) श्री जमनशाह अंग्रेजी पेपर बैक प्रकाशकों के प्रतिनिधि के रूप में
(vii) सेमीनार के निदेशक श्री दीनानाथ मलहोत्रा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालकों, किशोरों, नवसाक्षरों व प्रौढ़ों के लिए उत्कृष्ट पुस्तकें

पीताम्बर

विज्ञापन

उपन्यास		
कुंजर	राधेश्याम झिंगन	3·00
भूखे भेड़िए	राधेश्याम झिंगन	3·00
सत्यमेव जयते	डा० राजेन्द्रमोहन भटनागर	6·00
जीवनी संस्मरण (वैज्ञानिक)		
डा० जगदीशचन्द बसु	विमल कुमारी	4·00
होमी जहांगीर भाभा	एस. बी. अग्रवाल	2·50
टामस एल्वा एडीसन	श्याम कपूर	2·50
चन्द्रशेखर वेकटरमन	श्याम कपूर	2·50
अलबर्ट आइनस्टाइन	श्याम कपूर	2·50
गीत		
शिशु गीत भाग १, २, ३	ओमप्रकाश सिंहल	2·50
नवसाक्षरों व प्रौढ़ों के लिए		
स्वतन्त्रता से सम्पूर्ण क्रान्ति की ओर	डा. लक्ष्मीनारायण लाल	3·00
हमारी नदियों पर विकास तीर्थ	ब्रह्मप्रकाश गुप्त	4·00
अपना शासन अपने हाथ	पी. एस. त्रिपाठी	3·00
समाज को बदल डालो	श्यामचन्द्र कपूर	3·00
विज्ञान के कदम—सरल कहानियाँ	श्री व्यथित हृदय	3·00
अच्छे रास्ते जो स्वस्थ बनायेंगे	अजीता श्रीवास्तव	6·00
कथा साहित्य		
रानी का प्रतिशोध	ब्रह्मप्रकाश गुप्त	6·00
हमारी नदियों पर विकास तीर्थ	ब्रह्मप्रकाश गुप्त	4·00
सुखी संसार	ब्रह्मप्रकाश गुप्त	4·00
कहानी दिवाकर भाग १	लक्ष्मीनारायण व श्याम कपूर	6·00
कहानी दिवाकर भाग २	— वही —	7·50
बाल नाटक संग्रह		
सत्य और बुद्धि	ब्रह्मप्रकाश गुप्त	4·00
हास्य विनोद		
महापुरुषों के जीवन में हास्य	पी. एस. भाकुनी	4·00

पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी

शैक्षिक प्रकाशक

८८८, ईस्ट पार्क रोड, करौल बाग, नई दिल्ली-११०००५ (भारत)

दूरभाष : कार्यालय : ५१६४३३, निवास : ५६२६१६ टेलिग्राम : 'पीताम्बर' नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत साहित्य के श्रेष्ठ प्रकाशन

- संस्कृत साहित्य का सुबोध इतिहास — डा० राजकिशोरसिंह । १२.००
- संस्कृत साहित्य की प्रवृत्तियाँ — डा० जयकिशन प्रसाद । १८.००
- संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास — डा० बाबूराम त्रिपाठी । १६.००
- संस्कृत नाट्य साहित्य — डा० जयकिशन प्रसाद । १२.००
- भारतीय संस्कृति — डा० राजकिशोरसिंह । १२.००
- संस्कृत भाषा-विज्ञान — डा० राजकिशोरसिंह । १२.००
- संस्कृत व्याकरणम् — डा० बाबूराम त्रिपाठी । २०.००
- भारतीय दर्शन — डा० आचार्य एवं त्रिपाठी । १२.००
- संस्कृत निबन्धांजलिः — डा० रामकृष्ण आचार्य । १५.००
- ऋक सूक्त समुच्चय — डा० रामकृष्ण आचार्य । १५.००
- मेघदूतम् [सम्पूर्ण, सटीक] — डा० रामकृष्ण आचार्य । ७.००
- मेघदूतम् [पूर्वमेघ, सटीक] — डा० रामकृष्ण आचार्य । ४.५०
- संस्कृत वाङ्मय : मौखिकी — डा० गोविन्द त्रिगुणायत । ६.००
- वैदिक साहित्य का इतिहास — डा० राजकिशोर सिंह । ७.००
- संस्कृत साहित्य का इतिहास — डा० द्वारिकाप्रसाद । ८.००
- काव्यप्रकाश : एक अध्ययन — डा० पारसनाथ द्विवेदी । ६.५०
- ध्वन्यालोक: एक अध्ययन — डा० पारसनाथ द्विवेदी । ३.५०
- कालिदास और अभिज्ञान शाकुन्तलम् — डा० जयकिशन प्रसाद । ४.००
- चतुर्वेद — डा० जयकिशन प्रसाद । ५.००
- कालिदास और मेघदूत — डा० जयकिशन प्रसाद । ५.००
- सुबोध संस्कृत भाषा-विज्ञान — डा० जयकिशन प्रसाद । ५.००
- साहित्य दर्पण : एक अध्ययन — डा० जयकिशन प्रसाद । ५.००
- संस्कृत निबन्ध-कौमुदी — डा० बाबूराम त्रिपाठी । ४.००
- रघुवंशम् [प्रथमः सर्गः] — डा० जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल । ४.००
- रघुवश [द्वितीय सर्ग] — डा० रामकृष्ण आचार्य । २.५०
- रघुवंश [१३ वाँ सर्ग] — डा० रामकृष्ण आचार्य । २.००
- व्याकरण कौमुदी [भाग १] — डा० बाबूराम त्रिपाठी । ३.००
- लघु सिद्धान्त कौमुदी — डा० रामकृष्ण आचार्य । २.००
- अभिज्ञान शाकुन्तलम् : चतुर्थ अंक — डा० रामकृष्ण आचार्य । २.००
- काव्य दीपिका [अष्टम शिखा] — डा० रामकृष्ण आचार्य । २.००
- अपरीक्षितकारकम् (पंचतन्त्र से) — डा० पारसनाथ द्विवेदी । २.५०
- शिशुपालवधम् महाकाव्यम् [सर्ग १, २] — डा० पारसनाथ द्विवेदी । ६.००
- शिशुपाल बधम् [सर्ग १] — डा० पारसनाथ द्विवेदी । ३.५०
- कुमार सम्भवम् [पंचम सर्ग] — डा० पारसनाथ द्विवेदी । ५.००
- किरातार्जुनीयम् [सर्ग १] — वेणीमाधव शास्त्री मुसलगाँवकर । ५.००
- किरातार्जुनीयम् [सर्ग २] — वेणीमाधव शास्त्री मुसलगाँवकर । ६.००
- भारतीय दर्शन (प्रश्नोत्तर) — डा० राजकिशोरसिंह । ८.००
- महाकाव्यामृतम् — डा० राजकिशोरसिंह । २.००
- भारतीय संस्कृति [प्रश्नोत्तर में] — डा० जयकिशन प्रसाद । ५.००

विनोद पुस्तक मन्दिर

डा० रांगेय राघव मार्ग, आगरा-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के छात्रों एवं पुस्तकालयों के लिए

हिन्दी साहित्य की उपयोगी पुस्तकें

शोध-प्रबन्ध

चैतन्य सम्प्रदाय : सिद्धान्त और साहित्य	डा० नरेशचन्द्र बंसल	७५.००
माखनलाल चतुर्वेदी : व्यक्तित्व और कृतित्व	डा० कृष्णदेव शर्मा	५०.००
हिन्दी चित्रपट का गीति-साहित्य	डा० ओंकार प्रसाद माहेश्वरी	३२.००
चैतन्य सम्प्रदाय : सिद्धान्त और साहित्य	डा० नरेशचन्द्र बंसल	४५.००
भारतीय उपन्यासों में वर्णन-कला का तुलनात्मक मूल्यांकन (डी० लिट्०)	डा० इन्दिरा जोशी	५०.००
हिन्दी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ [डी. लिट.]	डा० शशिभूषण सिहल	४०.००
प्रसाद-दर्शन [डी. लिट.]	डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना	२५.००
वृन्द-ग्रन्थावली	डा० जनार्दनराव चेलेर	४०.००
वृन्द और उनका साहित्य	,,	४०.००
हिन्दी और तेलुगु वैष्णव-भक्ति साहित्य : तुलनात्मक अध्ययन	डा० के० रामनाथन्	४०.००
रीतिकाल और आधुनिक हिन्दी कविता	डा० रमेशकुमार शर्मा	३०.००
कृष्णभक्ति साहित्य में रीतिकाव्य परम्परा	डा० राजकुमारी मित्तल	३०.००
व्रज और बुन्देली लोकगीतों में कृष्णकथा	डा० शालिग्राम गुप्त	४०.००
हिन्दी और कन्नड में भक्ति आन्दोलन का तुलनात्मक अध्ययन	डा० हिरण्मय	४०.००
नाथपंथ और निर्गुण सन्तकाव्य	डा० कोमलसिंह सोलंकी	४०.००
सन्त वैष्णव काव्य पर तांत्रिक प्रभाव	डा० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय	४०.००
आलवार भक्तों का तमिल प्रबन्धम् और हिन्दी कृष्ण-काव्य	डा० मलिक मोहम्मद	५०.००
कामायनी में काव्य, संस्कृति और दर्शन	डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना	३०.००
हिन्दी में प्रत्यय विचार	डा० मुरारीलाल उप्रैति:	४०.००
हिन्दी समास रचना का अध्ययन	डा० रमेशचन्द्र जैन	२०.००

साहित्यिक निबन्ध

अभिनव साहित्यिक निबन्ध	डा० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी	१८.००
नवीन साहित्यिक निबन्ध	डा० गोविन्द त्रिगुणायत	१५.००
साहित्यिक निबन्ध	राजनाथ शर्मा	२५.००

हिन्दी साहित्य और भाषा का इतिहास

हिन्दी वाङ्मय : बीसवीं शती	सं० डा० नगेन्द्र	१००.००
हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास	राजनाथ शर्मा	२५.००
हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ	डा० जयकिशनप्रसाद	२५.००
हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास	डा० गुणानन्द जुयाल	७.५०
हिन्दी भाषा का विकासात्मक इतिहास	डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना	१५.००

विनोद पुस्तक मन्दिर

डा० रांगेय राघव मार्ग, आगरा–२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोविज्ञान के श्रेष्ठ प्रकाशन

सामान्य मनोविज्ञान	डा० एस० एस० माथुर	18.00
आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान	डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव	15.00
सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा	भाई योगेन्द्रजीत	10.00
समाज मनोविज्ञान (एम० ए०)	डा० एस० एस० माथुर	18.00
समाज मनोविज्ञान : प्रारम्भिक अध्ययन	,,	14.00
शिक्षा-मनोविज्ञान	,,	22.50
शिक्षा-मनोविज्ञान : संक्षिप्त संस्करण	,,	16.00
Educational Psychology	Dr. S. S. Mathur	30.00
	Library edn.	35.00
शिक्षा-मनोविज्ञान	पी० डी० पाठक	12.30
शिक्षा-मनोविज्ञान	डा० रामपालसिंह, राधावल्लभ उपाध्याय	16.00
मनोविज्ञान की पद्धतियाँ एवं सिद्धान्त	डा० जे० डी० शर्मा	22.50
असामान्य मनोविज्ञान (बी० ए०)	डा० लाभसिंह, डा० तिवारी	18.00
असामान्य मनोविज्ञान के मूल आधार (एम० ए०)	,,	20.00
मनोविज्ञान के सम्प्रदाय	डा० रामपालसिंह वर्मा	7.00
शैक्षिक मूल्यांकन	,,	8.00
मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सरल मूल्यांकन	,,	6.00
शिक्षा में सरल सांख्यिकी	,,	8.00
औद्योगिक मनोविज्ञान	डा० आर० के० ओझा	17.00
सांख्यिकी के मूल तत्त्व	डा० एच० के० कपिल	27.70
मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी	प्रीती वर्मा, श्रीवास्तव	(In Press)
शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग	सुरेश भटनागर	7.00
मनो० और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन	अग्रवाल, बिपिन अस्थाना	18.00
मनोविज्ञान शोध विधियाँ	प्रो० हकीम, बिपिन अस्थाना	15.00
शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्त्व	एस० पी० सुखिया, मेहरोत्रा	20.00
शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार	डा० तिवारी	18.00
प्रयोगात्मक मनोविज्ञान	प्रो० हकीम, विपिन अस्थाना	10.00
आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान	डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव	22.00
विकासात्मक मनोविज्ञान	भाई योगेन्द्रजीत	12.00
बाल मनोविज्ञान	,,	16.00
बाल विकास तथा पारिवारिक सम्बन्ध	डा० सरयू प्रसाद चौबे	10.00
बाल मनोविज्ञान : बाल विकास	डा० प्रीती वर्मा डा० डी० एन० श्रीवास्तव	20.00
प्रौढ़ शिक्षा विशेषांक (1978)	'साहित्य-परिचय'	16.00
बाल-विशेषांक (1980)	'साहित्य-परिचय'	(प्रेस में)

विनोद पुस्तक मन्दिर
डा० रांगेय राघव मार्ग, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बी० एड० परीक्षा के लिए उपयोगी पाठ्य-पुस्तकें

शिक्षा-सिद्धान्त तथा शिक्षण कला ☐

शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त	पाठक एवं त्यागी	२०.००
शिक्षा के सिद्धान्त	,,	१२.५०
शिक्षा के मूल सिद्धान्त	डा० रामशकल पाण्डेय	१८.००
शिक्षा-सिद्धान्त	डा० एस० एस० माथुर	१४.००
Principles of Education	Dr. R. S. Pandey	16.00
शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार	डा० सरयू प्रसाद चौबे	२४.००
A Sociological Approach to Indian Education	Dr. S. S. Mathur	25.00
शिक्षण-कला, शिक्षण तकनीक एवं नवीन पद्धतियाँ	,,	१८.००
सफल शिक्षण कला	पाठक एवं त्यागी	१५.००

शिक्षा मनोविज्ञान ☐

शिक्षा-मनोविज्ञान	पी० डी० पाठक	१२.३०
शिक्षा-मनोविज्ञान	डा० एस० एस० माथुर	२२.५०
शिक्षा-मनोविज्ञान	वर्मा एवं उपाध्याय	१६.००
मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी	डा० प्रीती वर्मा, श्रीवास्तव	(प्रेस में)

भारतीय शिक्षा का इतिहास तथा समस्याएँ ☐

भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ	पी० डी० पाठक	२१.००
भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ (कानपुर एवं रुहेलखण्ड विश्व० के पाठ्यक्रमानुसार)	पी० डी० पाठक	३०.००
आधुनिक भारतीय शिक्षा (इतिहास और समस्याएँ)	,,	१६.००
भारतीय शिक्षा का इतिहास	जौहरी एवं पाठक	१८.००
भारत में शिक्षा दर्शन और शैक्षिक समस्याएँ	पाठक एवं त्यागी	१७.००
भारतीय शिक्षा	डा० मुकर्जी, डा० ओड़	१२.००
भारतीय शिक्षा की सामयिक समस्याएँ	चौधरी एवं उपाध्याय	१०.००
विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री	डा० रामशकल पाण्डेय	६.००

विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा ☐

विद्यालय प्रशासन एवं संगठन	श्रीमती एस० पी० सुखिया	१५.००
शैक्षिक एवं विद्यालय प्रशासन	भाई योगेन्द्रजीत	१५.००
विद्यालय व्यवस्था	केशव प्रसाद	७.५०
विद्यालय-संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा	डा० रामपालसिह वर्मा	१०.००
स्वास्थ्य-शिक्षा	डा० जी० पी० शैरी	१६.००

संदर्भ ग्रन्थ ☐

तुलनात्मक-शिक्षा	डा० सरयू प्रसाद चौबे	२४.००
शिक्षा व्यवस्थाएँ	,,	१२.००
'शिक्षा-समस्या' विशेषांक (पुस्तकालय संस्करण)	(साहित्य-परिचय)	२०.००
'शिक्षा और भारतीय संस्कृति' विशेषांक	,,	२०.००
'पाठ्यक्रम' विशेषांक	,,	२०.००
'शिक्षा और राजनीति' विशेषांक	,,	२०.००
'शैक्षिक प्रगति' विशेषांक	,,	२०.००
'१०+२+३ शिक्षा-प्रणाली' विशेषांक	,,	१६.००
'प्रौढ़ शिक्षा' विशेषांक	,,	१६.००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय लेखक शिविर—इसी मेले के अन्तर्गत २६ मार्च से ३१ मार्च तक एक राष्ट्रीय लेखक शिविर का आयोजन किया गया, जिसका उद्‌घाटन वित्तमन्त्री श्री यशवंतराव चव्हाण ने किया और इसमें भारतीय भाषाओं के ९३ प्रमुख लेखकों ने भाग लिया। मेले के साथ ही देश भर में एक पुस्तक सप्ताह १८ से २४ मार्च तक मनाया गया। विश्वविद्यालय पुस्तकालयों, अन्य पुस्तकालयों एवं सांस्कृतिक संगठनों ने यह सप्ताह पुस्तकोन्मुखता के विकास के लिये मनाया। फेडरेशन की ओर से इस सप्ताह में पुस्तकों पर १० प्रतिशत डिसकाउन्ट स्वीकृत किया गया। आकाशवाणी ने इस अवसर पर विशेष प्रसारण किये और डाकतार विभाग ने पुस्तक सप्ताह के नारे की मोहर पत्रों पर लगायी। ने० बु० ट्रस्ट द्वारा हिन्दी एवं अंग्रेजी में आकर्षक पोस्टर जारी करके विश्वविद्यालयों एवं अन्य शैक्षिक संस्थानों में वितरित किये गये।

प्रकाशक सम्मेलन, पुस्तकालय सम्मेलन—२३ मार्च को फेडरेशन ऑफ पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स इन इण्डिया की ओर से एक प्रकाशक सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र में प्रकाशन संगठनों पुस्तकालयाध्यक्षों और पुस्तक प्रेमियों ने भाग लिया। फेडरेशन की ओर से दो प्रशिक्षण कोर्स "प्रकाशन प्रबंध" और "पुस्तक संवर्धन एवं वितरण" विषयों पर आयोजित किये गये।

२४ मार्च को राष्ट्रपति वी० वी० गिरि ने विश्व पुस्तक मेले में ही अखिल भारतीय पुस्तकालय सम्मेलन का भी उद्‌घाटन किया। सम्मेलन के अवसर पर "पुस्तकालय और पुस्तकों का बाजार" विषय पर एक सेमीनार भी सम्पन्न हुआ।

राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी द्वारा ३१ मार्च को "विज्ञान की पुस्तकों का प्रकाशन" विषय पर एक विचार-विमर्श का आयोजन किया, जिसमें पचास प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

हि० प्र० संघ का सेमीनार—१ अप्रेल को अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ द्वारा "विदेशों में हिन्दी पुस्तकों को लोकप्रिय बनाना" विषय पर एक सेमीनार का आयोजन किया गया। संघ द्वारा एक संगोष्ठी "भारत में कागज का अभाव" पर भी आयोजित की गयी। एसोसियेशन ऑफ मास्टर प्रिन्टर्स की ओर से श्री गुह रे की अध्यक्षता में मुद्रकों का भी एक सम्मेलन बुलाया गया।

२१ मार्च को एक संगोष्ठी इससे पूर्व आयोजित की जा चुकी थी, जिसका विषय था "सीमाओं के पार संचार"।

प्रथम विश्व पुस्तक मेले को, जिसमें ३० बाहरी देशों ने भाग लिया था, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, आकाशवाणी एवं अन्य दृश्य-श्रव्य प्रचार माध्यमों से भली भाँति प्रचारित किया गया। कई दैनिकों एवं अन्य पत्रिकाओं ने मेले के समय अपने विशिष्ट संस्करण प्रकाशित किये।

द्वितीय विश्व पुस्तक मेला, १९७६

१६ जनवरी, १९७६ को केन्द्रीय शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्री प्रो० नूरुल हसन ने अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शिनी मैदान में हाल ऑफ नेशन्स और निकटस्थ विशाल मण्डपों में आयोजित द्वितीय विश्व पुस्तक मेले का उद्‌घाटन किया। इस मेले में २६६ प्रकाशकों और पुस्तक वितरकों ने भाग लिया और विविध प्रकार की पुस्तकों का प्रदर्शन किया। आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, उड़ीसा, असम, पंजाब, महाराष्ट्र, केरल, तमिलनाडु, प० बंगाल और गोवा की राज्य सरकारों की ओर से भी मेले में स्टाल लगाये गये। अनेक सरकारी संस्थानों, साहित्यिक संगठनों और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने भी मेले में भाग लिया। मेले में बाहर के १९ देशों के ३७ प्रमुख प्रकाशक भी सम्मिलित हुए, जिनमें पाकिस्तान के प्रकाशकों का भी एक प्रतिनिधि मण्डल शामिल हुआ। विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूनेस्को और अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने भी मेले में भाग लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Tele { Office : 266808
266203
Resi. : 615671
622836 }

LAXMI TRADERS

All kind of writing & Printing paper kraft
for Corrugation for Envelops &
all kind of Board

Specialy Manufacture by :

- **M/s. Orient Paper Mill Amlai, Brijraj Nagar**

&

- **Sirpur Paper Mill, Sirpur Kagaz Nagar**

Please Contact :

M/s. LAXMI TRADERS
3796, CHAWRI BAZAR
DELHI-110006

Head Office :

16, INDIA EXCHANGE PLACE
CALCUTTA-700001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी पुस्तकें—देश और विदेश के प्रकाशकों के स्टालों के अतिरिक्त मेले के साथ ही राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी भी आयोजित की गयी। प्रदर्शनी में भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी की वे ५००० पुस्तकें प्रदर्शित की गयीं, जिनका प्रकाशन जनवरी १९७४ से सितम्बर १९७५ के काल में हुआ था।

मेले में सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत सोवियत संघ से तीन, जर्मन जनवादी गणतन्त्र से दो और बांगला देश से एक प्रतिनिधि आमंत्रित किये गये, जिन्होंने मेले में होने वाले विभिन्न समारोहों में भाग लिया।

अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक पुरस्कार— सोवियत संघ की पुस्तक समिति के अध्यक्ष श्री वी० ए० स्लास्ते नेन्को को यूनेस्को की अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक समिति द्वारा घोषित अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक पुरस्कार इसी मेले के उद्घाटन अवसर पर केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री प्रो० नूरुल हसन द्वारा प्रदान किया गया, जिसमें यूनेस्को के फ्री फ्लो ऑफ इन्फार्मेशन एण्ड बुक डेवेलपमेन्ट डिवीजन के निदेशक श्री जूलियन वेरस्टाक यूनेस्को प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित थे।

विदेशी दूतावासों के सहयोग से नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा मेले में एक अन्तर्राष्ट्रीय बाल पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन भी इस मेले का उल्लेखनीय अंग है। इसमें भारतीय बाल पुस्तकों के अतिरिक्त २३ विदेशी देशों की बाल पुस्तकें भी आकर्षक ढंग से प्रदर्शित की गयीं।

८वें दशक में प्रकाशन— १७ से २० जनवरी तक "आठवें दशक में प्रकाशन जगत्" पर एक चार दिवसीय विचार गोष्ठी ने० बु० ट्रस्ट द्वारा आयोजित की गयी, जिसमें ३९ भारतीय और १७ विदेशी विशेषज्ञों ने भाग लिया। यह विचार गोष्ठी यह जानकारी उपलब्ध करने को उत्सुक थी कि विश्व में प्रकाशन से आगामी १५ सालों में क्या अपेक्षायें रखी जा सकती हैं। हिन्द पाकेट बुक्स के श्री दीनानाथ मलहोत्रा और नेशनल बुक ट्रस्ट के निदेशक श्री सैम्युअल इजरायल ने गोष्ठी का संचालन किया और शिक्षा मन्त्रालय के विशेषाधिकारी (पुस्तक) श्री अबुल हसन विचार गोष्ठी के 'रियरत्योर' रहे।

२२ जनवरी को फेडरेशन ऑफ इण्डियन पब्लिशर्स ने "स्कूली पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशन में निजी क्षेत्र के प्रकाशकों का योगदान" पर एक विचार-गोष्ठी आयोजित की। २१ से २४ जनवरी तक फेडरेशन की ओर से "प्रकाशन-प्रबन्ध प्रशिक्षण पाठ्यक्रम" आयोजित किया गया, जिसमें नेपाल, बांगला देश, पाकिस्तान और अफगानिस्तान के प्रतिनिधि भी सम्मिलित हुए। २१ और २२ जनवरी को फेडरेशन ने "पुस्तक निर्यात प्रोत्साहन" पर एक विचार-गोष्ठी और "पुस्तक विक्रेता-पुस्तकालयाध्यक्ष संबंध" पर एक परिचर्चा आयोजित की।

हि० प्र० संघ का अधिवेशन—द्वितीय विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ ने २४-२५ जनवरी को अपना वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न किया और दूसरे दिन "हिन्दी पुस्तक प्रचार में सहकारिता" विषय पर एक विचार-गोष्ठी का आयोजन किया। २३ से २५ जनवरी तक ऑथर्स गिल्ड ऑफ इण्डिया ने भारतीय लेखकों का दूसरा अधिवेशन आयोजित किया, जिसका उद्घाटन २४ जनवरी को प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाँधी ने किया।

२२वीं लाइब्रेरी कांफ्रेंस—१७ से २० जनवरी तक इण्डियन लाइब्रेरी एसोसियेशन ने अपनी बाईसवीं अखिल भारतीय कांफ्रेंस आयोजित की, जिसमें ५०० पुस्तकालयाध्यक्षों ने भाग लिया। १८ जनवरी को 'इण्डियन पब्लिशर एण्ड बुकसेलर' नामक पत्रिका ने जी० आर० भटकल स्मृति व्याख्यान का आयोजन करते हुए पत्रिका की रजत जयंती मेले में ही मनायी। श्री सैमुअल इजराइल के इस व्याख्यान का विषय था "भारतीय पुस्तक उद्योग के २५ वर्ष"।

बाल संध्या और भारतीय शास्त्रीय नृत्यों के सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अतिरिक्त हाल ऑफ नेशन्स के प्रांगण में लगा इस वर्ष का पुस्तक बाजार बड़ी संख्या में पुस्तक प्रेमियों के आकर्षण का केन्द्र रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीन प्रकाशन

● एक अकेला (उपन्यास)	: रामकुमार भ्रमर	16·00
● मृत्युञ्जय भारत (विचारप्रद)	: उ० के० आप्टे	35·00
● केशव: संघ निर्माता (विचारप्रद)	: चं० प० भिशीकर	25·00
● राष्ट्रीय खेल कबड्डी (खेल)	: अजय भल्ला	16·00
● बास्केट बाल (खेल)	: जसदेवसिंह	15·00
● जागरण गीत (भाग १)	: चन्द्रकान्त भारद्वाज	16·00
● हिन्दुस्तान समाचार वार्षिकी 1979 (सन्दर्भ)	: सं० बालेश्वर अग्रवाल	25·00
● वे उन्नीस महीने (सामयिक)	: गिरिराज शर्मा	30·00
● शक्तिपुत्र छत्रसाल (जीवनी)	: सोमदेव त्रिपाठी	25·00
● हिन्दी के दस प्रबन्ध महाकाव्य	: लक्ष्मीनारायण सुधांशु	37·00
● भारतीय खगोल विज्ञान (विज्ञान)	: पं० जगन्नाथ	54·00
● विचार नवनीत (विचारप्रद)	: मा० स० गोलवकार	30·00
● ज्ञान पहेली भाग—१ से ४ (बालोपयोगी)	: जगदीश तोमर (सैट)	14·00
● NARAYAN GURU : The Prophet of Renaissance (Biography)	: P Parameswaran	40·00
● IS INDIA CIVILISED ? (Indology)	: John Woodroffe	40·00
● Social Interaction in Educational Institutions	: Padmanath Gautam	55·00

अन्य उत्कृष्ट प्रकाशन

हेमचन्द्र विक्रमादित्य (उपन्यास)	—सैयाह सुनामी	14·00
भगवान एकलिंग (उपन्यास)	—सैयाह सुनामी	14·00
आखिर जीत हमारी (उपन्यास)	—सैयाह सुनामी	14·00
काफिर (उपन्यास)	—सैयाह सुनामी	14·00
प्रेम शृंगार और बलिदान (उपन्यास)	—सैयाह सुनामी	12·50
जनरल जोरावरसिंह (उपन्यास)	—सैयाह सुनामी	12·50
तत्व विज्ञान (दर्शन)	—हरिशचन्द्र बर्थ्वाल	12·00
गांधी, लोहिया और दीनदयाल	—हरिशचन्द्र बर्थ्वाल	20·00
स्वराज्य संस्थापक शिवाजी	—पातुरकर आदीश	24·00
Chhatrapati Shivaji : Architect of Freedom	—Ed. N. H. Kulkarnee	75·00
Hindu Superiority	—Harbilas Sarda	67·00
Hindu America	—Chaman Lal	50·00
ताजमहल मन्दिर भवन है	—पु० ना० ओक	10·00
आगरे का लाल किला हिन्दू नगर	—हंसराज भाटिया	12·00
फतेहपुर सीकरी एक हिन्दू नगर	—हंसराज भाटिया	7·50
भारत में मुस्लिम सुलतान	—पु० ना० ओक	10·00
गदर की गूंज	—बनारसीसिंह	25·00
लन्दन में गोली	—बनारसीसिंह	10·00
हिन्दुत्व	—वीरसावरकर	8·00
भ्रम (विचारप्रद)	—छोटे भरानी	31·00
साधु बोध (विचारप्रद)		15·00
Six Glorious Epochs of India History	—V. D. Savarkar	50·00
India Mother of us all	—Chaman Lal	20·00

SURUCHI SAHITYA

KESHAV KUNJ, OPP. NAAZ CINEMA, JHANDEWALA
NEW DELHI-110055

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार कोटियाँ, चार पुरस्कार—मेले में उत्तम प्रदर्शन के लिए चार कोटियों पर ट्रस्ट द्वारा पुरस्कार दिये गये—(१) अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि, (२) दोहरी और तिहरी स्टाल, (३) सामान्य स्टाल और (४) सामान्य और दोहरे स्टैण्ड। इन चारों कोटियों के पुरस्कार विजेता थे क्रमशः ब्रिटिश कौंसल ऑफ दी ब्रिटिश हाई कमीशन, पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स गिल्ड, कलकत्ता, एन० एम० त्रिपाठी, बम्बई और ओरियन्ट पेपर बैक्स, दिल्ली। फेडरेशन ऑफ इण्डियन पब्लिशर्स के पुरस्कार इसी समारोह में प्रो० एस० गोपाल द्वारा वितरित किये गये।

प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी इस मेले में दो बार आयीं और दो-दो, ढाई-ढाई घंटे तक रुक कर स्टालों का निरीक्षण करती रहीं। पहली बार वे २० जनवरी को और दूसरी बार २५ जनवरी को मेले में आयीं। राष्ट्रपति श्री फखरुद्दीन अली अहमद भी मेले के अन्तिम दिन इसे देखने पधारे। द्वितीय विश्व पुस्तक मेले की आशातीत सफलता ही इसे नियमित द्विवार्षिक कार्यक्रम बनाने में सहायक हुई. और यह पुस्तक मेला पूर्व में फ्रैन्कफर्ट बुक फेयर का सम्पूरक बन गया। मेले के लिये हिन्दुस्तान टाइम्स, टाइम्स आफ इण्डिया, हिन्दू, सण्डे स्टैण्डर्ड, स्टेट्समैन, नेशनल हैराल्ड, पैट्रियट और साप्ताहिक दिनमान ने विशेषांक निकाले। रेडियो और दूरदर्शन ने समाचारों और न्यूज़रीलों में इसका उल्लेख किया और अनेक विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

तृतीय विश्व पुस्तक मेला, १९७८

आठ राष्ट्रीय पुस्तक मेलों और दो विश्व पुस्तक मेलों के आयोजन के बाद ११ फरवरी, १९७८ के दिन भारत के उपराष्ट्रपति श्री बी. डी. जत्ती ने तृतीय विश्व पुस्तक मेले का उद्घाटन किया। यह मेला २० फरवरी तक चला और इसका आयोजन फेडरेशन आफ इण्डियन पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स के सहयोग से नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा किया। नयी दिल्ली स्थित हाल आफ नेशन्स और हाल आफ इण्डस्ट्रीज कम्पलेक्स में लगे इस मेले में २८ देशों के लगभग २०० प्रमुख प्रकाशकों और भारत के ३५४ से भी अधिक प्रकाशकों, वितरकों और पुस्तक विक्रेताओं ने भाग लिया। इस मेले को २,५०,००० से अधिक लोगों ने देखा और उन्होंने लाखों रुपये की पुस्तकें खरीदीं। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता शिक्षा मंत्री डा० पी० सी० चन्दर ने की और इसी अवसर पर विश्व पुस्तक मेला की स्मृति में एक विशेष डाक टिकट जारी किया गया, जो राज्य संचार मंत्री द्वारा उपराष्ट्रपति जी को भेंट किया गया।

राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी—देश विदेशों के सजे हुए बुक स्टालों के साथ ही मेले के अवसर पर राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित की गई, जिसमें भारत में जनवरी १९७६ से नवम्बर १९७७ तक के मध्य प्रकाशित पुस्तकों में से चुनी हुई ५००० पुस्तकें प्रदर्शित की गयीं। बालोपयोगी एवं अजिल्द पुस्तकों के प्रदर्शन की व्यवस्था एक पृथक अनुभाग में की गयी थी। प्रदर्शनी में प्रकाशन अथवा आकल्पन के लिये राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त पुस्तकों के प्रदर्शन की पृथक व्यवस्था थी।

हिन्दी मंडप पहली बार—यों तो पुस्तक मेले में सभी भारतीय भाषाओं के श्रेष्ठ प्रकाशनों का प्रदर्शन किया गया, किन्तु हिन्दी प्रकाशकों का प्रतिनिधित्व अधिक प्रभावपूर्ण रहा और मेले में एक पृथक हिन्दी मण्डप पहली बार लगा, जिसमें हिन्दी भाषी क्षेत्रों के लगभग ८५ प्रकाशकों को प्रतिनिधित्व मिला। मेले के प्रथम हिन्दी मण्डप में पहली बार राजस्थान का भी कक्ष लगा, जो प्रथम पुरस्कार ले कर आया।

भारत के ३५४ प्रकाशन प्रतिनिधियों के अतिरिक्त मेले में बांगला देश, बलगारिया, क्यूबा, जेकोस्लोवाकिया, फेडरल रिपब्लिक आफ जर्मनी, जर्मन डेमोक्रेटिक रिपब्लिक, घान्ना, हालैण्ड, हंगरी, इंडोनेशिया, ईराक, जापान, केन्या, कुवैत, मलयेशिया, नेपाल, न्यूजीलैण्ड, सेनेगल, सिंगापुर, श्रीलंका, स्विट्जरलैण्ड, तंजानिया, थाईलैण्ड, ब्रिटेन, अमरीका, सोवियत रूस, यूगोस्लाविया और जाम्बिया के २००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य और साहित्यकार के लिए समर्पित संस्थान

राजस्थान साहित्य अकादमी के प्रमुख प्रकाशन

मधुरजनी—डॉ. रामगोपाल शर्मा 4·00
अभिसार निशा—श्री गोपाल विजयवर्गीय 2·25
हरनाथ ग्रन्थावली—राजकवि हरनाथ 24·00
सांझ उतरी—श्री ज्ञानभारिल्ल 5·50
पूर्ण कलश—डा० रांगेय राघव 2·75
प्रताप शतक—श्री अज्ञय कीर्ति व्यास 3·00
मेरे गीत तुम्हारे चरण—श्री कमलाकर 7·25
अश्विन के धूप विम्ब—श्री विश्वेश्वर शर्मा 10·00
शताब्दी निरुत्तर है—श्री भगवतीलाल व्यास 8·50
त्रिलोक गोयल की कविताएँ
—श्री त्रिलोक गोयल 15·00
ये बदरंग क्षण—श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चंद्र' 6·00
झुकी हुई दिशाएँ—श्री शचीन्द उपाध्याय 5·75
सूरज लीलती घाटियाँ
—श्री भगवतीलाल व्यास 6·00
मम्मी ऐसी क्यों थी?—डा. राजानन्द 10·00
आतंक—श्री ईश्वर चन्दर 11·00
उग्रह—श्री राम जैसवाल 10·00
लाशों का जंगल—श्री कमर मेवाड़ी 9·00
फफोले—श्री शुत्रू पटवा 9·00
मेरे पिता की विजय—श्री अशोक आत्रेय 10·00
राजस्थान के कहानीकार (हिन्दी भाग २)
—स० डॉ० अलमशाह खान 12·00
ऋग्वेद का सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक सार
—श्री विश्वेश्वरनाथ रेऊ 6·00
राजस्थान में हिन्दी कथा और नाटक साहित्य के सौ वर्ष—डॉ. नवल किशोर
एवं डॉ. रामचरण महेन्द्र 7·50
स्वातन्त्र्योत्तर राजस्थान का हिन्दी साहित्य
—सं. डॉ. राजेन्द्र शर्मा 11·50
स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कथा-साहित्य
—डा. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय 5·00
साहित्य का इतिहास : समस्या-समाधान
—डॉ. भोला शंकर व्यास 7·00

राजस्थान के नाटककार
—सं. डॉ. रामचरण महेन्द्र 5·75
जीतेंगे हिम्मत वाले—श्री हमीदुल्ला खां 4·50
साहित्य के मान और मूल्य—संकलन 4·00
डॉ. रांगेय राघव : उपन्यास और मेरी मान्यताएँ
—डॉ. देवराज उपाध्याय 7·25
आधुनिक काव्य बोध और परम्परा
—सं. डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' 6·00
बदलते संदर्भ और साहित्यकार
—श्री हरिभाऊ उपाध्याय 13·50
राजस्थान के मौजूदा उर्दू शायर
—सं. श्री प्रेमशंकर श्रीवास्तव 14·00
सबा ग्रन्थावली
—सं. श्री रामकिशोर व्यास 27·25
कुल्लियाते माइल
—सं. अहतरामुद्दीन अहमद 'शामिल' 73·50
राजस्थान के कवि—सं. श्री पुरुषोत्तम शर्मा
एवं श्री लक्ष्मीनारायण पुरोहित 4·50
गांधी गाथा—श्री मधुकर शास्त्री 4·00
संस्कृत कथा कुंजम्—पं. गणेशराम शर्मा 9·00
एकांकी संस्कृत—नवरत्न सुषमा
—डा. नारायण शास्त्री कांकर 8·50
विद्याधर ग्रन्थावली
—मनीषी पं. विद्याधर शास्त्री 28·00
राजस्थान के कवि—सं. रावत सारस्वत 15·00
फूल के सूला फूल—श्री रघुराजसिंह हाडा 6·00
हँस करै निगराणी—श्री सत्येन जोशी 7·50
राजस्थान के कहानीकार
—श्री दीन दयाल ओझा 3·75
परण्योड़ी कंवारी
—श्री श्रीलाल नथमल जोशी 7·25
कन्यादान—डॉ. मनोहर शर्मा 4·00
मऊ चाली मान्वे—श्री नृसिंहराज पुरोहित 6·25

●

सम्पर्क—राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर-३१३००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से भी अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। पाकिस्तान के १४ प्रकाशकों पुस्तक विक्रेताओं और आयातकों ने निजी तौर पर मेले में भाग लिया। संयुक्त राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों यूनेस्को, आई. एल. ओ. और डब्लू. आई. पी. सी. ओ. ने भी मेले में प्रतिनिधित्व किया।

सार्वजनिक क्षेत्र के प्रकाशन—जिन राज्य सरकारों ने मेले में प्रतिनिधित्व किया, वे हैं : पं० बंगाल, आंध्र प्रदेश, केरल, तमिलनाडु, राजस्थान, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, पंजाब, असम, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश और सिक्किम। सार्वजनिक क्षेत्र के अन्य संगठनों में राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, एन. सी. ई. आर. टी., भारतीय भाषाओं का केन्द्रीय संस्थान, केन्द्रीय सचिवालय, हिन्दी परिषद, प्रकाशन विभाग, निर्माण आवास मंत्रालय, तरक्की-ए-उर्दू बोर्ड, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, प्रकाशन एवं सूचना निदेशालय, सी. एस. आई. आर., भूगर्भीय सर्वेक्षण, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, आर्कियालोजिकल सर्वेक्षण इण्डिया, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद, इण्डियन ब्यूरोआफ माइन्स, सेन्ट्रल इन्स्टीट्यूट आफ इंगलिश एण्ड फोरेन लैंग्वेजेज़, सर्वे आफ इण्डिया, शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय और नेशनल बुक ट्रस्ट ने मेले में भाग लिया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और एसोसियेशन आफ इण्डियन यूनिवर्सिटीज ने सम्पूर्ण देश के विश्वविद्यालयों की ओर से प्रतिनिधित्व करके उनके प्रकाशनों का प्रदर्शन किया।

अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी—१२ से १५ फरवरी तक चार दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका विषय था, "विकासशील देशों में शैक्षणिक प्रकाशन"। संगोष्ठी का उद्घाटन श्रीमती रेणुका देवी बरकत की, शिक्षा राज्य मंत्री ने किया और समापन भाषण डा० प्रतापचन्द्र चन्दर ने दिया। संगोष्ठी में भारत और विदेशों के अनेक विशेषज्ञों ने भाग लिया। संगोष्ठी के तकनीकी निदेशक श्री दीनानाथ मलहोत्रा और मुख्य रिपोर्त्योर श्री अबुल हसन थे। अध्यक्षता नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री ए. एल. डायस ने की और प्रशासनिक निदेशक डा० लोकनाथ भट्टाचार्य रहे।

संगोष्ठी में ३६ निबन्ध पढ़े गये और लगभग १०० प्रतिनिधियों ने बहस में भाग लिया। संगोष्ठी के प्रारम्भ में श्री अबुल हसन ने विश्व के विभिन्न देशों में पुस्तक उद्योग की स्थिति पर अपना निबन्ध पढ़ा।

हिन्दी प्रकाशन के नये आयाम—अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ की ओर से १२ फरवरी तक "हिन्दी प्रकाशन के नये आयाम" पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री रामनरेश यादव ने किया और श्री कृष्ण चन्द्र बेरी संगोष्ठी के निदेशक और श्री रघुवीर शरण बंसल तकनीकी निदेशक रहे।

मेले के दौरान फेडरेशन आफ इण्डियन पब्लिशर्स ने १३ से २० फरवरी तक एक रिफ्रेशर कोर्स का आयोजन किया, जिसका विषय था "पुस्तक उत्पादन में सम्पादकों का महत्व और उनका कार्य"। इस पाठ्यक्रम का निदेशन दिल्ली ईस्टर्न लिमिटेड के श्री विनोद कुमार और आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस के श्री निरुपम चटर्जी ने किया। सर जान ब्राउन द्वारा पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया गया। १७ फरवरी को 'जिल्दसाजी' पर संगोष्ठी आयोजित की गयी, जिसके निदेशक श्री ओ. पी. घई थे। फेडरेशन ने देश में 'कागज का संकट' विषय पर एक सम्मेलन १८ फरवरी को आयोजित किया, जिसकी अध्यक्षता श्री मुल्कराज आनन्द ने की।

दो प्रशिक्षण कार्यक्रम—१३ फरवरी को मेले में फेडरेशन आफ इण्डियन पब्लिशर्स एण्ड बुक सेलर्स एसोसियेशन्स इन इण्डिया ने सीतल प्रियलानी स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया। श्री डब्लू ग्राह्य (बटरवर्थ्स, लंदन) ने १९४७ के बाद "अन्तर्राष्ट्रीय उद्योग पर भारत का प्रभाव" विषय पर अपना व्याख्यान दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुमारी वी. किचलू ने की। फेडरेशन द्वारा दो प्रशिक्षण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे अभिनव प्रकाशन

शोध एवं आलोचनात्मक ग्रन्थ

हिन्दी साहित्य का निबन्धात्मक इतिहास	उमेश शास्त्री	95·00
हिन्दी के प्रतिनिधि कवि	उमेश शास्त्री	40·00
कामायनी के पात्र	कु० सरोज मेहता	25·00
हिन्दी साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ	उमेश शास्त्री	25·00
हिन्दी साहित्य का उद्‌गम और विकास	उमेश शास्त्री	30·00
आधुनिक हिन्दी मुक्तक काव्य में नारी	सावित्री डागा	60·00
हिन्दी काव्य में वसन्त वर्णन	गोविन्द रजनीश	35 00
प्रसाद साहित्य में आदर्शवाद एवं नैतिक दर्शन	उमेश शास्त्री	55·00
साहित्य का मर्म और धर्म	सत्येन्द्र चतुर्वेदी	18·00
आधुनिक हिन्दी साहित्यकार	महेन्द्र रायजादा	15·00
सम सामयिक हिन्दी कविता विविध परिदृश्य	गोविन्द रजनीश	25·00
वाल्ट ह्विटमैन और उनका साहित्य	मनोहर प्रभाकर	15·00
कामायनी में अलंकार योजना	विनोद दीक्षित	15·00
महाकवि रसरासि	उमेश शास्त्री	25·00
आधुनिक सात प्रबन्ध काव्य	विनोद दीक्षित	15·00
हिन्दी व्युत्पत्ति कोश	जगदीश चन्द्र	15·00

संस्कृत साहित्य

संस्कृत के ऐतिहासिक नाटक	श्याम शर्मा	60·00
संस्कृत नाटक में अति प्राकृत तत्त्व	मूलचन्द्र पाठक	50·00
संस्कृत काव्यों में पशु पक्षी	रामदत्त शर्मा	40 00
वैदिक साहित्य एवं संस्कृति	निर्मला भार्गव	35·00
पौरस्त्य एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त	रामदत्त शर्मा	12·00
Indian Studies Abroad	Manohar Prabhakar	30·00
A Critical Study of Indian Poets	B. N. Sharma	20·00

उपन्यास साहित्य

रस कपूर (एक ऐतिहासिक कृति)	उमेश शास्त्री	25·00
रेत की नदी	उमेश शास्त्री	10·00
लाल आकाश पीले फूल	उमेश शास्त्री	35·00
खुले अधखुले पृष्ठ	उमेश शास्त्री	18·00
माधवी	उमेश शास्त्री	8·00
टूटते किनारे	उमेश शास्त्री	6·50
उन्माद	उमेश शास्त्री	6·50
ठकुराईन	उमेश शास्त्री	8·00

कथा साहित्य

भरत मुनि के बाद (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत)	मणि मधुकर	12·00
कानून और मन	यशवन्तसिंह नाहर	15·00

पुस्तकालय विज्ञान

पुस्तकालय संगठन : सिद्धान्त एवं व्यवहार	चन्द्रप्रकाश गुप्ता	20·00
पुस्तकालय प्रशासन : सिद्धान्त एवं व्यवहार	चन्द्रप्रकाश गुप्ता	30·00

विविध प्रकाशन

मेरी आत्म कथा	रवीन्द्रनाथ टैगोर	25·00
आधुनिक कुक्कुट पालन	गोपालसिंह राठौर	15·00
राजस्थान ज्ञान कोष	मनोहर प्रभाकर	22·00
राजपूताना के सिक्के (वैवकृत)	माँगीलाल व्यास	40·00

 देवनागर प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर-३०२००३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ्यक्रम भी १६ से १८ फरवरी तक "पुस्तक उत्पादन" और "पुस्तक केन्द्र प्रबन्ध" पर आयोजित किये गये जिनका उद्‌घाटन श्री ए. एल. डायस ने किया। फेडरेशन की ओर से पुस्तक उत्पादन की श्रेष्ठता के लिए पुरस्कार सूचना मंत्री श्री लालकृष्ण अडवानी द्वारा प्रदान किये गये। इसी प्रकार के एक और आयोजन में हिन्दी के १४ लेखकों को केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डा० चन्दर ने पुरस्कार प्रदान किये। यह समारोह आथर्स गिल्ड आफ इण्डिया के चतुर्थ सम्मेलन में भारतीय लेखन को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से किया गया।

आथर्स गिल्ड की वार्षिक सभा—आथर्स गिल्ड द्वारा भी मेले में १७ से १६ फरवरी तक अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। गिल्ड की वार्षिक सामान्य सभा की बैठक की गई और आथर्स गिल्ड आफ इण्डिया कोआपरेटिव सोसाइटी की वार्षिक सामान्य सभा भी सम्पन्न हुई। भारतीय लेखकों के चतुर्थ राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्‌घाटन केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डा० चन्दर ने १८ फरवरी को किया।

१३ से १५ फरवरी तक शाकुन्तलम् थियेटर में अखिल भारतीय पुस्तकालय सम्मेलन का आयोजन भारत सरकार के पुस्तकालयाध्यक्ष सम्मेलन के द्वारा अखिल भारतीय पुस्तकालय संघ के सहयोग से किया गया। सम्मेलन में "भारतीय पुस्तकालयों में पुस्तक अधिग्रहण की समस्या" विषय पर एक कार्य-पत्र भी प्रस्तुत किया गया।

पुस्तक बाजार—गत वर्षों की भाँति इस मेले में भी १२ से २० फरवरी तक पुस्तक बाजार लगाया गया। घटी हुई दरों पर पुस्तकों की खरीद के लिये लोग भारी संख्या में पुस्तक-बाजार में मंडराते रहे। अंग्रेजी एवं भारतीय भाषाओं की पुस्तकें इस बाजार में बड़ी संख्या में बिकीं।

पुरस्कार, प्रचार—मेले में उत्तम प्रदर्शन के लिए ट्रस्ट द्वारा निम्न पुरस्कार दिये गये :—

१. अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिनिधित्व —जर्मन डेमोक्रेटिक रिपब्लिक
२. डबल स्टाल —प्रकाशन मंडल, आसाम
३. सामान्य स्टाल —उड़ीसा कक्ष
४. सामान्य एवं बड़ा स्टैण्ड —अभिनव प्रकाशन, नई दिल्ली

ये पुरस्कार एक समारोह में नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री ए. एल. डायस द्वारा प्रदान किये गये।

मेले के लिए रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा स्लाइडों, बस पैनेलों आदि बहुमुखी प्रचार माध्यमों का उपयोग किया गया। अनेक दैनिक समाचार पत्रों ने मेले के लिए पूर्ति अंक भी निकाले। इनमें पुस्तक प्रेम, पुस्तक प्रकाशन, पुस्तक उन्नयन और वितरण, कापीराइट, भारत में पुस्तकालय सेवाएँ और अन्य विशेष पर विशेषज्ञों द्वारा लिखे गये लेख एवं सामग्री प्रकाशित की गयी। पूरक अंक निकालने वाले प्रमुख पत्र हैं। हिन्दुस्तान टाइम्स, टाइम्स आफ इण्डिया, स्टेट्समैन, नेशनल हैराल्ड, इण्डियन ऐक्सप्रेस, हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स, दिनमान और साप्ताहिक हिन्दुस्तान। लंदन से प्रकाशित होने वाले "द टाइम लिटरेरी सप्लीमेन्ट" ने एक विशेष पूरक अंक मेले के अवसर पर निकाला। इस पत्र द्वारा भारतीय प्रकाशन उद्योग पर निकलने वाला यह प्रथम पूरक अंक था। लगभग ४२ भारतीय प्रकाशकों ने इस विशेष संस्करण में विज्ञापन प्रसारित किये, जिनके लिए ट्रस्ट की ओर से २५ प्रतिशत राशि सहायता के रूप में दी गयी।

यह माना गया कि तृतीय विश्व पुस्तक मेला आशातीत रूप से सफल रहा। मेले के आयोजन में लगभग २५·६० लाख रुपया व्यय हुआ और विभिन्न स्रोतों से नेशनल बुक ट्रस्ट को लगभग १२ लाख रुपयों की आय हुई। मेले में अनेक केन्द्रीय मंत्रियों, राज्य मंत्रियों, मुख्य मंत्रियों एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति ने चार चाँद लगाये, और प्रधान मंत्री श्री मोरार जी देसाई भी यह मेला देखने पधारे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक संस्थान द्वारा प्रकाशित

सर्वथा पठनीय एवं संग्रहणीय ग्रन्थ

नये प्रकाशन

● भारतीय रंगमंच का विवेचनात्मक इतिहास	: डा. अज्ञात	150·00
● नई कहानी : दृष्टि और सृष्टि	: डा. भ. ह. राजूरकर, डा. भगवानदास वर्मा	16·00
● सातवें दशक की कविता का शब्द विधान	: डा. सुधा राजे	40·00
● लोक साहित्य और पावरीभाषा	: डा एन. चौधरी	50·00
● काव्य परिचय	: डा. राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव	20·00
● निराला का वस्तुतत्व (बी. ए., एम. ए. छात्रों के लिए उपयोगी)	: डा. सुधाकर कलवडे	25·00
● हिन्दी नाट्य साहित्य में हास्य व्यंग्य	: डा. सभापति मिश्र	40·00

साहित्य : आलोचना : अनुसंधान

● हिन्दी निबन्धों का शैलीगत अध्ययन	: डा. मु. व. शहा	35·00
● नयी कविता : रचना प्रक्रिया	: डा. ओमप्रकाश अवस्थी	25·00
● आधुनिक हिन्दी कविता में राष्ट्रीय भावना	: डा. सुधाकर कलवर्ड	25·00
● प्रसाद की दार्शनिक पृष्ठभूमि	: डा. जगदीश प्रसाद श्रीवातव	40·00
● राम कथा और तुलसी	: डा. भ. ह. राजूरकर	20·00
● रामचरित मानस : तुलनात्मक अनुशीलन	: डा. सज्जन राम वेणी	45·00
● निराला का काव्य	: डा. जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव	25·00
● हिन्दी उपन्यासों में नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण	: डा. विमल महसबुद्धे	40·00
● आधुनिक हिन्दी नाटकों में संघर्ष तत्व	: डा. ज्ञान रंजन गायकवाड़	50·00
● भारतेन्दु पूर्व हिन्दी गद्य	: डा. चन्द्रदेव कवडे	35·00
● कबीर का सामाजिक दर्शन	: डा. प्रह्लाद मौर्य	30·00
● हिन्दी एकांकियों में सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति	: डा. एम. के. गाडगिल	40·00
● स्वाभाविकता और आधुनिक हिन्दी काव्य	: डा. मधुरेशनंदन कुलश्रेष्ठ	50·00
● हिन्दी मराठी के ऐतिहासिक उपन्यास	: डा. चन्द्रकान्त गर्जे	40·00
● दिनकर की काव्य भाषा	: डा. यतीन्द्र तिवारी	50·00
● हिन्दी कथा साहित्य पर सोवियत क्रांति का प्रभाव	: डा. पुरुषोत्तम जोशी	50·00

काव्य

● छत्रपति शिवाजी	: डा. रामकुमार सिंह	20·00

उपन्यास

● विरागिनी	: प्रतापनारायण श्रीवास्तव	18·00
● बिना पख की सारिका	: डा. चन्द्र	6·00
● जननी जन्म-भूमि	: सूर्यप्रसाद वाजपेयी	20·00

कहानी-संग्रह

● तीसरी सांस	: कामतानाथ	13·00
● कथानार	: कामतानाथ	5·00
● श्रेष्ठ लघु कथाएं	: सं. शंकर पुणताम्बेकर	16·00
● फेन्स के इधर और उधर	: ज्ञान रंजन	12·00

हास्य-व्यंग्य

● मुझे आपसे सहानुभूति है	: डा. पुरुषोत्तम	10·00

साहित्य रत्नालय

37/50 गिलिश बाजार, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशी एवं समुद्रपारीय देशों की पुस्तकों व प्रकाशकों का रंगारंग संगम

चतुर्थ विश्व पुस्तक मेला, १६८०

अब तक भारत में आयोजित तीन विश्व पुस्तक मेलों से प्रोत्साहित होकर नेशनल बुक ट्रस्ट इस बार भी देश के प्रतिनिधि पुस्तक व्यवसायी संगठनों के सहयोग से २६ फरवरी से ६ मार्च, १६८० तक चतुर्थ विश्व पुस्तक मेला आयोजित कर रहा है।

अब तक के विश्व पुस्तक मेलों को अभूतपूर्व सफलता मिली है, क्योंकि ये अपनी कोटि के अनूठे रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम सिद्ध हुए हैं। तृतीय विश्व पुस्तक मेला (फरवरी, १६७८) जिसे ढाई लाख से अधिक दर्शकों ने देखा और सराहा, भारत के लगभग ३५० प्रतिनिधि प्रकाशकों और अन्य समुद्रपारीय देशों के २०० प्रकाशकों का ऐसा संगम था, जहाँ विनिमय और आदान-प्रदान के पर्याप्त अवसर उपलब्ध हुए। बड़े पैमाने पर लोगों ने पुस्तकें खरीदीं, क्योंकि प्रदर्शन में सजी पुस्तकों को देखने मात्र से संतोष नहीं होता और उन्हें साथ ले जाने की प्रेरणा पुस्तक प्रेमियों को होना स्वाभाविक है।

तृतीय विश्व पुस्तक मेले की सफलता की साक्षी देश-विदेश की वे पत्र-पत्रिकाएँ हैं, जिन्होंने इसका व्यापक प्रचार किया और अपने विशेषांक मेले को समर्पित किये। "भारत में प्रकाशन उद्योग का विकास" विषय पर टाइम्स लिटरेरी सप्लीमेण्ट, लन्दन ने भी पहली बार मेले के लिए विशेषांक निकाला।

भारत के शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय के आधीन एक स्वायत्त संस्था, नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया, इस बार भी मेले का आयोजन फेडरेशन ऑफ इण्डियन पब्लिशर्स फेडरेशन आफ पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स एसोसियेशन्स इन इण्डिया, अ० भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ तथा अन्य सरकारी संस्थाओं के सहयोग से नयी दिल्ली के पूर्व परिचित स्थान अन्तर्राष्ट्रीय मेला प्रगांण— में चतुर्थ विश्व पुस्तक मेला आयोजित कर रहा है। यह अन्तर्राष्ट्रीय मेला स्थल अपनी विशिष्टताओं के कारण ऐसे आयोजनों के लिए सर्वथा उपयुक्त है। इसका वास्तु-वैभव, कलात्मक साज-सज्जा स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण रूपी भवन, दर्शक दीर्घायें और यहाँ बना हॉल ऑफ नेशन्स सभी जैसे ऐसे विश्व मेलों के लिए ही बने हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोध और आलोचना

भारतीय काव्यशास्त्र का अध्ययन	डां० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय	100.00
साहित्य एवं शोध कुछ समस्यायें	डां० देवराज उपान्याय	35.00
देवराज उपाध्याय : साहित्यशास्त्र के नये प्रश्न	डा० जयशंकर त्रिपाठी	35.00
अज्ञेय साहित्य : प्रयोग और मूल्यांकन	डा० केदारशर्मा	65.00
साहित्य के त्रिकोण	डा० नरेन्द्र भानावत	50.00
हिन्दी साहित्य की प्रमुख कृतियां और कृतिकार	,, ,,	50.00
पाश्चात्य साहित्य शास्त्र की भूमिका	डा० मदन केवलिया	45.00
प्रेमधन औद उनका कृतित्व	डा० रामचन्द्र पुरोहित	55.00
पुनश्च (सातवें दशक की नयी हिन्दी कविता के संदर्भ में)	डा० हरिचरण शर्मा	65.00
राजस्थान के राजघरानों की हिन्दी सेवा	डा० राजकुमारी कौल	50.00
साहित्य चिन्तन	,, ,,	15.00
दो काव्य दिशाएँ	,, ,,	10.00
प्रसाद साहित्य और समीक्षा	श्रीमती उर्मिला देवी शर्मा	35.00
समकालीन नाट्य साहित्य और मोहन राकेश के नाटक	डा० सुषमा अग्रवाल	25.00
बच्चन का परवर्ती काव्य एक मूल्य	रेणु मल्होत्रा	25.00

काव्य

सैनाणी री जागी जोत	मेघराज मुकुल	12.50
किरत्याँ	,, ,,	15.00
अनुगूँज	,, ,,	8.00
आरती	डा० राजकुमारी कौल	10.00
आदमी मोहर और कुर्सी	डा० नरेन्द्र भानावत	6.50
शूर्पणखा	प्रीतमसिंह बागरेचा	8.00

जीवनी

भगवान महावीर	विराट्	5.00
महावीर री ओलखाण	डा० शान्ता भानावत	5.00
गांधी दर्शन	कन्हैयालाल कोचर	8.00
गांधी शिक्षा	डा० राजकुमारी कौल	5.00

शिक्षा

छात्र विक्षोभ	सं० कृष्णवीर द्रोण	35.00
Public Administration & Political Science :		
State Administration in Rajasthan,	Khan, Sinha, Trivedi	80.00
Press Public Opinion & Goverment in India	Sushila Agarwal	40.00

मनोविज्ञान

असामान्य मनोविज्ञान में मूलतत्व	सं० डा० सच्चिदानन्द	30.00
Dynamics of Vocational Behaviour	Dr. Sachchidanand	20.00

ज्ञान विज्ञान

विज्ञान की बातें भाग एक	हरिश्चन्द्र भारतीय	10.00
विज्ञान की बातें भाग दो	,, ,,	15.00
विज्ञान के प्रकाश स्तम्भ	,, ,,	7.00
ज्ञान की बातें भाग एक	रणजीतसिंह दरड़ा	15.00
ज्ञान की बातें भाग दो	महेन्द्र कुमार शर्मा	10.00
भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति	,, ,,	10.00

 अनुपम प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर—3

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ विश्व पुस्तक मेले में भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी के चुने हुए नवीनतम भारतीय प्रकाशन बड़ी संख्या में प्रदर्शित किये जायेंगे। इसके अतिरिक्त भारतीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशकों द्वारा पुस्तकों के विक्रय एवं प्रदर्शन के लिए किराये पर लिए गये स्टैण्ड और स्टॉल होंगे। बच्चों एवं नवसाक्षरों की पुस्तकों के प्रदर्शन की विशेष व्यवस्था की जायेगी। जैसे-जैसे हमारा देश शिक्षित होता जा रहा है और यहाँ शैक्षिक सुविधाओं का विस्तार हो रहा है, वैसे-वैसे ही पुस्तकों की मांग में तेजी के साथ वृद्धि हो रही है। शिक्षा का प्रमुख उपकरण पुस्तक है, और अब भारत के प्रौढ़ भी पढ़ाये जा रहे हैं जिन्हें और पुस्तकें चाहिए। पुस्तकों का यह विश्व-मेला अनुवाद के अधिकार और कापीराइट के पारस्परिक आदान-प्रदान का अपूर्व अवसर प्रदान करेगा।

इन मेले में भी उपस्थित होने वाले प्रमुख राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशकों में परस्पर आदान-प्रदान, सहयोग, विचार-विमर्श आदि के अवसर उपलब्ध करने के लिए सेमीनार, संगोष्ठी, सम्मेलन आदि के उपयोगी कार्यक्रम आयोजित किए जायेंगे।

भारत में प्रकाशन-उद्योग का विकास अब गति पा चुका है जिसका प्रभाव गुण और परिमाण दोनों ही पर हुआ है। पुस्तकों का सम्पादन और उत्पादन उच्च स्तरों पर पहुँच गया है। प्रकाशन के क्षेत्र में भारत ने चार-पाँच वर्षों में ही चौगुनी प्रगति कर ली है। १९७२-७३ के निर्यात वर्ष में जहाँ भारत में मात्र १·५२ करोड़ रुपये की निर्यात राशि प्राप्त हुई, वहाँ १९७७-७८ में यह निर्यात ५ करोड़ से अधिक का बैठा। मुद्रण में भी भारत ने अब अद्यतन तकनीकों को अपना लिया है और मुद्रण कार्य में भारत के अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों का स्पर्श कर लिया है। भारत में पुस्तकों के उत्पादन व्यय और इस उद्योग के संचालन व्यय में भी कमी आयी है।

अतएव यह पुस्तक मेला पुस्तक व्यवसाय के विस्तार का अभूतपूर्व अवसर भारतीय और अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशकों को उपलब्ध करेगा। मेलों में भाग लेकर भारतीय प्रकाशक अन्य देशों के मुद्रण और आकलपन की नवीनतम जानकारी प्राप्त कर सकेंगे और यह मेला भाग लेने वाले देशों के बीच शैक्षिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के विकास का माध्यम सिद्ध होगा।

चतुर्थ विश्व पुस्तक मेले का उद्घाटन २९ फरवरी को प्रातः ६·३० बजे होगा और मेला ९ मार्च की शाम के ८ बजे तक चलेगा। रविवार के अतिरिक्त सभी दिन मेला दोपहर १·३० से शाम ८ बजे तक चलेगा और रविवार (२ व ९ मार्च) तथा ८ मार्च के सार्वजनिक अवकाश के दिन प्रातः १०·३० बजे से प्रारम्भ होकर शाम ८ बजे तक चलेगा। पुस्तकालयाध्यक्षों, अध्यापकों तथा पुस्तक उद्योग से सम्बन्धित व्यक्तियों के लिए मेला ३, ४ व ५ मार्च को प्रातः १०·३० से दोपहर १·३० बजे तक खुला रहेगा।

इस अवसर पर एक मेला-निर्देशिका प्रकाशित की जायेगी, जिसमें मेले में भाग लेने वाले प्रत्येक सदस्य का नाम और पता परिचय विवरण के साथ सम्मिलित होगा। निर्देशिका में ऐसी विष्टियाँ प्रतिः शुल्क एवं आवश्यक हैं। इस निर्देशिका मेले में भाग लेने वाले एवं अन्य में विज्ञापन भी दे सकते हैं।

मेले में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन (डिस्प्ले) के लिए निम्न श्रेणियों में प्रथम व द्वितीय पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे :

१. अन्तर्राष्ट्रीय सदस्य, २. ट्रिपिल स्टाल, ३. डबल स्टाल, ४. सामान्य स्टाल, ५. सामान्य बड़ा स्टाल।

मेले में भाग लेने वालों को ओपन जनरल लाइसेन्स (ओ० जी० एल०) के अन्तर्गत शैक्षणिक वैज्ञानिक एवं तकनीकी पुस्तकों और पत्रिकाओं (इन विषयों में बच्चों की पुस्तकों सहित) और समाचार पत्र-पत्रिकायें आदि आयात करने की अनुमति दी जायेगी। आ० जी० एल० के अन्तर्गत न आने वाली सामग्री के आयात हेतु बिना आयात लाइसेन्स के आयात करने की अनुमति अपेक्षित बोर्ड एवं बैंक गारंटी देने पर दी जा सकेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वविद्यालय स्तरीय पाठ्य पुस्तकों के प्रकाशक

वाणिज्य

वित्तीय लेखांकन	डा० अग्रवाल, जैन, सोडानी, शर्मा	25.00
वित्तीय एवं लागत लेखांकन	,, ,,	25.00
सांख्यिकी के सिद्धान्त	आर० बी० एल० अग्रवाल	30.00
परिमाणात्मक विधियाँ एवं उनका अनुप्रयोग	अग्रवाल, गर्ग, सिंह, भार्गव	18.00
लागत लेखा	जोशी, वार्ष्णेय	52.00
आयकर विधान तथा लेखे	पटेल, चौधरी	25.00
प्रा० व्यापारिक गणित	गोखरू, सैनी	12.50
व्यावसायिक संगठन	शर्मा, शर्मा, सुराणा	23.00
व्यावसायिक संदेश वाहन एवं कार्यालय प्रबन्ध एवं विक्रय कला	अग्रवाल, शर्मा	21.00
औद्योगिक सम्बन्ध	शर्मा, शर्मा, सुराणा	20.00
व्यापारिक सन्नियम	शर्मा, शर्मा	18.75
विक्रय कला	अग्रवाल, शर्मा	5.00
बाजार समाचार एवं पत्र व्यवहार	,, ,,	12.00
भारत का आर्थिक भूगोल एवं भारतीय अर्थव्यवस्था	शर्मा, माथुर, मिश्रा	25.00
राजस्थान का आर्थिक भूगोल	,, ,,	7.50
मुद्रा बैंकिंग एवं राजस्व	माथुर, सिंघल, शर्मा, मिश्रा	91.00
अर्थशास्त्र के सिद्धान्त	शर्मा, माथुर, सिंघल, जैन	24.00
अन्तर्राष्ट्रीय वित्त	शर्मा, आचार्य, वर्मा	14.25

Chemistry

नवीन भौतिक एवं अकार्बनिक रसायन	शिव प्रसाद व अन्य	14.50
कार्बनिक रसायन	ललित प्रकाश व अन्य	14.00
आधुनिक अकार्बनिक रसायन	पी० सी० व्यास व अन्य	15.70
Principles & Problems in Chemistry	P. C. Vyas & Others	12.00
General Physical & Inoraganic Chemistry	S. Prasad & Others	14.50
Organic Chemistry	Lalit Prakash	13.00
Advanced Inorganic Chemistry Vol. I	P. C. Vyas & Others	16.50
,, ,, ,, Vol. II	,, ,'	14.50
Organic Chemistry	Dr. R. A. Misra	16.95

English

A Practical Course in English, 1978	Sharma, Singh	6.50
The Shifiting Sand dunes	I. K. Sharma	20.00
भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की रूपरेखा	पी० सरीन	6.50

जयपुर पब्लिशिंग हाउस

चौड़ा रास्ता, जयपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक उन्नयन के लिये भारत में नौ बार राष्ट्रीय पुस्तक मेले सम्पन्न

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ ने १४ से २१ नवम्बर १९६१ तक प्रथम राष्ट्रीय पुस्तक समारोह मनाकर देश में एक नयी परम्परा का निर्माण किया, जिसका निर्वाह, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डियन फेडरेशन पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स एसोसिएशन्स एवं पुस्तक विक्रेताओं एवं प्रकाशकों के अन्य संगठनों के सहयोग से करता आ रहा है। पहला राष्ट्रीय पुस्तक मेला बम्बई में ५ से २० नवम्बर, १९६६ तक सम्पन्न हुआ और दूसरा नई दिल्ली में १७ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर, १९६७ तक।

बम्बई के क्रास मैदान में एक लाख वर्ग-फुट तक फैले हुए प्रथम पुस्तक मेले के एक भाग में जनवरी १९६४ के बाद प्रकाशित सभी भारतीय भाषाओं की ८ हजार चुनी हुई पुस्तकों की प्रदर्शनी थी और दूसरे भाग में भारतीय और विदेशी प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं या उनके एजेण्टों के अद्यतन ढंग से सजे हुए लगभग १५० स्टाल थे। ८ नवम्बर से १४ नवम्बर १९६६ तक यहाँ पुस्तक सप्ताह मनाया गया, जिसके पूर्णतः अ० भा० हि० प्र० संघ में वाराणसी, इलाहाबाद, लखनऊ, जोधपुर, जयपुर पटना और जबलपुर में विशेष कार्यक्रमों का अयोजन किया। बम्बई में फेडरेशन ऑफ पब्लिशर्स की ओर से इस सप्ताह में अखिल भारतीय प्रकाशक और पुस्तक विक्रेता सम्मेलनों का आयोजन किया।

नई दिल्ली के दूसरे पुस्तक मेले की विशेषता थी, १९६६-६७ में प्रकाशित भारतीय भाषाओं के पुस्तक जैकेटों की प्रतियोगिता। २५ से ३१ दिसम्बर तक पुस्तक सप्ताह और फेडरेशन व अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ के सम्मेलन, पुस्तक समीक्षा पर एक विचार गोष्ठी आदि कार्यक्रम भी इस पुस्तक मेले में उल्लेखनीय रहे।

तीसरा राष्ट्रीय पुस्तक मेला, बम्बई

अब तक हुए राष्ट्रीय पुस्तक मेलों में सबसे बड़ा और व्यवस्थित पुस्तक मेला बम्बई में १५ नवम्बर, से ४ दिसम्बर १९६८ तक आयोजित हुआ। मेला स्थल वही पुराना चर्च गेट के निकट क्रास मैदान था; किन्तु इस बार उसका क्षेत्रफल ड्योढ़ा, अर्थात् १,५०,००० वर्ग फीट था। मेले में जनवरी ६७ के बाद के प्रकाशनों में से चुनकर सभी भारतीय भाषाओं की ६ हजार से अधिक पुस्तकें प्रदर्शित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन क्षेत्र में १९४१ से लोकप्रिय

रंगभूमि प्रकाशन

की सदा बहार, सुन्दर, सचित्र तथा पठनीय पुस्तकें

बाल साहित्य

प्रत्येक का मूल्य ८० पैसा

बच्चों के चुटकुले
बसन्ती चुटकुले
मनोरंजक पहेलियाँ
दिलचस्प पहेलियाँ
करामाती चुटकुले
हँसी का गुलशन

टैकनीकल

एक लाख नौकरियाँ ५.००
हिन्दी अँग्रेजी बोल चाल
चित्रकारी १०.००

सत्यकथायें

ब्याही से सैया कुँआरी ५.००
मुगलों की शहजादियाँ ५.००

नवलगढ़ की राजकुमारियाँ ,,
एक लड़की की दो हत्या ५.००
लाल शहजादा ५.००
अनाड़ी कातिल ५.००
बात एक रात की ५.००
खूनी पत्नी ५.००
नहले पर दहला ५.००

इन्डस्ट्रियल तथा अन्य

स्वप्न दोष चिकित्सा १०.००
बर्थ कन्ट्रोल १०.००
कद लम्बा कैसे १०.००

फिल्मी पुस्तकें

फिल्म स्टार्स एलबम १०.००
फिल्मी प्रेम कहानियाँ ५.००
फिल्म सैक्स गाइड १०.००

दाम्पत्य साहित्य

हनीमून कुँजी १०.००
प्रेम पत्र १०.००
कामसूत्र १०.००
रति विज्ञान १०.००
समाज की तस्वीरें ५.००
रोमांटिक प्रेम कहानियाँ ५.००
भाभी का प्रेम ५.००
सुहागरात १०.००
पति पत्नी रहस्य १०.००
नारी के गोपनीय भेद १०.००
मार्डन सैक्स गाइड १०.००
अपटुडेट सैक्स गाइड १०.००
पत्नी की समस्यायें ५.००

रंगभूमि प्रकाशन, ५ दरियागंज, अन्सारी रोड, नई दिल्ली-११०००२

चतुर्थ विश्व पुस्तक मेला

में भाग ले रहे

सभी हिन्दी प्रकाशक बन्धुओं

को अभिनन्दन सहित

हमारी हार्दिक

शुभ कामनाएँ

शान प्रिंटर्स

1/9267, शाही मोहल्ला, पश्चिमी रोहतास नगर, शाहदरा
दिल्ली-११००३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

C.C.I. INDISPENSABLE BOOKS

1. **C. C. I. Technology of Lubricants Greases & Mobile Oils.**

In this book all types of greases, such as cup grease, axle grease, ball-bearing greases etc., have been taken up. It, also, contains reclamation of used mobil oil, lubricating oil etc. *Rs. 72-00*

2. **C. C. I. Paper & Paper Based Industries.**

Mini paper plant based on agricultural waste and waste paper, Pulp manufacturing paper products such as paper envelopes, Paper Board, Corrugated sheets etc., are the main chapters of this book. In each ahapter, the process in details has been described. *Rs. 72-00*

3. **C. C. I. Tiny Paper Industries.**

This book contains information relating to small Industries based on paper products. This book gives inrormation as to how the waste paper can be best utilised. Tee unique and most important aspect of this book is that it provides the best use of paper in such type of Industries. *Rs. 72-00*

4. **C. C. I. A Hand Book on Paper & Paper Conversion.**

This book consists of all types of paper conversion products. The techniques and formulations have been discussed in details. This is a unique book of its type. This is a large sized Book. *Rs. 144-00*

5. **C. C. I. Comprehensive Profitable Card Board Industry.**

This book is very useful to all persons dealing with Card Board Industry. It contains information in detail as to how Card Board Industry are to be made and earn profits. *Rs. 72-00*

6. **C. C. I. Industry of Card Board.**

This book provides all necessary preliminaryinfo rmation closely connected with the estavlishment of Card Board Industry. It is very useful to all persons who wish to start a Card Board or other selected Industry. *Rs. 144-00*

7. **C. C. I. Paper from Paper Scraps.**

This book contains exhaustive details as to how Paper Scraps can be utilized in a best and economical way in Paper Industry. It's techniques and methods of preparetions have been discussed in details. It is very useful for those industrialists who wish to start this industry at preliminary stage. *Rs. 54-00*

8. **C. C. I. Pesticides & Presticides Formulations.**

This book has been written with much painstaking in view of arising demand for pesticides formulations. It contains for almost any type of pesticides and insecticides. It also give process details and machinieries requirement etc. *Rs. 54-00*

9. **C. C. I. Phenyle & Germicide Industry.**

This book contains all information and formulation for the manufacture of medicines which can destroy germs. Chemical and Bio-chemical process for the preparations of each type of germ killer medicines has been discussed in details. *Rs. 54-00*

10. **C. C. I. Pesticides & Germicides Industry.**

In this book we have given all types of chemical process as to how the rodents and germs, such as mosquitoes and Bad bugs can be put to an end. This can save the peasant's crops from insects, rodents and pests. This is the unique type of Book which has ever been pub;ished. *Rs. 108-00*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

11. C. C. I. Hand Book of Rubber Product.

The book carries various schemes. such as auto and cycle Tyre Tubes, Rubber threads, micro-cellular sheet rubber tubing, rubberised fabrics and other more than 50 items. Eacn scheme contains market position, manufacturing process machinerie's requirement etc. *Rs. 54-00*

12. C. C. I. Hand Book of Plastic & PVC.

This book contains different schemes on Plastics and other similar products. It has more than 100 Project profiles. *Rs. 54-00*

13. C. C. I. Technology of Rubber & Plastics.

The book contains all necessary information for the manufacture of Rubber and Plastic Products. Much stress has been laid on such items which are highly profitable and can be started with a minimum capital and substantial out-put. It is an asset to all persons dealing in Rubber and Plastic product. *Rs. 108-00*

14. C. C. I. Bakelite Sheet Industry.

The book provides all preliminary information for the manufacture of Bakelite Sheet. The process of its manufacture has been given in details. This industry is highly profitable in these days when most of the things of our daily use are made of Bakelite Sheets. *Rs. 72-00*

15. C. C. I. Most Flourshing Modern Scented Tobacco Zarda & Kimam Industry.

The tobacco just equivalent to Baba Chhap Zarda and Kimam manufacturing has been discussed in this book. *Rs. 72-00*

16. C. C. I. Handbook of Cosmetics Industries (Technology of Cosmetics)

A handbook explaining the modern principles and practice of manufacturing cosmetics toilet goods, like cold cream, vanishing creams, snow pomades, shampoos hair dyes dapilatories, shaving racipes for their preparations. *Rs. 54-00*

17. C. C. I. Chemical Process of Electroplating and Anodizing.

Aluminium anodizing and electroplating techniques have been covered in much details in this book. *Rs. 72-00*

18. C. C. I. Handbook of Synteetic Detergent.

This covers formulations for different types of washing and Toilet soaps with process in details etc. Acid slurry, Detergent Powder, Detergent liquid, Paste etc., are covered with full process, cost estimating etc. In the clearner items Vim Type cleaning Powder, Phenyl and and other cleaners have been taken up. *Rs. 54-00*

19. C. C. I. A Hand Book of Perfumed Chemical Soap & Detergent Industry.

This book contains elaborate process for the manufacture of perfumed soaps and detergents by chemical and Bio-Chemical means. This book is very useful for domestic household wives and manufacturers of soap industry. Every possible efforts have been made to make itself contained from business point of view in particular. *Rs. 72-00*

20. C. C. I. A Famous Book on Soap, Detergent and Soap Powders.

This is the bes book which has been published by us. It contains information regarding manufacture of soap and detergents. This server as a very useful and help ful guide to make the soap and detergent industry flourshing with a very small investment and space and with a small number skilled/unskilled labour. *Rs. 126-00*

21. C. C. I. Soap & Soap Powder Industry.

This book is very useful for manufacture of Soap Powder Industry and serves as a helpful guide to soap powder industrialists. It contains chemical process and formulations. This is tha best book of our publications. *Rs. 72-00*

22. C. C. I. Profitable Industry on Detergent and Household Soaps.

This book contains information and detailed process and formulations and methods of preparations of all kinds of soaps and detergents. It is a very useful

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

guide to manufacturers, producers and industrialists. This is an unique book of its kind and the best which has been published by us. *Rs. 54-00*

23. **C. C. I. Beautiful Scented Soaps & Detergent Powders.**

This book contains all detailed information and elaborate chemical process for manufacture of all kinds of scented soaps. This is a very helpful and useful guide for all persons. One can run a successf_l business with a small investment. *Rs. 126-00*

24. **C. C. I. Industry of Dyes and Dye Intermediates.**

This book covers manufacture of important dye and dye intermediates such as auramine alizarin, anthranilic acid, basic dyes, Rhodamine B, Malachite green Methylf, B. O. N, Acid, Ch:cago Acid, C. P. C. Blue, 2 : 4 Dinitro, Chlorobenzene, Direct Dyes, Disperse Dyes. Eosine, Gamma acid, G. acid, H. Acid, Indigo blue, J. Acid, Metanilic Acid, N-Dinitrobenzene, M.P.D., H.P.D.S. Naphthols, 4-nitro-2-minophenol, Peri Acid, Reactive Dyes, Sodium Naphthanate, Sulfanilic Acid, Sulfa Tobias Acid, Sulphur Black, Tobias Acid etc. *Rs. 72-00*

25. **C. C. I. Industry Paints and Varnishes.**

This book comprises of Spray Painting, manufacturing techniques and formulations for manufacture of all types of Paints and varnishes. It all contains Distempers, Cement Paints and other pigments. *Rs. 72-00*

26. **C. C. I. Coal Tar (Tar coal) Damer Industry.**

This book contains information as to how useful is this new material. It tells how useful produces can be made out of it. This is the best book for manufacturer and Industrialist. It contains all chemical formulations and process which facilitate easy products from coal tar. *Rs. 54-0C*

27. **C. C. I. Guidance Book for Small Scale Industries.**

The entrepreneurs have to face a lot of difficulties in getting proper guidance as to how to get government formalities completed, how to get loans etc. In order to solve this problem this type of book has been compiled with much thoughts. This bookwould, ofcourse, be most useful for the new entrants. *Rs. 54-00*

28. **C. C. I. Latest Small Scale Industries.**

The foregoing book is meant for new entreprenres or small scale Industrialists who inted to diversity or start a new Industry. This book contains preliminary information which is required by all entrepreneurs before starting any industry. *Rs. 54-00*

C. C. I. Hand Book of Profitable Chemical Industries.

This book serves the purpose of all chemical industries. It provides informationas as to how the Chemical Industries can be profitably. *Rs. 72-00*

30. **C. C. I. Home Money Making Guide.**

This is a useful guide which gives information to all persons who intand to start their own business at home with a small amount of investment and a better source of income. It is the sort of encouragement to everybody who are interested in making money. *Rs. 54-00*

31. **C. C. I. Higely Profitable Home Industries.**

This book has been aimed for projects profiles on such items which are more profitable and can be started with a very nominal investment.

This book is more and more useful to all categories of man. With the help of this book even a layman can start his own industry. *Rs. 54-00*

32. **C. C. I. Hand Book or Cottage Industries.**

This is a very important book which contains information regarding establishment of cottage industry. It provides all priliminary information regarding availability of Raw material, labour and capital for initial start of any type of

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Cottage Industry. This is very helpful and useful guide for those who have small amount of investment. *Rs. 54-00*

33. C. C. I. **1001 Money Making Formulas. (Fortune Formulas)**

This contains 1001 Eormulas by which we even money and make our fortune. Man is the architect of his fate, but the application of the formulas contained in this book. These money making formulas are universally applicable in every sphere of life. *Rs. 72.00*

34. C. C. I. **1001 Small Cottage and Tiny Industries (Vol. I)** *Rs. 36-00*

35. C. C. I. **1001 Small Cottage and Tiny Industries. (Vol. II)** *Rs. 36-00*

36. C. C. I. **1001 Small Cottage and Tiny Industries (Vol. III)** *Rs. 36-00*

This book contains several chapters regarding establishment of Small Industries, and project schemes. It gives all information essential for the establishment and priliminary start of Cottage Industries on small scale such as procurement of land or labour and capital. It is a very useful business on a small scale with a small investment with better prospectus of earning money. This is our one of the best productions. *Rs. 36·00* (each volume)

37. C. C. I. **Comparehensive 1001 Small Cottage & Tiny Industries.**

This book runs in various chapters followed by respective project schemes. It is covered with total 1001 project schemes on different items. Each scheme is devoted with uses and application. Market position synopsis of process, Plant Economics etc. *Rs. 101-00*

38. **C.C.I. Tablets, Capsul, Ointments Industries.**

This is a very important guide for chemists, druggist, Pharmaceutist etc. This containts all formulas for the manufacture and chemical preparations of all kinds of capsules and medicinal tablets etc. A detailed and elaborate process has been discussed in this book. This serves a complete and perfect guide for medical line and profession. *Rs. 72-00*

39. **C.C.I. Basic Drugs Pharmaceutical Industry.**

This book contains manufacturing process of almost all the vital Pharmacautical Chemical Drugs based on the best technological Development. Spcaial emphasis has been laid on those chemicals which are widely needed in India. The speciality of this book is that it contains information almost on all drugs end chemicals manufactured in India. *Rs. 72-00*

40. **C.C.I. World Fame Edible Oil Industry.**

It is an indispensible book published by us. Such type of book has never been published earlier. It contains manufacture of all types of edible oils. *Rs. 72-00*

41. **C.C.I. Manufarturing of Bakery.**

This book contains information and various formulations of type of Bakery bread, buns and biscuits etc. The speciality of this book is that it gives the elaborate process of the preparation and manufacturing techniques. *Rs. 54-00*

42. **C.C.I. Manufacturing of Confectionary.**

Confectionary Industry is expanding at a very rapid rate. Sometimes people dont' know the exact method of manufacturing and machineries details. This book carries the same aim. This book contains all manufacturing process of biscuits, toffees, lolypops and confectionary items. *Rs. 54-00*

43. **C.C.I. A Hand Book on Bakery & Confectionary.**

This is the best book which has been published by us. It contoins the latest methods and techniques of preparation of Bakery and confectionary. This book is highly useful for the manufacturers of trade. *Rs. 180-00*

Please your order to :—

Consultants Corporation of Industries

113-B, Inside Mukat Rai Niwas, Chawri Bazar, Delhi-110 006 Phone : 261030

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की गईं और गांधीवादी साहित्य, बाल पुस्तकें और अजिल्द (पेपर बैक्स) पुस्तकों के लिए पृथक् अनुभाग रखे गये। इसके अतिरिक्त प्रकाशकों और विक्रेताओं के दो सौ से अधिक स्टाल थे, जिनमें देश के सभी प्रमुख पुस्तक व्यवसायी प्रतिनिधित्व पा रहे थे।

सम्बद्ध कार्यक्रम

सेमीनार, संगोष्ठियाँ, सम्मेलन और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी इस मेले के अवसर पर आयोजित हुए सेल्स असिस्टैण्ट्स के लिए फेडरेशन ऑफ पब्लिशर्स की ओर से एक प्रशिक्षण कार्यक्रम और नेशनल बुक ट्रस्ट की ओर से सेमीनार "युवाओं के लिए पुस्तकें" विषय पर आयोजित हुईं। एक परिचर्चा "प्रकाशनों और विक्रेताओं के मानस" पर भी आयोजित हुई। उनके अतिरिक्त हिन्दी, मराठी, गुजराती, उर्दू, कन्नड़, तमिल, सिंधी और पंजाबी भाषाओं के सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रत्येक संध्या को आयोजित हुए।

लेखकों से मिलिये—पुस्तक मेले में तीन "लेखकों की संध्यायें" आयोजित की गईं, जिनमें पुस्तक प्रेमियों को अपने प्रिय लेखकों से बात करने, प्रश्न पूछने और जिज्ञासाएँ शान्त करने का अवसर मिला। सर्वश्री पु०ला० देशपांडे, नारायण सर्वे, विजय तेंदुलकर, शांता जे. शंकले और शंकर पाटिल २१ नवम्बर को अपने मराठी पाठकों से मिले। अँग्रेजी के सर्व श्री मुल्कराज आनन्द, खुशवंत सिंह, नयनतारा सहगल और डॉम मोरेस १ दिसम्बर को पाठकों से साक्षात्कार के लिए आए। दूसरी संध्या (२ दिसम्बर) हिन्दी के सर्वश्री भगवतीचरण वर्मा, हरिवंशराय बच्चन, सी० बालकृष्ण राव, धर्मवीर भारती और कमलेश्वर की रही।

मेले के दिनों में देश भर में १४ से २० नवम्बर तक पुस्तक सप्ताह मनाया गया। पुस्तक सप्ताह में फेडरेशन की ओर से खरीदी गयीं सभी पुस्तकों पर दस प्रतिशत की छूट दी गयी। सप्ताह में आकाशवाणी ने लेखन, प्रकाशन, और वितरण आदि पुस्तकीय विषयों पर विशेष कार्यक्रम प्रसारित किये। डाक तार विभाग ने "पुस्तकों को साथी बनाइये" मोहर लिफाफे, पोस्टकार्डों पर इस दौरान लगाई और कई पत्र-पत्रिकाओं ने अपने विशेष संस्करण निकाले।

केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री डा० वी० के० आर० वी० राव ने मेले के सभागृह में सर्वोत्तम स्टाल और सर्वोत्तम जैकेट के लिए ३० नवम्बर को एक समारोह में पुरस्कार बाँटे।

चतुर्थ राष्ट्रीय पुस्तक मेला, मद्रास

मद्रास में २९ दिसम्बर से १५ जनवरी, १९७० तक आयोजित चतुर्थ राष्ट्रीय पुस्तक मेला पिछले मेलों की तुलना में अधिक सोद्देश्य माना गया है। इस मेले के लिए तमिलनाडु के शिक्षा मन्त्री श्री वी. आर. नेधुनशेजियन की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई, जिसे मेले में आयोजन के विषय में अपना परामर्श देना था। फेडरेशन ऑफ पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स इन इण्डिया ने मेले की आयोजना में प्रारम्भ से सहयोग दिया और सर्वश्री एम० एन० राव और एम० ए० अप्पा राव को नेशनल बुक ट्रस्ट के साथ सहयोग करने के लिए नामांकित किया।

मेले का उद्घाटन केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री डॉ० वी० के० आर० वी० राव ने किया, समारोह की अध्यक्षता श्री नेधुनशेजियन ने की और ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ० बी० वी० केस्कर ने मेले में अतिथियों का स्वागत किया। उद्घाटन समारोह के अंत में धन्यवाद का प्रस्ताव फेडरेशन के अध्यक्ष स्व० श्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल विषयक महत्वपूर्ण प्रकाशन

विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों के लिए लिखित

डॉ० चतुर्भुज मामोरिया द्वारा लिखित

आर्थिक एवं वाणिज्य साधनों का भूगोल (GEOGRAPHY OF ECONOMIC & COMMERCIAL RESOURSES)	40·00
संसाधनों का भूगोल (GEOGRAPHY OF RESOURSES)	25·00
मानव भूगोल (HUMAN GEOGRAPHY)	40·00
सामाजिक एवं प्रजातिय भूगोल (SOCIAL & RACIAL GEOGRAPHY)	30·00
तीन दक्षिणी महाद्वीप (THREE SOUTHERN CONTINENTS)	300 0

डॉ० सीताराम भागला द्वारा लिखित

राजनैतिक भूगोल के तत्व (ELEMENTS OF POLITICAL GEOGRAPHY)	30·00
एशिया का भूगोल (GEOGRAPHY OF ASIA)	10 00

रंजन प्रकाशन

दी एजुकेशनल प्रेस भवन, आगरा-३

[RANJAN PRAKASHAN, AGRA-3]

With best Compliments

from :

TULIS SCREEN PRINTERS

112, SHANKER ROAD MARKET

NEW DELHI-110060

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एम० एन० राव द्वारा प्रस्तुत किया गया। मेले का प्रमुख भाग था उन सात हजार से अधिक चुने हुए प्रकाशनों की प्रदर्शनी, जो भारतीय भाषाओं में जनवरी, ६९ के बाद निकलीं। स्टील की नई आल्मारियों में रंगबिरंगे परदों के साथ सजी हुई इन पुस्तकों की छटा मुग्धकारी थी। दीवारों पर रंगीन चार्ट और ग्राफ लगाये गये थे। इसके अतिरिक्त १७५ स्टालों पर देश के प्रमुख प्रकाशकों के चुने हुए प्रकाशन प्रदर्शन और बिक्री के लिए लगाये गये। इन स्टालों पर ४० हजार से अधिक पुस्तकें प्रदर्शित की गईं। यू. एस. आई. एस. और ब्रिटिश कांसल ने भी अपने स्टाल लगाकर राष्ट्रीय मेले को अन्तर्राष्ट्रीय रूप दिया। इस अवसर पर लगे पुस्तक बाजार में घटी हुई दरों पर किताबों के पुराने स्टॉकों की खासी बिक्री हुई।

पुस्तक सप्ताह एवं अन्य आयोजन

मेले के साथ ही देश भर में २० से २६ दिसम्बर तक पुस्तक सप्ताह मनाया गया। पुस्तक सप्ताह में पुस्तकों पर १० प्रतिशत छूट मिली, आकाशवाणी के विशेष कार्यक्रम हुए और इस सप्ताह का नारा था "अच्छी पुस्तक अच्छा मित्र" जिसे डाकतार विभाग ने मोहर के रूप में भी प्रयोग किया इस मेले को ६० हजार से अधिक दर्शकों ने देखा, जिनमें राज्यपाल, मुख्यमन्त्री एवं अन्य मन्त्री और विश्वविद्यालयों के कुलपति भी शामिल थे।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की भी धूम रही। ३० दिसम्बर को संस्कृत संध्या, ३१ को केरल संध्या, १ जनवरी को तेलुगु संध्या, ३ को तमिल लेखकों की संध्या, ४ को तेलुगु लेखकों की संध्या, ५ को उर्दू, ६ को गुजराती और ७ को हिन्दी लेखकों की संध्याये आयोजित हुईं। ८ जनवरी को दक्षिण के लोकगीत, ९ जनवरी को बाल संध्या, १० को संगीत संध्या, ११ को पुस्तकों एवं पुस्तक पाठन पर डाक्यूमेन्टरी फिल्में प्रदर्शित की गईं। १२ जनवरी कन्नड़ संध्या रही, १४ को तमिल संध्या मनायी गई और १५ को भरतनाट्यम् और पुरस्कार वितरण आयोजित हुए।

तमिलनाडु के राज्यपाल सरदार उज्जवल सिंह ने सर्वोत्तम स्टाल का पुरस्कार इण्डिया बुक हाउस को, द्वितीय पुरस्कार ओरीयेंट लोंगमैन को और सर्वोत्तम जैकेट का प्रथम पुरस्कार "डिस्कवरिंग इण्डियन स्कलचर" और द्वितीय पुरस्कार "नाइन एटॉप ऐवरेस्ट" पुस्तकों को प्रदान किया। पुस्तक-उत्पादन में श्रेष्ठता के ६ पुरस्कार तमिल (२) तेलुगु (१), अँग्रेजी (२) और हिन्दी (१) पुस्तकों पर फेडरेशन ऑफ पब्लिशर्स ने दिये। इस अवसर पर ट्रस्ट की पुस्तक सूची "बुक्स इण्डिया" भी प्रकाशित की गई।

पाँचवां राष्ट्रीय पुस्तक मेला, कलकत्ता

पश्चिमी बंगाल के मुख्य मंत्री श्री सिद्धार्थशंकर राय ने २५ जनवरी, १९७३ को ५ बजे पाँचवें राष्ट्रीय पुस्तक मेले का उद्घाटन किया जो ४ फरवरी तक एकेडेमी ऑफ फाइन आर्ट्स की दीर्घाओं में और निकटस्थ रवीन्द्र सदन के मैदान पर चलता रहा। मेले के आयोजन में नेशनल बुक ट्रस्ट का सहयोग फेडरेशन आफ पब्लिशर्स और वेस्ट बंगाल पब्लिशर्स एसोसियेशन ने किया।

मेले के प्रमुख भाग में जनवरी, ७० के बाद प्रकाशित हुई समस्त भारतीय भाषाओं की पुस्तकों में से चुनी हुई ७ हजार पुस्तकें प्रदर्शित की गईं। यह प्रदर्शनी, जिसमें बाल साहित्य और अजिल्द पुस्तकों के लिए पृथक् अनुभाग थे, रवीन्द्र सदन में निर्मित एक विशेष पण्डाल में लगाई गईं। देश भर के सभी प्रकाशकों—वितरकों—विक्रेताओं का प्रतिनिधित्व करने वाले १२७ संस्थानों ने जिनमें कलकत्ता के प्रायः सभी बंगाली प्रकाशक सम्मिलित थे, अपने-अपने प्रदर्शन एवं बिक्री के स्टाल लगाये और बांगला देश, यू० एस० आई० एस०, जापान और ब्रिटिश कांसल मेले के विदेशी सहयोगियों में थे। १ फरवरी से ४ फरवरी तक पुस्तक बाजार में घटी हुई दरों पर बिकने वाली पुस्तकों की धूम रही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्शन और अध्यात्म प्रेमियों के लिए (शुभसंदेश)

विश्व का सर्वोत्तम दार्शनिक ग्रन्थ

वेद, उपनिषद, गीता के गहनतम दार्शनिक भावों की आधुनिक वैज्ञानिक दार्शनिक भाषा में व्याख्या वर्तमान युग के श्रेष्ठतम योगी श्री अरविन्द द्वारा लिखित **लाइफ डिवाइन** नामक ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद

अनुवादक—केशवदेव आचार्य

दिव्य जीवन

मूल ग्रन्थ में आये रहस्यमय शब्दों और जटिल भावों की सरल हिन्दी में व्याख्या तथा हिन्दी-अंग्रेजी शब्द सूची सहित। भारतीय भाषाओं में अभी तक प्रकाशित अनुवादों में सर्वोत्तम। अपनी अनुपम विशेषता के कारण यह अनुवाद काशी, मेरठ, गोरखपुर, राजस्थान, रांची आदि विश्वविद्यालयों में दर्शनशास्त्र की स्नातकोत्तर श्रेणियों के लिए पाठ्य पुस्तक रूप में निर्धारित है तथा पी० एच० डी० के निबन्धों के लिए आधार रूप में उपयोग में लाया जाता है।

मूल्य : प्रथम भाग 25.00 द्वितीय भाग खण्ड १ 30.00
" " " २ 35.00

जीवन और चरित्र निर्माण सम्बन्धी तथा विचारों को उन्नत करने वाले कुछ अन्य महत्वपूर्ण ग्रन्थ

कठोपनिषद भाष्य	7.00	सत्य का रहस्य	7.50
गीता विज्ञान	12.50	आत्म समर्पण योग	1.25
गीता नवनीत भाग १	6.00	श्री अरविन्द शब्द कोश	8.00
" " " २	8.00	श्री अरविन्द दर्शन प्रवेशिका	3.00
गीता प्रदीप	4.00	Guide to Sri Aurobind Philosophy	12.00

पूरा सैट एक साथ लेने वालों को विशेष सुविधा

दिव्य जीवन साहित्य प्रकाशन, पांडिचेरी 605002

भारतीय की प्रमुख

पुस्तिक पत्रिका

हिन्दी प्रकाशक

विज्ञापन का

सवल

सफल साधन

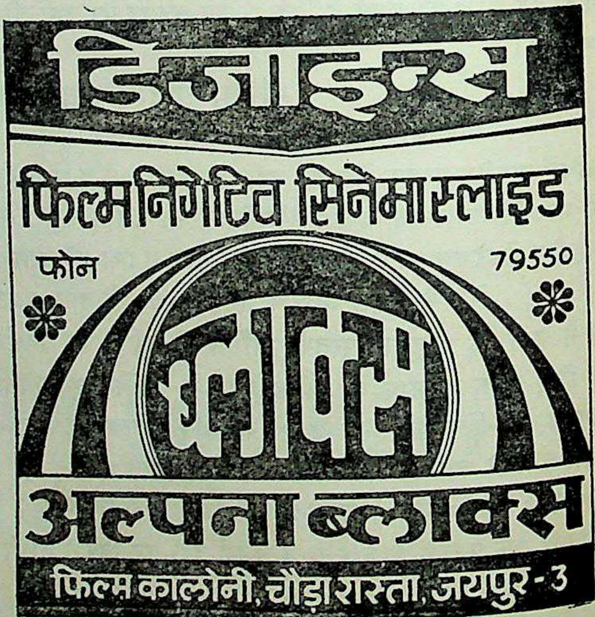

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक सप्ताह एवं पुरस्कार

२८ जनवरी से ३ फरवरी तक देश भर में पुस्तक सप्ताह मनाया गया, जिसके लिए इस बार सुनियोजित प्रयास किये गये। विश्वविद्यालयों, शिक्षण संस्थानों, पुस्तकालयों, एवं अन्य सांस्कृतिक संस्थाओं के प्रकाशकों एवं पुस्तक वितरकों के सहयोग से कई कार्यक्रम मनाये, जैसे परिचर्चायें, व्याख्यान सेमीनार, पुस्तक प्रदर्शनियाँ आदि। पुस्तक सप्ताह में सभी आयोजनों के शिखर पर कलकत्ता का राष्ट्रीय पुस्तक मेला था। फेडरेशन की ओर से १० प्रतिशत की छूट, पुस्तक सप्ताह के नारे का प्रचार और आकाशवाणी के विशेष कार्यक्रम इस वर्ष भी आयोजित हुए। फेडरेशन ने मेले में प्रकाशकों का सम्मेलन आयोजित किया और अखिल भारतीय प्रकाशक संघ ने "पुस्तक वितरण और प्रकाशन" पर एक सेमीनार आयोजित किया।

पं० बंगाल के राज्यपाल श्री ए० एल० डायस ने ४ फरवरी को आयोजित समारोह में निम्न पुरस्कार वितरित किये :

1. **सर्वोत्तम प्रदर्शन**—प्रथम पुरस्कार ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस और द्वितीय पुरस्कार यू० बी० एस० पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स को प्राप्त हुआ।

२. **पुस्तक शकल्पन**—बंगाली पुस्तक 'मुम्तावेनी" (प्र० ओरियन्ट बुक कं०) को प्रथम पुरस्कार और "बांगला नाये देश" (आनंद पब्लि०) की द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। अन्य भाषाओं में यह पुरस्कार "इकेबाना" (मराठी) को प्रथम और हिन्दी प्रचारक संस्थान की हिन्दी पुस्तक 'पुस्तक काव्य कोष" को द्वितीय पुरस्कार मिला।

३. **बाल पुस्तकें**—प्रथम पुरस्कार—चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट की "अज्जानोन्डिगे कालिडा दीनागलु" और द्वितीय पुरस्कार रतन भारती की "स्मार्टी दा यंग रैट" को प्रदान किया गया।

४. **पेपर बैक्स**—प्रथम और द्वितीय पुरस्कार हिन्द पॉकेट बुक्स की क्रमशः "स्थाई इन अम्बेर" और "लिंगरिंग शैडोज" को प्राप्त हुआ।

५. **अंग्रेजी**—प्रथम पुरस्कार—"इस्लाम इन सेकुलर इण्डिया" (इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ एडवान्स स्टडीज प्रकाशन) और द्वितीय पुरस्कार—"भूटान" (टाम्पसन प्रेस) को दिया गया।

पुस्तक वितरण पर सेमीनार

२५ जनवरी से ४ फरवरी, १९७३ तक श्री दीनानाथ मलहोत्रा के तकनीकी निदेशन में एक सेमीनार "मार्केटिंग एण्ड डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ बुक्स इन इण्डिया" पर आयोजित की गई। सहयोगी निदेशक शिक्षा मंत्रालय के श्री अबुल हसन थे। सेमीनार में इस विषय पर ११ निबंध पढ़े गये, जिस पर उपस्थित ५४ व्यक्तियों ने सजीव चर्चायें कीं। सेमीनार की सिफारिशें ये हैं : (१) पुस्तक वित्त निगम की स्थापना की जाये, (२) बुक पैकेटों पर रियायती डाक दरें लागू हों, और (३) किताबों की दुकानों और पुस्तक विक्रेताओं का महत्व स्वीकार किया जाये।

छठा राष्ट्रीय पुस्तक मेला, बम्बई

३१ जनवरी, १९७४ को शाम ५ बजे महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री अली यावर जंग ने मेला-स्थल के मैदान पर छठे राष्ट्रीय पुस्तक मेले का उद्‌घाटन किया। इस मेले के आयोजन के लिए महाराष्ट्र के स्वास्थ्य मंत्री डा० रफीक जकारिया की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई और नेशनल बुक ट्रस्ट, फेडरेशन ऑफ पब्लिशर्स और फेडरेशन ऑफ इण्डियन पब्लिशर्स और महाराष्ट्र पब्लिशर्स एसोसियेशन ने मेले के आयोजन में सक्रिय योग दिया। मेले के अवसर पर जनवरी ७१ के बाद प्रका-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाइब्रेरियों के लिए उत्कृष्ट पुस्तकें

उपन्यास-साहित्य

• तीन श्रेष्ठ वैज्ञानिक उपन्यास	मनहर चौहान	15.00
• तीन श्रेष्ठ ऐतिहासिक उपन्यास	सुशीलकुमार	20.00
• कोई एक घर	मनहर चौहान	10.00
• अरे, ओमप्रकाश !	,,	10.00
• सीमाएँ	,,	18.00
• सूर्य का रक्त	,,	15.00
• सन्तुलन-असन्तुलन	,,	12.00
• रात खो गई	,,	12.00
• रामायण	रूपा० मनहर चौहान	15.00
• रसकपूर	ध्यान माखीजा	8.00
• यवनिका	कुणाल श्रीवास्तव	8.00
• ज्वालामुखी के फूल	सुशील कुमार	10.00
• जल बिच प्यासी	,,	12.00
• पराजित विजेता	,,	8.00

नाटक-साहित्य

• प्रमोशन	विनोद रस्तोगी	10.00
• स्वप्न-दीप	ललित सहगल	8.00
• खून की आवाज	रामकुमार भ्रमर	8.00
• लहू का रंग एक है	राजकुमार अनिल	5.00

कहानी एवं व्यंग्य साहित्य

• अपनी डाली के कांटे (व्यंग्य)	डा० संसार चन्द्र	6.00
• बीस सुबहों के बाद	मनहर चौहान	10.00
• युद्ध की तेरह श्रेष्ठ कहानियां	सं० मनहर चौहान	10.00
• संसार की तेरह श्रेष्ठ कहानियां	सं० गोपाल शेखरन	9.00
• उर्दू की तेरह श्रेष्ठ कहानियां	सं० रमेश गौड़	15.00
• भारत के आदर्श महापुरुष	सं० डा० संसार चन्द्र	17.00
• कथा-यात्रा	सं० रामकुमार भ्रमर	9.00

आलोचना एवं सत्-साहित्य

• छन्दोऽलंकार प्रदीप	डा० संसार चन्द्र	25.00
• विनोद रस्तोगी का नाट्य-साहित्य	डा० राजेन्द्रमोहन भटनागर	20.00
• स्वाधीनता संग्राम और हरियाणा	देवीशंकर प्रभाकर	25.00
• तुलसी-काव्य-मणि	डा० नरेन्द्र कुमार शर्मा	11.00

उमेश प्रकाशन

5, नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली—6

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किशोरों के लिए उपयोगी पुस्तकें

किशोर-उपन्यास-माला

अर्थात्

सचित्र एवं रोचक ऐतिहासिक लघु-उपन्यासों की अत्यन्त उपयोगी सीरीज

यह उपन्यास-माला विश्व के पौराणिक, ऐतिहासिक, धार्मिक और अनेकों दूसरे गौरवशाली चरित्रों, महत्वपूर्ण ग्रंथों तथा विभिन्न अन्य रोचक विषयों पर अत्यन्त सरल भाषा में सुरुचिपूर्ण ढंग से तैयार की गई है। इस सीरिज की सभी पुस्तकें केवल किशोरों के लिए ही नहीं, बल्कि देश की रक्षा के लिए नियुक्त जवानों, अहिन्दी, भाषा-भाषियों और नवसाक्षरों के लिए भी समान रूप से उपयोगी हैं।

वीर पुरुषों की जीवनियों पर आधारित लघु-उपन्यास

हल्दी घाटी	मनहर चौहान	6.00	चन्द्रशेखर आजाद	सुरेन्द्र जोशी	5.00
जय भवानी	,,	6.00	आचार्य चाणक्य	सुशील कुमार	6.00
अभिमन्यु	कुणाल श्रीवास्तव	5.00	महाकवि कालिदास	,,	6.00
महाराणा राजसिंह	,,	5.00	सीता	,,	7.00
परशुराम	,,	5.00	स्वामी दयानन्द	विवेक	5.00
महाबली इन्द्र	सुशील कुमार	7.00	देवता हार गए	देशराजसिंह भाटी	5.00
चक्रवती दशरथ	,,	7.00	संत कबीर	रामकृष्ण शर्मा	7.00
भीष्म	सुदर्शन चौपड़ा	5.00	बापू	डा० सुरेश सिन्हा	7.00
पहला सम्राट	शत्रुघ्नलाल शुक्ल	5.00	गुदड़ी का लाल : लालबहादुर	मंजुला	6.00
दुर्गादास	,,	6.00	अलीबाबा और चालीस चोर	,,	6.00
चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य	प्रकाश नजायच	7.00	उड़ने वाला घोड़ा	,,	6.00
वीरांगना चैन्नम्मा	शंकर बाभ	7.00	काने योगी	,,	6.00
वीर कुणाल	शिवमूर्तिसिंह 'वत्स'	5.00	दरियावर द्वीप की शहजादी	कुणाल श्रीवास्तव	6.00
राजा सूरजमल	शक्ति त्रिवेदी	5.00			

शेक्सपियर के नाटकों पर आधारित

रूपान्तर—शत्रुघ्नलाल शुक्ल

हैमलेट	5.00	वेनिस का सौदागर	6.00
मैकबेथ	5.00	जैसा तुम चाहो	6.00
तूफान	5.00	ऑथेलो	6.00
जूलियस सीजर	5.00	निराशा	6.00
राई से पहाड़	5.00	सन्देश का विष	6.00

लोक-कथाएँ

पशु-पक्षियों की लोक-कथाएँ	शत्रुघ्नलाल शुक्ल	6.00	सती नारियों की लोक-कथाएँ	राजकुमार अनिल	6.00
देवी-देवताओं की लोक-कथाएँ	,,	6.00	पतिव्रता नारियों की लोक-कथाएँ	राजकुमार अनिल	6.00
आलसी-मूर्खों की लोक-कथाएँ	,,	6.00	राजा-रानी की लोक-कथाएँ	शिवशंकर	6.00
राजा विक्रमादित्य की लोक-कथाएँ	कुणाल श्रीवास्तव	6.00	भाई-बहन की लोक-कथाएँ	,,	6.00

उमेश प्रकाशन

5, नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली-6

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शित भारतीय भाषाओं की ६ हजार पुस्तकें प्रदर्शित की गईं और देश भर के प्रतिनिधि प्रकाशकों, वितरकों और पुस्तक विक्रेताओं ने १०० से अधिक प्रदर्शन और बिक्री के स्टाल लगाये। मेले में महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश और तमिलनाडु की राज्य सरकारों और केन्द्रीय सरकार के प्रकाशन विभागों ने भी भाग लिया। संघीय जर्मन गणराज्य, ब्रिटिश कांसल और यू० एस० आई० एस० आदि विदेशी प्रतिनिधित्व भी मेले में रहा।

राष्ट्रीय पुस्तक मेले के साथ ही देश भर में १ से ६ फरवरी तक राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह में विश्वविद्यालयों, आकाशवाणी, पुस्तकालयों आदि ने सदा की भाँति विचारविमर्श, व्याख्यान, पुस्तक प्रदर्शनियों आदि के कार्यक्रम आयोजित किये, ने० बु० ट्रस्ट ने हिन्दी और अंग्रेजी में पुस्तक सप्ताह के लिये पोस्टर छपवा कर वितरित किये जिन पर हिन्दी-अंग्रेजी में यह वाक्य अंकित था। "ज्ञान अथवा अवकाश के लिये पुस्तक"। सप्ताह की पुस्तक बिक्री पर दस प्रतिशत की छूट भी दी गई।

कार्यशाला—३ से ७ फरवरी तक मेले में पुस्तक प्रकाशकीय सम्पादकों के लिये कार्यशाला का आयोजन किया गया। अपने ढंग की इस प्रथम कार्यशाला में प्रशासकीय सम्पादकों की समस्याओं पर विचार-विमर्श हुआ और बाल पुस्तकों, विज्ञान की पुस्तकों और पाठ्यपुस्तकों के सम्पादन से सम्बद्ध विषयों पर पढ़े गये दस निबंधों पर ४० व्यक्तियों द्वारा खुलकर विचार मंथन किया गया। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस के श्री राम हाकिन्स कार्यशाला के तकनीकी निदेशक थे।

सेमीनार व संगोष्ठी—फेडरेशन आफ इण्डियन पब्लिशर्स ने १ फरवरी के मेले में एक सेमीनार का आयोजन किया, जिसका विषय था "भारतीय भाषाओं में बाल पुस्तकों का सह-उत्पादन"। दूसरे दिन एस० आई० पी० ने एक आयोजित की, जिसका विषय था—"कापीराइट : भारत की राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय आवश्यकतायें।"

फेडरेशन आफ पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स एसोसियेशन्स इन इण्डिया की ओर से ३ फरवरी को मेले में एक सेमीनार "देश के सांस्कृतिक जीवन में खुदरा पुस्तकों की दुकान की स्थिति" पर आयोजित किया गया। इसी फेडरेशन द्वारा इससे पूर्व २ फरवरी से "चतुर्थ सीतल प्रियलानी स्मृति व्याख्यान ने अताति परिवर्तन के लिये शिक्षा : नेशनल बुक ट्रस्ट और भारत में प्रकाशन" पर डा० एस० गोपाल का व्याख्यान आयोजित किया गया। १ से ११ फरवरी तक घटी हुई दरों पर बिक्री के लिये पुस्तक बाजार लगाया गया, जिसमें खूब बिक्री हुई। अनुमानतः पुस्तक मेले की १ लाख पुस्तकों को लगभग इतने ही लोग देखने आये।

सांस्कृतिक कार्यक्रम और पुरस्कार

मेले के अवसर पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए, जिनमें हिन्दी, मराठी, गुजराती, उर्दू एवं अँग्रेजी लेखकों की संध्याएँ भी शामिल हैं। कवि सम्मेलनों और अँग्रेजी, मराठी व गुजराती के रंगारंग कार्यक्रमों की भी अच्छी धूम रही।

पुस्तकों के आवरण और जैकेटों की श्रेष्ठता के लिए हुई प्रतियोगिता में निर्णायक मण्डल ने निम्न पुरस्कार प्रदान किये। (१) गुजराती में विकास प्रकाशन पुरस्कार के लिए जगदीश जोशी की "प्रकाश" पुस्तक चुनी गई, जिसका प्रकाशन बोरा एण्ड कम्पनी ने किया था। (२) हिन्दी में श्यामलाल दातव्य ट्रस्ट का पुरस्कार हिन्दी प्रचारक संस्थान भी शारदा मिश्र लिखित पुस्तक "एक क्षण जो अंनत बन गया" को दिया गया। (३) अँग्रेजी—(अ) एलाइड पब्लिकेशन्स पुरस्कार हैरिटेज पब्लिशर्स की ब्रापन ब्राउन लिखित पुस्तक "विजडम ऑफ हिन्डज" को और (ब) ओरियेंट लोंगमैन पुरस्कार विली-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्या पर संगोष्ठी बुलाई और प्रकाशक, थोक विक्रेता, पुस्तक विक्रेता के पारस्परिक सम्बन्धों पर एवं परिसम्वाद का भी आयोजन किया। एफ. आई. पी. (फेडरेशन ऑफ इण्डियन पब्लिशर्स) ने १ फरवरी को ऑल इण्डिया कान्फरेन्स आफ इण्डियन पब्लिशर्स की एक गोष्ठी आयोजित कर इस उद्योग की समस्याओं का विवेचन किया। फेडरेशन की ओर से श्रेष्ठ पुस्तक प्रकाशन के लिए पुरस्कार श्री एम० वी० राजगोपाल द्वारा प्रदान किये गये।

हैदराबाद स्टेट बुक क्लब द्वारा 'द बुक्स आई लाइफ' कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता आन्ध्र उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री ए० सम्बाशिव राव ने की और उस्मानिया विश्वविद्यालय के डॉ० एस० के० कुमार और डा० सी० नारायण रेड्डी ने विशेष आमन्त्रित श्रोताओं के समक्ष अपने लेखों का पाठ किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं विधियां

सातवें राष्ट्रीय पुस्तक मेले में कई सुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये। तेलुगु, उर्दू तथा हिन्दी में कवि सम्मेलन हुए, विचार गोष्ठियों, नाटक, नृत्यों व फिलम प्रदर्शन आयोजित किये गये।

हैदराबाद पुस्तक मेले में भी पुस्तक बाजार लगाया गया, जहाँ प्रकाशकों और उनके वितरकों द्वारा अधिकाधिक कमीशन पर पुस्तकें धड़ाधड़ बेची गईं।

इस मेले में प्रदर्शित लगभग १ लाख पुस्तकों को देखने के लिए लगभग ७५ हजार लोग आये। स्थानीय समाचार पत्रों ने पुस्तक मेले की सभी खबरें अच्छी तरह छापीं। फिलम डिवीजन ने भी समाचार दर्शन में मेले की छवियाँ प्रसारित कीं और आकाशवाणी ने विशेष कार्यक्रम प्रसारित किये।

आठवाँ राष्ट्रीय पुस्तक मेला, अहमदाबाद

अहमदाबाद में १५ जनवरी से २४ जनवरी, १९७७ तक सम्पन्न हुए राष्ट्रीय पुस्तक मेले की सफलता आशातीत बताई गई। यद्यपि मेला स्थल तक पहुँचने के लिए पर्याप्त परिवहन नहीं था, फिर भी २४ जनवरी को आई भारी वर्षा और आँधी के दिन मेला स्थल से एक साथ १५ हजार व्यक्ति निकलते देखे गये। आठवें पुस्तक मेले का उद्घाटन गुजरात के मुख्य मन्त्री श्री माधव सिंह सोलंकी ने किया। मेले में देश के सभी भागों के ११६ प्रकाशकों और विक्रेताओं ने भाग लिया।

मेले का प्रमुख आकर्षण जनवरी, ७५ के बाद प्रकाशित भारतीय पुस्तकों में से चुनी हुई ४ हजार पुस्तकों की प्रदर्शनी थी। इस प्रदर्शनी के अतिरिक्त और भी लगभग १ लाख पुस्तकें मेले में भाग लेने वाले प्रकाशकों द्वारा प्रदर्शित की गईं। जिन राज्य सरकारों व सार्वजनिक उपक्रमों ने मेले में भाग लिया वे हैं: गुजरात राज्य सरकार सूचना विभाग, तमिलनाडु पाठ्य पुस्तक समिति, प्रकाशन एकांश शिक्षा एवं समाज कल्याण मन्त्रालय, पब्लिकेशन्स डिवीजन सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय, राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद्, सेन्ट्रल इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डियन लैंग्वेजेज, ललित कला अकादमी, आर्कियालोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय और भारत-अमरीकी पाठ्य-पुस्तक कार्यक्रम।

मेले के अन्य समारोह

नेशनल बुक ट्रस्ट की ओर से १६ से १८ जनवरी तक मेले में "आगामी दशक में गुजराती प्रकाशन" विचार-गोष्ठी आयोजित की गई, जिसके अध्यक्ष गुजराती साहित्यकार श्री उमाशंकर जोशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रन्थम

- वैदिकी ६०·००
  डॉ. मुंशीराम शर्मा
- वैदिक संस्कृति सभ्यता २०·००
  डॉ. मुंशीराम शर्मा
- तुलसी का मानस २५·००
  डॉ. मुंशीराम शर्मा
- प्रसाद की कामायनी (भाष्य) १८·००
  डॉ. मुंशीराम शर्मा
- पद्मावत (पूर्वार्द्ध) २०·००
  डॉ. मुंशीराम शर्मा
- सूर सौरभ २०·००
  (ब्रज साहित्य मंडल द्वारा पुरस्कृत)
  डॉ. मुंशीराम शर्मा
- सूरदास का काव्य वैभव २०·००
  डॉ. मुंशीराम शर्मा
- सन्त-साहित्य ३०·००
  (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत)
  डॉ. प्रेमनारायण शुक्ल
- भारतेन्दु की नाट्यकला १८·००
  (उ. प्र. सरकार द्वारा पुरस्कृत)
  डॉ. प्रेमनारायण शुक्ल
- हिन्दी काव्य में मार्क्सवादी चेतन ६०·००
  (उ. प्र. सरकार द्वारा पुरस्कृत)
  जनेश्वर वर्मा
- कामायनी : प्रेरणा और परिपाक ४५·००
  (उ. प्र. सरकार द्वारा पुरस्कृत)
  डा० रमाशंकर तिवारी
- बिहारी का काव्य-लालित्य २०·००
  (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत)
  डा० रमाशंकर तिवारी
- ललित की खोज में २५·००
  (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत)
  डा० रमाशंकर तिवारी
- रामकथा के पात्र ५०·००
  डा० भ० ह० राजूरकर
- भारतीय साहित्य दर्शन ६०·००
  (उ० प्र० सरकार द्वारा पुरस्कृत)
  डा० कृष्णलाल हंस
- हिन्दी साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास ६०·००
  (उ० प्र० सरकार द्वारा पुरस्कृत)
  कृष्णलाल हंस
- समीक्षाशास्त्र ७५·००
  डा० कृष्णलाल हंस

- कहानी की संवेदनशीलता : सिद्धान्त और प्रयोग
  डा० भगवानदास वर्मा २५·००
- आधुनिक मराठी साहित्य का प्रवृत्तिमूलक इतिहास प्रो० सूर्यनारायण रणसुभे ३५·००
- उद्धवशतक-भाष्य २०·००
  डा० शिवबालक शुक्ल
- हिन्दी और मराठी का शृंगार काल ४०·००
  (उ० प्र० सरकार द्वारा पुरस्कृत)
  डा० इन्द्र पवार
- कबीर : साधना और साहित्य ५०·००
  डा० प्रतापसिंह चौहान
- आधुनिक हिन्दी काव्य में यथार्थवाद २५·००
  डा० परशुराम शुक्ल 'विरही'
- आधुनिक हिन्दी कवियों का जीवन-दर्शन डा० परशुराम शुक्ल 'विरही' २०·००
- रासो काव्य-परम्परा ६०·००
  डा० सुमन राजे
- रेवातट ४०·००
  डा० सुमन राजे
- साहित्येतिहास : संरचना और स्वरूप ४०·००
  डा० सुमन राजे
- साहित्येतिहास आदिकाल ७५·००
  डा० सुमन राजे
- हिन्दी नाटक : सिद्धान्त और विवेचन २५·००
  डा० गिरीश रस्तौगी
- आधुनिक हिन्दी नाटक ३०·००
  डा० गिरीश रस्तोगी
- हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास ४०·००
  डा० घनराज मानधाने
- आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में वस्तु-विन्यास
  डा० सरोजनी त्रिपाठी ३०·००
- हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास ३५·००
  डा० रामनारायण सिंह 'मधुर'
- आधुनिक हिन्दी गद्य-शैली का विकास ३५·००
  डा० श्याम वर्मा
- अज्ञेय 'कवि' ४०·००
  डा० ओ३म्प्रकाश अवस्थी
- प्रसाद का गीति काव्य ७·००
  श्रीमती रजनी त्रिपाठी
- हिन्दी नाटक : पुनर्मूल्यांकन ३५·००
  डा० सत्येन्द्र तनेजा
- युगकवि प्रसाद २५·००
  डा० गणेश खरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- हिन्दी के स्वच्छन्दतावादी उपन्यास ३०·००
  डा० कमलकुमारी जौहरी
- हिन्दी उपन्यास : पृष्ठभूमि और परम्परा ३०·००
  डा० बद्रीदास
- नव्य हिन्दी समीक्षा २५·००
  डा० कृष्णवल्लभ जोशी
- प्रगतिवादी काव्य २०·००
  डा० उमेश मिश्र
- आधुनिक हिन्दी गद्य और गद्यकार २५·००
  डा० जेकब पी० जार्ज
- आधुनिक हिन्दी काव्य ४०·००
  डा० राजेन्द्र मिश्र
- काव्य में रहस्यवाद २०·००
  डा० बच्चूलाल अवस्थी
- प्रगतिवादी समीक्षा १५·००
  डा० रामकुमार सिंह
- आधुनिक हिन्दी कविता में ध्वनि ३०·००
  डा० कृष्णलाल शर्मा

उपन्यास

- कर्मपथ (उ० प्र० सरकार द्वारा पुरस्कृत) ७·००
  पं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी
- आगे-आगे उ० प्र० सरकार द्वारा पुरस्कृत १२·००
  पं० भगवती प्रसाद वाजपेयी
- एक और बेगम २०·००
  श्री बाल्मीकि त्रिपाठी
- फिलहाल २०·००
  श्री बाल्मीकि त्रिपाठी
- जहाँदारशाह १५·००
  श्री बाल्मीकि त्रिपाठी
- विकलांग १५·००
  श्री बाल्मीकि त्रिपाठी
- प्रजाप्रिय-प्रजेश १०·००
  श्री बाल्मीकि त्रिपाठी
- रात की तपस्या २०·००
  गजेन्द्रकुमार मिश्र
- वारिश ! वारिश ! २०·००
  मनोज बसु
- ईस्ट बकलैंड रोड २०·००
  चन्द्रगुप्त मौर्य

कहानी संग्रह

- मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ ५·००
  पं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी
- कथावीथी (प्रतिनिधि कहानी-संकलन) ४·००
  सं० डा० प्रेमनारायण शुक्ल
- कथायन (प्रतिनिधि कहानी संकलन) ३·५०
  सं० डा० बाल्मीकि त्रिपाठी

नाटक : एकांकी

- जय आदित्य ५·००
  डा० रामकुमार वर्मा
- अशोक का अवसान ५·००
  श्री बाल्मीकि त्रिपाठी
- शरणागत ३·५०
  श्री बाल्मीकि त्रिपाठी
- विजय व्यामोह ६·००
  श्री प्रतापनारायण श्रीवास्तव
- इंसानियत जिन्दाबाद ६·००
  डा० रामचरण महेन्द्र
- माँ की पुकार ६·००
  डा० गोपीनाथ तिवारी
- प्रत्यावर्तन ५·००
  डा० सुरेशचन्द्र शुक्ल
- पुजा के फूल ५·००
  डा० शियारामशरण प्रसाद
- वीर प्रताप केशरी ६·००
  डा० कान्तिकिशोर भरतिया
- वे उसे रोक सके ५·००
  डा० रामनारायण व्यास
- भास के नाटक ३०·००
  सं० डा० मनोहरलाल गौड़
- एकांकी सप्तक ४·००
  (हिन्दी के प्रतिनिधि एकांकियों का संकलन)
  सं० पं० अयोध्यानाथ गौड़
  डा० विश्वनाथ गौड़

काव्य

- रीतिकाव्य-नवनीत (रीतिकालीन काव्य संकलन)
  सं० डा० भगीरथ मिश्र १५·००
- कवितान्तर (नई कविता का श्रेष्ठ संकलन)
  सं० डा० जगदीशचन्द्र गुप्त १५·०
- शिवाबाजि-बावनी २५·००
  आचार्य केशवदेव शुक्ल
- कसक—हृदयनारायण पांडेय 'हृदयेश' २५·००
- जननायक (नेहरू चरितम्) ७·५०
  हृदयनारायण पाण्डेय 'हृदयेश'
- बलिदान—रामशंकर अवस्थी २०·००
  विरहिणी (उ० प्र० सरकार द्वारा २०·००
  पुरस्कृत) डा० मुंशीराम शर्मा
- भागवती आभा ३०·००
  डा० मुंशीलाल शर्मा

GRANTHAM ग्रन्थम कानपुर KANPUR
ग्रन्थम
रामबाग, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। विचार-गोष्ठी में २५ प्रतिनिधियों ने भाग लिया और सर्वश्री मोहनलाल मेहता 'सोपान' जयन्त मेघानी, डॉ० हासित बुच, जितेन्द्र देसाई, चुन्नी भाई भट्ट, कृष्णवीर दीक्षित, रघुवीर चौधरी और वनराज मालवी ने अपने-अपने निबन्ध पढ़े।

ट्रस्ट द्वारा बाल-पुस्तकों के चित्रांकनकर्त्ताओं के लिए एवं कार्य-गोष्ठी का आयोजन २० से २४ जनवरी तक किया गया। जिसमें जे० जे० स्कूल ऑफ आर्ट्स, बम्बई, सेठ कला महाविद्यालय, अहमदाबाद और आर्ट कॉलेज, बड़ौदा के २५ चुने हुए प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अपने प्रकार की इस पहली कार्य गोष्ठी में बाल-पुस्तकों की डिजाइन की समस्याओं और सम्भावनाओं से चित्रांकन-कर्त्ताओं को अवगत कराना था। इस कार्य-गोष्ठी के सम्पूर्ण कार्यक्रम में प्रायोगिक कार्यक्रम के औचित्य पर बल दिया गया। कार्य-गोष्ठी के अध्यक्ष सेठ कला महाविद्यालय के प्राचार्य श्री अरविन्द देसाई एवं तकनीकी निदेशक श्री रमेश कोठारी, निदेशक कम्यूनिटी साइंस सेन्टर थे।

भारतीय प्रकाशक संघ ने १६ से १८ जनवरी तक प्रकाशन प्रबन्ध प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया, जिसके तकनीकी संचालक श्री आनन्द आर० कुंदाजी एवं विशेष संचालक श्री मण्डावेश्वरा थे। पाठ्यक्रम के उपरान्त ३० प्रशिक्षार्थियों को प्रमाणपत्र दिये गये।

पुस्तक विक्रेताओं और प्रकाशकों के संघ ने गुजरात में १६ से २२ जनवरी तक पुस्तक विक्रेताओं के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

पुस्तक बाजार और पुरस्कार वितरण

संस्कार केन्द्र के परिसर में १५ से २३ जनवरी तक लगे पुस्तक बाजार में बड़ी संख्या में पुस्तक प्रेमी आये और साहित्य क्रय किया।

प्रकाशकों द्वारा उत्तम प्रदर्शन के लिए निम्न तीन पुरस्कार दिये गये : (१) डबल स्टाल—ब्रिटिश हाई कमीशन (ब्रिटिश कांसल डिवीजन), (२) सामान्य स्टाल—वकील्स फेंफर एण्ड सियोन्स, बम्बई और (३) स्टैण्ड एवं बड़े स्टैंण्ड—चारोतर बुक स्टाल, आनन्द। भारतीय प्रकाशक संघ द्वारा घोषित पुरस्कार ट्रस्ट की अध्यक्ष कुमारी वी० किचलू द्वारा अलग से प्रदान किये गये।

मेले की प्रचार व्यवस्था में आकाशवाणी की कामर्शियल सर्विस, समाचार पत्र विज्ञापन, सिनेमा स्लाइड, होर्डिंग्स, बस पैनेलों, बैनरों और पोस्टरों के माध्यम से की गई। आकाशवाणी ने अपने विशेष कार्यक्रम भी प्रसारित किये और कई समाचार पत्रों ने मेले के लिए विशेषांक निकाले।

नवाँ राष्ट्रीय पुस्तक मेला, बंगलौर

बंगलौर में नवाँ राष्ट्रीय पुस्तक मेला २९ दिसम्बर से ७ जनवरी, १९७९ तक मनाया गया। मेले के आयोजन में नेशनल बुक ट्रस्ट के साथ फेडरेशन ऑफ इण्डियन पब्लिशर्स, फेडरेशन ऑफ पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स एसोसियेशन्स इन इण्डिया, अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ और कर्नाटक पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स एसोसियेशन ने पूर्ण सहयोग किया। मेला स्थल ग्लास हाउस, लालबाग था, जहाँ नवम्बर ७७ से अक्टूबर ७८ तक की अवधि में भारतीय प्रकाशनों की प्रदर्शिनी लगाई गई और २०८ अन्य प्रकाशकीय प्रदर्शन एवं विक्रय स्टाल लगाये गये।

हिन्दी मण्डप

तृतीय विश्व पुस्तक मेले की भाँति बंगलौर मेले में भी हिन्दी मण्डप लगाया गया, जहाँ निजी और सार्वजनिक क्षेत्र के २१ प्रकाशकों ने अपने-अपने स्टाल लगाये। हिन्दी मण्डप में दिल्ली,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान, उत्तर प्रदेश, आदि हिन्दी भाषी राज्यों के अतिरिक्त मद्रास की मैकमिलन कम्पनी ने भी भाग लिया। इनमें ८ स्टाल सार्वजनिक क्षेत्र के थे।

३ से ७ जनवरी, १९७९ तक यहाँ पुस्तक बाजार लगा, जिसमें घटी हुई दरों पर पुस्तकों की भारी बिक्री हुई।

१९७९ को बाल वर्ष घोषित किये जाने के उपलक्ष्य में बंगलौर मेले में विभिन्न भारतीय प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित एक हजार से अधिक बाल पुस्तकों के प्रदर्शन की व्यवस्था नेशनल बुक ट्रस्ट ने की, जिनमें उसके अपने प्रकाशन भी शामिल थे।

ट्रस्ट एवं प्रकाशक संघों के कार्यक्रम

लालबाग के स्वर्ण जयंती हाल में आगामी दशक में बाल साहित्य प्रकाशन पर एक त्रि-दिवसीय सेमीनार का आयोजन २९ दिसम्बर से किया गया, जिसका उद्घाटन कर्नाटक के शिक्षा मन्त्री ने किया और ट्रस्ट के अध्यक्ष ने प्रारम्भिक भाषण दिया। १ जनवरी, १९७९ को 'बाल दिवस' घोषित करने के कारण उस दिन पुस्तक मेला बच्चों के लिए फ्री खोल दिया गया और मेले में सैकड़ों हजारों बच्चों की उपस्थिति ने अच्छा समां बाँधा। सेमीनार ने इसी दिन (१ जनवरी) अपनी सिफारिशें प्रस्तुत कीं :

(१) क्षेत्रीय भाषाओं में बाल-साहित्य का सह-प्रकाशन किया जाना चाहिए, ताकि लागत में कमी आए और क्वालिटी में फरक न आये। (२) देश में बाल साहित्य अकादमी की स्थापना की जाये। (३) पुस्तकालयों में, विशेषः ग्रामीण पुस्तकालयों में बाल साहित्य के लिए विशेष कक्ष रखे जाये।

मेले के साथ नेशनल बुक ट्रस्ट के कन्नड़ एडवाइजरी पैनेल की बैठक ट्रस्ट द्वारा किए जाने वाले आगामी कन्नड़ प्रकाशनों पर विचार-विमर्श के लिए बुलाई गई (३० दिसम्बर)। ३१ दिसम्बर को फेडरेशन ऑफ इण्डियन पब्लिशर्स ने कागज संकट सम्मेलन आयोजित किया। इस फेडरेशन ने श्रेष्ठ पुस्तक प्रकाशन पर पुरस्कार भी दिये।

हिन्दी प्रकाशक संघ का सेमीनार

फेडरेशन ऑफ पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स ने "हमारे निर्यात : आगामी पाँच वर्ष" विषय पर एक सेमीनार का आयोजन किया। अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ की ओर से 'हिन्दी को दक्षिण भारतीय भाषाओं की देन' पर १ जनवरी को एक सेमीनार आयोजित किया। ३ जनवरी को कर्नाटक पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स एसोसियेशन की ओर से कर्नाटक के पुस्तक उद्योग की समस्याओं पर सेमीनार आयोजित किया गया।

रविवार ७ जनवरी को पुरस्कार वितरण का समारोह बंगलौर पुस्तक मेले का अन्तिम कार्यक्रम था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षेत्रीय पुस्तक प्रदर्शनियाँ : देश-विदेश में हुए अन्य प्रयत्न

देश में एक ऐसा वातावरण उत्पन्न करने के लिये जिसमें अधिकाधिक लोग अधिकाधिक पुस्तकों के प्रति जागरूक हों, प्रादेशिक पुस्तक प्रदर्शनियों का महत्व निर्विवाद है। पुस्तक प्रदर्शनी में ५० से लेकर ५ लाख पुस्तकें तक प्रदर्शित की जा सकती हैं और इन्हें क्षेत्रीय प्रादेशिक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर आयोजित करना प्रायः प्रत्येक सभ्य राष्ट्र के सामाजिक जीवन का एक अंग बन चुका है।

१९६४ के वर्ष से हमारे यहाँ नियोजित और संगठित ढंग से विधिवत पुस्तक प्रदर्शनियाँ आयोजित की जा रही हैं। इसके लिये पुस्तकों की पहली वृहद् अखिल भारतीय प्रदर्शनी नई दिल्ली में २६ नवम्बर से ५ दिसम्बर १९६४ तक आयोजित की गयी। इसी प्रदर्शनी के कुछ बड़े भाग देश में ५ बड़े नगरों में प्रदर्शन के लिए १९६४-६५ के वर्ष में रखे गये। इस वर्ष नई दिल्ली के बाद अहमदाबाद बम्बई, पूना, बंगलौर और कलकत्ता में ऐसी प्रदर्शनियाँ आयोजित हुईं।

१९६५-६६ के वर्ष में लखनऊ, वाराणसी, पटना और इलाहाबाद में पुस्तक प्रदर्शनियाँ आयोजित की गयीं। १९६६-६७ में शिमला, दिल्ली, जयपुर, इंदौर, भोपाल और जबलपुर में पुस्तक प्रदर्शनियाँ हुईं। १९६७-६८ में गुजरात में अहमदाबाद, बड़ौदा, सूरत, आवनगर और राजकोट नगरों में क्षेत्रीय प्रदर्शनियाँ आयोजित की गयीं।

बाल साहित्य के लिये लेखकों का शिविर—१९६८-६९ का वर्ष पुस्तक प्रोत्साहन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस वर्ष शिमला में बाल साहित्य के लेखकों का एक ग्रीष्म कालीन शिविर आयोजित किया गया, जिसका उद्घाटन हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री डा० वाई० एस० परमार ने किया और समापन भाषण डा० निहार रंजन राय ने दिया। शिविर में प्रमुख भारतीय भाषाओं के ३० उत्कृष्ट बाल लेखकों को आमंत्रित करके उन्हें एक अवकाश गृह (हालीडे होम) में रखा गया। एक सप्ताह के इस शिविर की गतिविधियों से डा० नीहार रंजन राय, डा० के० सी० खन्ना और डा० एन० डी० सुन्दर वाडिवेलु जैसे प्रतिष्ठित शिक्षाविदों का घनिष्ठ संपर्क रहा। बाल-साहित्य के विविध पहलुओं के लेखन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से सम्बन्धित कई निबंध शिविर में पढ़े गये और उन पर सजीव परिचर्चा हुई। लेखकों में इस शिविर में भाग लेकर बाल साहित्य की विभिन्न लेखन-समस्याओं के प्रति सजगता बढ़ी और नेहरू बाल पुस्तकालय के लिए शिक्षा मंत्रालय और नेशनल बुक ट्रस्ट को नयी प्रतिभाओं की जानकारी मिली।

इस अवधि में १६ क्षेत्रीय पुस्तक प्रदर्शनियाँ—जम्मू और कश्मीर में दो, मैसूर में पाँच और महाराष्ट्र में सात—नेशनल बुक ट्रस्ट की पहल पर आयोजित की गयीं।

जम्मू और कश्मीर—जम्मू और कश्मीर की पुस्तक प्रदर्शनियों के लिये राष्ट्रीय पुस्तकालय द्वारा कश्मीर पर विभिन्न भारतीय भाषाओं में उपलब्ध पुस्तकों की एक सूची भी तैयार की गयी। प्रदर्शनियों में कश्मीरी, डोगरी, उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी और संस्कृत प्रभृति भाषाओं में प्रकाशित ३ हजार से अधिक पुस्तकें प्रदर्शित की गयीं। जम्मू में पहली प्रदर्शनी का ३१ अगस्त, १९६७, राज्य के सूचना मंत्री श्री गिरधारी लाल डोगरा द्वारा उद्घाटन किया गया। श्रीनगर में १७ सितम्बर १९६७ को हुई प्रदर्शनी का उद्घाटन जम्मू और कश्मीर के राज्यपाल श्री भगवान सहाय ने किया। इन अवसरों पर ऐकेडेमी आफ आर्ट कल्चर एण्ड लेन्ग्वेज, जम्मू और कश्मीर द्वारा मुशायरों और सेमीनार का भी आयोजन किया गया।

मैसूर—अक्टूबर, नवम्बर, १९६७ में मैसूर राज्य में पाँच पुस्तक प्रदर्शनियाँ आयोजित की गयीं, जिनमें कन्नड़, मलयालम, तेलुगु, तमिल, मराठी, हिन्दी, संस्कृत, उर्दू और संस्कृत की हाल ही प्रकाशित पुस्तकों में से चुनी हुई ३००० से अधिक पुस्तकें प्रदर्शित की गयीं, जिन्हें ४० हजार से अधिक लोगों ने देखा। बेलगाम में पुस्तक प्रदर्शनी ५ से ८ अक्टूबर तक, धारवाड़ में १२ से १५ अक्टूबर तक, मैसूर में १९ से २१ अक्टूबर तक, बंगलौर में २४ से २८ अक्टूबर तक और गुलबर्गा में ४ नवम्बर तक इस श्रृंखला की अंतिम प्रदर्शनी आयोजित हुई।

महाराष्ट्र—२४ जनवरी से १८ मार्च १९६९ तक की अवधि में महाराष्ट्र और वृहत्तर बम्बई क्षेत्र में आयोजित १० पुस्तक प्रदर्शनियों की श्रृंखला लोगों को प्रभावित करने में बहुत सफल रही। मराठी, गुजराती, हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत कन्नड़ और उर्दू में जनवरी ६६ के बाद प्रकाशित हुई पुस्तकों में से छाँटकर ४ हजार से अधिक पुस्तकें इन प्रदर्शनियों में सजाई गयीं। संख्या और प्रभाव दोनों ही दृष्टियों से में प्रदर्शनियां अपनी उद्देश्यपूर्ति में पूर्णतः सफल रहीं। इन प्रदर्शनियों को ६० हजार से अधिक लोग देखने गये।

नागपुर में पुस्तक प्रदर्शनी २४ से २७ जनवरी तक, अकोला में ३० जनवरी से १ फरवरी तक, जलगाँव में ४ से ६ फरवरी तक, औरंगाबाद में ९ से ११ फरवरी तक, शोलापुर में १४ से १६ फरवरी तक, कोल्हापुर में १९ से २१ फरवरी तक, पूना में २६ फरवरी से १ मार्च तक, बम्बई में सुन्दरबाई हॉल में ७ से ९ मार्च तक, वनिता समाज हॉल, दादर में १२ से १४ मार्च तक और भारतीय विद्या भवन हॉल में १६ से १८ मार्च तक आयोजित की गयीं, जिन्हें चाव से देखा व सराहा गया।

विशिष्ट अवसरों पर प्रदर्शनियाँ

इसके अतिरिक्त ट्रस्ट ने इस अवधि से महाराणा प्रताप जयंती समारोह, गांधी जयंती समारोह, श्री त्यागराजन १२२वाँ आराधना दिवस समारोह और राज्यों के शिक्षा सचिवों के सम्मेलन चंडीगढ़ की टी०एस० सेन्ट्रल स्टेट लाइब्रेरी के राष्ट्रीय पुस्तक सम्राट समारोह अंतर्राष्ट्रीय भूगोल सम्मेलन, टाइपोग्राफी सेमीनगर, अखिल भारतीय पुस्तकालय सम्मेलन, पंजाब विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह और मिर्जा गालिब शताब्दी समारोह आदि विशिष्ट अवसरों पर पुस्तक प्रदर्शनियों आयोजित कीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४ दिसम्बर १९६९ को बम्बई में सम्पन्न हुए तृतीय राष्ट्रीय पुस्तक मेले के लिए जो पुस्तकें संग्रहीत हुई थीं, उन्हें अलग-अलग समूहों में बाँटकर १९६९-७० वर्ष में राजस्थान और उड़ीसा राज्य के ९ क्षेत्रों में क्षेत्रीय पुस्तक प्रदर्शनियाँ आयोजित की गयीं ।

जयपुर से शुरुआत

इस वर्ष की पहली क्षेत्रीय प्रदर्शनी का १० से १४ जनवरी १९७० को जयपुर में राज्यपाल सरदार हुक्मसिंह द्वारा उद्घाटन किया गया। राजस्थान के लिए जनवरी १९६७ से लेकर अब तक प्रकाशित हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू और संस्कृत की ३६०० से अधिक पुस्तकें चुनी गयी थीं। राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ और राज्य सरकार के अनुरोध पर जयपुर, अजमेर, उदयपुर और जोधपुर में प्रदर्शनियाँ आयोजित हुईं, जिन्हें २० हजार से अधिक लोगों ने देखा और सराहा। प्रदर्शनी के साथ ही सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के प्रकाशन विभाग, राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ और नेशनल ट्रस्ट ने अपने अपने कक्ष प्रदर्शन और विक्रय के लिए लगाये। अजमेर में १७ से २० जनवरी, उदयपुर में २२ से २६ जनवरी और जोधपुर में २९ जनवरी से १ फरवरी तक से क्षेत्रीय पुस्तक प्रदर्शनियाँ राजस्थान की जनता को पुस्तकों की ओर आकर्षित करती रहीं।

उड़ीसा—उड़ीसा में ८ मार्च से ३१ मार्च, १९७० तक की अवधि में पाँच पुस्तक प्रदर्शनियाँ क्रमशः भुवनेश्वर, कटक, बरहामपुर, सम्बलपुर और राउरकेला में आयोजित की गयीं, जिनसे ३५०० से अधिक चुनी हुई पुस्तकें प्रदर्शित की गयीं। पुस्तकें उडिया, हिन्दी, अंग्रेजी, बंगाली, तेलुगु और संस्कृत भाषा से चुनी गयी थीं।

युवा पीढ़ी के लिए पुस्तकें

तृतीय राष्ट्रीय पुस्तक मेले में (१५ नव० ४ दिसम्बर)" "युवा पीढ़ी के लिए पुस्तकें विषय पर एक त्रिदिवसीय सेमीनार आयोजित किया गया। 'युवा पीढ़ी को समझना, "युवा पीढ़ी के लिए लिखना' और 'पुस्तकें जो उन्हें नहीं मिल पातीं' आदि समस्याओं पर जोधपुर विश्वविद्यालय के उपकुल-पति प्रो० वी. वी. जॉन, सुविख्यात लेखक और फिल्म प्रोड्यूसर ख्वाजा अहमद अब्बास, प्रो. एम. वी. राजाध्यक्ष श्री जे. सी. माथुर, डा० वी. एस. झा. श्री गुलाव दास शेकर, कु० कुर्रतुलेन हैदर और श्री एच. वाई. शारदा आदि लेखकों, पत्रकारों और शिक्षाविदों ने अपने विचार व्यक्त किये।

इस वर्ष आयोजित अन्य सेमीनारों में प्रमुख हैं "ज्ञान दी माइन्डस शव बुकसेलर्स एण्ड पब्लिशर्स, और "मीट दी ऑथर्स" कार्यक्रम, जिनमें प्रकाशकों पुस्तक विक्रेताओं के अतिरिक्त मराठी हिन्दी और अंग्रेजी के प्रमुख लेखकों ने भी उत्साह से भाग लिया।

संसद भवन में प्रदर्शनी

१२ अप्रेल से ६ जून १९७० तक हुई राष्ट्रीय एकता प्रदर्शनी में पुस्तकों का मण्डप लगाया गया और १८ से २० दिसम्बर १९६९ तक इससे पूर्व संसद भवन में नेशनल बुक ट्रस्ट के प्रकाशनों की एक प्रदर्शनी आयोजित की गयी थी जिसे संसद सदस्यों ने काफी सराहा।

इसी वर्ष मई से अक्टूबर की अवधि में हांगकांग जगरेब भारतीय पुस्तकों की प्रदर्शनी लगायी और ८ से १३ अक्टूबर तक फ्रैन्कफर्ट बुक फेयर में भारत को प्रतिनिधित्व दिया अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में भारतीय पुस्तकों की यह पहली प्रदर्शनियाँ थीं। ये प्रदर्शनियाँ २४ दिन चलीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरियाणा व पंजाब में प्रदर्शनियाँ

अनुभव से यह सिद्ध हुआ है कि क्षेत्रीय प्रदर्शनियाँ ऐसे स्थानों पर जहाँ बड़े और अद्यतन पुस्तकालयों का अभाव है, क्षेत्र की एक बहुत बडी घटना बन जाती हैं और सभी पढ़े लिखे लोगों के लिए मेले का रूप ले लेती हैं। १९७०-७१ में हरियाणा और पंजाब को इस पुस्तक-जागरूकता आयोजन के लिए चुना गया। हरियाणा में २ सितम्बर से १८ सितम्बर १९७० तक ४ क्षेत्रीय प्रदर्शनियों का शृंखलाबद्ध आयोजन किया गया। चंडीगढ़ पंचायत भवन में २ से ५ सितम्बर तक, डी. ए. वी. कालेज अम्बाला में ८ से १० सितम्बर तक और एम. एल. एन. कालेज यमुना नगर में १२ से १४ सितम्बर तक और एस. डी. स्कूल करनाल में १६ से १८ सितम्बर तक लगी इन प्रदर्शनियों को हरियाणावासियों ने भारी संख्या में बड़े उत्साह के साथ देखा, सराहा।

पंजाब में इस प्रदर्शनी-माला का उद्घाटन लुधियाना में पंजाब कृषि विद्यालय के कुलपति डा. एम. एस. रंधावा द्वारा १० फरवरी को किया गया। दूसरी प्रदर्शनी जलंधर के टाउन हाल में (१६-१८ फरवरी) तीसरी इण्डियन एकेडेमी ऑफ फाइन आर्टस अमृतसर में (२१-२३ फरवरी और चौथी स्टेट सेन्ट्रल लाइब्रेरी पटियाला में (२७ फरवरी से २ मार्च १९७० तक) लगायी गयीं।

लेलिन शताब्दी— इसी वर्ष में लेलिन शताब्दी समारोह मनाया जा रहा था। इस सिलसिले में "लेलिन और उनका युग" नाम से प्रदर्शनियाँ दिल्ली: मद्रास और बम्बई में शिक्षा मंत्रालय के आग्रह पर ने० बुक ट्रस्ट द्वारा लगायी गयीं। अंग्रेजी व भारतीय भाषाओं में इसी निम्नलिखित लगभग १००० पुस्तकें इन प्रदर्शनियों में फोटोग्राफों सहित सजायी गयीं। ये प्रदर्शनियाँ १६ दिनों तक चलीं।

कार्टून-कथा

लोगों को ताश या गपबाजी जैसे निष्फल व्यसनों से मुक्त कर उन्हें पठनशील बनाने के लिये ने० बु० ट्रस्ट ने विख्यात कार्टूनिष्ट अहमद से एक चित्र-कथा तैयार करायी और चतुर्थ राष्ट्रीय पुस्तक मेले के अवसर पर इस चित्रमाला की १० हजार प्रतियाँ वितरित की गयीं। इन्हीं कार्टूनों के बड़े छायाचित्र बनाकर भी मद्रास पुस्तक मेले में लगाये गये थे। यह कार्टून कथा काफी लोकप्रिय रही। इसके अतिरिक्त सिनेमा स्लाइड्स और होर्डिंगो द्वारा भी आकर्षक नारों के प्रचार का निश्चय किया गया।

"बुक्स इण्डिया"

यूनेस्को द्वारा पेरिस से प्रकाशित मासिक 'यूनेस्को कूरियर' को हिन्दी और तमिल में भारत में प्रकाशित किया गया और लगभग १ वर्ष के पिछले अंक निकालकर पत्रिका को नियमित रूप दिया गया। "बुक्स इण्डिया" नाम से एक नयी पत्रिका की शुरूआत की गयी, और उसका प्रथम अंक चतुर्थ राष्ट्रीय पुस्तक मेले के अवसर पर प्रकाशित किया गया। इसमें प्रमुख साहित्यकारों द्वारा समस्त भारतीय भाषाओं की साहित्यिक झाँकी प्रस्तुत की गयी और १० सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों की समीक्षा के साथ सभी प्रमुख भाषाओं की सौ महत्वपूर्ण अंकों की सूची प्रकाशित की गयी।

बुक्स फ्राय इण्डिया—डेट्रोइट बुक फेयर फैंकफर्ट बुक फेयर लंदन बुक ऐक्जिसिबिशन और पूर्व अफ्रीका जाने वाले भारतीय प्रशासकों के मंडल के लिए इस वर्ष "बुक्स फ्राम इण्डिया" शीर्षक से कई पुस्तक सूचियाँ प्रकाशित की गयीं। इन सूचियों में अंग्रेजी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की पुस्तकों के विषय में देश के और विदेश के पाठकों के लिए जानकारी दी गयी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैसूर में लेखकों का शिविर

३० मई १९७० को मैसूर के आल इण्डिया राइटर्स होम में अ० वी० के० आर० वी० राव द्वारा प्रथम लेखक शिविर का उदघाटन किया गया। इसमें कन्नड़, मलयालम, मराठी और सिन्धी के २६ प्रमुख लेखकों को साहित्य अकादमी के परामर्श पर बुलाया गया। इस शिविर में प्रसिद्ध उर्दू शायर श्री फैज अहमद फैज पब्लिकेशन्स डिवीजन के निदेशक श्री० सी० एल० भारद्वाज, डा० डी० पी० पट्ट-नायक और डा० वी० एस० झा ने भी कुछ समय भाग लेकर अपना योगदान किया।

श्री० बी० सीता रमैया ने कन्नड़ भाषा पर और श्री० एन० वी० कृष्ण वारियर ने मलयालम पर लेख पढ़े श्री अनंत काणेकर और श्री बंसत वी० बापट द्वारा मराठी पर और श्रीरामपंजवानी लिखित सिन्धी पर निबंध डा० एन० एच० समताकी द्वारा पढ़ा गया। दूसरा दिन हमारे साहित्य में मानवीय परम्परायें विषय पर परिचर्चा हुई। आये हुए लेखकों ने अपनी कुछ रचनाएँ भी शिविर में सुनायीं। ३ जून के समापन अधिवेशन में समाज के विकास में लेखकों के योगदान पर चर्चाएँ हुईं। शिविर में हुई चर्चाओं से सिद्ध हुआ कि सभी भाषाओं के साहित्य में पर्याप्त समानतायें पायी जाती हैं और प्रायः लेखक के लिए विषय भी एक जैसे ही चुने जाते हैं।

दूसरा लेखक शिविर मद्रास

२ जनवरी, १९७१ को मद्रास में दूसरा लेखकों का शिविर आयोजित किया गया। इसमें तमिल, तेलुगु, गुजराती और उर्दू के ३४ आमंत्रित लेखकों में से २० ने भाग लिया और सात पर्यवेक्षकों ने भी शिविर में अपना योग दिया।

शिविर का पहला अधिवेशन साहित्य में मानवीय परम्पराओं पर विचार-विमर्श के साथ प्रारम्भ हुआ, जिसमें श्री वरदराजन, डा० रमापति राव और श्री अली सरदार जाफरी ने तमिल, तेलुगु और उर्दू भाषाओं में इन मानवीय परम्पराओं पर प्रकाश डाला। एक अन्य अधिवेशन में पृथकतावादी तत्वों से निबटने में साहित्य की भूमिका पर विचार किया गया। सर्व की मी० प० सोमसुन्दरम, वी० आर० नरला, और प्रो० रघुवीर चौधरी द्वारा निबन्ध पढ़े गये और डा०मोहम्मद हसन का भाषण हुआ।

इस शिविर में भाग लेने वाले लेखकों ने अपनी-अपनी भाषा की श्रेष्ठ रचनाओं का पाठ किया और अंतिम अधिवेशन में इन चारों भाषाओं के वर्तमान स्वरूप को दर्शन की चेष्टा की गयी। डा० के० ए० फारुखी ने बताया कि सन ४७ के बाद के उर्दू साहित्य में स्वदेश प्रेम, धर्म निरपेक्ष दृष्टि-कोण, उदार मानवतावाद और शरणार्थियों की व्यथा की खुल कर अभिव्यक्ति हुई है और उसके रूप में निखार आया है। श्री ना० पार्थसारथी ने तमिल के आधुनिक कवियों. साहित्यिक गुणों और पत्र-पत्रि-काओं की भूमिका की ओर ध्यान दिलाया। डा० सी० के० मेहता ने बताया कि गुजराती साहित्य में लेखकों का झुकाव परम्परा की ओर भी रहा है और आधुनिकता की ओर भी, और दोनों ही प्रकार के लेखक स्वात्योत्तर साहित्य में अपना नाम चमका चुके हैं। डा० अंजनेयुलू ने बताया कि तेलुगु में गत वर्षो में प्रकाशन की गति शिथिल रही है। कथा साहित्य कुल प्रकाशति साहित्य का तीन चौथाई भाग घेर लेता है।

इस शिविर में लेखकों की संध्याएं भी आयोजित हुईं, जिसमें लेखक राष्ट्रीय पुस्तक मेले में आये हुए पाठकों से मिले, उनके प्रश्नों के उत्तर दिये और अपने और अपनी कला के विषय में जानकारी दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ट्रान्सलेटर्स आन ट्रान्सलेशन

१३ जनवरी, १६७१ को मद्रास में एक त्रिदिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गयी जिसका विषय था "ट्रान्सलेटर्स आन ट्रान्सलेशन". संगोष्ठी का उद्घाटन मद्रास विश्वविद्यालय के कुलपति श्री एन० डी० सुन्दरवाडि वेलु ने किया। डा० प्रभाकर मचावे और डा० के० वीर भडराव दास द्वारा भारत जैसे विकासशील देश में अनुवाद के लिए "पुस्तकों के चयन के मापदंड" पर निबन्ध पढ़े गये और "विज्ञान और तकनीकी पुस्तकों का अनुवाद" पर डा० एम० पी० पेरियास्वामी घूरन और डा० गोपाल शर्मा के निबन्ध पढ़े गये। दो अन्य विषय जिन पर निबन्ध पढ़े गये थे—'सृजनात्मक लेखन का अनुवाद, और "बालपाठकों के लिए अनुवाद" संगोष्ठी में हुई चर्चाओं से महसूस किया गया कि अनुवाद से विम्ब की चारों दिशाओं पर वातायन खुल जाते हैं और दुनिया पार सिमट कर आ जाती है।

विदेशों में प्रदर्शनी

इस वर्ष 15वीं भ्रमरी की अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी, डेट्रायट, सिंगापुर, सुवा (फीजी), फैन्कफर्ट बुक फेयर और इण्डिया हाउस लंदन में भारतीय पुस्तकों की प्रदर्शनियां आयोजित की गयीं। चतुर्थ राष्ट्रीय पुस्तक मेले के अवसर पर लोगों की पुस्तक पढ़ने की आदतों का सर्वेक्षण किया गया और सर्वे की रिपोर्ट प्रकाशित की गई।

हिमाचल प्रदेश में पुस्तकें

१६७१-७२ के वर्ष में हिमाचल प्रदेश में ६ स्थानों पर पुस्तक प्रदर्शनियाँ लगायी गयीं जो १५ मई से १३ जून तक क्रमशः शिमिला सोलन, नहान, मंडी, धर्मशाला और चम्बा में पुस्तक प्रेमियों को भारी संख्या में आकर्षित करने में सफल हुईं। इन प्रदर्शनियों का उद्घाटन मुख्यमंत्री वार्ड, एस. परमार द्वारा शिमला में किया गया।

इस वर्ष दिल्ली में दो स्थानों पर निओन-साइन में पुस्तकों के लिए नारे प्रदर्शित किये। एक नारा अंग्रेजी में "बुम्स योर बेस्ट फ्रेन्डस" और दूसरा हिन्दी में "पुस्तक उत्क्रमसाही" प्रदर्शित किया गया है। एक दिल्ली रेलवे स्टेशन के सामने सार्वजनिक पुस्तकालय पर और दूसरा कनाट प्लेस में।

तीसरे और चौथे लेखक शिविर

नेशनल बुक ट्रस्ट ने शिक्षा मंत्रालय के अनुरोध पर लगाये जाने वाले लेखकों के शिविर की माला के तीसरे और चौथे शिविर क्रमशः शिमिला और पूना में आयोजित किये। शिमिला में असामिया, अंग्रेजी हिन्दी एवं पजाबी भाषा के १७ प्रसिद्ध लेखकों ने भाग लिया और लंदन से प्रकाशित "एडम" के सम्पादक श्री मिरन ग्रिन्डिआ एक पर्यवेक्षक के रूप में शिविर में सम्मिलित हुए। पूना में बंगाली कश्मीरी उड़िया और संस्कृत के लेखकों का शिविर आयोजित हुआ।

दोनों शिविरों में गत वर्ष की भाँति मानवीय परम्पराओं पर और विघटनकारी प्रवृत्तियों को रोकने में साहित्य में योगदान पर चर्चाऐं हुईं और तत्कालीन साहित्यक स्थिति की जानकारी की गयी। लेखकों ने शिविर में स्वरचित और अपनी भाषा की अन्य वृतियों का पाठ किया और साथ ही इनके हिन्दी अथवा अंग्रेजी अनुवाद सुनाने की भी व्यवस्था की गयीं। शिमला शिविर में सुझाव आये कि शिविरों को और अधिक अनौपचारिक रूप दिया जावे जो निबन्ध पढें जायें, उनकी प्रतियां पहले से वितरीत कर दी जायें, शिविर में स्वेच्छा से विषय लिये जा सकें, लेखकों के लिए एक पत्रिका प्रकाशित हो, बहुभाषी प्रकाशन गृहों का प्रोत्साहन मिले और उन्हें सहकारी आधार पर चलाया जावे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूना शिविर में विकासशील समाज में लेखक की भूमिका पर चर्चा की गयी। यह महसूस किया गया कि सृजन धर्मी लेखक किसी का प्रचारक नहीं होता और वह विघटन की प्रवृत्ति के विरुद्ध खुलकर अपनी आवाज उठा सकता है।

पुस्तक प्रदर्शनियाँ

सिंगापुर में हुए २ अप्रैल से ७ अप्रैल १९७१ के प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले में भारत के तीन सौ से अधिक चुने हुए प्रकाशक प्रदर्शित किये गये। वाशिंगटन में से ३१ मार्च तक एशियाई अध्ययन के लिए वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर भारत के चुने हुए ३५० प्रकाशनों की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई। इन्हीं पुस्तकों की प्रदर्शनी १५ से ३० अप्रैल तक मेक्सिको सिटी में लगायी गयी। मेक्सिकों स्थित भारतीय दूतावास ने ग्वाडालाजारा नगर अधिकारियों और अन्तर्राष्ट्रीय मैंची वेन्ड के अनुरोध पर २६ मई से १ जून १९७१ तक यही प्रदर्शनी ग्वाडालाजारा नगर में भी लगायी गयी। बेनेजुएला के कारावास नगर मे मेक्सिको में प्रदर्शित पुस्तकों की एक प्रदर्शनी अक्टूबर में दो सप्ताह तक आयोजित की गई। इसके बाद १४ अक्टूबर से १९ अक्टूबर तक फ्रैन्कफर्ट बुक फेयर में भारत का प्रतिनिधित्व उसके चुने हुए ४५० प्रकाशनों ने किया। वैन्कूवर के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले के अवसर पर २ से १० जून तक कनाडा की राष्ट्रीय प्रदर्शनी के अवसर पर १९ प्रान्त से ६ सितम्बर तक टोरन्टो नगर में ३५ भारतीय प्रकाशकों के १५० से अधिक ग्रथ प्रदर्शित किये गए और भारतीय प्रकाशकों की सूचियाँ विपरीत की गई। मान्ट्रीयल में 'मनुष्य और उसका संसार' प्रदर्शनी में ११ जून से ६ सितम्बर तक १९७० में वर्ष में प्रकाशित चुनी हुई १५० पुस्तकों को दर्शाया गया।

७२-७३ में दस क्षेत्रीय प्रदर्शनियाँ

१९७२-७३ के वर्ष में पश्चिमी उत्तर प्रदेश में तीन, केरल में चार, असम में दो और शिलांग (मेघालय) में एक क्षेत्रीय पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित हुई। इन क्षेत्रीय प्रदर्शनियों में राष्ट्रीय पुस्तक मेलों के लिए संग्रहीत पुस्तकों के भाग दिखाये जाते हैं, जिसमें क्षेत्रीय भाषा, पड़ोस क्षेत्र की भाषा और हिन्दी व अंग्रेजी के ग्रन्थ प्रदर्शित किए जाते हैं।

पश्चिम उत्तर प्रदेश के आगरा, अलीगढ़ व मेरठ नगरों में प्रदर्शनी के लिए जनवरी १९७० के बाद प्रकाशित हुई, पुस्तकों में से ४ हजार टाइटल छोड़ गए, जो हिन्दी, अँग्रेजी, उर्दू और सस्कृत में थे। प्रदशनियों में पेपर बैक्स और बाल पुस्तकों के लिए पृथक अनुमान थे। ये प्रदर्शनियाँ २४ से २७ जुलाई तक आगरा में, २९ जुलाई से १ अगस्त तक अलीगढ़ में और ५ अगस्त को इसका अध्यापन मेरठ विश्वविद्यालय के कुल पति द्वारा मेरठ में, किया गया।

केरल की क्षेत्रीय प्रदर्शनी के लिए मलयालम, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, संस्कृत, उर्दू, हिन्दी एवं अंग्रेजी के ४५०० से अधिक टाइटिल चुने गए। पहली प्रदर्शनी त्रिवेन्द्रम में २३ से २७ अगस्त तक दूसरी बोक्षामय में ३१ अगस्त से ३ सितम्बर तक, तीसरी एरनाकुलम में ४ से ६ सितम्बर और चौथी कालीकट में ८ से ११ सितम्बर तक आयोजित हुई त्रिवेन्द्रम की प्रदर्शनी के साथ स्थानीय आयोजकों इथर दुर्लभ ग्रंथों और पाडुलिपियों की भी एक प्रदर्शनी आयोजित की गयी थी और कई मलयालम प्रकाशकों द्वारा अपने स्टाल लगाये गये थे। ओनाम के त्यौहार के कारण इस प्रदर्शनी में दर्शक भी भारी संख्या में आये।

मार्च १९७३ में असम के गौहाटी और डिब्रूगढ़ नगरों के लिए ५५०० असमिया, बंगला, हिन्दी, उड़ीसा, संस्कृत व हिन्दी पुस्तकें चुनी गईं और गौहाटी प्रदर्शनीय से १२ मार्च तक चलीं, और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२० स्थानीय प्रकाशकों ने भी पुस्तकें स्टाल्स इसके साथ अपने-अपने कक्ष में लगाये । जिला पुस्तकालय की ओर से दुर्लभ ग्रन्थों व पाण्डुलिपियों की प्रदर्शनी भी इसी अवसर पर रखी गई । डिब्रूगढ़ में प्रदर्शनी २४ से २७ मार्च तक रही । १६-१९ मार्च तक शिलांग में स्टेट सेन्ट्रल लाइब्रेरी हॉल में लगी प्रदर्शनी का उद्घाटन संजय के मुख्यमन्त्री कैपेन विलियम सन० ए० सिनेमा द्वारा किया गया । इसमें खासी और गारों भाषा की कुछ पुस्तकें भी प्रदर्शित की गयीं ।

कुछ विशिष्ट प्रदर्शनियाँ

१५ सितम्बर को विज्ञान भवन में केन्द्रीय शिक्षा परामर्शक मण्डल की बैठक और राज्यों के शिक्षा मन्त्रियों और शिक्षा सचिवों के सम्मेलन के अवसर पर नेशनल बुक ट्रस्ट के प्रकाशनों की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई । इसी प्रकार दिल्ली की आन्ध्र एजूकेशन सोसाइटी को रजत जयंती के अवसर पर ट्रस्ट ने हिन्दी, अँग्रेजी, तेलुगु के प्रकाशनों की प्रदर्शनी आयोजित की गई और अवसर पर शिक्षाविदों का एक सम्मेलन भी आहूत किया गया । १९७२ के एशियाई अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में ३ नवम्बर से १२ दिसम्बर तक केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय द्वारा लिए गये दो मण्डलों में ट्रस्ट ने अपने प्रकाशन प्रदर्शन एवं बिक्री के लिए रखे। ऐसे ही कक्ष २५ दिसम्बर से ३१ जनवरी तक चले राष्ट्रीय व्यापार मेले में भी लगाये गये । बनारस विश्वविद्यालय ४७ में अखिल भारतीय शिक्षा सम्मेलन के अवसर पर भी ट्रस्ट ने अपने प्रकाशन प्रदर्शन के लिए रखे ।

विदेशों में प्रदर्शन

इस वर्ष २८ सितम्बर से ३ अक्टूबर तक भारत ने फ्रैंकफर्ट के अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले में भाग लिया । ९ से १७ नवम्बर तक कुआलालमपुर में आयोजित पुस्तक आयोग की प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में भी भारत का प्रतिनिधित्व हुआ । २३ जनवरी से ४ फरवरी तक काहिरा के अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले में भारत ने भाग लिया, २६ से २८ जनवरी तक रोम में भारतीय पुस्तकों की प्रदर्शनी हुई, २३-३० नवम्बर को तेहरान की पुस्तक प्रदर्शनी में भारत शामिल हुआ । ४-१० दिसम्बर को काबुल की अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी में २०-२७ दिसम्बर तक बांगला देश के अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले में भारत ने हिस्सा लिया और १६-२६ सितम्बर तक नेपाल में हिन्दी पुस्तकों की एक प्रदर्शनी आयोजित हुई ।

पर्वतीय प्रदेश में प्रदर्शनियाँ

इन दिनों प्रायः सभी महत्वपूर्ण सम्मेलनों, सेमीनारों, कनवेन्शनों, अनुवादकों की कार्यशालाओं, लेखक शिविरों, पुस्तक विमोचन, समारोहों एवं अन्य समारोहो के साथ पुस्तकों के प्रदर्शन एवं विन्दम कक्ष लगने लगे हैं, जिसमें नेशनल बुक ट्रस्ट एक प्रमुख भूमिका अदा करता है । १९७३-७४ के वर्ष में १५-१६ नवम्बर को अमेरिकन इन्टरनेशनल स्कूल के बुक फेयर में नेशनल बुक ट्रस्ट एवं राजधानी दिल्ली के सभी प्रमुख प्रकाशकों ने उत्साह से भाग लेकर अपने-अपने कक्ष लगाये । १४-१६ नवम्बर को आयोजित इण्डियन लाइब्रेरी एसोसियेशन के बाल पुस्तक मेले में जो दिल्ली के सार्वजनिक पुस्तकालय में लगा था, ट्रस्ट ने अपने प्रकाशनों की प्रदर्शनी लगा दी । ३१ जनवरी से ११ फरवरी तक हुए छठे राष्ट्रीय पुस्तक मले में १९७३ तक के नेशनल बुक ट्रस्ट के सभी प्रकाशन छाँट कर प्रदर्शित किये गये । उत्तर प्रदेश के मंसूरी (१४-१८ जून) और नैनीताल (२२-२६ जून) पर्वतीय नगरों में क्षेत्रीय पुस्तक प्रदर्शनियाँ लगाई गई ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेशों में पुस्तक प्रदर्शनियाँ

११ से १६ अगस्त १९७३ तक सिंगापुर के अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले में भारत ने भी भाग लिया। अक्टूबर में जांबिया की बाल पुस्तक प्रदर्शनी में भी भारत सम्मिलित हुआ और १०-१६ अक्टूबर तक भारत फैंकफर्ट के अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले मे शरीक हुआ। १२-१८ नवम्बर तक भारत ने अंकारा (तुर्की) की बाल पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया और जनवरी-फरवरी १९७४ में पेरिस की बाल पुस्तक प्रदर्शनी में। फैन्कफर्ट पुस्तक मेले के लिए चुनी गई पुस्तकों की प्रदर्शनियाँ ६ माह से अधिक समय तक जापान के नौ नगरों में आयोजित की गयीं। ये पुस्तकें पब्लिशर्स एसोसियेशन फार कल्चेरल एक्सचेंज के माध्यम से जापान भेजी गयीं और टोकियो नागोया, क्योतो, हिरोशिया, फ्यूकूओका, मत्सूयामा, मानाजाक, सेन्दई और साप्पोरो में इनकी प्रदर्शनियाँ आयोजित की गयीं।

आंध्र प्रदेश में प्रदर्शनियाँ

१९७४-७५ के वर्ष में क्षेत्रीय पुस्तक प्रदर्शनियाँ आंध्रप्रदेश के विजयवाड़ा, विशाखा पटनम और तिरुपति नगरों में आयोजित की गयीं।

इसके अतिरिक्त "प्रगति के कदम" नामक पुस्तकों और छायाचित्रों की एक प्रदर्शनी १—५ अप्रैल १९७४ तक आयोजित हुई जो योजना आयोग के परामर्श पर नेशनल बुक ट्रस्ट और डी० ए० वी० पी० के संयुक्त प्रयासों से आयोजित की गयी। सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन विषयक ४५० पुस्तकें और भारत के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में परिवर्तन को दिखाने वाले लगभग २५० छायचित्र इस प्रदर्शनी में प्रदर्शित किये गये। भारतीय लेखकों के गिल्ड द्वारा २९-३० दिसम्बर को दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय लेखक सम्मेलन के अवसर पर लगभग २००० पुस्तकों की एक प्रदर्शनी लगायी गयी।

विश्व हिन्दी सम्मेलन—नागपुर में विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर १०-१६ जनवरी १९७५ तक नेशनल बुक ट्रस्ट और अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ ने मिलकर २०० हिन्दी प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित ५ हजार पुस्तकों की प्रदर्शनी आयोजित की गयी। इस प्रदर्शनी के उपराष्ट्रपति श्री बी० डी० जत्ती ने भी देखा। मैसूर विश्वविद्यालय में ७ से १० मार्च तक वि० वि० पुस्तकालय तथा इण्डियन बुक हाऊस ने मिलकर भारतीय भाषाओं ३ हजार बाल पुस्तकों की प्रदर्शनी १४ वें वार्षिक अंतर्भारतीय बाल साहित्य विषयक सम्मेलन के अवसर पर लगायी गयी। यही प्रदर्शनियाँ १३-१५ मार्च तक बंगलौर विश्वविद्यालय में १७—१९ मार्च तक एग्रीकल्चर यूनीवर्सिटी लाइब्रेरी में और २२-२५ तक धारवाड़ में भी दिखायी गयी।

डायरेक्टोरेट आफ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन पंजाब द्वारा ३१ अक्टूबर को आयोजित चंडीगढ़ पुस्तक प्रदर्शनी में बुक ट्रस्ट द्वारा पंजाबी, हिन्दी और अंग्रेजी की कुछ चुनी हुई पुस्तकें प्रदर्शित की गयीं। नई दिल्ली में १-५ नवम्बर तक आयोजित राज्य शिक्षा सचिवों तथा शिक्षा निदेशकों के सम्मेलन के अवसर पर सभी भाषाओं की पुस्तकों की प्रदर्शनी आयोजित की गयी। लखनऊ में १४-२५ नवम्बर तक सम्पन्न बच्चों की पुस्तकों के अंतर्राष्ट्रीय मेलों में अंग्रेजी, हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की पुस्तकें प्रदर्शित की गयीं। १४-२० नवम्बर तक निजामाबाद में हुए राष्ट्रीय पुस्तकालय समाप्त २८-३१ तक दिल्ली में हुए राष्ट्रीय लोक सम्मेलन, २९ दिस० ४ जनवरी १९७५ तक बम्बई में हुए विश्व शिक्षा वृत्ति के १७ वें अंतरष्ट्रीय सम्मेलन अहमदाबाद कृषि एवं औद्योगिक प्रदर्शनी और मैसूर में ७-१० मार्च तक हुए १४ वे अंतर्भारतीय तरुण सम्मेलन के अवसरों पर भी पुस्तक प्रदर्शनियाँ आयोजित की गयीं। मैसूर, बंगलौर और धारवाड़ में हुई पुस्तक प्रदर्शनियों में पुस्तक सूचियाँ भी वितरित की गयीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेशों में प्रदर्शनियाँ

वर्ष १९७४-७५ में १७ अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भारत की पुस्तकें भी प्रदर्शित की गयीं। ये हैं—चिल्ड्रन्स बुक एक्जीवीशन, बोलोग्ना (४-७ अप्रेल) चौथा सिंगापुर बुक फेयर (५-१० अप्रेल) बांगलादेश नेशनल बुक फेयर (१५-२१ अप्रेल) बुक एक्जीवीशन इन बैंकाक (२१-२८ अप्रेल)- इण्डियन बुकफियर न्यूयार्क (२-८ जून), एक्जीवीशन आफ इण्डियन बुक्स इन सांतियागो (अगस्त ७४), श्री लंका साहित्य डे सेलीब्रेशन्स (७-१५ सितम्बर), इन्टरनेशनल बुक फेयर, सोफिया (२१-२९ सित०), फ्रैन्कफर्ट बुक फेयर (१०-१५ अक्टू०), १२ वाँ एनुअल कामन वैल्थ बुक फेयर (९ अक्टूबर-३ नव०), इन्टरनेशनल चिल्ड्रन्स बुक्स एक्जीवीशन, अंकारा (१०-१६ नव०) सेकण्ड इण्डिया बुक फेयर, न्यूयार्क (१४-२३ नव०) एक्जीवीशन आफ इण्डियन बुक्स इन बेरूत (२-१७ नव०), नेशनल बुक वीक एक्जीवीशन, मनीला (२३-३० नव०) एक्जीवीशन आफ बुक इन आग (२६ जन०), सेवन्थ केयरो इन्टरनेशनल बुक फेयर (२९ जन०-७ फरवरी) और बांगलादेश नेशनल बुक फेयर (१५-२१ फरवरी)।

प्रदर्शनियाँ ही प्रदर्शनियाँ

१९७५-७६ के वर्ष में ५-१४ मार्च १९७६ को आयोजित प्रथम कलकत्ता पुस्तक मेले में जिसका आयोजन पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स गिल्ड की ओर से किया जाना, जनवरी ७४ और सितम्बर ७५ के मध्य प्रकाशित ५ हजार से अधिक भारतीय पुस्तकें प्रदर्शित की गयीं। इनके अतिरिक्त यहाँ २५० बाल पुस्तकें भी प्रदर्शित की गयीं।

क्षेत्रीय पुस्तक प्रदर्शनियाँ

१९६४-६५	अहमदाबाद, बम्बई, पूना, बंगलौर और कलकत्ता	५
१९६५-६६	लखनऊ, वाराणसी, पटना, इलाहाबाद	४
१९६६-६७	शिमला, देहली, जयपुर, इंदौर, भूपाल और जबलपुर	६
१९६७-६८	अहमदाबाद, बड़ौदा, सूरत, भावनगर, राजकोट	५
१९६८-६९	श्रीनगर, जम्मू बेलगाम, धारवाड़, मैसूर बँगलौर और गुलबर्गा, नागपुर अकोला, जलगाँव, औरंगाबाद, शोलापुर, कोल्हापुर पूना और बम्बई (३,)	१७
१९६९-७०	जयपुर, अजमेर, उदयपुर, जोधपुर, भुवनेश्वर, कटक, बरहामपुर सम्बलपुर और राउरकेला	९
१९७०-७१	अम्बाला, यमुनानगर, करनाल, चण्डीगढ़, लुधियाना, जलंधर, अमृतसर, पटियाला	८
१९७१-७२	शिमिला, सोलन, नहान, मंडी, धर्मशाला, चम्बा	६
१९७२-७३	आगरा, अलीगढ़, मेरठ, त्रिवेन्द्रम, कोट्टायम, एर्नाकुलम, कालीकट, गौहाटी डिब्रूगढ़, शिलांग	१०
१९७३-७४	मसूरी, नैनीताल	२
१९७४-७५	विजयवाड़ा, विशाखापटनम, तिरुपति	३
१९७६-७७	हैदराबाद, तिरुपति, विजयवाड़ा, विशाखापटनम, बड़ौदा, भावनगर, राजकोट ओर सूरत	८
१९७७-७८	जम्मू, श्रीनगर	२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रकाशक संघ की पहल से राष्ट्रीय पुस्तक समारोह और पुस्तक मेले

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ द्वारा प्रथम राष्ट्रीय पुस्तक समारोह १४ से २१ नवम्बर १९६१ तक मनाया गया, और दूसरे वर्ष फिर ४ से १४ नवम्बर १६६१ तक दूसरा राष्ट्रीय पुस्तक समारोह दिल्ली में ही मनाया गया।

द्वितीय पुस्तक समारोह के बाद ५ से १० दिसम्बर तक संघ द्वारा एक सेमीनार "पाठ्य सामग्री के लिए पुस्तक व्यवसायी संगठनों का योगदान" विषय पर संयोजित किया गया, जिसका उद्घाटन शिक्षा सचिव श्री प्रेमकृपाल ने किया और जिसमें सर्वश्री मुल्कराज आनन्द, बी० एस० केशवन और डी० आर० कालिया जैसे जाने-माने लोगों ने भी भाग लिया।

१९६२-६३ के वर्ष में भारत सरकार ने भी नवसाक्षरों के लिए साहित्य शिविरों का आयोजन पुनः प्रारम्भ करने का निर्णय लिया। मैसूर और आन्ध्र प्रदेश में दो शिविर लगाने का कार्यक्रम स्थिर किया। इसी वर्ष बाल पुस्तक की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में एक-एक हजार रुपये के २९ पुरस्कार प्रदान किये गये। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने घोषणा की कि भारतीय भाषाओं में लिखी आयुर्विज्ञान की श्रेष्ठ पुस्तकों पर १० हजार और ५ हजार रुपये के दो पुरस्कार दिये जायेंगे।

इसी वर्ष यूनेस्को के सहयोग से गठित दिल्ली सार्वजनिक पुस्तकालय की ९९वीं स्थापना जयन्ती पर डा० कालूलाल श्रीमाली केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री ने समारोह की अध्यक्षता की। १ दिसम्बर १९६२ को राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन ने चण्डीगढ़ में ६ लाख की लागत से द्वारकादास पुस्तकालय के लिए निर्मित लाजपत भवन का शिलान्यास किया।

१९६३ का वर्ष भारत में पुस्तकप्रदर्शनियों का रहा। बम्बई में प्रकाशक संघ की ओर से पुस्तक मेला आयोजित हुआ। मद्रास में दक्षिण भारत की पुस्तक उद्योग परिषद ने तमिल, तेलुगु, मलयालम कन्नड़, अंग्रेजी और हिन्दी में १९६२ में प्रकाशकीय पुस्तकों की प्रदर्शनी आयोजित की। दिल्ली विश्वविद्यालय ने दुर्लभ ग्रन्थों और पाण्डुलिपियों की प्रदर्शनी आयोजित की, जिसमें गुरु ग्रन्थ साहब और कुरान शरीफ की फोटोकापियां भी रखी गईं। गुरु ग्रन्थ साहब की फोटो प्रति एक इंच × पौन इंच की और कुरान की फोटो प्रति पौन इंच × आधा इंच की थीं, जिन्हें सूक्ष्मदर्शी की सहायता से पढ़ा जा सकता था।

दिल्ली में एक-एक प्रदर्शनी ब्रिटेन और सोवियत रूस की विज्ञान पाठ्य पुस्तकों की भी आयोजित हुई; किन्तु सबसे अधिक प्रभावशाली वाशिंगटन पोस्ट का बाल-पुस्तक मेला रहा। इस अवसर पर बाल साहित्य की समस्याओं पर एवं सेमीनार भी आयोजित किया गया। ८२ अमरीकी प्रकाशकों ने भी इस वर्ष विज्ञान की पुस्तकों की एक और प्रदर्शनी दिल्ली में आयोजित की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२६ नवम्बर से ४ दिसम्बर १९६४ तक नई दिल्ली में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित प्रथम अखिल भारतीय पुस्तक प्रदर्शनी को यूनेस्को के करांची प्रादेशिक कार्यालय से प्रकाशित इन्फार्मेशन बुलेटिन के जुलाई, ६५ के अंक में प्रथम राष्ट्रीय पुस्तक मेला स्वीकार किया है। यह पुस्तक मेला फेडरेशन ऑफ पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स एसोसियेशन्स इन इण्डिया और भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के सहयोग से ट्रस्ट ने संयोजित किया था। इस मेले में १९६० के बाद भारतीय भाषाओं में प्रकाशित चयन के लिए प्रस्तुत १८ हजार पुस्तकों में से १४,४०० पुस्तकें प्रदर्शन के लिए छाँटी गयीं, जो ३१ भारतीय भाषाओं में थीं। मेले का उद्घाटन २६ नवम्बर को नई दिल्ली में राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन ने किया केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री० एम० सी० छागला ने उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की।

इस दिल्ली प्रदर्शनी के साथ "वर्तमान भारत में किन पुस्तकों की आवश्यकता है।" विषय पर एक सेमीनार आयोजित किया गया। इस सेमीनार में पाँच विभिन्न विषयों पर अधिवेशन रखे गये। प्रत्येक अधिवेशन में पहले व्याख्यान और बाद में उसपर चर्चायें की गयीं। "पढ़ने की आदतें और पुस्तकालय" विषय पर अधिवेशन का संचालन डा० वी० एस० केशवन ने किया। "उत्पादन की समस्याएँ कागज, मुद्रण और जिल्दसाजी" विषय पर बैठक का संचालन एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई के पी० एस० जयसिंह ने किया, "वितरण की समस्याएँ, पुस्तक बिक्री का अर्थशास्त्र" विषयक विचार विमर्श हिगिन बाथम्स, मद्रास के श्री० वी० बालाराम द्वारा संचालित हुआ और "साहित्य और जीवन पुस्तक में क्या हो" परिचर्चा का संचालन श्री मुल्कराज आनन्द द्वारा किया गया। अन्तिम अधिवेशन में इन चारों परिचर्चाओं का उपसंहार किया गया।

१ दिसम्बर से प्रकाशकों, पुस्तक विक्रेताओं और उनके एजेण्टों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन फेडरेशन के उपाध्यक्ष श्री सदानन्द भटकल की अध्यक्षता में आयोजित किया गया, जिसमें कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किये। सेमीनार में और इस सम्मेलन में पुस्तक उद्योग के ५५ प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन की प्रमुख सिफारिशें ये हैं :

(१) पुस्तकालय आन्दोलन को बल देने के लिए सभी सिफारिशों पर अविलम्ब प्रभावी कदम उठाये जायें :

(२) प्रकाशकों और थोक विक्रेताओं को पुस्तकालयों एवं शिक्षण संस्थाओं को किताबों की सप्लाई के लिए पुस्तक विक्रेताओं को ही उचित माध्यम माना जावे और

(३) टेन्डर प्रथा समाप्त की जाये।

पुस्तक समारोह के अन्त में एक ६२ पृष्ठीय स्मारिका का भी प्रकाशन किया गया, जिसमें नेशनल बुक ट्रस्ट की कहानी और पुस्तक उद्योग से सम्बद्ध विषयों पर लेख महत्वपूर्ण थे।

बम्बई का प्रथम राष्ट्रीय पुस्तक मेला

बम्बई के क्रास मैदान में राष्ट्रीय पुस्तक मेले का ५ नवम्बर, १९६६ को गुजरात के राज्यपाल श्री नित्यानन्द कानूनगो ने उद्घाटन किया और नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष डा० बी० वी० केस्कर ने पुस्तक प्रेमियों का मेले में स्वागत किया। मेले में ८ हजार नयी पुस्तकों की प्रदर्शनी और १५० प्रदर्शन एवं बिक्री स्टाल लगाये गये। ब्रिटेन, फ्रांस, अमरीका, सोवियत रूस एवं अन्य विदेशों के भी मेले में आकर्षक स्टाल लगाये गये। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विभिन्न भारतीय भाषाओं की संध्यायें आयोजित की गयीं।

मेले के अवसर पर महाराष्ट्र के स्वास्थ्य मंत्री डा० रफीक जकारिया ने १६ नवम्बर को प्रकाशकों के सम्मेलन का उद्घाटन किया। मेले के साथ ही पुस्तक विक्रेताओं का एक सम्मेलन और हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकों का एक सेमीनार भी आयोजित हुआ। देशभर में पुस्तक सप्ताह भी मनाया गया। कलकत्ता में इण्डियन एसोसियेटेड पब्लिशिंग कम्पनी ने बंगाली पुस्तकों की प्रदर्शिनी समायोजित की।

मेले के समापन समारोह की अध्यक्षता केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मन्त्री राजबहादुर ने की और सर्वोत्तम स्टाल के पुरस्कार ऊषा प्रिन्टर्स और पी० सी० मानकतला को प्रदान किये।

द्वितीय राष्ट्रीय पुस्तक मेला, दिल्ली

१६ दिसम्बर १९६७ को राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन ने दूसरे राष्ट्रीय पुस्तक मेले का उद्घाटन किया। नई दिल्ली में ३१ दिसम्बर तक चले, द्वितीय राष्ट्रीय पुस्तक मेले का आकल्पन फ्रेंन्कफर्ट बुक फेयर के अनुरूप किया गया, जहाँ १९६६-६७ में १० हजार नवीन प्रकाशन प्रदर्शित किये गये और भारत और विदेशों के २०० पुस्तक कक्ष प्रदर्शन और बिक्री के लिए लगाये गये। इस मेले को ८० हजार से अधिक लोगों ने देखा और लाखों की पुस्तकें यहाँ से क्रय कीं। मेले में सर्वोत्तम स्टाल के दो पुरस्कार क्रमशः मैं० डी० बी० तारापुरवाला एण्ड सन्स को और से मैं० विली ईस्टर्न लिमिटेड को प्रदान किये गये। मेले के साथ ही विदेशी भाषाओं में भारत विषयक पुस्तकों की एक और प्रदर्शनी सांस्कृतिक सम्बन्धों की भारतीय परिषद द्वारा नई दिल्ली में आयोजित की गयी और नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता में चुनी हुई भारतीय भाषाओं की आधुनिक पुस्तकों की प्रदर्शनी रखी गयी।

मेला स्थल पर ही नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा एक सेमीनार "भारत में पुस्तक-समीक्षा" पर आयोजित किया गया जिसमें सर्वश्री आर्थर आइजेन बर्ग, बी एस० केशवन, सी० बी० राव०, एम० वी० राज्याध्यक्ष, डी० आर० मनकेवर, बी० वी० केसकर, एम० हसन, जी० एस० तालिब, एस० जी० भटकल, इन्दर मलहोत्रा और कुन्ही कृष्णन जैसे धुरंधरों ने भाग लिया।

दूसरी सेमीनार यूनेस्को की ओर से दक्षिणी भाषाओं के बुक ट्रस्ट द्वारा मेले के साथ आयोजित हुई जिसका विषय था "बाल पुस्तकें"। सेमीनार का उद्घाटन ने०बु० ट्रस्ट के चेयरमैन डा०बी० वी, केसकर ने किया और तकनीकी निदेशन डा० के० शिवराम करन्थ ने किया। सेमीनार की प्रमुख सिफारिश एक अखिल भारतीय परिषद की स्थापना के लिए थी, जो कि बाल साहित्य में हुए कार्यों का समन्वय कर सके।

इसी अवसर पर अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ द्वारा उसकी "मासिक पुस्तक प्रदर्शनी योजना" पर एक सेमीनार सम्पन्न हुआ, जिसे संघ के अध्यक्ष श्री रामलाल पुरी ने क्रान्तिकारी योजना बताया। इस योजना में नियमित मासिक पुस्तक प्रदर्शनियों के लिए प्रदर्शनी स्थलों की स्थापना की जानी थी ताकि नवीनतम पुस्तकों के बारे में लोगों को पता लग सके। इन प्रदर्शनियों में सभी प्रकाशकों से अपने नवीनतम प्रकाशनों की प्रतियाँ भेजने को कहा गया। जो कि प्रदर्शनी के बाद उन्हें वापस मिल जायेंगी।

फेडरेशन आफ पब्लिशर्स एण्ड बुक्सेलर्स ने एक सेमीनार 'पुस्तक वितरण' पर आयोजित किया, जिसमें प्रचार और बिक्री की समस्याओं पर विचार हुआ। दूसरी बैठक फेडरेशन ने 'कापीराइट' पर एक गोलमेज चर्चा के रूप में बुलायीं।

भारतीय ग्रामों में प्रसार योजना

अखिल भारतीय प्रकाशक संघ के तत्कालीन अध्यक्ष श्री रामलाल पुरी और यूनेस्को के मध्य हुए एक समझौते के अन्तर्गत अनुबन्ध संख्या (एल. टी. ०८३४१) उत्तरी भारत में अप्रैल से अक्टूबर १९६७ तक ग्राम पुस्तक अभियान चलाया गया।

भारत की ८० प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में रहती है, और इस ग्रामीण जनता को इस प्रायोगिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योजना का लक्ष्य बनाया गया। उद्देश्य यह था कि ग्रामीण जनता की पढ़ने की ओर पुस्तकों की ओर रुचि जागृत से और देश में चल रहे आर्थिक और सांस्कृतिक पुर्नर्निर्माण की गतिविधियों की उन्हें जानकारी मिल सके ताकि वे भी इन गतिविधियों में अपनी भूमिका निभा सकें। यह महसूस किया गया कि ग्रामों में अल्पमोली तथा सुरुचिपूर्ण साहित्य सुलभ करना अपने आप में एक बड़ी सेवा है।

प्रारम्भिक सेमीनार

१९६६ की २६ जुलाई को अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ ने प्रारम्भिक कदम के रूप में दिल्ली सार्वजनिक पुस्तकालय में एक सेमीनार "ग्राम पुस्तक अभियान योजना की क्रियान्विति कैसे हो" विषय पर आयोजित किया। इस सेमीनार में श्री बांकेबिहारी भटनागर, सम्पादक साप्ताहिक हिन्दुस्तान, लिट्रेसी हाउस लखनऊ के श्री कस्तूर चन्द गुप्ता, ग्रामविकास परामर्शदात्री समिति के श्री शालिग्राम 'पथिक', श्री दयानन्द वर्मा एवं अन्य लोगों ने भाग लिया।

इस सेमीनार की प्रमुख सिफारिशें और निर्णय निम्न थे :

(१) ऐसी संस्थाओं का, जो गाँवों में विद्यमान हैं, जैसे सर्व सेवा संघ सहयोग प्राप्त किया जावे।

(२) पुस्तक विक्रेताओं के अतिरिक्त ऐसे लोगों का भी सहयोग लिया जावे जिनका गांव के सामाजिक जीवन में प्रमुख स्थान है; जैसे प्रिन्सिपल, अध्यापक, पोस्टमास्टर, पंचायत अधिकारी, उपजिला शिक्षा अधिकारी और शिक्षित महिलायें आदि।

(३) इस दिशा में समाचारपत्रों व रेडियो, फील्ड पब्लिसिटी आदि से प्रचार भी सहायक होगा।

निदेशकों की नियुक्ति

१६ अगस्त, १९६६ में संघ की कार्यकारिणी ने अपनी एक बैठक में योजना का एक मसविदा स्वीकृत किया जो अध्यक्ष श्री रामलाल पुरी द्वारा यूनेस्को को प्रस्तुत किया गया। योजना पर अमल के लिए पाँच क्षेत्र चुने जाने थे, जिनमें प्रत्येक में ६ केन्द्र हों अर्थात् कुल ३० केन्द्रों पर यह योजना आजमाई जानी थी। अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के महामन्त्री श्री कृष्णचन्द्र बेरी इस योजना के तकनीकी निदेशक थे और क्षेत्रीय संयोजक सर्वश्री पुरुषोत्तमदास मोदी (लखनऊ क्षेत्र), दीनानाथ मल्होत्रा और अमरनाथ वर्मा (दिल्ली) उमराव सिंह मंगल (जयपुर) ठाकुर चन्द द्वादश श्रेणी (इलाहाबाद) और जसवन्त भाई जी (इन्दौर)।

वाराणसी में अक्टूबर, १९६६ की बैठक में सभी क्षेत्रीय संयोजक इस बात पर सहमत थे कि सब क्षेत्रों के लिए प्रचार सामग्री एक जैसी हो, सभी केन्द्र ऐसे पुस्तक विक्रेताओं द्वारा चलाये जायें, जिनकी दूकानें क्षेत्र के मध्य में पूर्वस्थित हों, और सभी केन्द्रों पर प्रदर्शन की सामग्री भी समान हो। प्रचार की अवस्था में ही शिक्षण संस्थाओं के प्रिन्सिपल और अध्यापकों को योजना में सम्मिलित कर लिया जाना था। जहाँ धनाभाव न हो, वहाँ के समारोहों में आस-पास के गाँवों के बीस प्रतिष्ठित लोग भी आमंत्रित किये जाने का निश्चय हुआ। जिन केन्द्रों पर समारोह न हो सकें, वहाँ हैण्डबिलों तथा पोस्टरों द्वारा प्रचार करने का निश्चय किया गया।

कार्यारम्भ

जो क्षेत्र इस योजना के अन्तर्गत चुने गये थे, उनमें वाराणसी और इलाहाबाद क्षेत्र अकाल-ग्रस्त घोषित कर दिये गये। इसी समय देश में आम चुनाव भी प्रारम्भ हो गये। फलतः यूनेस्को से इस कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का समय ६ माह के लिए बढ़ा देने का अनुरोध किया गया, जिसे यूनेस्को के क्षेत्रीय डाइरेक्टर श्री स्मिथ ने स्वीकार कर कार्यकाल ३१ अक्टबर, १६६७ तक के लिये बढ़ा दिया।

केन्द्रीय कार्यालय वाराणसी ने क्षेत्रीय अधिकारियों को इसके लिए एक परिपत्र भेजा, जिसमें योजना से लेकर सर्वेक्षण फार्म का प्रारूप तक था। इस योजना में प्रदर्शित होने वाली तथा विक्रय की जाने वाली पुस्तकों के सम्बन्ध में संघ के १२५ सदस्यों को एक परिपत्र भेजकर कम मूल्य की ग्रामोपयोगी पुस्तकें क्षेत्रीय संयोजकों के पास भेजने को कहा गया। परिपत्र में यूनेस्को के सहयोग से प्रकाशित पुस्तकों को प्राथमिकता देने को कहा गया। योजना को लगभग २० प्रकाशकों ने आगे बढ़ाया, किन्तु हिन्दी प्रकाशक संघ के पास कोश न होने के कारण और पुस्तकें नहीं मँगाई जा सकीं। फिर भी विभिन्न विषयों पर लगभग ५०० तरह की पुस्तकें प्राप्त हुई और सभी केन्द्रों पर लगभग एक सी पुस्तकों का प्रदर्शन किया गया।

पुस्तक केन्द्रों और विक्रेताओं का चयन

केन्द्रीय कार्यालय के निर्देशों के अनुसार क्षेत्रीय संयोजकों ने बिक्री केन्द्र स्थापित करते समय इन बातों का ध्यान रखा : (१) केन्द्र ऐसा हो जिसके पास बीस अच्छे खेतिहर गाँव हों और निकट ही विकास खण्ड कार्यालय हो, (२) स्थानीय शिक्षण संस्थाओं की संख्या का ध्यान रखा गया, (३) निकटस्थ क्षेत्रों में हस्तशिल्प या कुटीर उद्योग भी हों। यह तय किया गया कि किस पुस्तक विक्रेता या अखबार बेचने वाले को यह काम सौंपा जाये, जो गाँवों में पढ़ने वाली जनता से परिचित हो और शीघ्र संपर्क बना सके। यदि अखबार बेचने वाला है, तो भी उसके पास ऐसी जगह है जहाँ पुस्तकें सजाकर प्रदर्शित की जा सकें ? ऐसे पुस्तक विक्रेताओं को यह निर्देश दिया गया कि वह अध्यापकों की सहायता से निकट के बीस गाँवों का शैक्षिक सर्वेक्षण भी प्रस्तुत करें।

सभी केन्द्रों में प्रचार के लिए हैण्डबिल, पोस्टर, निमन्त्रण पत्र, बैनर, कन्टेनर (केवल वाराणसी, इलाहाबाद, और दिल्ली केन्द्रों पर) और बुक रैक रखे गये।

प्रसार कार्य—वाराणसी

बड़ा गाँव—वाराणसी क्षेत्र में इस योजना का शुभारम्भ बड़ा गाँव के बलदेव डिग्री कालेज मैदान में २ अप्रेल, १६६७ को किया गया। समारोह में हिन्दी उर्दू के प्रसिद्ध कवियों, साहित्यकारों, शिक्षाविदों, प्राध्यापकों आदि ने भाग लिया। विद्यालय के प्रिन्सिपल श्री रघुनाथ प्रसाद श्रीवास्तव ने एक मील लम्बे रास्ते को झंडियों व पताकाओं से सजा दिया था। समारोह के मुख्य वक्ता नागरी प्रचारिणी सभा के प्रधानमन्त्री श्री सुधाकर पांडेय और डा० किशोरीलाल गुप्त थे। सभी प्रमुख समाचार पत्रों ने इस समारोह के विवरण प्रकाशित किये। केन्द्र में प्रदर्शित पुस्तकों को पहले ही दिन २ हजार दर्शकों ने देखा।

बड़ा गाँव के आस-पास एक गर्ल्स नार्मल स्कूल, एक डिग्री कालेज, सोलह हाई स्कूल, और आठ जूनियर हाई स्कूल उस समय थे।

भदोही—इस केन्द्र का उद्घाटन १४ मई, १६६७ को इन्द्र बहादुर सिंह इंटर कालेज के प्रांगण में हुआ। विद्यालय के प्रिन्सिपल श्री मिश्री प्रसाद और मैनेजर श्री राधेश्याम गुप्त समारोह के संयोजक थे। पुस्तक केन्द्र के व्यवस्थापक भारती भवन के संचालक श्री अब्दुल रशीद थे। इस आयोजन के लिए प्रमुख वक्ता 'आज' के सम्पादक श्री लक्ष्मीशंकर व्यास थे, और इस सम्मेलन में ४ हजार व्यक्तियों ने भाग लिया। मुख्य कार्यक्रम थे—कवि सम्मेलन, पुस्तक प्रदर्शनी और चलचित्र प्रदर्शन।

भदोही कालीन उद्योग का केन्द्र है, जहाँ इस उद्योग के श्रमिक क्षेत्र भर में फैले हुए हैं। जिले का यह वाराणसी के बाद दूसरे नम्बर का शहर है। आस-पास ८ सार्वजनिक पुस्तकालय और लगभग ५० शिक्षण संस्थायें यहाँ उस समय कार्य कर रही थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कछवा रोड—इस केन्द्र का उद्घाटन २१ अगस्त को स्थानीय गाँधी विद्यालय हायर सेकेण्डरी स्कूल में प्रिन्सिपल श्री लालताप्रसाद शर्मा की अध्यक्षता में हुआ। केन्द्र व्यवस्थापक श्री भगवती प्रसाद ने अपनी दूकान से लेकर विद्यालय तक के मार्ग को झंडियों, बैनरों से सजाया और आस-पास के गाँवों में लाउडस्पीकर से प्रचार कराया।

समारोह का उद्घाटन श्रीलंका प्रवासी प्रख्यात बौद्ध श्री महन्तआनन्द कौसल्यायन ने किया। समारोह में यह सुझाव प्राप्त हुआ कि गाँवों में बुक बैंक स्थापित किये जाने चाहिए।

जमानियाँ—केन्द्र का उद्घाटन स्थानीय हिन्दू डिग्री कालेज के प्रिन्सिपल और प्रतिष्ठित समालोचक डा० किशोरीलाल गुप्त ने किया। यह कस्बा गेहूँ की मण्डी है और रेलवे स्टेशन निकट होने के कारण यहाँ यातायात की सुविधा भी उपलब्ध है। डा० किशोरीलाल गुप्त की रूचि और सक्रिय सहयोग से क्षेत्र के रुचि-सर्वेक्षण में पर्याप्त सहायता मिली।

इसी प्रकार **चन्दौली** तथा **रामनगर** में भी पुस्तक केन्द्र खोले गये, जिनके लिए आस-पास के गाँवों में लाउडस्पीकर से प्रचार कराया गया और हैण्डबिल बाँटे गये। ग्रामीणों ने पुस्तकों में रुचि तो दिखाई किन्तु आर्थिक विपन्नता के कारण पुस्तकालय में पुस्तकें उपलब्ध कराने की इच्छा जाहिर की।

प्रसार अभियान—दिल्ली

ग्राम पुस्तक प्रसार के दिल्ली अभियान के लिए केन्द्र चुनाव का कार्य सर्व श्री गोपीनाथ अमन (प्रमुख सामाजिक कार्यकर्त्ता), दयानन्द वर्मा (महामन्त्री संघ), प्रो० धर्मचन्द सन्त (दयाल सिंह कालेज) और अमरनाथ (दिल्ली के क्षेत्र संयोजक) ने गाँव-गाँव घूम कर किया। अलीपुर विकास खण्ड अधिकारी कंझावला और बवाना आदि ग्रामों के प्रमुख व्यक्तियों से परामर्श के उपरान्त इन ६ गाँवों में पुस्तक केन्द्र खोलने का निश्चय किया गया। बिजवासन, पूठ खुर्द, बादली, बवाना, नंगल ठाकरान और नांगलोई। श्री दयानन्द वर्मा और श्री अमरनाथ ने पुस्तक केन्द्रों के संचालक नियुक्त किये जो इस प्रकार हैं :

१. श्री हरि भारद्वाज, लाइब्रेरियन, एम० सी० हायर सेकन्डरी स्कूल, नंगल ठाकरान,
२. श्री पन्नालाल, न्यूज एजेन्ट, बवाना
३. श्री राम प्रकाश, संचालक प्रकाश बुक डिपो, नांगलाई
४. श्री मोती राम, भूतपूर्व उपाध्यक्ष, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, बादली
५. श्री बी० एस० शर्मा, संचालक, बालविहार, विजवासन
६. श्री माँगे राम, सामाजिक कार्यकर्त्ता, पूठ खुर्द

३१ अगस्त तक इन केन्द्रों में पुस्तकें, स्टेशनरी, प्रचार सामग्री, साइन बोर्ड आदि पहुँचा दिये गये। दिल्ली क्षेत्र के संयोजक ने अपनी व्याख्या में कहा है कि ये सभी गाँव, गाँव न होकर दिल्ली नगर के सब टाउन बने हुए हैं। सर्वेक्षण फार्म पढ़े लिखे लोगों ने ही अधिकतर भरे हैं। सर्वेक्षण से निष्कर्ष यह निकला है कि लोग पढ़ना चाहते हैं, किन्तु पुस्तकें खरीदना नहीं चाहते। अतः यहाँ पुस्तकालयों की स्थापना होनी चाहिए।

नंगल ठाकरान—कृषि की दृष्टि से यह क्षेत्र उन्नत है। यहाँ के पाण्डुझोड में लोग जन्माष्टमी पर नहाने आते हैं। कृषि पण्डित की उपाधि से विभूषित चौधरी जुम्मन ने पुस्तक समारोह में उत्साह से भाग लिया और यह श्रेय केन्द्र व्यवस्थापक श्री हरि भारद्वाज को है कि यहाँ बड़ी संख्या में लोग समारोह में भाग लेने आये।

बवाना—कंझावला विकास खण्ड का यह सबसे बड़ा गाँव है। सब्जी, अनाज आदि की यहाँ दुकानें भी हैं। आस-पास लगभग १२ शिक्षण संस्थायें हैं। लावारिस या आवारा बच्चों के लिए दो बाल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विहार और एक पुस्तकालय भी यहाँ चल रहे हैं। श्री पन्नालाल, न्यूज एजेन्ट ने १६ गांवों में समारोह के निमन्त्रण भिजवाकर लोगों को एकत्र किया, जिनमें छात्रों की संख्या काफी थी।

नांगलोई—यह सामुदायिक विकास खण्ड का मुख्यालय है। यहाँ पूसा रिसर्च इन्स्टीट्यूट का केन्द्र, १० शिक्षण संस्थायें और दो पुस्तकालय चल रहे हैं। सरकारी बीज भण्डार भी यहीं हैं। केन्द्र व्यवस्थापक श्री राम प्रकाश ने क्षेत्र में योजना का प्रचार किया।

बादली—यादवों के इस गाँव में एक मेडिकल स्कूल, हायर सेकण्डरी स्कूल, प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र, परिवार नियोजन केन्द्र, कटाई-सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण केन्द्र तथा पशु अस्पताल चल रहे हैं। श्री मोतीराम, (केन्द्र व्यवस्थापक) के उत्साह से उद्घाटन समारोह में ५०० व्यक्ति भाग लेने आये।

पूठ खुर्द—यहां मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज का ग्रामीण प्रशिक्षण केन्द्र चल रहा है। पास ही ६ शिक्षण संस्थायें और एक पुस्तकालय भी है। केन्द्र व्यवस्थापक मास्टर माँगेराम यहाँ के क्लब के संचालक और एक अध्यापक हैं।

बिजवासन—एक अस्पताल, दो हायर सेकण्डरी स्कूल, एक मिडिल स्कूल और प्राइमरी स्कूल, हायर गाँव में हैं। यह गाँव नेशनल फिजिकल लेबोरेटरीज का वैज्ञानिक गतिविधि का केन्द्र है। केन्द्र व्यवस्थापक श्री भीमशंकर शर्मा ने योजना का प्रचार कराया।

जयपुर में अभियान

राजस्थान के जयपुर क्षेत्र में जहाँ क्षेत्रीय संयोजक श्री उमरावसिंह मंगल को नियुक्त किया गया था, श्री मंगल की सेवायें उपलब्ध न होने पर यह भार श्री चम्पा लाल राँका ने अपने कन्धों पर ले लिया। शहर से २० से ८० मील की दूरी तक के अल्प विकसित, अर्द्ध-विकसित और विकसित सभी प्रकार के निम्न केन्द्र चुने गये :

शाहपुरा—जयपुर-दिल्ली राष्ट्रीय मार्ग पर जयपुर से ३० मील पर स्थित यह कस्बा हजार की आबादी का है। आसपास का क्षेत्र कृषि प्रधान है। बस-स्टैण्ड यातायात का मुख्य केन्द्र है। आस-पास ८ शिक्षण संस्थायें भी चलती हैं। केन्द्र व्यवस्थापक श्री रामेश्वर प्रसाद बजाज ने आस-पास के गाँवों में प्रचार के बाद केन्द्र पर ४००पुस्तकें प्रदर्शित कीं।

कोटपूतली—इस तहसील मुख्यालय पर एक महाविद्यालय, दो उच्चतर विद्यालय चल रहे हैं। यातायात का प्रमुख साधन बस है। यह क्षेत्र शिक्षानुरागी है। केन्द्र व्यवस्थापक श्री मदन लाल ने बड़ी लगन के साथ यहाँ समारोह आयोजित किया।

दौसा—भूतपूर्व जयपुर राज्य की पहली राजधानी (देवगिरि) होने का ही नहीं इस नगरी को भक्त सुन्दरदास की जन्मभूमि होने का भी गौरव प्राप्त है। यहाँ पत्थर की मूर्तियाँ गढ़ने के उद्योग के अतिरिक्त बढ़िया किस्म का कच्चा लोहा भी पाया जाता है। केन्द्र व्यवस्थापक श्री ओमप्रकाश शर्मा ने पुस्तक प्रसार योजना में काफी उत्साह दिखाया यहाँ एक कालेज, एक संस्कृत कालेज, दो हायर सेकण्डरी स्कूल हैं। एक साबुन फैक्टरी भी है। दौसा के मन्दिर भी सुन्दर हैं।

राजगढ़—बावड़ियों, बगीचों और भव्य मन्दिरों का यह केन्द्र जयपुर से ८० मील दूर है। यहाँ नया महाविद्यालय खुला है। दो माध्यमिक विद्यालय भी हैं। यहाँ लाइम स्टोन की खानें हैं, और मुख्य धन्धा पत्थर कलई का है। केन्द्र व्यवस्थापक श्री प्रह्लादराय गुप्त ने पुस्तक प्रसार योजना को कारगर ढंग से चलाया।

कालाडेरा—जयपुर से २७ मील दूर इस कस्बे में सेठ सहगरिया महाविद्यालय और एक माध्यमिक विद्यालय चल रहे हैं। इनमें एक हजार से अधिक छात्र पढ़ते हैं (६७)। क्षेत्र में गाँवों के दो हजार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। कृषि और व्यापार यहाँ के मुख्य धन्धे हैं। उद्घाटन समारोह का आयोजन केन्द्र व्यवस्थापक श्री रघुनाथ प्रसाद कुमावत ने किया।

चौमू—जयपुर से २० मील दूर २० हजार की आबादी वाले इस नगर में भारत प्रसिद्ध खादी उत्पादन केन्द्र हैं। यहाँ पर एक उच्च माध्यमिक शाला व एक उच्च प्राथमिक शाला है।

राजस्थान के गाँवों में पुस्तक प्रसार का ऐसा कार्य पहली बार हुआ और अनुभव ने सिद्ध किया कि इस प्रकार का अभियान प्रतिवर्ष चलाया जाये तो पठन-पाठन की अभिरुचि के विकास में पर्याप्त सफलता मिल सकती है। यहाँ के पुस्तक व्यवसाइयों में ग्रामोपयोगी पुस्तकों के लिए रुचि जगी और शिक्षकों एवं शिक्षाधिकारियों ने भरपूर सहयोग दिया। विचार-विमर्श में तय पाया गया कि गाँवों में आर्थिक उन्नति का रास्ता दिखाने वाली सरल भाषा की उपयोगी पुस्तकें खूब चलेंगी, जिनका अधिकाधिक प्रकाशन होना चाहिए।

इलाहाबाद और इन्दौर

अकाल पीड़ित होने के कारण इलाहाबाद क्षेत्र में यह अभियान विशेष सफलताएँ अर्जित नहीं कर सका। (1) हँडिया, (2) जँवई, (3) सिरसा, (4) नैनी और (5) फूलपुर में केन्द्र स्थापित तो किये गये, किन्तु लोगों को अन्न की भूख थी, फिलहाल पुस्तकों की नहीं।

इन्दौर क्षेत्र के धारनाका नामक गाँव में इस योजना के अन्तर्गत मई में एक केन्द्र खोला गया। पंचायत अधिकारी और साहित्यकारों की उपस्थिति में विधायक श्री भागवत साबू ने ज्ञानदीप जलाकर केन्द्र का उद्घाटन किया। केन्द्र पर कृषि, गौ-पालन, कताई-बुनाई, ग्रामोद्योग, स्वास्थ्य, चिकित्सा, बाल साहित्य, महिलोपयोगी पुस्तकें, प्रौढ़-शिक्षा, अध्यात्म, सर्वोदय और ग्रामोपयोगी विषयों पर पुस्तकें प्रदर्शित की गयीं।

विक्रय और रुचि के सर्वेक्षण

प्रयत्नों और प्रयोगों के परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण जनता की पुस्तकें पढ़ने में रुचि तो है, किन्तु उनमें खरीदने की क्षमता का अभाव है। फिर भी कुछ औद्योगिक क्षेत्रों में पुस्तकें बिकीं, और यदि ऐसे प्रयोग दोहराये जाते रहे तो ग्रामीण जनता में खरीदकर पढ़ने की रुचि अवश्य जागृत होगी। पुस्तक विक्रेताओं के अनुभव से पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में सिनेमा और अश्लील साहित्य के प्रति जो रुचि है, उसका परिष्कार कालान्तर में निरन्तर सत्साहित्य के प्रचार से किया जा सकता है। हाँ, धार्मिक साहित्य की जरूर कुछ माँग है।

पाठकों की रुचि पाठकों की रुचि के सर्वेक्षण के लिए प्रत्येक केन्द्र पर २०० से ५०० सर्वेक्षण फार्म भेजे गये, जिनमें से केवल ६५० फार्म रिपोर्ट के समय लौटकर प्राप्त हुए। अतएव केवल उतने से ग्रामीण पाठकों की ही रुचि का सर्वेक्षण किया जा सका जो कि पुस्तक केन्द्र पर आये और जिन्होंने फार्म भरकर दिये। बड़ी आयु के पाठकों ने छोटे आकार की पुस्तकें पढ़ने में रुचि दिखाई, तो छोटी आयु के पाठकों ने बड़ी-बड़ी पुस्तकों में। बड़े आयु के लोगों के पास अन्य आयु वर्ग के लोगों से पुस्तकें भी कम मात्रा में थीं। गांवों में पुस्तकालयों की संख्या भी ५ प्रतिशत ही पाई गयी।

कठिनाइयाँ—गाँव के पाठकों को संक्षेप में निम्न कठिनाइयाँ हैं :

(१) पुस्तकालयों का अभाव, (२) शिक्षा की कमी, (३) निर्धनता, (४) पुस्तकों का अधिक मूल्य और (५) पुस्तकों के प्रचार में कमी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्तुतियाँ

(१) ग्रामों के लिए पुस्तक विक्रेता प्रशिक्षित किये जायें। इन्हें क्षेत्र के इतिहास, समाज उद्योग और आर्थिक स्तर से परिचित होना चाहिए।

(२) फिलहाल गाँवों में पुस्तक विक्रेताओं का रिफ्रेशर कोर्स चलाया जावे।

(३) गाँवों में पुस्तकों के प्रचार के लिए प्रशिक्षार्थी गाइड तैयार की जाये।

(४) "पुस्तकें पढ़ें—गाँव समुन्नत करें"– जैसे आकर्षक नारों वाले पोस्टर गाँव के बाजार में लगाये जायें।

(५) गाँवों के लिए 25 पैसे से 50 पैसे मूल्य की विविध विषयों की पुस्तकें तैयार कराई जायें, जो मेलों एवं बाजारों में बेची जायें।

(६) लोक साहित्य प्रौढ़ों के लिये बड़े अक्षरों में और बच्चों के लिए सचित्र प्रकाशित किया जाये।

(७) गाँवों में पुस्तकें पहुँचाने के लिए चलती-फिरती दुकानें पहुँचाई जायें।

अतीत से अनुराग

फ्रेंकफर्ट में हुए पिछले विश्व पुस्तक मेले में जिन जर्मन पुस्तकों को अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई उनसे एक बार फिर सिद्ध हुआ कि पाठकों में अतीत के प्रति अत्यन्त अनुराग है। लोग जानना ही चाहते है कि जो जमाना बीत गया वह कैसा था। ललित साहित्य के बाहर की कृतियों में यह बात विशेषत: देखने में आयी। एक नया विषय जिसकी पुस्तकें बहुत अधिक बिकीं वह है प्रशिया, जर्मनी का अतीतकालीन साम्राज्य। जिन दो दर्जन लेखकों की पुस्तकें बहुत अधिक बिकती हैं उनकी इस विषय पर पुस्तकें मेले में पहली बार प्रस्तुत हुई थीं।

ऐसा तब हुआ था जब प्रशियन साम्राज्य का कोई स्मृति दिवस मेले के दिनों अथवा इस वर्ष के आसपास नहीं पड़ा था। फिर भी इस विषय की पुस्तकें सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तकों में सबसे ऊपर पहुँच गयीं।

अतीत के प्रति अनुराग जागृत करने में कुछ "व्यापार बुद्धि वाले" प्रकाशकों का प्रयत्न विशेष माना जाता है।

जर्मन अतीत पर लिखी इन नवीन पुस्तकों का कोई तालमेल इतिहास की पारस्परिक पुस्तकों से नहीं है : इन्हें लिखा ही इनसे आय करने के लिए गया है। अतीतकालीन विशिष्ट व्यक्तियों की जीवनियाँ लोकप्रिय बनाने के लिए इस प्रकार रची गयी हैं, और तत्कालीन जर्मन साम्राज्य का ऐसा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है कि जो भी गौरव और सम्मान उनके प्रति अब तक बना हुआ था वह मिट्टी में मिल गया है : और उस मिट्टी से लेखक और प्रकाशक सोना बना रहे हैं। सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तक को नाम ही दिया गया है : "प्रशिया विदाउट ग्लोरी"। एक लोकप्रिय पुस्तक का इससे उल्टा भी नाम है : "दि ग्लोरी आफ प्रशिया।"

—०—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार गोष्ठी

पुस्तक मेले : कैसे रहे, कैसे हों

विचारक : श्री जवाहर चौधरी,
अध्यक्ष, अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ
श्री दयानन्द वर्मा,
भूतपूर्व महामंत्री, अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ
श्री सी० एच० चावला,
अध्यक्ष, फेडरेशन ऑफ पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स एसोसियेशन इन इण्डिया
श्री एस० के० भाटिया,
महा मंत्री, फेडरेशन ग्राफ इण्डियन पब्लिशर्स
श्री सैम्युअल इसरायल,
भूतपूर्व निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट
डा० जे० एम० ओझा,
संचालक, मानसामन

प्रस्तोता : श्री जगदीश चतुर्वेदी

देश-विदेश में आयोजित सभी स्तरों के पुस्तक मेलों का परिचयात्मक विवरण ही पर्याप्त नहीं है। इनका एक सजीव मूल्यांकन भी आवश्यक है। हमारे पास इन मेलों का जो अनुभव है, हमें उसी पर आधारित अनुभव-जन्य अनुमान चाहिए। हमने इन मेलों का स्वरूप देखा है, हमें इनकी सम्भावनाओं का आकलन करना होगा।

हमारी प्रश्नावली छोटी-सी थी। राष्ट्रीय एवं विश्व पुस्तक मेलों के आयोजन के पीछे कौन से उद्देश्य थे, उन उद्देश्यों की पूर्ति कहाँ तक हुई, इन मेलों में सुधार की आगे क्या गुंजाइश है, आदि।

सबसे पहली बात इस परिचर्चा से यह प्रकट हुई कि १९७८ तक हमारे राष्ट्रीय और विश्व पुस्तक मेले भारतीय भाषाओं के प्रति भारी उपेक्षा बरतते रहे हैं। इन मेलों के आयोजनकर्त्ता-नेशनल बुक ट्रस्ट का सोचने का ढंग सरकारी तन्त्र से बँधा हुआ है, इसलिए इस बात पर प्राय: एकमति थी कि इन मेलों के आयोजन का कार्य पुस्तक उद्योग अपने फेडरेशनों या फेडरेशनों के किसी केन्द्रीय संगठन के माध्यम से स्वयं अपने हाथों में ले।

यह भी महसूस किया गया कि ऐसे उपाय किये जायें, जिससे छोटे बजट वाले प्रकाशक विक्रेता भी इन मेलों में भाग ले सकें और स्थानीय प्रशासन से सहयोग लेकर इन मेलों में सभी विश्वविद्यालयों, शिक्षण-संस्थाओं, पुस्तकालयों, शिक्षाविदों, और पुस्तक प्रेमी वर्गों को अधिकाधिक संख्या में सहयोगी बनाया जा सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एन० बी० टी० का सोचने का ढंग सरकारी तंत्र से जुड़ा है : जवाहर चौधरी

श्री जवाहर चौधरी के अनुसार यह कल्पना ही नितान्त असंगत है कि देश समुचित पुस्तकीय वातावरण के अभाव मे किसी भी क्षेत्र मे प्रगति करें। वे इस प्रश्न का उत्तर दे रहे थे कि क्या देश हर क्षेत्र में प्रगति करने के बाद भी पढ़ाई-लिखाई में पिछड़ा रहे तो उन्हें सन्तोष होगा।

जोर देने पर उन्होंने कहा कि पुस्तकों से निरपेक्ष हमारी जो भी प्रगति होगी, एकांगी होगी। विलोमतः समाज के बहुमुखी विकास और चतुर्मुखी प्रगति के लिए पुस्तक उन्नयन के कार्यक्रम अनिवार्य है।

आम आदमी के लिए पुस्तकें

पुस्तकें विलास की वस्तु नहीं हैं। थोड़े से लोगों के सौन्दर्यबोध की तुष्टि के लिए हमें 'पुस्तकें इतनी मँहगी करनी पड़ती हैं। हिन्दी प्रकाशक संघ के अध्यक्ष श्री जवाहर चौधरी चाहते हैं कि आम लोगों तक पुस्तकें पहुँचें। कोई जरूरत नहीं कि मँहगा कागज लिया जाये। सिलाई, कटिंग, जिल्दबंदी और बहुरंगे आवरण से पुस्तक का मँहगा शृंगार किया जाये। लोगों के काम की बातें छापिये और बिना सिले हुए फार्म सीधे उन्हें पहुँचा दीजिये।

श्री चौधरी ने इस सन्दर्भ में रूस का एक उदाहरण दिया। वहाँ बनजारा जातियाँ थीं, जिनमें युगों से शिक्षा का संस्कार नहीं था। कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्त्ताओं को कहा गया कि वे लोग उनके बीच में रहें, और यह जानने का प्रयत्न करें कि इनके लिए अर्थाकरी विद्या कैसी और क्या हो। हम भारत में प्रौढ़ों को साक्षर करने के लिए उन्हें 'क' से कबूतर रटायेंगे तो न उनका काम चलेगा और न ही सरस्वती इसे अपनी आराधना स्वीकार करेगी।

हमारे सामाजिक-आर्थिक जीवन से संश्लिष्ट हुए बिना शिक्षा व्यर्थ है। शिक्षा वह नहीं है जो सरकार या कोई संस्था देना चाहे। शिक्षा वह है जो लोग जानना चाहें, जिससे उनके जीवन में स्वाधीनता आये सहजता और सुविधा में वृद्धि हो। प्रौढ़ों को साक्षर करना है, तो उन्हें काम की बातें बताइये, निरर्थक बातें मत रटाइये। उनके जीवन में महत्व गुणात्मक और ऋणात्मक का है, इसकी समझ उन्हें दीजिए। ऐसा ही साहित्य उनके लिए तैयार हो।

पुस्तक मेले, पुस्तकीय वातावरण

हम लोग पुस्तकों, पुस्तक मेलों और पुस्तकीय वातावरण के बारे में बात कर रहे थे। पुस्तक मेलों का उद्देश्य प्रायः आदमी को पुस्तकों के निकट लाना है। एक पुस्तकोन्मुख समाज का विकास करना है, क्योंकि शिक्षा और ज्ञान का सबसे महत्वपूर्ण उपकरण पुस्तक है। पुस्तक केवल विशिष्टजनों के लिए नहीं जन सामान्य के लिए होनी चाहिए। वाणी में मूर्त होते ही स्वर अक्षर कैसे हो जाता है, यह चमत्कार हमारा आम आदमी भी देखे—वह जो किसी दूर गांव में रहता है और जिस पर लक्ष्मी प्रसन्न नहीं है। उस पर सरस्वती तो प्रसन्न है।

श्री जवाहर चौधरी ने अपने विशिष्ट देहलवी लहजे में कहा, 'यह मत पूछिये कि मेरा मेलों से कब से सम्बन्ध है। यह पूछिये कि मेले मुझसे कबसे सम्बन्धित रहे हैं।

"शायद ५७-५८ की बात है। इण्डियन पीपुल्स थियेटर ऐसोसियेशन-इप्टा का दिल्ली में अधिवेशन हुआ। मैं स्वागत समिति का संयोजक था, श्री रामलाल पुरी उसके संरक्षक थे। भारतीय जन नाट्य संघ के अधिवेशन के लिए हमने 'नटराज नगरी' बसाई थी। तब श्री पुरी का ध्यान मेरी ओर गया।

श्री चौधरी ने बताया गांधी मैदान में वे दिल्ली मेला आयोजित करते थे। आत्माराम एण्ड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्स के श्री रामलाल पुरी फ्रेंकफर्ट या विदेश के किसी विश्व पुस्तक मेले में भाग लेकर लौटे थे। श्री पुरी ने श्री जवाहर चौधरी को अपने प्रतिष्ठान मे रख लिया और वे चाहते थे कि आगामी दिल्ली मेले के अवसर पर वहाँ विश्व स्तर का पुस्तक समारोह आयोजित हो। तय किया गया कि गाँधी मैदान के इस दिल्ली मेले का एक भाग पुस्तक-कक्ष बने। श्री पुरी ने हिन्दी प्रकाशक संघ के सदस्यों से परामर्श किया। मेले के इस भाग में पुस्तकों की कोई पचास दूकानें लगाई गयी। इसके तकनीकी निदेशक तब के हिन्दी प्रकाशक संघ के अध्यक्ष श्री रामलाल पुरी थे, और संयोजक आज के अध्यक्ष श्री जवाहर चौधरी और यही अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ द्वारा आयोजित प्रथम राष्ट्रीय पुस्तक समारोह के रूप में विख्यात हुआ।

पुराने संस्मरणों में खोये श्री चौधरी ने कहा, 'पुरी जी मूलतः स्वप्नदर्शी हैं, वे योजनाएँ दे सकते हैं। ...... आप जानते हैं, नीति निर्धारण एक अलग काम है, और उस नीति का क्रियान्वयन दूसरी तरह का काम है। पालिसीमेकर (नीति निर्धारणकर्त्ता) और ऐक्जीक्यूटिव अलग-अलग होने चाहिए। आप उनकी मासिक प्रदर्शनी योजना को लीजिए। चली नहीं, पर योजना बहुत अच्छी थी। ...."

"दिल्ली रेलवे स्टेशन के सामने यूनेस्को के सहयोग से गठित दिल्ली सार्वजनिक पुस्तकालय द्वारा आयोजित पुस्तक प्रदर्शनियाँ भी मैंने देखी हैं। मैंने तो ग्रामीण मेलों में भी पुस्तकों की दूकानें देखी हैं। नौचन्दी के मेले में पुस्तकों की दूकानें होती थीं। ...... पर आप पूछिए, क्या पूछना चाहते है ?"

एन० बी० टी० की सीमा

एन० बी० टी० के पुस्तक मेले ? अच्छे हैं, बहुत अच्छे हैं। ये अपने प्रयोजन मे सफल रहे हैं लेकिन एक सीमा तक। इस बार श्री चौधरी को फेडरेशन आफ पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स एसोसियेशन्स इन इण्डिया द्वारा चतुर्थ विश्व पुस्तक मेले की तैयारियों के सिलसिले मे बुलाया गया था। अभी उन्होंने विश्व व्यापार मेले मे पुस्तकों को सजा देखा। बड़ा सफल प्रयोग था। चार लाख रुपये की किताबों की वहाँ नकद बिक्री हुई। फेडरेशन आफ इण्डियन पब्लिशर्स ने भी फीरोजशाह कोटला मैदान पर एक और पुस्तक मेला १० दिन तक लगाया। आयोजकगण इसे भी सफल बताते हैं।

सीमा कहाँ है ? एन० बी० टी० का सोचने का ढंग सरकारी है। वह सरकारी तन्त्र से बँधा हुआ है। वह हिन्दी या भारतीय भाषाओं प्रकाशकों की के दृष्टि से नहीं देख पाता। वह मेले में भाग लेने वाले दर्शक की दृष्टि से नहीं देख पाता। वह खर्च के आमदनी के और दर्शकों की उपस्थिति के आँकड़े देकर छुट्टी पा लेना चाहता है। उसके काम करने का तरीका ऐसा है, जो मंहगा पड़ता है। हमारा छोटा काशक उसे बूते के बाहर की बात मानता है।

हिन्दी प्रकाशक संघ की पहल

आवेशपूर्ण मुद्रा और आक्रोश भरे स्वर में श्री जवाहर चौधरी बोले, 1970 के तीसरे विश्व पुस्तक मेले मे पहली बार लोगो को समझ आई और पहली बार विश्व पुस्तक मेले में हिन्दी मण्डप को स्थान मिला। १९८० के इस चौथे विश्व पुस्तक मेले में पहली बार भारतीय भाषाओं का मण्डप लगेगा।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ तो प्रारम्भ से ही ट्रस्ट को पुस्तक मेलों के आयोजन में सहयोग देता रहा है। यह संघ के सतत् प्रयासों का ही परिणाम है कि एक बहुत बड़ी विसंगति से इसे त्राण मिला। भारत में विश्व भर की पुस्तकों का मेला लगे और उसमें भारतीय भाषाओं की हिन्दी की पुस्तकें न हो ! इसका श्रेय हिन्दी प्रकाशक संघ को ही है कि उसके प्रयासो से पहले हिन्दी को और अब उसको पहल पर भारतीय भाषाओं को विश्व पुस्तक मेले मे प्रतिनिधित्व दिया जा रहा है। ट्रस्ट को आया-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तित पुस्तकों का, विदेशी प्रकाशकों का और अंग्रेजी का यह मोह छोड़ना ही पड़ेगा। नेशनल बुक ट्रस्ट का यह कर्तव्य है, प्रथम कर्तव्य है, कि वह भारतीय भाषाओं को प्राथमिकता दे, और भारतीय भाषाओं की छवि को उभारे—भारतीय भाषाओं को प्रोजेक्ट करे।"

श्री जवाहर चौधरी ने कहा, "तृतीय विश्व पुस्तक मेले से हमें बहुत लाभ हुआ। सभी भाषाओं के प्रकाशकों को, पुस्तक व्यवसाइयों को निकट आने का अवसर मिला, गलत फहमियाँ दूर हुईं, परस्पर सहयोग और सौहार्द का द्वार खुला और भविष्य के लिए ऐसे आयोजनों की सफलता आश्वस्त हुई।"

ओछी पूँजी के व्यवसाय

आपने बताया, "भारतीय भाषाओं और हिन्दी में हमारा प्रकाशन उद्योग ओछी पूँजी से चल रहा है। उसे अंग्रेजी प्रकाशन उद्योग जैसी सुविधा नही है। विदेशी भाषा की पुस्तकों के स्टाकिस्ट या उनके एजेण्ट पैसे के अभाव से पीड़ित नही हैं और उनके प्रिन्सिपल्स (मुखिया) हर अवसर का लाभ उठाने के लिए पैसे का सहारा दे देते हैं। इसलिए भारतीय भाषाओं के प्रति हमें विशेष सहानुभूति की अपेक्षा है। सरकार और ट्रस्ट से वह साहनुभूति हमको मिलनी चाहिये।"

पुस्तक व्यवसायी मेले लगायें

पुस्तक व्यवसायी संगठनों की भूमिका के बारे में श्री चौधरी ने कहा पुस्तक मेलों के आयोजन का काम इन संघों को स्वयं करना चाहिये। इन्हें मजबूत होना चाहिए और खुद जिम्मेदारी उठानी चाहिए। यह काम सरकार ही क्यों करे?

आपने कहा, "सरकार के काम अलग हैं। सरकार देश में शिक्षा का प्रसार करे, पुस्तकालय आन्दोलन चलाये, और देश भर में पुस्तकालयों का जाल बिछाये। केवल उत्तर भारत के हिन्दी भाषी क्षेत्र में ही दिल्ली सार्वजनिक पुस्तकालय जैसे तीन हजार पुस्तकालयों की आवश्यकता है। सरकार ऐसी व्यस्था करे कि किताबों के दाम कम हों। कागज सस्ता हो, मुद्रण सस्ता हो, गत्ता सस्ता उपलब्ध हो और प्रकाशकों व वितरकों को व्यवसायगत सुविधायें प्राप्त हों। पुस्तक मेलों के लिए सरकार जो कर सकती है, करे, पर हमारे पुस्तक-उद्योग के संगठन पहल करके इन मेलों की जिम्मेदारी लें। यह मुख्य बात है।"

फेडरेशन मेले आयोजित करे, सघ मदद करें और सरकार वित्तीय अनुदान दे : दयानन्द वर्मा

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक सघ के कई बार महामन्त्री बनने वाले और विशाल पुस्तक प्रदर्शनियों के कई अनुभव रखने वाले श्री दयानन्द वर्मा ने दृढ़ शब्दों में कहा, पुस्तक मेले अनिवार्य हैं। हमारे देश में पुस्तक एक उपेक्षित वस्तु है, जिसके बारे में लोगों को खबर नहीं लग पाती। इसलिए जब पुस्तक मेले लगते हैं तो पुस्तकों के बारे में लोगों को तुरन्त जानकारी मिल जाती है।

श्री दयानन्द ने कहा, मैं पुस्तक मेलों की सलाहकार समिति में रहा हूँ। हम लोग १० वर्षों से हिन्दी पुस्तकों को राष्ट्रीय प्रदर्शनी में भेज रहे हैं। श्री रामलाल पुरी की मासिक पुस्तक प्रदर्शनी योजना बहुत अच्छी थी और उसके न चल पाने का खेद है। किन्तु हिन्दी प्रकाशक संघ और स्वयं श्री वर्मा पुस्तक प्रदर्शनियों में बड़ा रुचि रखते हैं। बंसल जी (श्री रघुवीर शरण बंसल) ने विश्व हिन्दी सम्मेलन, नागपुर के लिए एन० बी० टी० से हिन्दी पुस्तकों की प्रदर्शनी का पूरा चार्ज लिया। संघ सदैव नेशनल बुक ट्रस्ट को मेलों, प्रदर्शनियों में भरपूर सहयोग देता रहा है। अहमदाबाद या बंगलौर, जहाँ जरूरत पड़े हिन्दी प्रकाशक संघ ट्रस्ट से कंधा भिड़ाये खड़ा रहता है।

मेलों का लाभ नहीं मिल पाता

किन्तु श्री दयानन्द वर्मा ने कहा, नेशनल बुक ट्रस्ट के राष्ट्रीय और विश्व पुस्तक मेलों से हमे पूरा लाभ मिल नहीं पाता। ऐसे स्टेण्ड के लिए, जहाँ केवल तीस पुस्तकें दिखाई जा सकें, ट्रस्ट ६५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुपया किराया लेता है। ४,५०० रुपये किराये वाले स्टाल पर २५० पुस्तकें प्रदर्शित की जा सकती हैं। यह खर्चा भारतीय भाषा प्रकाशकों के लिए बहुत भारी पड़ता है। केवल बड़े बजट वाले प्रकाशक ही इस तरह का भारी खर्चा उठाकर इन मेलों में भाग ले सकता है। अँग्रेजी को सामने रखने से भी हिन्दी पिछले मेलों में हल्की पड़ती थी। अन्य भारतीय भाषाओं में केवल बंगला, गुजराती, मलयालम वाले तो थोड़ी बहुत रुचि ले रहे थे, बाकी तृतीय विश्व पुस्तक मेले तक हमारे यहाँ अँग्रेजी का ही बोलबाला रहा।

श्री वर्मा ने कहा, बहुत कोशिशें करने पर पिछले विश्व पुस्तक मेले में हिन्दी मण्डप लग पाया था, और उन्हीं अनथक प्रयत्नों को अब तक जारी रखने का परिणाम यह हुआ है कि इस बार विश्व पुस्तक मेले में भारतीय भाषाओं का मण्डप लगेगा। किन्तु छोटे प्रकाशक की दृष्टि से ये मेले अभी तक ऐयाशी से सुमार हैं। अंग्रेजी के देशी-विदेशी प्रकाशकों के पास इस तरह के कार्यक्रम के लिए फण्ड्स होते हैं। हिन्दी पुस्तक उद्योग के जो लोग इन मेलों में भाग ले रहे हैं, वे हिन्दी प्रकाशक संघ के विशेष अनुरोध पर ऐसा कर रहे हैं। तीसरे विश्व पुस्तक मेले में हिन्दी प्रकाशक संघ खुलकर सामने आया। फिर भी हमारा अनुभव यही है कि इन मेलों में भाग लेकर हम तुरन्त व्यापारिक लाभ नहीं उठा पाते और ओछी पूँजी के कारण हम वेट (प्रतीक्षा) करने की स्थिति में नहीं है। यह दूरगामी दृष्टि बड़ा प्रकाशक रख सकता है, छोटा प्रकाशक नहीं रख पाता।

प्रकाशक संघों के मेले ज्यादा अच्छे

अन्य पुस्तक मेलों की चर्चा चलने पर जो बिना नेशनल बुक ट्रस्ट को माध्यम बनाये आयोजित होते रहते हैं। श्री वर्मा ने कहा, प्रकाशक संघों के ये अपने मेले इस दृष्टि से ज्यादा अच्छे हैं। वे कम खर्चीले पड़ते हैं। इनमें भी कलकत्ता का पुस्तक मेला सबसे अधिक बिक्री-आधारित मेला है। कलकत्ता पुस्तक मेला उनके दो शब्दो में "कमाल की चीज" है।

श्री दयानन्द वर्मा ने कहा, इस बार एफ० पी० बी० ए० ने विश्व व्यापार मेले में पुस्तक मेला लगाकर एक मिसाल कायम की है। इस फेडरेशन ने मेला अधिकारियों को किसी तरह राजी किया कि वे किताबों को भी देश का उत्पादन मान लें। फेडरेशन के इस अभियान को हिन्दी प्रकाशक संघ ने भरपूर सहयोग और समर्थन दिया और मेले में भाग लेने के लिए अपने सदस्यों को प्रेरित किया। मेले के अवसर पर १० प्रतिशत की विशेष छूट दी गयी। इस मेले में चार लाख रुपयों से अधिक की किताबें काउन्टर पर बिकीं। दूर लगने वाले मेलों में प्रायः आदमी नहीं पहुँच पाता, किन्तु इस मेले से हमें रीडरशिप (पाठकीयता) का एक नया आयाम मिला है।

सरकार का खर्च नहीं होता

यह ध्यान दिलाने पर कि एन० बी० टी० को इण्डियन फेयर अथारिटी को किराये के रूप में बहुत पैसा देना पड़ता है। श्री वर्मा ने बताया, दरअसल वह खर्चा नहीं है। वह पैसा सरकार, सरकार को ही देती है, बुक एडजस्टमेंट (किताबी जमा खर्च) होता है। यानी एक जेब से पैसा निकालकर दूसरी जेब में रख लिया जाता है। इसलिए सरकार को चाहिए कि वह मेलों के आयोजन के समय किराये-भाड़े नाममात्र के लिए ले, सिर्फ बिजली पानी के खर्चे पर जगह दे। मेले अपने उद्देश्य में तभी सफल माने जायेंगे, जबकि छोटे से छोटा प्रकाशक और छोटे से छोटा पुस्तक विक्रेता इसमें भाग लेने की सामर्थ्य जुटा सके। जब सभी प्रकार के प्रकाशक विक्रेता और पाठक मेलों में आयेंगे, तभी बुकमाइन्डेडनेस (पुस्तकोन्मुखता) बढ़ेगी।

फेडरेशन करे, संघ मदद दे और सरकार अनुदान दे

जब हम लोगों की यह बात चल रही थी, तभी हिन्दी प्रकाशक संघ के अध्यक्ष श्री जवाहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौधरी हम लोगों के बीच आ गये। इसके बाद जो बात हुई उसे हम हिन्दी प्रकाशक संघ की औपचारिक घोषणा तो नहीं कह सकते, किन्तु हमें लगा इन बातों में अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ स्वयं बोल रहा है।

"राष्ट्रीय पुस्तक मेले बहुत बड़े राष्ट्रीय पैमाने पर आयोजित होने चाहिए। इसके लिए नेशनल बुक ट्रस्ट को सभी प्रकाशक संघों से मदद लेनी चाहिए। भारतीय भाषाओं के पुस्तक मेलों के लिए सरकार से विशेष अनुदान मिलने चाहिए। राज्यों के स्तर पर भी ऐसे पुस्तक मेले लगने चाहिए। सबसे अच्छा तरीका यह है कि प्रकाशक संघों का फेडरेशन ऐसे आयोजन करे, प्रकाशक संघ फेडरेशन को सहयोग दे और सरकार इसके लिए अनुदान दे।"

छोटे प्रकाशकों के लिए दिल्ली का विश्व पुस्तक मेला : लंदन फ्रेन्कफर्ट जितनी दूर : सी० एम० चावला

फेडरेशन आफ पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स एसोसियेशन्स इन इण्डिया के अध्यक्ष, श्री सी० एम० चावला का हर बात को सोचने का तरीका बहुत साफ-सुथरा है, और किसी प्रश्न के उत्तर के लिए उन्हें एक क्षण ठहरने की जरूरत नहीं पड़ती। वे सिर्फ उतनी देर ठहरे जितनी देर उनके हाथ का काम समाप्त नहीं हुआ और फिर तो ऐसा लगा जैसे उनकी बातों को लिखने वाली कलम विचारों के धारा प्रवाह में पीछे रह जाती है।

पुस्तक मेलों का उद्देश्य, श्री चावला ने कहा, बहुत साफ है। हमारे यहां पुस्तकों के पाठक बहुत कम हैं। यदि बहुत-सी पुस्तकों को एक जगह रख कर पुस्तक मेले का रूप दिया जाये, तो इससे यह सुविधा मिलती है कि सभी प्रकाशक मिलकर एक ही स्थान पर अपने विभिन्न प्रकाशनों का प्रदर्शन कर सकते हैं, जहां जनता को उसका ध्यान आकर्षित करके बुलाया जाये। लोग मेला देखने आयें और खरीदारी करें।

मेलों का समग्र प्रभाव

श्री चावला ने कहा, हमें मेले के समग्र प्रभाव का अध्ययन करना होगा। जिन लोगों ने पुस्तकें लिखीं छापीं, तैयार की हैं, जिन्हें खरीदनी हैं—विद्यार्थी, पुस्तकालयाध्यक्ष, शिक्षाविद, पुस्तक प्रेमी सब पर इसके प्रभाव को आंकना होगा। फिर यहां मेले का वातावरण तैयार किया जाता है। लोगों को महसूस होता है यह तमाशा कुछ दिनों बाद उठ जायेगा। अर्जेन्सी का वातावरण होता है। लोग सोचते हैं, कोई अच्छी चीज देखने से छूट न जाये। आये हैं, टिकिट लिया है, समय दिया है, खाली हाथ क्यों लौटें ? यहां हर प्रकार का पाठक आता है, जिसे हर प्रकार से चयन का अवसर मिलता है, वह मनपसन्द किताब चुन कर लेता है और इन्तजार करता है कि अब ऐसा दूसरा मेला देखने को उसे कब मिलेगा।

एक किताब की दुकान एक जगह पड़ी रहती है, वह कहीं जायेगी नहीं। फिर दुकान का दायरा छोटा होता है। थोड़े से विषयों पर एक दुकान में थोड़ी-सी पुस्तकें होंगी। इसके विपरीत मेले का एक पुस्तकीय वातावरण बन जाता है। उल्लास और उमंग भरे इस वातावरण में हर विषय की, हर भाषा की, हर पाठक के लिए पुस्तक मिल जाती है। यहां हर एक के लिए कुछ न कुछ अवश्य मिलेगा।

दिल्ली के मेले, लंदन की दूरी

श्री चावला ने बताया, सरकार सम्भवतः विलम्ब की भी क्षतिपूर्ति करेगी और पुस्तक उद्योग की घबराहट दूर करने के लिए इस बार विशेष अनुदान जारी करेगी। होली के त्योहार का इस मेले पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ सकता क्योंकि होली दिल्ली में भी होती है और होली पर दिल्ली खाली नहीं हो जाती। उलटे इससे उल्लास और तमाशे का वातावरण बढ़ेगा।

इन आयोजनों में क्या कमी रह जाती है? इस बारे में श्री चावला ने हँसकर कहा, छोटे प्रकाशक के लिए हमारा दिल्ली का विश्व पुस्तक मेला भी उतनी ही दूर है जितना फ्रेंकफर्ट या लंदन का पुस्तक मेला। हम लोगों के आग्रह पर लोग आ जाते हैं, भाग ले लेते हैं, क्योंकि और कोई चारा नहीं है। यहाँ मेले में भाग लेने पर किराया बहुत देना पड़ता है। सम्भवतः इसका कारण यह है कि फेयर अथारिटी भी एन० बी० टी० से ज्यादा मँहगा किराया वसूल करती है। बार-बार किराया देने की जगह नेशनल बुक ट्रस्ट, अच्छा हो यदि कोई स्थाई मेला-स्थल का निर्माण करा ले और वहाँ पुस्तक प्रदर्शनियों के लिए स्थाई व्यवस्था रखे।

सरकार को व्यावहारिक सुझाव

श्री चावला ने बताया कि मेले के लिए पर्याप्त प्रचार नहीं हो पाता है। इसके लिए प्रचार का बजट भी बढ़ना चाहिए और एन० बी० टी० को अपने प्रचार और विज्ञापन का तरीका भी सुधारना चाहिए। आप इस बात का प्रचार कीजिए कि पुस्तक मेला होगा, उसमें तरह-तरह की पुस्तकें होंगी और लोग इसमें अधिक से अधिक संख्या में भाग लें। अभी एन० बी० टी० ने मेले के प्रतीक के रूप में हिन्दी के 'ऋ' अक्षर जैसा कोई चित्र प्रचारित किया है, जिससे कोई कुछ नहीं समझ पाता।

आपने कहा शिक्षा मन्त्रालय को दिल्ली प्रशासन से सहयोग लेकर दिल्ली के स्कूलों, कालेजों व विश्वविद्यालयों में विशेष छुट्टियाँ स्वीकृत करानी चाहिए। अभी बाल पुस्तक मेले में ऐसा करने पर स्कूली बच्चों ने भी वह मेला चाव से देखा और वहाँ पुस्तकें खरीदीं। विश्व पुस्तक मेले के समय भी ऐसी सुविधाएँ देकर प्रत्येक वर्ग के लोगों को वहाँ आकर्षित किया जाना चाहिए।

मेले राज्यों में भी हों

श्री चावला ने कहा सरकार बहुत कुछ कर सकती है। वह बाहर से आने वालों के लिए रेलवे से आधे किराये माफ करा सकती है। भाग लेने वाले प्रकाशकों को स्टाल के किराये व दिल्ली के खर्चों के अतिरिक्त माल भाड़ा और ढुलाई वगैरह पर भी बहुत व्यय करना पड़ता है, और सरकार इस खर्चे में रियायत दे सकती है।

श्री चावला ने कहा कि मुख्य बात यह है कि पुस्तक पठन के लिए लोगों में लालसा जागृत की जाये। सभी राज्य सरकारों को चाहिए कि वे अपने यहाँ पुस्तक प्रदर्शनियों के लिए पृथक विभाग रखें। प्रत्येक राज्य की राजधानी में पुस्तक मेले लगने चाहिए। प्रत्येक विश्वविद्यालय नगर में भी पुस्तक मेले और पुस्तक प्रदर्शनियाँ लगें। इनमें सभी राजकीय विभागों, पुस्तक क्लबों, पुस्तक उद्योग से सम्बद्ध लोगों आदि को भाग लेना चाहिए। साल भर ऐसे आयोजन विभिन्न स्थानों पर चलें। ऐसी एक प्रदर्शनी में 50 लाख तक की पुस्तकें बिक सकती हैं. और हम यह सहज अनुमान लगा सकते हैं कि इस तरह वर्ष भर में पुस्तकों की बिक्री किस हद तक बढ जायेगी।

भारत में छपे या भारतीय भाषा-प्रकाशनों को सरकार अनुदानित करे : भाटिया

फेडरेशन आफ इण्डिया पब्लिशर्स के महामन्त्री श्री एस० के० भाटिया की यह शिकायत वाजिब है कि चौथे विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर प्रकाशन उद्योग पर आशका और संकट के बादल क्यों छायें। यदि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग इस तरह अनुदान जारी करने में विलम्ब करेगा तो अनिश्चय और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशंका में मेले का उत्साह कैसे बन पायेगा ? बाद में हमें पता चला कि अनुदान जारी हो रहे हैं, और श्री भाटिया को शायद हमसे भी पहले यह पता चल गया होगा, किन्तु विलम्ब हुआ है, और विलम्ब भी अन्याय का एक प्रकार है।

श्री भाटिया ने स्वीकार किया कि नेशनल बुक ट्रस्ट के ये राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के पुस्तक मेले अपने उद्देश्य की पूर्ति में "काफी हद तक" सफल होते हैं। पुस्तक मेलों में जो सुरुचिपूर्ण साज-सज्जा और प्रदर्शन की छटा होती है, वह अनायास दर्शक की दृष्टि खींच लेती है। ऐसे लोग जो किताबों की दूकान पर नहीं पहुँचते, मेले के आकर्षण से पुस्तक मेले में पहुँचते हैं। पुस्तकों से आम आदमी मिल लेता है।

सरकार फेडरेशन की और मदद करे

पुस्तक मेलों के आयोजन में नेशनल बुक ट्रस्ट का एक प्रमुख सहयोगी एफ० आई० पी० भी है, किन्तु श्री भाटिया का कहना है कि सरकार को फेडरेशन की और ज्यादा मदद करनी चाहिए। फेडरेशन अपने स्तर पर लोगों से सम्पर्क करता है, किन्तु उसके पीछे अधिकार की गरिमा नहीं है। सरकार विश्वविद्यालय कुलपतियों से अनुरोध करके, शिक्षा मन्त्रालय के माध्यम से मेलों के लिए उपयुक्त पुस्तकीय वातावरण बनाने में हमसे अधिक समर्थ है।

फेडरेशन का दिल्ली पुस्तक मेला

३० नवम्बर से ९ दिसम्बर, १९७९ तक सम्पन्न दिल्ली पुस्तक मेले की चर्चा करते हुए श्री भाटिया ने कहा, इस मेले की भरपूर पब्लिसिटी की गई, आठ समाचार पत्रों को नियमित विज्ञापन दिये गये, होर्डिंग और पोस्टरों से प्रचार किया गया, दिल्ली के पचास विद्यालयों में ५०० से ६०० निःशुल्क टिकिट भेजे गये, किन्तु विभाग से समन्वय के प्रभाव में वांछित परिणाम नहीं निकल पाये। मेले में पुस्तकालय दिवस मनाया गया, पर ग्रान्ट न मिल पाने के कारण पुस्तकालयाध्यक्ष नहीं आ सके। ऐसे मेलों में काउण्टर पर होने वाली बिक्री ही काफी नहीं होती। मेले में मिले आर्डर इस बिक्री का कई गुना होते हैं, किन्तु इस क्षेत्र में सन्नाटा रहा।

श्री भाटिया ने कहा, यों हमारी अपनी सफलताएँ रही हैं, जो महत्वपूर्ण हैं। हमने खुले मैदान में पुस्तक मेला लगाया। पानी, बिजली आदि की सुविधाओं का विकास किया, बैंकिंग सेवाएँ मेला स्थल पर उपलब्ध करायीं और मेले के लिए बुनियादी ढाँचा खड़ा किया। इतने पर भी हमने एक स्टाल का किराया नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रगति मैदान के स्टालों के लिए निर्धारित किराये से आधा लिया।

प्रधान मन्त्री को ज्ञापन

श्री भाटिया का मत है कि राष्ट्रीय या विश्व पुस्तक मेले फेडरेशनों को ही आयोजित करने चाहिए और सरकार के नेशनल बुक ट्रस्ट माध्यम से मेलों के आयोजन पर जो व्यय करती है, वह अनुदान के रूप में इन फेडरेशनों को दे दे।

श्री भाटिया ने बताया कि फेडरेशन की ओर से प्रधान मन्त्री को एक ज्ञापन देकर कुछ सुझाव दिये गये हैं। सरकार के मन्त्रालय जो अनुदान जारी करते हैं, उनका कुछ प्रतिशत भारतीय भाषाओं की और भारत में छपी पुस्तकों को अनिवार्यतः प्राप्त होना चाहिए। तभी हम भारतीय लेखन और भारतीय प्रकाशन को प्रोत्साहन दे सकते हैं। एक भारतीय प्रकाशक ने तिब्बती-अंग्रेजी शब्द कोष प्रकाशित किया है, जो जापानी संस्करण से कम मूल्य में जारी हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ नवीनतम कृतियां जीवनोपयोगी

एम सिंह सूद लिखित-चरित्र निर्माण, राष्ट्र निर्माण, युग निर्माण, भाग्य निर्माण मूल्य प्रत्येक 15·00

उपन्यास

लाखा और लोचन, जिन्दगी के द्वारा कीचड़ और कलंक—वनकाम सुनील 22·50, 17·50
ढलती सांझ का सूरज—विश्वनाथ 'राज' 10·00 प्यासा सागर, अँधेरे का सूरज 15·00, 25·00
सिमटता हुआ दायरा —कुसुम वर्मा 10·00 हरे कांच की चूड़ियां—रामगोपाल परदेशी 15·00

नाटक

- झील के परिन्दे —सूरजप्रसाद मिश्र 10·00
- वह देश जहाँ भूख नहीं है —अज्ञात 10·00

कथा साहित्य

- चेहरों से फिरा दर्पण—रामगोपाल प॰ 20·00
- रेत पानी रेत —ओम प्रभाकर 15·00

बाल-साहित्य

- अलोपी (उपन्यास)—मुन्नालाल देवासे 10·00
- कर्नाटक की लोक कथाएँ —एस. केशव मूर्ति 10.00
- काठ का महल—मुन्नालाल देवासे 6·00
- चुन्नू मुन्नू के गीत—निरंकारदेव सेवक 4·00
- दो भैया —मुन्नालाल देवासे 7·00

काव्य

मनका महुआ—रामगोपाल परदेशी 12·50 पलकों में आकाश—चतुर्सेन विराट 16·00
प्रवासिती—नीलकमल 7·50 विरह संध्या—वियोगी 17·00 दर्द मुस्कराता है—नरेन्द्र दीपक 10·00
जब मानव करवट बदलेगा—आरोही 12·50 अनुभूति के स्वर—तपसी 12·50 सूरज को उत्तर दो—राम अधीर 12·50 गीत स्वयं गीता बन जाए—कैलाश सेंगर 12·50 मांडवी—शिवशंकर कटारे 10·00 धूप थैली—हर्ष नीरज 16·00।

कोश

- अँग्रेजी हिन्दी जीव विज्ञान वृहत कोश—इंसाइक्लोपीडिया एम. सिंह सूद 250·00
- अँग्रेजी हिन्दी जन्तु विज्ञान वृहत कोश —इंसाइक्लोपीडिया एम. सिंह सूद 125·00
- वृहत भारतीय लेखक कोश—रामगोपाल परदेशी 250·00

शोध तथा आलोचना

भारतीय काव्य सिद्धान्त, पाश्चात् काव्य सिद्धान्त, हिन्दी गीति नाट्य सिद्धान्त और समीक्षा स्वातंत्र्योत्तर गीति नाट्य—शिवशंकर कटारे, 30·00, 35·00, 85·00, 40·00 प्रेमचन्द परम्परा की कहानियों में सामाजिक चित्रण—राजेन्द्रकुमार शर्मा 65·00, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी वस्तु विकास एवं शिल्प विधान—मंगल मेहता 65.00, हिन्दी कृष्ण काव्य की सामाजिक पृष्ठ भूमि—प्रभात दुबे 60·00 रोमांटिक प्रगति अंग्रेजी कविता और छायावाद, स्वच्छन्दतावाद स्वरूप विश्लेषण, छायावादी काव्य में सौन्दर्य चेतना—कृष्ण मुरारी मिश्रा 10·00, 65·00, 45·00, कबीर की अध्यात्मक साधना का स्वरूप —गोपीचन्द साध्वी 85·00 जगदीश प्रसाद 75·00 स्वच्छन्दतावादी काव्य धारा का दार्शनिक विवेचन —जगदीश गुप्त 75·00 हिन्दी और असमी के पौराणिक नाटक—धर्मदेव तिवारी 75·00 भक्ति आन्दोलन और साहित्य एम. जार्ज 85·00 हिन्दी की मार्क्सवादी कविता, मुक्ति बोध पुनर्मूल्यांकन सम्पत ठाकुर 95·00, 35·00, नई कविता प्रेरणा और प्रयोजन—विजय द्विवेदी 35·00 आधुनिक हिन्दी नाटकों में नायक एवं नायिका की परिकल्पना—मलखान सिंह सिसोदिया 55·00।

प्रगति प्रकाशन

स्थापना : 1962
दूरभाष : 61461

बेतुल बिल्डिंग, आगरा-२८२००३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वविद्यालय प्रकाशन, विशालाक्षी भवन, चौक वाराणसी

कबीर बीजक का भाषा शास्त्रीय अध्ययन : डा० सुकदेव सिंह 20-00

कबीर ने अपनी रचनाएँ उस समय प्रस्तुत कीं जब हिंदी की साहित्यक भाषाओं का स्वरूप-निर्माण नहीं हो पाया था। इनकी भाषाओं में अवधी, ब्रजी, खड़ी बोली की झांकी मिलती है। भोजपुरी इनकी भाषा का प्राणतत्व है। भाषा की दृष्टि से इनकी रचनाओं पर शास्त्रीय अध्ययन आ असमाध्य प्रयास प्रस्तुत ग्रंथ में प्रथम बार हुआ है। विद्वानों के लिए अत्यन्त उपादेय ग्रंथ।

निराला की काव्यभाषा : डा० शकुन्तला शुक्ल 60-00

साहित्य की भाषा के वैशिष्ट्य को दृष्टि में रखकर निरालाजी की काव्यभाषा का यह शोधात्मक अध्ययन है। निरालाजी के काव्य-विषय जैसे-जैसे बदलते गए भाषा भी तदनुकूल रूप-परिवर्तन करती गई। छायावाद युग की बृहत्त्रयी में इस दृष्टि से निरालाजी अप्रतिम ठहरते हैं। नए युग की कविता ने उनके कथ्य और भाषा दोनों ही से प्रभाव ग्रहण किया है। उनकी भाषा के अनेकात्मक रूपों का अध्ययन प्रामाणिक रूप के सरल शैली में प्रबंध हुआ है। निराला के अध्ययन के लिए इस ग्रंथ की अपरिहार्यता स्वयं सिद्ध है।

शोध-सन्दर्भ नये आयाम : डा० जमीला आली जाफरी 15-00

मध्यकाल में हिन्दू-मुस्लिम संस्कृतियों के संमिलन से जिस अभिनव संस्कृति का जन्म हुआ उसकी स्पष्ट छाप तत्कालीन हिन्दी साहित्य पर देखने को मिलती है। तंत्र-साहित्य से लेकर सूर-साहित्य तक में विचित्र राधा का स्वरूप विश्लिष्ट किया गया है। हर दृष्टि से पुस्तक अपने नाम को अन्वर्थ सिद्ध करती है।

शब्द-शक्ति-विवेचन : डा० रामलखन शुक्ल 15-00

शब्द-शक्ति भारतीय मनीषा की देन है। उसके आधार पर विश्व के किसी साहित्य की समीचीन समीक्षा की जा सकती है। अर्थ-मीमांसा के लिए इससे उपयुक्त अन्य कोई कसौटी नहीं है। विषय की गम्भीरता को दृष्टिपथ में रखते हुए डा० शुक्ल ने बड़ी ही बोधगम्य और सरल शैली में शब्द-शक्ति-विवेचन प्रस्तुत किया है। स्वतंत्र विचारक की दृष्टि से लिखी गयी अपने विषय की यह अप्रतिम कृति है।

स्त्री : श्री विमल मित्र 12-50

नारी को देवीरूप में देखना मनुष्य का नहीं देवता का काम है। बाल्मीकि ने सीता को, कालिदास ने शकुंतला को और शेक्सपीयर ने डेस्डिमोना को अपनी देवदृष्टि से देवीरूप में देखा है। इसी आदर्श को सामने रखकर श्री विमल मित्र ने इस उपन्यास में चार नारी पात्रों का अत्यन्त हार्दिकता से चित्रण किया है। चारों ही चरित्र नमस्य हो उठे हैं।

मनीषी की लोकयात्रा डा० भगवती प्रसाद सिंह 50-00

भारतीय विद्या और मनीषा के मूर्तरूप महामहोपाध्याय पं० गोपीनाथजी कविराज का तपःपूत-जीवन-वृत्त प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत करने का महत्प्रयास प्रथमबार डा० भगवती प्रसाद सिंह ने इस ग्रंथ में किया है। उनके वृत्त के साथ ही साथ दर्शन और अध्यात्म के निगूढ़ रहस्यों का उद्घाटन भी जिज्ञासु पाठकों का मनस्तोष करने में सर्वथा समर्थ होगा - इसमें उनकी विद्वता के साथ-साथ उनकी साधना के विविध आयामों का उद्घाटन हुआ है। हिन्दी भाषा में अपने ढंग की अप्रतिम पुस्तक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत की महत्वपूर्ण कृतियाँ

संस्कृत-शिक्षा : भाग-१	डा० कपिलदेव द्विवेदी	2-00
संस्कृत-शिक्षा : भाग-२	डा० कपिलदेव द्विवेदी	2-00
संस्कृत-शिक्षा : भाग-3	,, ,,	2-50
संस्कृत-शिक्षा : भाग-4	,, ,,	3-00
संस्कृत-शिक्षा : भाग-5	,, ,,	3-00
प्रारम्भिक रचनानुवादकौमुदी	,, ,,	3-00
रचनानुवादकौमुदी	,, ,,	7-50
प्रौढ़ रचनानुवादकौमुदी	,, ,,	25-00
संस्कृत व्याकरण	,, ,,	30-00
लघुसिद्धान्तकौमुदी	,, ,,	यंत्रस्थ
संस्कृत-निबन्ध-शतकम	,, ,,	20-00
संस्कृत भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र	,, ,,	30-00
राष्ट्रगीतांजलि :	,, ,,	15-00
संस्कृत-शिक्षकम्	पं० गोपालशास्त्री	4-00
लघुसिद्धान्तकौमुदी (संक्षिप्त)	डा० रामअवध पाण्डे तथा डा० रविनाथ मिश्र	7-50
अलंकार प्रस्थान-विमर्श	डा० लक्ष्मीनारायण मिश्र	15-00
दशरूपकम्	डा० रमाशंकर त्रिपाठी	20-00
अभिनव रस-सिद्धान्त	डा० दशरथ द्विवेदी	7-50
भामिनि-विलास का प्रास्ताविक अन्योक्ति-विलास	जनार्दन शास्त्री पाण्डेय	5-00
वक्रोक्तिजीवितम्	डा० दशरथ द्विवेदी	15-00
शब्द-शक्ति-विवेचन	डा० रामलखन शुक्ल	12-00
ध्वन्यालोक (दीपशिखा-टीका सहित)	डा० चण्डिकाप्रसाद शुक्ल	40-00
ऋक्सूक्त रत्नाकर	गौरीशंकर सिंह	3-00
वेदचयनम्	विशम्भरनाथ त्रिपाठी	15-00
ऋङ्मणिमाला	डा० हरिदत्त शास्त्री	7-50
ऋग्वेद भाष्य-भूमिका	,, ,,	यंत्रस्थ
ऋचाओं की छाया में	रामनिवास विद्यार्थी	6-00
पालि-प्राकृत-अपभ्रंश-संग्रह	डा० राम अवध पाण्डेय तथा डा० रविनाथ मिश्र	20-00
पालि-सग्रह	,, ,,	7–50
भुशुण्डि रामायण(खण्ड 1) मूलकथा, भूमिका तथा प्रस्तावना	सं० डा० भगवती प्रसाद सिंह भूमिका डा० वी० राघवन्	100–00
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	डा० रमाशंकर त्रिपाठी	15–00
गोमहिमाभिनयनाटकम्	पं० श्रीगोपाल कास्त्री	4–00
मुद्राराक्षसम् (विकाखदत्त)	डा० रमाशंकर त्रिपाठी	यंत्रस्थ
उत्तररामचरितम् (भवभूति) (वीर राघवकृत टीका सहित)	डा० रामअवध पाण्डेय डा० रविनाथ मित्र	15–00
शृंगारमंजरी सट्टकम् (श्री मद्विश्वेश्वर)	सं० बाबूलाल शुक्ल	10–00
शिशुपालवध्म (प्रथमःसर्गः)	जनार्दनगंगाधर रटाटे तथा डा० दशरथ द्विवेदी	3–25

विश्व विद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रेष्ठ कथात्मक जीवनी साहित्य

राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी	महेन्द्रकुमार वर्मा	6.00
युगदृष्टा श्री जयप्रकाश नारायण	डा० ईश्वरप्रसाद वर्मा	8.00
प्रधानमंत्री श्रीमोरारजी देसाई	,,	8.00
क्रांतिकारी यशपाल	शंकर सुल्तानपुरी	8.00
राष्ट्रपिता बापू	,,	10.00
लालबहादुर शास्त्री	डा. ईश्वरप्रसाद वर्मा	8.00
डा० राधाकृष्णन्	परमेश्वरप्रसाद सिंह	10.00
क्रान्तिकारी कुंवरसिंह	श्यामलाल 'मधुप'	12.00
क्रांतिकारी सुभाष	शंकर सुल्तानपुरी	8.00
क्रांतिकारी आजाद	,,	10.00
पंडित दीनदयाल उपाध्याय	,,	10.00
इन्दिरा गांधी	,,	10.00
लोकमान्य तिलक	,,	10.00
आजाद हिन्द फौज की कर्नल डा० लक्ष्मीबाई	,,	10.00
क्रांतिकारी भगतसिंह	सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव	10.00
रफी अहमद किदवई	,,	10.00
गोवा के क्रांतिकारी	रामेश्वर अशान्त	10.00
वीर बन्दा वैरागी	,,	10.00
शेख मुजीबुर्रहमान	रामकृष्ण शर्मा	6.00
छत्रपति शिवाजी	परमेश्वरप्रसाद सिंह	10.00
झांसी की रानी	,,	10.00
लाला लाजपतराय	,,	10.00
सरदार वल्लभभाई पटेल	,,	9.00
महाराणा प्रताप	,,	10.00
डा० राजेन्द्रप्रसाद	,,	10.00
पं० जवाहरलाल नेहरू	डा० ईश्वरप्रसाद वर्मा	10.00
क्रांतिकारी अजीजनबाई	,,	8.00
महामना मालवीय	,,	10.00
हीर वारिसशाह : जीवन रचना तथा काल	बी० आर० 'पद्म'	8.00
क्रांतिकारी भगवती भाई	राजेन्द्र कसवां	10.00
भारत रत्न	डा० ईश्वरप्रसाद वर्मा	10.00
क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल	,,	10.00
स्वामी रामकृष्ण परमहंस	ओमप्रकाश शर्मा	10.00
स्वामी विवेकानन्द	,,	9.00
स्वामी दयानन्द	,,	10.00
स्वामी रामतीर्थ	,,	10.00
पूज्यनीय गुरुजी (गोलवलकर)	डा० ईश्वरप्रसाद वर्मा	7.00
अमरशहीद गणेशशंकर विद्यार्थी	,,	10.00

सामाजिक उपन्यास

गांधारी	बी० आर० 'पदम'	15.00
सूरज किरन	पूरनसिंह 'मदनावत'	16.00
पिपासा	लक्ष्मीनारायण गुप्त	10.00
एक डाली रजनी गंधा की	डा० नारायणदत्त श्रीमाली	12.00
कहीं उजाला	राजेन्द्र झा	12.00
ग्रहण	,,	12.00
गंगा से पवित्र	अभयकुमार 'यौधेय'	12.00
मैं अछूती	प्रदीप कुमार 'प्रदीप'	12.00
पूर्णिमा	कमलेश सिंह	4.00
मैं तुम्हारी	श्यामलाल 'मधुप'	7.00
लाल गुलाब	,,	12.00
कसम	,,	10.00
किसी से न कहना	शंकर सुल्तानपुरी	10.00
अड़तीस रुपये में दिल्ली	गोपीकुमार कौशल	10.00
उन्माद	हरिप्रसाद थपलियाल	10.00
एक गधी की आत्मकथा	पुरुषोत्तमदास गौड़ कोमल	6.00

विविध

भारतीय इतिहास की झांकी (ऐतिहासिक)	सं० डा० ईश्वरप्रसाद वर्मा	35.00
प्रगति के बढ़ते चरण (ऐतिहासिक)	,,	45.00
आजाद हिन्द फौज का मुकदमा	सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव	14.00
१८५७ की महान राष्ट्रीय क्रांति	हरिप्रसाद थपलियाल	9.00
स्वामी विवेकानन्द (सूक्तियाँ एवं उपदेश)	सं० त्रिभुवनकुमार गर्ग	7.00
स्वामी रामतीर्थ (सूक्तियाँ एवं उपदेश)	सं० त्रिभुवनकुमार गर्ग	7.00
भारत का परमाणु विस्फोट	रामकृष्ण 'सुधाकर'	8.00
भारत-पाक युद्ध के १४ दिन	गोविन्द सिंह	10.00

शीघ्र प्रकाशित होने वाली पुस्तकें

यथार्थ (बदलती राजनैतिक स्थिति का ऐतिहासिक चित्रण) —डा० ईश्वरप्रसाद वर्मा

विश्व की लोकप्रिय नेता : भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी —बाबूलाल 'दोषी'

त्याग और तपस्या —पूरनसिंह मदनावत

स्वामी श्रद्धानेन्द —ओमप्रकाश शर्मा

डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी —हरिप्रसाद थपलियाल

हिन्दी की श्रेष्ठतम पुस्तकों का प्रकाशन

साहित्य केन्द्र प्रकाशन

5/20, कृष्णानगर, दिल्ली-51

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिक्री आधारित, रुचि आधारित

पुस्तक मेलों की उपादेयता श्री भाटिया की दृष्टि में असंदिग्ध है। यह उपादेयता पुस्तक प्रेमी और पुस्तक-उत्पादक दोनों के लिए समान रूप से है। यहाँ पुस्तक का प्रकाशक अपने ग्राहक से मिल लेता है। श्री भाटिया ने इसका उदाहरण देते हुए कहा कि पुस्तक मेले में आये एक प्रकाशक को अपने सभी भावी प्रकाशनों तक का आॅर्डर उस मेले से उस पुस्तकालय की ओर से मिल गया, जिसे उस प्रकाशन गृह के विशिष्ट प्रकाशनों की जानकारी मिली। जामा मस्जिद के आस-पास के उर्दू पाठकों को हम जानते हैं, किन्तु कोई उर्दू पाठक जामा मस्जिद से दूर रामकृष्ण पुरम में रह सकता है। उसे उर्दू पुस्तकों की जानकारी जामा मस्जिद की दूकान से पहले ये पुस्तक मेले दे सकते हैं।

पुस्तक मेले बिक्री आधारित होते हैं, होने भी चाहिए। वे रुचि आधारित कैसे बनें? पाठकों में सुरुचि कैसे जागृत हो? श्री भाटिया ने कहा, पढ़ने की, सुरुचिपूर्ण पठन की आदत स्कूल में ही जागृत की जानी चाहिए। अभी हाल ही में सम्पन्न बाल पुस्तक मेले के अवसर पर बच्चों से कहा गया कि वे कम से कम पाँच रुपये लेकर मेला देखने चलें। बच्चों ने बड़े चाव से पुस्तकें खरीदीं और कम पुस्तकें ला पाने की शिकायतें घर पर की।

अभी समय लगेगा

श्री भाटिया ने बताया, एक ऐसा वर्ग भी है जो पुस्तकें खरीदता तो है, पर दिखावे के लिए, पढ़ने के लिए नहीं। सम्पन्न वर्ग के कुछ लोगों के लिए शीशे में जड़ी तसवीरों की तरह शीशे में जड़ी पुस्तक पंक्तियाँ भी कमरे की सजावट की वस्तु हैं! किन्तु जो पुस्तकों के वास्तविक पाठक हैं, उन्हें पुस्तकें सुलभ कराने के लिए, नवीनतम प्रकाशनों की जानकारी देने के लिए, ये पुस्तक मेले बहुत महत्वपूर्ण हैं।

हम जैसा पुस्तकशील समाज चाहते हैं, वैसा समाज बनने में अभी समय लगेगा। श्री भाटिया के अनुसार बड़े पुस्तक मेले चाहे साल-दो साल मे एक ही हों, पर आयोजित अवश्य हों। साल भर हम अलग-अलग स्थानों पर छोटे पुस्तक मेले लगाते रहें।

मेलों की ठेलमठाल में प्रदर्शनो के हितों की बलि न दी जाये : सैम्युअल इसराइल

पुस्तक उद्योग के एक महारथी नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया के भूतपूर्व निदेशक श्री सैम्युअल इसराइल से हमने पूछा, "राष्ट्रीय और विश्व पुस्तक मेलों का प्रयोजन क्या है और वे किस उद्देश्य को लेकर आयोजित किये जाते हैं?"

"जहाँ तक मैं समझता हूँ, राष्ट्रीय और विश्व पुस्तक मेलों का प्रयोजन समाज में पुस्तकोन्मुखता का विकास है। लोगों की पुस्तकों की ओर रुचि विकसित हो और पुस्तकों के प्रकाशन को बढ़ावा मिले। यह पुस्तकों के उत्पादकों और उसके उपभोक्ताओं को निकट लाने का एक प्रभावी ढग है। इससे लोगों को नई पुस्तकों के बारे में जानकारी मिलती है। इन मेलों में नई पुस्तकों के प्रदर्शन, वितरण और विक्रय का अवसर मिलता है और इस तरह सम्पूर्ण पुस्तक व्यवसाय को लाभ मिलता है। हमारे राष्ट्रीय और विश्व पुस्तक मेले यह कार्य सम्पादित कर भी रहे हैं।

आयातित पुस्तकों का प्रभुत्व

श्री इसराइल ने इन पुस्तक मेलों में सुधार की सम्भावनाओं को स्वीकार किया। अब तक का अनुभव यह बताता है कि इन मेलों पर आयातित पुस्तकों का प्रभुत्व रहा है। हमने इनमें बाहरी प्रकाशकों के भाग लेने पर बहुत बल दिया है। हमें केवल अंग्रेजी को ही नहीं, सभी भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देना होगा। यद्यपि अंग्रेजी को भी हमने एक भारतीय भाषा स्वीकार कर लिया है, किन्तु हमें याद रखना होगा कि भारतीय भाषाओं में अकेली अंग्रेजी ही नहीं, और भी भाषायें हैं।

आपने कहा, यह कहना गलत होगा कि हम अंग्रेजी पर अधिक जोर दे रहे हैं। सही बात यह है कि हम अन्य भारतीय भाषाओं पर कम जोर दे रहे हैं। अंग्रेजी भाषा का महत्व है, किन्तु अंग्रेजी भाषा दूसरी भाषाओं पर हावी नहीं हो सकती। हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि प्रकाशक की दृष्टि में जो भाषाएँ विपन्न हैं, उन्हें सम्पन्न किया जाये। यह नहीं कि किसी सम्पन्न भाषा को विपन्नावस्था में डाल दें।

श्री इसराइल ने बताया कि अहमदाबाद के राष्ट्रीय पुस्तक मेले में गुजराती भाषा को अच्छा प्रतिनिधित्व मिला, किन्तु दिल्ली पुस्तक मेले में हिन्दी-उर्दू को वैसा प्रतिनिधित्व नहीं मिल पाया। कलकत्ता पुस्तक मेले में बंगाली के प्रकाशन देखने को मिले, किन्तु अहमदाबाद और दिल्ली की तरह इस पुस्तक मेले में भी अंग्रेजी प्रकाशनों की भरमार रही।

नवीनतम प्रकाशन प्रदर्शित हों

किन्तु, आपके अनुसार, इसके लिए समूचे दोष के भागी केवल आयोजक ही नहीं हैं। बहुत कुछ दोष पुस्तक उद्योग का भी है। श्री इसराइल इस मत के हैं कि पुस्तक व्यवसायी संगठनों और संघों को इस प्रकार के मेले आयोजित करने चाहिए और ऐसे आयोजनों में सरकार को सहयोग देना चाहिए। हमारी सरकार के ऊपर यह निर्भरता उचित नहीं है। प्रकाशकों और पुस्तक व्यवसायियों के संगठन यह समझ सकते हैं कि किसी मेले में क्या प्रदर्शित किया जाये, कैसे किया जाये और उसका प्रयोजन क्या हो। अभी इन मेलों में हमने तमाशबीनी पर ज्यादा जोर दिया है, भारतीय भाषाओं के प्रकाशनों की नवीनतम स्थिति की जानकारी उपलब्ध कराने पर उतना जोर हम नहीं दे पा रहे। राष्ट्रीय पुस्तक मेला प्रतिवर्ष लगता है, किन्तु क्या वह प्रतिवर्ष के भारतीय प्रकाशनों की सही तस्वीर उभार पाता है? हम प्रदर्शनी लगायें तो यह ध्यान में रखें कि क्या प्रदर्शित किया जाता है। प्रतिवर्ष हमें उसी वर्ष के नये प्रकाशनों की प्रदर्शनी लगानी होगी। यदि पुस्तक उद्योग यह जिम्मा लेने के लिए तैयार हो, और सरकार उन्हें सहयोग दे, तो श्री इसराइल के विचार में, साधनों की कमी आड़े नहीं आयेगी।

श्री इसराइल ने स्पष्ट किया कि प्रदर्शनी का अर्थ बाजार लगाना नहीं है। प्रदर्शनी में प्रदर्शन और सही वर्गीकरण के साथ प्रदर्शन सबसे महत्त्वपूर्ण है। कोई चिन्ता की बात नहीं, यदि उन्हें मेलों-ठेलों का भीड़-भाड़ भरा स्वरूप प्राप्त न हो पाये. किन्तु उनका प्रदर्शनी-रूप बना रहना चाहिए। हमें अपनी दृष्टि दूरगामी रखनी होगी। प्रदर्शनी, प्रदर्शनी हो, और इसमें सही लोग लाये जायें। पुस्तकालयाध्यक्ष, पुस्तक प्रेमी, विद्वान, अच्छे गम्भीर पाठक, शिक्षाविद और सब पुस्तक व्यवसायी इसमें भाग लें।

नई पुस्तकों को नये ग्राहक चाहिए

बहुत व्यापक स्तर पर पुस्तकों के प्रदर्शन भले ही न हों, नेशनल बुक ट्रस्ट मदद करे या न करे, बहुत लम्बे समय तक ये प्रदर्शन चाहे न चलें। नगर के मध्य में किसी भी प्रमुख स्थान पर दो या तीन दिन के लिए नई पुस्तकों की प्रदर्शनी एक जगह लगे, दो जगह लगे, जगह-जगह लगे और वर्ष भर ये प्रदर्शनियां चलती रहें। इनका स्तर क्षेत्रीय हो तो होने दीजिए। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों तक पहुँचना हमारा अभीष्ट नहीं है। हमारा लक्ष्य यह हो कि नई पुस्तक को नये ग्राहक मिलें, और भारतीय भाषा की पुस्तकों के प्रकाशन की जानकारी लोगों को हो सके। इन प्रदर्शनियों में विभिन्न विषयों और विभिन्न प्रकाशकों की पुस्तकें पृथक वर्गीकरण के साथ प्रदर्शित होनी चाहिए। ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि मेले की ठेलमठाल में न पुस्तकें धक्के खायें और न उनके प्रकाशक। अतएव प्रकाशकों-विक्रेताओं के संगठनों को ही यह कार्य करना चाहिए। अच्छा हो पुस्तक व्यवसायियों के तीनों अखिल भारतीय महासंघ अपना कोई केन्द्रीय संगठन बनाकर यह काम अपने हाथ में लें।

क्षेत्रीय प्रदर्शनियों या राष्ट्रीय अथवा विश्व पुस्तक मेलों का मुख्य प्रयोजन इसलिए अपूर्ण न रहे कि हमारा सारा जोर उसे वृहदाकार बनाने पर और इस निमित्त रुपया पानी की तरह बहाने पर ही हो। इन प्रदर्शनियों में हर तरह की पुस्तकें आनी चाहिए और जिस विषय का प्रकाशन अवैध नहीं है, उसका प्रदर्शन निर्बाध हो। किताब, किताब है, और वह पढ़ने के लिए है। लोगों में पढ़ने की आदत का विकास करना हमारा एक प्रमुख उद्देश्य है। रुचि का परिष्कार प्रदर्शन के निषेध से नहीं होगा। पढ़ने से ही रुचि परिष्कृत होगी। जो किताबें छपती हैं. पढ़ी जाती हैं, वे प्रदर्शित भी की जा सकती हैं। इसलिए पाकेट बुक्स के गिरे हुए स्तर पर हमें चिन्तित होने की जरूरत नहीं है। यह चिन्ता प्रदर्शन के बाद की है।

आयोजकों, भाग लेने वालों और मेला दर्शकों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन जरूरी : डा० जे० एम० ओझा

'मानसामन' के संचालक डा० जगदीश ओझा व्यवहारवादी मनोविज्ञान के विशेषज्ञ हैं, और उनका पुस्तक संस्थान मानसशास्त्र की पुस्तकों का एक प्रमुख केन्द्र है। जब उनसे पुस्तक मेलों के विषय पर चर्चा चली, तो वे कागज कलम लेकर बैठ गये और बात करते-करते उन्होंने कुछ तालिकाएँ तैयार कर दीं।

राष्ट्रीय पुस्तक मेले या विश्व पुस्तक मेले से सम्बद्ध लोगों को उन्होंने पहली तालिका में वर्गीकृत किया। एक पक्ष है सरकार या नेशनल बुक ट्रस्ट, दूसरा पक्ष है पुस्तक उद्योग के लोग यथा प्रकाशक, वितरक, पुस्तक विक्रेता आदि और तीसरा स्थान उन लोगों का है जो यहाँ दर्शक के रूप में आते हैं।

मेलों का प्रयोजन

इन पुस्तक मेलों का प्रयोजन क्या है? इस पर डा० ओझा ने एक और तालिका बना दी। पुस्तकों के प्रति रुचि जागृत करना, पुस्तकों की बिक्री और प्रदर्शन और प्रकाशनों के विषय में जानकारी रुचि, बिक्री और जानकारी—मेलों के आयोजन के ये विविध प्रयोजन हैं।

इसके बाद डा० ओझा ने एक तालिका और बनाई जो इस प्रकार है :

1. उद्देश्य	(1) सरकार	(2) पुस्तक उद्योग (अ) भाग लेने वाले (ब) जो भाग नहीं लेते	(3) जनता (अ) दर्शक जो आये (ब) दर्शक जो न आयें
2. पूर्ति किस सीमा तक —मापदण्ड	कहाँ तक सफल	कहाँ तक सफल	कहाँ तक सफल
3. पूर्ति के लिए गतिविधियाँ	क्या-क्या किया	क्या-क्या किया	क्या-क्या किया

हमने डा० ओझा से प्रश्न किये थे कि राष्ट्रीय पुस्तक मेलों और विश्व पुस्तक मेलों को आयोजित करने के क्या उद्देश्य और प्रयोजन हैं, और वे इसमें कहाँ तक सफल हुए हैं। हम यह भी जानना चाहते थे कि इन मेलों के भावी आयोजनों में सुधार की कौन सी सम्भावनाएँ हैं। इन तालिकाओं को देखकर एक बार हमें लगा डा० ओझा हमारे प्रश्नों का उत्तर वैज्ञानिक ढंग से देने वाले हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर तालिकाओं में नहीं

किन्तु डा० ओझा ने कहा, उत्तर इन तालिकाओं में नहीं हैं। इन तालिकाओं के आधार पर उत्तर हमें खोजने होंगे। चौथा विश्व पुस्तक मेला ऐसा अवसर प्रदान करेगा जहाँ एक प्रश्नावली (क्वेश्चनेयर) तैयार करके आयोजकों, भाग लेने वालों और दर्शकों से साक्षात्कार किया जाये और इस मनोवैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर सही निष्कर्ष निकाले जायें कि मेले अपने उद्देश्यों की पूर्ति में कहाँ तक सफल होते हैं, और भावी आयोजनों में सुधार की आवश्यकताएँ और सम्भावनाएँ क्या हैं ?

डा० ओझा ने बताया, भारत सरकार के शिक्षा एवं अन्य सम्बद्ध मन्त्रालयों और नेशनल बुक ट्रस्ट के कुछ चुने हुए प्रतिनिधियों से हमें आयोजक पक्ष का वक्तव्य लेना होगा। वे अपने उद्देश्यों पर उद्देश्य पूर्ति के साधनों और पूर्ति के परिणाम पर अपना मंतव्य देंगे। पुस्तक उद्योग के उन प्रतिनिधियों से (यथा प्रकाशक, वितरक, पुस्तक विक्रेता आदि) जो इन मेलों में भाग लेते हैं, ऐसे ही उत्तर प्राप्त किये जायेंगे। जो लोग इन मेलों में भाग नही लेते उनसे यह जानना होगा कि उनकी उपेक्षा या उदासीनता के पीछे कौन-सी विवशता या कौन से कारण हैं। अंततः जिस जनता के लिए यह आयोजन होता है, उसके दर्शक और प्रदर्शक दोनों वर्गों से उनके मनो की थाह भी लेनी होगी।

सरकार पहल करे

मानसामन संचालक ने कहा, यह अध्ययन आवश्यक है और इसके लिए सरकार को पहल करनी चाहिए। इसके लिए समय, श्रम, साधन और वित्त चाहिए। प्रशिक्षित कार्यकर्त्ता चाहिए, बहुत-सी मुद्रित सामग्री चाहिए। चौथे विश्व पुस्तक मेले से इस दिशा में एक कदम उठाकर शुरूआत तो की जा सकती है, किन्तु इतना कम समय है कि यह सारा काम पूरी तैयारी के साथ नहीं हो सकता।

प्राचीनतम विश्व पुस्तक प्रदर्शनी

पश्चिमी बर्लिन में आयोजित होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी को संसार की अपने प्रकार की प्राचीनतम प्रदर्शनी माना जाता है—यह पुस्तक मेलों से भिन्न होती है, क्योंकि इस प्रदर्शनी में पुस्तकें केवल प्रदर्शित की जाती हैं, मेलों में पुस्तकों और उनके अनुवादों के अधिकार खरीदे-बेचे जाते हैं।

इस प्रदर्शनी में प्रकाशकों के अलग-अलग संगठन प्रस्तुत नहीं होते--विषयवार पुस्तकें प्रस्तुत की जाती हैं। प्रत्येक प्रकाशक अपने नये प्रकाशन की एक-एक प्रति भेजता है। मुख्यतः जर्मन भाषा के प्रकाशक इस आयोजन में भाग लेते हैं, विदेशी भाषाओं की पुस्तकों का अलग से प्रदर्शन किया जाता है। भारत भी इस प्रदर्शनी में अपनी पुस्तकें भेजता रहता है।

बर्लिन के प्रकाशक और पुस्तक विक्रेता मिल कर यह आयोजन करते हैं, लेकिन प्रदर्शनी पर होने वाले व्यय का मुख्य भार स्थानीय और राष्ट्रीय सरकारों द्वारा उठाया जाता है।

विदेशी पुस्तकें जान-बूझकर कम रखी जाती हैं, और प्रत्येक वर्ष भिन्न-भिन्न भू-भाग की पुस्तक आमन्त्रित की जाती हैं।

प्रदर्शनी में प्रवेश निःशुल्क होता है।

बाल वर्ष तो १९७९ में मनाया गया है। इस प्रदर्शनी में १९७९ में पहली बार बच्चों की पुस्तकों का विशेष संकलन सामने लाया गया था—"बुक पेराडाइज"। जिसमें ३,००० बाल साहित्य की चुनी हुई पुस्तकें रखी गयी थीं। और बच्चों के लायक छोटी-छोटी मेज-कुर्सियों की भी व्यवस्था थी। इस अवसर पर बाल साहित्य पर भाषण और गोष्ठियाँ भी हुईं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक मेले : नये पुराने संदर्भ

—मनोरंजन क्रान्छल

देश-विदेश के विद्वानों, प्रकाशकों और क्रेताओं के सम्पर्क में हम अधिकाधिक आयें और एक-दूसरे की बातें जानें—समझें और अनुभव करें कि हमारे हृदय भावनात्मक तादात्म्य से एक ही सुरताल से स्पान्दित हैं, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक-मेले तभी सार्थक हैं जब हम सौहार्द्र पूर्ण वातावरण में लगातार और व्यावसायिक सम्बन्धों का विकास करें।

मेलों ही में एक प्रकाशक अपने अन्य साथियों के साथ भ्रातृत्व, सुख व आनन्द के साथ निजी सम्पर्क बनाने व मित्रता करने का सुअवसर पाता है। मेलों ही में वह 'लो' और 'दो' की भावना का आदर करता है और मित्रता के वातावरण में व्यापार-उद्योग का प्रसार करता है और समाज की आवश्यकताओं व समस्याओं को भी समझता है। मेलों से वह स्वस्थ्य परम्परा का निर्वाह करने की भी बात सोचता है और अपने व्यवसाय का नैतिक विकास करने की जिज्ञासा लेकर जाता है।

हम वाणी द्वारा सम्पर्क स्थापित करें या साहित्य द्वारा, दोनों ही दशा में हमें भाषा का एक समान माध्यम चाहिए और वह माध्यम हमारे देश के लिए हिन्दी है। अतः हिन्दी प्रकाशन के राष्ट्रीय दायित्वों की भूमिका भी पुस्तक मेलों से प्रारम्भ होती है।

अब राष्ट्रीय पुस्तक समारोहों (पुस्तक मेलों) का आयोजन अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ और दूसरे संगठनों का प्रमुख अंग बन चुका है। पुस्तक मेले और पुस्तक प्रदर्शनियाँ अब देश के लिए नई चीज नहीं, प्रश्न है उनमें दिनों-दिन नवीनता और आकर्षण लाने का। व्यावसायिक लाभ तो सदैव उनमें प्रत्यक्ष है ही, परन्तु इस प्रवृत्ति को अब गौण समझना होगा।

कुछ समय पुस्तक मेलों और प्रदर्शनियों में पुस्तक विक्रय पर कुछ विशेष रियायतें दी जानी चाहिए। प्रकाशक और उसके प्रतिनिधि विक्रेताओं को सामान्य व्यवसायिक कमीशन के अतिरिक्त उपहार और कुछ बढ़ी हुई कमीशनें इन अवसरों पर और देनी चाहिए। संघ को अपने सदस्यों द्वारा क्रेता को दी जा रही इस सुविधा के उपलक्ष्य में विशेष आयोजन भी आयोजित करने चाहिए। यह विशेष आयोजन तत्काल खरीदी गयी नयी पुस्तकों के क्रेता और विक्रेता के लिए हों। इन्हीं अवसरों पर प्रवेश टिकटों के लकी डिप नम्बर लाटरी द्वारा निकाले जायें, जिससे उपहार प्राप्ति की जिज्ञासा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगन्तुकों में बराबर बनी रहे और वह मेले के विभिन्न आयोजनों के प्रति अपनी आय बढ़ाये। यह उपहार पुस्तकें प्रतिदिन मेले की समाप्ति के बाद भी दी जा सकती हैं या फिर मेले के अन्तिम दिन, जैसा सुविधाजनक हो। सभी प्रकाशकों का सहयोग इस हेतु आयोजकों का मिलान हो।

आदान-प्रदान गोष्ठी लेखक परिचर्चा कापीराइट मुद्रणकला, चित्रणकला, प्रकाशन-व्यवसाय, व्यवसाय प्रशिक्षण-शिविर और समस्या संगोष्ठियाँ आदि-आदि के आयोजनों के साथ-साथ उत्कृष्ट साहित्य के सृजनायकों, प्रकाशकों, मुद्रकों और चित्रकारों, विक्रेताओं और क्रेताओं को भी पुरस्कृत किया जाये। यहाँ यह ध्यान देना अति आवश्यक होगा कि ये सब कुछ विशेषों तक ही सीमित न रह जायें।

पुस्तक मेले और प्रदर्शनियों में पुस्तकों का प्रचार बढ़ाने के विक्रेताओं को अपना कार्य बुद्धिमत्ता के साथ करना चाहिए। उन्हें चाहिए कि पाठकों के हाथ में कोई भी पुस्तक देने से पूर्व यह ज्ञान प्राप्त करले कि पाठक किस योग्यता और किस रुचि का है। उसे कौन-सी चीज का पुस्तक अपनी ओर आकृष्ट करके अध्ययनशील बनाने में समर्थ होगी। इसके अतिरिक्त प्रत्येक प्रकाशक विक्रेता को पुस्तक मेले। प्रदर्शनियों में अपने प्रकाशकों को लाने से पूर्व बाजार में भी प्रदर्शित कर देना चाहिए उस प्रदर्शन का पहले से पर्याप्त प्रचार विभिन्न माध्यमों द्वारा करना चाहिए ताकि लोग नयी पुस्तकें देखने आयें और लाभान्वित हों।

पर्वों पर पुस्तक प्रदर्शनियाँ

कभी-कभी पुस्तक मेले और प्रदर्शनियाँ विशेष पर्व अथवा त्यौहारों पर भी आयोजित किये जा सकते हैं। ऐसे सुअवसरों हेतु कलात्मक मण्डपों, पूर्ण सज्जायुक्त स्थलों हेतु उपयुक्त पुस्तकों का चुनाव और प्रदर्शन बड़ा महत्वपूर्ण है। पाठ्य पुस्तकें इन अवसरों हेतु अनुपयुक्त होंगी। अतः वह बहुत कम खरीदी जायेंगी। वास्तव में ऐसे अवसरों हेतु विभिन्न विषयों पर टकसाली, धर्म विषयक तथा कम मूल्य की पुस्तकें ही अधिक उपयोगी होंगी जो वहाँ काफी खरीदी जा सकती हैं। पुस्तकों पर अधिक कमीशन, उपहार तथा विक्रेता को पुस्तकों की पूरी जानकारी ग्राहकों को आकृष्ट कर सकने में सक्षम होगी।

राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय पुस्तक समारोहों, बृहत पुस्तक-मेलों प्रदर्शनियों में हमें अपने ही देश की विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित साहित्य का परिचय, तुलनात्मक अध्ययन साहित्य, सांस्कृतिक परम्परा और विचारधारा, हिन्दी द्वारा विभिन्न भारतीय भाषाओं से ग्रहण करने की प्रवृत्ति तथा एकता अथवा राष्ट्रीयकरण के लिए प्रकाशित साहित्य की विस्तृत सूची आदि का प्रचारात्मक साहित्य, पोस्टर समाचार, साप्ताहिक पत्रों के विशेषांक, विज्ञापन आदि पाठकों को आकृष्ट करने हेतु प्रकाशित कराने चाहिए। इससे जो मण्डप व हिन्दी भाषा प्रदर्शन कक्ष लगाये जा रहे हैं, तभी उनका प्रदर्शन सार्थक होगा।

पुस्तक मेलों और प्रदर्शनियों में अधुनात्मक उपकरणों (मुद्रण यन्त्रों, नवीन कार्यक्रमों के नमूने, दफ्तरी कौशल) का प्रदर्शन और कार्यरत प्रेस भी आगे के लिए कौतूहल का विषय सदैव रहेगा।

मेले प्रगति के द्योतक हों, भारतीय-उद्योग को बढ़ा सकें। तभी लक्षित उद्देश्य हमारे बढ़ते कदम के सार्थक होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक मेले और शिक्षा प्रसार

—शिवरतन थानवी

पिछले कुछ वर्षों से देश में कई बड़े शहरों में राष्ट्रीय पुस्तक मेले और विश्व-पुस्तक-मेले आयोजित होने लगे हैं। बम्बई का राष्ट्रीय पुस्तक मेला और दिल्ली का विश्व-पुस्तक-मेला देखने का मुझे भी अवसर मिला है। इन पुस्तक मेलों से कई नयी पुस्तकों की सूचना मिलती है और दूर-दूर के स्थानों के लेखकों, प्रकाशनों और कलापूर्ण मुद्रण कार्यों के सम्बन्ध में हमारा ज्ञान बढ़ता है।

इन पुस्तक मेलों से जो हमें लाभ प्राप्त हुए हैं उन्हें देखते हुए विचार आता है कि क्या हमारे राज्यों में जिला-स्तरों पर और उससे भी आगे शहरों और गाँवों में क्या हम कभी पुस्तक मेले लगा सकेंगे? इन पुस्तक मेलों से समाज के कई वर्गों को कई प्रकार से लाभ होता है। प्रकाशनों का स्तर उठता है, लेखकों को नये लेखन की प्रेरणा मिलती है और विद्यार्थियों तथा अध्यापकों को महत्वपूर्ण नये प्रकाशनों की सूचना मिलती है तथा प्रसिद्ध और अनुपलब्ध पुराने प्रकाशनों के बारे में भी ज्ञान बढ़ता है।

यदि हम पुस्तक मेलों का और अधिक लाभ उठाना चाहें तो शिक्षा प्रसार के राष्ट्रीय निर्माणकारी महत्वपूर्ण कार्यों में इसके अनवरत उपयोग पर भी विचार कर सकते हैं। पुस्तकों की सूचना के वर्तमान स्रोत इतने क्षीण हैं कि हमारे अध्यापकों और शिक्षा अधिकारियों को समाचार-पत्रों में प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों और पुस्तक समीक्षाओं से ही सन्तोष करना पड़ता है। प्रकाशक सभी विद्यालयों को अपने ताजे प्रकाशनों की सूचियाँ भेज सकें, यह सम्भव कम है। दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक समीक्षाओं के स्तम्भ पर्याप्त मात्रा में प्रकाशित नहीं हुआ करते हैं। हिन्दी में केवल दो पत्रिकाएँ ऐसी हैं जो पूर्णतया पुस्तक समीक्षाओं को समर्पित हैं और वे भी बहुत कम संख्या में अध्यापकों को या शिक्षा अधिकारियों को पहुँच पाती हैं। एक तो कारण यह है कि अध्यापकों में और शिक्षा अधिकारियों में और अन्य सामान्य पाठकों में पुस्तक समीक्षाओं की पत्रिकाओं के प्रति अभी विशेष उत्साह जागृत नहीं हुआ है। दूसरे पुस्तक समीक्षा का कार्य भी अभी इतना विकसित नहीं हुआ है कि नयी-नयी पुस्तकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और पुराने ग्रन्थों के नाना-पहलुओं को रोचक रूप से पाठकों के सामने प्रस्तुत किया जा सके। फिर भी जो कुछ हो रहा है वह बहुत उपयोगी है और उससे पुस्तकों में पाठकों की रुचि जागृत करने में काफी मदद मिलती है। पुस्तक समीक्षा हो या प्रकाशकों के विज्ञापन हो, पाठकों को जितना सन्तोष पुस्तक देखकर होता है उतना मात्र सूची देखकर या समीक्षा पढ़कर नहीं हो सकता। यदि हम शहरों और गाँवों तक पुस्तक मेलों को ले जा सकेंगे तो न केवल अध्यापकों और शिक्षा अधिकारियों की कठिनाइयों को ही दूर कर सकेंगे बल्कि विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों तथा सामान्य-जन को भी पुस्तकों के पठन की ओर ज्यादा प्रभावशाली रूप में आकर्षित कर सकेंगे।

देश के सभी राज्यों की सरकारों को, शिक्षा विभागों को और साहित्य अकादमियों तथा प्रकाशकों को मिलकर इस दिशा में जरूर विचार करना चाहिये।

हमें यह याद रखना चाहिए कि शिक्षा केवल कक्षा में अध्यापक के भाषण से ही सम्पन्न नहीं होती है। हमें यह भी याद रखना चाहिये कि शिक्षा की प्रक्रिया विद्यालय या महाविद्यालय की दीवारों तक ही सीमित नहीं हुआ करती। हमने यह स्वीकार कर लिया है कि शिक्षा जीवन भर अनवरत रूप से चल सकती है, चलनी चाहिये। इसी को दृष्टि में रख कर राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ है और अनौपचारिक शिक्षा के केन्द्र भी अनेक स्थानों पर चलाये जा रहे हैं। लेकिन पुस्तक अपने आप में अनौपचारिक शिक्षा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण उपादान है। पुस्तक मेलों से न केवल विद्यालयों और महा-विद्यालयों के अध्यापकों या विद्यार्थियों का ही लाभ होगा बल्कि समाज शिक्षा का भी एक बहुत बड़ा कार्य इससे सम्पन्न होगा। पुस्तक मेलों में जूते गांठने वाले भी आयेंगे, किसान भी आयेंगे, गृहणियां भी आयेंगी और होटलों में काम करने वाले बच्चे भी आयेंगे। जो भी आयेंगे अपनी रुचि की पुस्तक देखेंगे, खरीदकर पढ़ने को उत्सुक होंगे और नयी रुचियों की प्रेरणा भी लेकर जायेंगे।

इन सबसे अलग एक और वर्ग है जिसको राष्ट्रीय मेलों से या विश्व-पुस्तक मेलों से अभी कोई लाभ नहीं पहुँच रहा है वे हैं हमारे सार्वजनिक पुस्तकालय। सार्वजनिक पुस्तकालय स्वयं अपने आप में अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र हुआ करते हैं। वे सारे समाज के लिए सूचना और प्रेरणा के स्रोत होते हैं। इन पुस्तकालयों को नयी पुस्तकों की सूचना ये पुस्तक मेले जितने प्रभावशाली तरीके से दे सकते हैं उतना और कोई नहीं दे सकता है। पुस्तक मेलों को शहरों और गाँवों तक ले जाने का प्रबन्ध हो तो इन सार्वजनिक पुस्तकालयों के संचालक भी बहुत थोड़े समय में अच्छी पुस्तकों की प्रत्यक्ष सूचना प्राप्त कर सकेंगे। यदि हम इन पुस्तक मेलों को शिक्षा प्रसार का महत्वपूर्ण अंग मानते हैं तो हमें इनके आयोजन के लिए राज्य-सरकारों और शिक्षा विभागों को प्रेरित करना चाहिये कि वे इसके आयोजन में सक्रिय रूप से भाग लें और इनके जरिये शैक्षिक उन्नति का नया मार्ग प्रशस्त करें। जब पुस्तक मेले आयोजित होने लगेंगे तो प्रकाशकों को और शिक्षकों को ज्ञात होगा कि शिक्षा का कितना कम साहित्य प्रकाशित हुआ है और हमारे शिक्षकों के लिए कैसे ग्रन्थ प्रकाशित करना ज्यादा लाभकारी रहेगा। अब स्थिति यह है कि हमारे अनेक विद्यालयों के प्रधानध्यापकों और अध्यापकों को राष्ट्रीय नेशनल बुक ट्रस्ट, चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट और अन्य कई प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित उच्चकोटि के बाल-साहित्य की कोई सूचना ही नहीं है। पिछले कुछ वर्षों में देश में बहुत अच्छी बालोपयोगी और किशोरोपयोगी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। कई नये लेखक सामने आये हैं, कई अच्छे कलाकार आकर्षक ढंग से बाल-साहित्य के चित्र बनाने लगे हैं और मुद्रण के विकास के साथ बहुरंगी मुद्रण सुन्दर ढंग से होने लग गये हैं। लेकिन हमारे नन्हें पाठकों को इसका उतना लाभ नहीं पहुँचा है जितना पहुँचना चाहिए था। जब तक अध्यापकों को सूचना नहीं होगी और वे अपने विद्यार्थियों तक नये बाल-साहित्य ले जाने को उत्प्रेरित नहीं होंगे तब तक हमारे नये प्रकाशनों का प्रसार भी नहीं हो सकेगा। जब हम राज्यों में स्थान-स्थान पर पुस्तक मेले आयोजित करने लगेंगे तब सुन्दर पुस्तकें, उपयोगी पुस्तकें और प्रेरक पुस्तकें अधिक संख्या में क्रय की जाया करेंगी। ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतुल-आलोक प्रकाशन की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ

●

उपन्यास

● बड़ा आदमी	—यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	12·00
● बहत्तर साल का बच्चा	—आबिद सुरती	12·00
● अन्त नहीं	—इन्दिरा	15·00
● अनन्तश्री	—इन्दिरा	10·00

नाटक

● टगर (सम्पूर्ण)	—विष्णु प्रभाकर	6·00
● डरे हुए लोग (मंचीय एकांकी संग्रह)	—विष्णु प्रभाकर	12·00

कहानी

● ठण्डा गोश्त	—सआदत हसन मंटो	12·00
● आदमी अंधा है	—बन्शीलाल यादव	7·00

बाल-साहित्य

● गुड़िया खो गई	—विष्णु प्रभाकर	4·50
● भारत की लोक कथायें	—बच्चू प्रसाद सिंह	4·50
● सिर झुकता है	—यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	4·30
● कहावतों की कहानियाँ	—सुरजीत	4·50
● रोचक पहेलियाँ	—सुरजीत	4·50
● दो और दो पाँच (बाल एकांकी)	—मिर्जा अदीब	4·50
● नानी अम्मा की ऐनक बाल एकांकी	—मिर्जा अदीब	4·50

सम्पर्क सूत्र

शब्दकार

२२०३, गली, डकोतान, तुर्कमान गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा, भाषाविज्ञान एवं अनुवाद से सम्बन्धित उपयोगी पाठ्य तथा मानक संदर्भ ग्रंथ

●

- हिन्दी वर्तनी की समस्याएँ—डॉ० भोलानाथ तिवारी, किरणबाला २०.००
- काव्यानुवाद की समस्याएँ—डॉ० भोलानाथ तिवारी, महेन्द्र चतुर्वेदी २०.००
- अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएँ —डॉ० भोलानाथ तिवारी —डॉ० ओमप्रकाश बाबा १६.००
- पारिभाषिक शब्दावली : कुछ समस्याएँ—डॉ० भोलानाथ तिवारी महेन्द्र चतुर्वेदी २२.५०
- अनुवाद विज्ञान (तीसरा सं० प्रेस में)—डा० भोलानाथ तिवारी १५.००
- शैली विज्ञान —डॉ० भोलानाथ तिवारी २५.००
- कोश विज्ञान —डॉ० भोलानाथ तिवारी १६.००
- हिन्दी ध्वनियाँ और उनका उच्चारण —डॉ० भोलानाथ तिवारी १६.००
- भाषा विज्ञान प्रवेश —डॉ० भोलानाथ तिवारी १६.०० छा० सं० ३.०० पु० सं० ४.००
- हिन्दी और बंगला भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन—डॉ० संतोष जैन १५.००
- व्यावहारिक पर्याय कोश —महेन्द्र चतुर्वेदी, ओमप्रकाश बाबा १२.००

प्रत्येक पुस्तकालय के लिए अनिवार्य तथा अपरिहार्य

●

शब्दकार

●

२२०३, गली उकौतान, तुर्कमान गेट, दिल्ली-११०००६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078050

शब्दाकार की आगामी महान उपन्यास-उपलब्धियाँ

●

● **कोई तो** — **विष्णु प्रभाकर** — 25·00 (अनु.)

'आवारा मसीहा' के बाद विष्णुजी की चिर-प्रतीक्षित विशिष्ट औपन्यासिक कृति……हमारे समाज की आडम्बरपूर्ण स्थिति के संदर्भ में भारतीय नारी की विडम्बनापूर्ण नियति……मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर एक महान मानवीय गाथा।

● **वही बात** — **कमलेश्वर** — 10·00 (अनु)

'रविवार' साप्ताहिक में धारावाहिक रूप में प्रकाशित कमलेश्वर का बहुचर्चित उपन्यास……कमलेश्वर का अपना अंदाज़े बयां, वही पैनी शैली और प्रखर अनुभूति की बेबाक अभिव्यक्ति।

● **सोमाचरित** — **रमेश सिन्हा** — 25·00 (अनु.)

क्लासिकी लोककथा शैली में एक अतिकाल्पनिक, [Fantacy) अद्भुत प्रतीक-उपन्यास……आज की स्थितियों और परिस्थितियों के परिवेश में आगामी कल की प्रस्तावना……ट्रीटमेंट की दृष्टि से यह उपन्यास एक विशिष्ट उपलब्धि सिद्ध होगा।

● **छाले (आबले-पा)** — **रजिया फसीह अहमद** — 25·00 (अनु.)

पाकिस्तान के सर्वोच्च 'आदमजी' पुरस्कार से अलंकृत एक बहुचर्चित तथा बहु-प्रशंसित और निःसन्देह एक बेहतरीन उर्दू उन्यास।

● **ऐवाने गजल** — **जिलानी बानो** — 25·00 (अनु)

हैदराबाद की जिन्दगी—विशेषतः के आभिजात्य वर्ग—पर एक प्रामाणित दस्तावेज……इस दशक का श्रेष्ठतम उपन्यास—जिसे उर्दू साहित्य की महान उपलब्धि के रूप में स्वीकार किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी वाङ्मय में एक नयी संवृद्धि !
लगभग तीस वर्ष के सतत् परिश्रम का सुफल !!

●

बृहद् लोकोक्ति कोश

डॉ० भोलानाथ तिवारी

●

- पहली बार हिन्दी की लगभग ५९ हजार लोकोक्तियों का विशाल संग्रह
- हिन्दी क्षेत्रीय बोलियों तथा विभिन्न भारतीय भाषाओं की लोकोक्तियों के पारस्परिक सम्बन्धों पर तुलनात्मक विवेचन।
- पृष्ठ संख्या : आठ सौ (लगभग)
- आकार : डबल डिमाई (२३×३६/१६)
- मूल्य : एक सौ पच्चीस रुपये (अनुमानित)

पुनश्चः—सितम्बर-अक्तूबर में इस कोश से सम्बन्धित विस्तृत योजना की घोषणा की प्रतीक्षा करें।

●

शब्दकार

★

२२०३, गली उकीतान, तुर्कमान गेट: दिल्ली-११०००६

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के लिए संपादक, प्रकाशक, मुद्रक, राजेन्द्र शंकर भट्ट, स्फटिक संस्थान, द्वारा फ्रेन्डस प्रिन्टर्स तथा स्टेशनर्स, जयपुर की ओर से प्रेम चन्द जैन द्वारा प्रेम इलैक्ट्रिक प्रेस, 1/11 साहित्य कुंज आगरा-2 में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उच्चस्तरीय शिक्षण संस्थाओं के लिए संग्रहणीय साहित्यक ग्रंथ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोश

बदरी प्रसाद साकरिया	● राजस्थानी हिन्दी शब्द कोश प्रथम खण्ड	65·00
कानोड़िया एवं अग्रवाल	● राजस्थानी कहावत कोश	60·00

शोध आलोचना

डा० सरजूप्रसाद मिश्र	● नाटककार लक्ष्मीनारायण लाल	40·00
,, हरिचरण शर्मा	● सर्वेश्वर का काव्य : संवेदना और संप्रेषण	35·00
,, हरिचरण शर्मा	● नये प्रतिनिधि कवि	40·00
,, सुदेश बत्रा	● अमृतलाल नागर : व्यक्तित्व, कृतित्व एवं सिद्धान्त	60·00
,, चन्द्रभानु सौनवणे	● कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु	30·00
,, चन्द्रभानु सोनवणे	● धर्मवीर भारतीय का साहित्य : सृजन के विविध रंग	30·00
,, जी० टी० अष्टेकर	● कटघर का कवि 'धूमिल'	30·00
,, सत्यव्रत	● भारतीय राष्ट्रभाषा : सीमाएँ तथा समस्याएँ	40·00
,, मनमोहन सहगल	● हिन्दी शोधतंत्र की रूपरेखा	20·00
,, सुष्मा अग्रवाल	● कहानीकार मोहनराकेश	20·00
क्मिला कुमारी पंडिता	● उपन्यासकार मोहन राकेश	15·00
डा० कुलदीपचन्द्र गुप्त	● उपन्यासकार उपेद्रनाथ अश्क	35·00
प्रो० प्रभाकर शर्मा	● नरेश मेहता का काव्य विमर्श और मूल्यांकन	20·00
डा० वीरेन्द्रसिंह	● मुक्तिबोध : काव्यबोध का नया परिप्रेक्ष्य	15·00
पुष्पलता राठौर	● मुक्तिबोध का आलोचना सिद्धान्त	20·00
प्रो० सूर्यनारायण रणसुभे	● कहानीकार कमलेश्वर : संदर्भ और प्रकृति	20·00
डा० रामकिशन सैनी	● आधुनिक हिन्दी महाकाव्यों में पाश्चात्य चिन्तन	65·00
,, काशीनाथ मिश्र	● रसिक बिहारी कृत रामरसायन	35·00
,, कृष्ण मजीठिया	● हिन्दी के तिलस्मी व जासूसी उपन्यास	30·00
,, रामकुंवरसिंह	● पश्चिमी भोजपुरी और गुजराती की क्रियाएँ	30·00
,, डा० जी० टी० अष्टेकर	● भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं विष्णुशास्त्री चिपलूणकर	45·00
,, विजय कुलश्रेष्ठ	● जैनेन्द्र : उपान्यास और कला	15·00
,, चन्द्रभानु सोनवणे	● भारतेन्दु के विचार एक पुनर्विचार	12·00
,, शुभूसिंह मनोहर	● वचनिका राठौड़ रतनसिंहजी महेसदासोतरी	90·00
,, रूक्मिणी वैश्य	● कुशललाभ के कथा साहित्य का लोकतात्विक अध्ययन	50·00
,, एल० डी० जोशी	● बागड़ी बोली का स्वरूप और उसका तुलनात्मक अध्ययन	25·00
प्रो० भूपतिराम साकरिया	● महाकवि पृथ्वीराज राठौर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	40·00

विविध

शकर पुणताम्बेकर	● कैक्टस के कांटे (व्यंग्य)	20·00
विश्वम्भरनाथ उपाध्याय	● कबन्ध (कविता संग्रह)	15·00

पंचशील प्रकाशन

फिल्म कॉलोनी, जयपुर-302003

दूरभाष : 65072

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के 15,000 (पन्द्रह हजार) से अधिक पुस्तक विक्रेताओं, पब्लिशरों, न्यूजपेपर एजेंटों की सेवा में अर्द्ध-शताब्दी से कार्य-रत

देहाती पुस्तक भण्डार का परिचय और उद्देश्य

देहाती पुस्तक भण्डार की स्थापना सन् 1936 में दृढ़ संकल्प तथा अत्यल्प पूंजी के साथ हुई थी। यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि हमें आशातीत सफलता मिली है और इस सफलता के निम्नलिखित कारण हैं :

● उस न्यायशील परमपिता परमेश्वर की असीम कृपा व भागीदारों का परस्पर सहयोग। ● दृढ़ संकल्प के लिए सतत भगीरथ प्रयत्न तथा क्वान्टिटी व क्वालिटी वर्क। ● अपने व्यापारियों एवं समस्त ग्राहक बन्धुओं के आर्डर की सुरक्षा मोती की भाँति करने के कारण उनका हार्दिक सहयोग तथा प्रेमपूर्ण सद्व्यवहार। ● अत्यल्प लाभ, जनरुचि का पूरा ध्यान, सही विज्ञापन का तरीका तथा व्यापार में सच्चाई व ईमानदारी। ● हमने सभी विषयों पर पुस्तकें प्रकाशित की हैं मगर टैक्निकल, इण्डस्ट्रियल, ऐग्रीकल्चरल, चिकित्सा, ज्योतिष, पूजा पाठ, कर्मकाण्ड, प्राचीन यंत्र-तंत्र मंत्र शास्त्र, धार्मिक व स्त्रियोपयोगी साहित्य का विशेष प्रकाशन किया है।

टैक्निकल बुक डिपो, S. K. महिला प्रकाशन, कन्सल्टैन्ट्स कार्पोरेशन आफ इण्डस्ट्रीज (ऑफिस C. C. I. दिल्ली), दफ्तर पुस्तक सन्देश, आफिस टाइनी इण्डस्ट्रीज तथा आफिस इण्डस्ट्रियल प्राबलम्स भी हमारी ही कॉलबोरेशन से चलने वाली फर्में हैं।

व्यापारी बन्धुओ! भण्डार का नया 48वाँ व्यापाराना थोक सूची-पत्र आपके पास पहुँचा होगा। इस प्रकार के व्यापाराना सूची-पत्र काफी महँगे व परेशानी से वर्ष भर में केवल एक बार ही छप पाते हैं। यदि आपके पास थोक मूल्य का माँग-पत्र न पहुँचा हो तो आज ही पत्र लिखकर 49वाँ थोक सूची-पत्र निःशुल्क मँगा लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar